ഓം നമശ്ശിവായ

ഓം നമഃ പരമാത്മനേ, ശ്രീ മഹാഗണപതയേ നമഃ, ശ്രീ ഗുരുഭ്യോ നമഃ, ഹരിഃ ഓം

ശിവ സ്തുതി

(Based on Bhodhayana Rishi Paddadhi)

(With Poorvanga Puja, Mahanyasam, Rudra TriSati, EkadaSa Rudra Japam, Rudra & Chamaka Kramam, Rudra Homam & uttaranga Puja)

See Item No. 22, (page No. 352) for "Bodhayana Mahanyasa sootraaNi".

Version Notes

This is now the current Version 4.1 dated August 31, 2022.

- 1. This replaces the earlier version 4.0 dated June 30, 2021.
- 2. This version has been updated with the errors found and reported till August 15, 2022.
- 3. Required convention, style and presentation improvements or standardisations has been done whereever applicable.
- 4. Notify your corrections / suggestions etc to our email id vedavms@gmail.com

Earlier Versions

1st Version Number 1.0 dated 15th January 2015 2nd Version Number 1.1 dated 31st May 2016 3rd Version Number 3.0 dated 31st August 2018* (*Version directly numbered as 3.0 due to font upgrades)

4th Version Number 3.0 dated 31st October 2018 5th Version Number 4.0 dated 30th June 2021

Contents

| 1 | ln ⁻ | troduction | 12 |
|---|-----------------|---------------------------------------|----|
| | 1.1 | Purpose | 12 |
| | 1.2 | Language and Versions | 12 |
| | 1.3 | Method of compilation | |
| | 1.4 | Acknowledgement | |
| | 1.5 | Important Notes | |
| | 1.6 | RUDRAIKAADASINI KUMBHA STAPANAM. | |
| 2 | Po | ooja Preparations | |
| | 2.1 | Some Basics | |
| | 2.2 | Forms of Rudra Japam | |
| | 2.3 | Sadyo Jaatham | |
| | 2.4 | Star (Nakshatra) and Rasi Table: | |
| | 2.4.1 | Days of the Week: | |
| | 2.4.2 | Masam, Ruthu, Ayanam | |
| 3 | | ൃർവാംഗ പൂജാ | |
| _ | 3.1 | പൂജാ പ്രാരംഭഃ | |
| | 3.1.1 | ഭാഗൃ സൂക്തം | |
| | 3.1.2 | ആച്മു , പവിത്രം സ്വീകൃതൃ | |
| | 3.1.3 | അനുജ്ഞാ | |
| | 3.1.4 | അനുജ്ഞാ – പ്രദക്ഷിണ മന്ത്രാഃ | 22 |
| | 3.1.5 | അനുജ്ഞാ (Rudra Ekadasini) | |
| | 3.2 | വിഘ്നേശ്വരപൂജാ | |
| | 3.2.1 | ഘണ്റ പൂജാ | |
| | 3.2.2 | ആചമനം സങ്കല്പം | |
| | 3.2.3 3.2.4 | ആവാഹനം ഉപചാരം നൈവേദ്യം, പ്രാർത്ഥനാ | |
| | 3.2.4 | പ്രാർത്ഥനാ പൂജാ പ്രാരംഭഃ | |
| | 3.3.1 | പ്രാർത്ഥനാ | |
| | 3.3.2 | ആസന പൂജാ | |
| | | - ♥ | |

| 3.4 | സങ്കല്പം |
|--------|----------------------------------------------|
| 3.4.1 | സങ്കല്പം (No. 1)33 |
| 3.4.2 | സങ്കല്പം (No. 2)34 |
| 3.4.3 | സങ്കല്പം (No. 3)36 |
| 3.4.4 | സങ്കല്പം (No. 4) 38 |
| 3.4.5 | വിഘ്നേശ്വര ഉദ്വാപനം42 |
| 3.5 | പുണ്യാഹവാചനം42 |
| 3.5.1 | സങ്കല്പം42 |
| 3.5.2 | കുംഭ്പതിഷ്ഠാ മന്ത്രാഃ43 |
| 3.5.3 | വേദാരംഭേ ജപ്യാഃ മന്ത്രാഃ47 |
| 3.6 | പവമാന സൂക്തം48 |
| 3.6.1 | വാസ്തു മന്ത്രം50 |
| 3.6.2 | വരുണ് ഉദ്വാപനം51 |
| 3.6.3 | പ്രോക്ഷണ മന്ത്രാഃ52 |
| 3.6.4 | ഗ്രഹ പ്രീതി54 |
| 3.6.5 | പൂർവാംഗ നാന്ദീ ശ്രാർദ്ധം54 |
| 3.6.6 | വൈഷ്ണവ ശ്രാദ്ധം55 |
| 3.6.7 | ഗോദാനം55 |
| 3.6.8 | ദശ ദാനം56 |
| 3.6.9 | കൃശ്ശോചരണം56 |
| 3.6.10 | ാ ഋത്വീഗ് വരണം56 |
| 3.6.11 | ഥ ആചാര്യ വരണം57 |
| 3.6.12 | ഉത്വിഗ് വരണം (Rutvik performing Abishekam)57 |
| 3.6.13 | 3 ആചാരൃസൃ ഋത്വിജാം ച സംകൽപഃ57 |
| 3.6.1 | 4 കലശാദിപൂജാ58 |
| 3.6.15 | 5 ശംഖപൂജാ59 |
| 3.6.16 | 5 ആത്മപൂജാ60 |
| 3.6.17 | 7 പീഠപൂജാ61 |
| 3.6.18 | 3 നന്ദികേശ്വര അനുജ്ഞാ61 |
| 3.7 | പഞ്ചകലശ സ്ഥാപനം61 |
| 3.7.1 | പശ്ചിമം61 |
| 3.7.2 | ഉത്തരം62 |

| | 3.7 | 7.3 ദക്ഷിണം | 62 |
|----|------|------------------------------------|-----|
| | 3.7 | 7.4 പൂർവം | 62 |
| | 3.7 | 7.5 മദ്ധൃമം | 62 |
| | 3.7 | 7.6 ഉപചാരപൂജാ | 63 |
| 4 | | മഹാന്യാസഃ | 66 |
| | 4.1 | കലശ പ്രതിഷ്ഠാപന മന്ത്രാഃ | 66 |
| | 4.2 | മഹാന്യാസ മന്ത്രപാഠ പ്രാരംഭഃ | 70 |
| 5 | | പ്രഥമ നൃാസഃ | 71 |
| 6 | | ദ്വിതീയ നൃാസഃ | 77 |
| 7 | | തൃതീയന്യാസഃ | |
| | 7.1 | ഹംസ ഗായത്രീ | 78 |
| | 7.2 | ദിക് സംപുടനൃാസഃ | 80 |
| | 7.3 | ഷോഡശാംഗ രൗദ്രീകരണം | 85 |
| 8 | | ചതുർത്ഥ ന്യാസഃ | 88 |
| | 8.1 | മനോ ജ്യോതിഃ | 88 |
| | 8.2 | ആത്മരക്ഷാ | 89 |
| 9 | | പഞ്ചമ നൃാസഃ | 91 |
| | 9.1 | ശിവ സംകല്പഃ | 91 |
| | 9.2 | പുരുഷ സൂക്തം | 98 |
| | 9.3 | ഉത്തര നാരായണം | 100 |
| | 9.4 | അപ്രതിരഥം | 101 |
| | 9.5 | പ്രതി പൂരുഷദ്വയം | 104 |
| | 9.6 | ശത രുദ്രീയം | 106 |
| | 9.7 | പഞ്ചാംഗ ജപഃ | 108 |
| | 9.8 | അഷ്ടാങ്ഗ പ്രണാമഃ | 109 |
| | 9.9 | ധ്യാനം | 111 |
| 10 |) | ഷഷ്ഠ നൃാസഃ (ലഘു നൃാസഃ) | 112 |
| 11 | | രുദ്ര ജപം (Methods) | 115 |
| | 11.1 | First method | 115 |
| | 11.2 | Second method | 116 |
| | 11.3 | കുംഭ (ഏക കലശ) (പ്രധാന കലശ) സ്ഥാപനം | 117 |
| | 11.4 | (ഏകാദശ കലശ) സ്ഥാപനം | |
| | 11.5 | അഭിഷേക സ്നാന പീടം | |
| | | X17 | |

| ശീ ശക്തിപഞ്ചാക്ഷരീ മഹാമന്ത്ര <u>ം</u> | 118 |
|---------------------------------------|---------------------------------|
| വിദാനം | 120 |
| കലശേഷു ധ്യാനം | 120 |
| ആവാഹന മന്ത്രാഃ | 122 |
| For Eka kalasam / Ekadasa kalasam | 122 |
| മഹാഗണപതി ആവാഹനം | 123 |
| സുബ്രഹ്മണൃ ആവാഹനം | 123 |
| ദുർഗാ ദേവീ ആവാഹനം | 124 |
| മഹാവിഷ്ണു ആവാഹനം | 124 |
| | |
| മഹാസരസ്വതീ ആവാഹനം | 125 |
| സദ്ഗുരു ആവാഹനം | 125 |
| | |
| ശാസ്താ ആവാഹനം | 126 |
| അനന്ത (സർപ്പ രാജാ) ആവാഹനം | 126 |
| സൂരൃനാരായണ ആവാഹനം | 127 |
| നക്ഷത്ര ദേവതാ ആവാഹനം | 127 |
| നന്ദികേശ്വര ആവാഹനം | 128 |
| ആയുർദേവതാ ആവാഹനം | 128 |
| ശ്രീ രാമ ആവാഹനം | 128 |
| ശ്രീകൃഷ്ണ ആവാഹനം | 129 |
| | |
| പാണ പ്രതിഷ്ഠാ | 130 |
| വചാരം | 132 |
| | |
| പദക്ഷിണം | 152 |
| റമസ്കാരഃ | 154 |
| ചമക് പ്രാർത്ഥന | 157 |
| | |
| | |
| റണാനാം ത്വാ | 167 |
| | |
| ശീരുദ്ര ദശാക്ഷരീ മഹാമന്ത്രഃ | 168 |
| | ശീ ശക്തിപഞ്ചാക്ഷര് മഹാമന്ത്രഃ |

| 1 | 2.14 | തുദ്രം | 170 |
|----|--------|--------------------------------------------------|-------|
| 13 | De | etails of "Dravya sampradaayam" in Rudraikaadasi | ni182 |
| 14 | എ: | ുകാദശ ജപം | 183 |
| 1 | 4.1 | പ്രഥമ വാര അഭിഷേകം – ഗന്ധതൈലം | 183 |
| | 14.1.1 | ചമക അനുവാകഃ | 183 |
| | 14.1.2 | 2 ഉപചാര പൂജ | 183 |
| | 14.1.3 | 3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ | 184 |
| | 14.1.4 | 4 ആശീർവാദം | 185 |
| 1 | 4.2 | ദ്വിതീയവാര അഭിഷേകം – പഞ്ചഗവൃം | 186 |
| | 14.2.1 | 1 ദ്വിതീയ അനുവാകഃ | 186 |
| | 14.2.2 | 2 ഉപചാര പൂജ | 187 |
| | 14.2.3 | | |
| | 14.2.4 | 4 ആശീർവാദം | 188 |
| 1 | 4.3 | തൃതീയവാര അഭിഷേകം – പഞ്ചാമൃതം | |
| | 14.3.1 | 1 തൃതീയോ ടനുവാകഃ | 189 |
| | 14.3.2 | 2 ഉപചാര പൂജ | 189 |
| | 14.3.3 | | |
| | 14.3.4 | 4 ആശീർവാദം | 191 |
| 1 | 4.4 | തുരീയ (ചതുർത്ഥ) വാര അഭിഷേകം – ഘൃതം | 192 |
| | 14.4.1 | 8 | |
| | 14.4.2 | 2 ഉപചാര പൂജ | 192 |
| | 14.4.3 | 3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ | 193 |
| | 14.4.4 | 4 ആശീർവാദം | 194 |
| 1 | 4.5 | പഞ്ചമവാര അഭിഷേകം – ക്ഷീരം | 194 |
| | 14.5.1 | വ പഞ്ചമോ ടനുവാകഃ | 194 |
| | 14.5.2 | 2 ഉപചാര പൂജ | 195 |
| | 14.5.3 | 3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ | 195 |
| | 14.5.4 | 9 | |
| 1 | 4.6 | ഷഷ്പവാര അഭിഷേകം – ദധി | 197 |
| | 14.6.1 | 0 0 | |
| | 14.6.2 | 2 ഉപച ^{്റ} ര പൂജ | 198 |
| | 14.6.3 | | |
| | 14.6.4 | 4 ആശീർവാദം | 199 |
| | | | |

| 14.7 | സപ്തമവാര അഭിഷേകം – മധു | 200 |
|--------|-----------------------------------|-----|
| 14.7.1 | <u>ო</u> • | |
| 14.7.2 | ഉപച്ാര പൂജ | 200 |
| 14.7.3 | ള ഉപചാര മന്ത്രാഃ | 201 |
| 14.7.4 | 4 ആശീർവാദം | 202 |
| 14.8 | അഷ്പമവാര അഭിഷേകം – ഇക്ഷുരസം | 202 |
| 14.8.1 | | 202 |
| 14.8.2 | 2 ഉപചാര പൂജ | 203 |
| 14.8.3 | ദ ഉപചാര മന്ത്രാഃ | 203 |
| 14.8.4 | 4 ആശീർവാദം | 205 |
| 14.9 | നവമവാര അഭിഷേകം–നിംബതോയ രസം | 206 |
| 14.9.1 | നവമോ ടനുവാകഃ | 206 |
| 14.9.2 | 2 ഉപചാര പൂജ | 206 |
| 14.9.3 | ദ ഉപചാര മന്ത്രാഃ | 207 |
| 14.9.4 | 4 ആശീർവാദം | 208 |
| 14.10 | ദശമവാര അഭിഷേകം – നാളികേരജം | 209 |
| 14.10 | .1 ദശമോ ടനുവാകഃ | 209 |
| 14.10 | .2 ഉപചാര പൂജ | 209 |
| 14.10 | .3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ | 210 |
| 14.10 | .4 ആശീർവാദം | 212 |
| 14.11 | ഏകാദശവാര അഭിഷേകം – ഗന്ധതോയം | 213 |
| 14.11. | 1 ഏകാദശോ ടനുവാകഃ | 213 |
| 14.11. | 2 ഉപചാര പൂജ | 214 |
| 14.11. | 3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ | 214 |
| 14.11. | 4 ആശീർവാദം | 216 |
| 15 O | ണപതി ധൃാനം | 219 |
| 16 LU | ാീരുദ്രക്രമഃ | 220 |
| 16.1 | ശ്രീരുദ്രക്രമഃ – പ്രഥമോ ടനുവാകഃ | 220 |
| 16.2 | ശ്രീരുദ്രക്രമഃ–ദ്വിതീയോ ടനുവാകഃ | 227 |
| 16.3 | ശ്രീരുദ്രക്രമഃ–തൃതീയോ ടനുവാകഃ | 230 |
| 16.4 | ശ്രീരുദ്രക്രമഃ – ചതുർത്ഥോ ടനുവാകഃ | 234 |
| 16.5 | ശ്രീരുദ്രക്രമഃ പഞ്ചമോ ടനുവാകഃ | 237 |
| 16.6 | ശ്രീരുദ്രക്രമഃ ഷഷ്ടോ ടനുവാകഃ | 240 |
| | <u> </u> | |

| 46- | // a 9 a 2 / a 2 a 2 a 2 a 2 a 2 a 2 a 2 a 2 a | 2.12 |
|-------|------------------------------------------------|------|
| 16.7 | ശ്രീരുദ്രക്രമഃ – സപ്തമോ ടനുവാകഃ | |
| 16.8 | ശ്രീരുദ്രക്രമഃ – അഷ്ടമോ ടനുവാകഃ | |
| 16.9 | ശ്രീരുദ്രക്രമഃ – നവമോ ടനുവാകഃ | |
| 16.10 | ശ്രീരുദ്രക്രമഃ–ദശമോ ടനുവാകഃ | |
| 16.11 | ശ്രീരുദ്രക്രമഃ – ഏകാദശോ ടനുവാകഃ | |
| 16.12 | ത്ര്യം!ബകം ദ്ധയജാമഹേ | |
| 17 | ്ശീ ചമകക്രമഃ | |
| 17.1 | ശ്രീ ചമകക്രമഃ – പ്രഥമോ ടനുവാകഃ | |
| 17.2 | ശ്രീചമകക്രമഃ– ദ്വിതീയോ ടനുവാകഃ | 267 |
| 17.3 | ശ്രീചമകക്രമഃ– തൃതീയോ ടനുവാകഃ | 270 |
| 17.4 | ശ്രീചമകക്രമഃ– ചതുർത്ഥോ ടനുവാകഃ | 273 |
| 17.5 | ശ്രീചമകക്രമഃ– പഞ്ചമോ ടനുവാകഃ | 276 |
| 17.6 | ശ്രീചമകക്രമഃ– ഷഷ്പോ ടനുവാകഃ | 279 |
| 17.7 | ശ്രീചമകക്രമഃ – സപ്തമോ ടനുവാകഃ | 282 |
| 17.8 | ശ്രീചമകക്രമഃ – അഷ്ടമോ ടനുവാകഃ | 285 |
| 17.9 | ശ്രീചമകക്രമഃ – നവമോ ടനുവാകഃ | 287 |
| 17.10 | ശ്രീചമകക്രമഃ – ദശമോ ടനുവാകഃ | 289 |
| 17.11 | ശ്രീചമകക്രമഃ – ഏകാദശോ ടനുവാകഃ | 292 |
| 17.12 | ഇഡാ ദേവഹൂഃ | 296 |
| 18 n | ഏകോനസപ്തതൃധിക ശതസംഖ്യാക ഹോമം | |
| 18.1 | ചമക ഹോമഃ | 311 |
| 19 ഉ | ഉത്തരാങ്ഗ പൂജാ | 314 |
| 19.1 | കലശ ഉദ്വാപനം | |
| 19.1 | രുദ്ര ഏകദാശിനി / മഹാ രുദ്രം | 315 |
| 19.1 | • | |
| 19.1 | | |
| 19.1 | | |
| 19.1 | | |
| 19.1 | | |
| 19.1 | 2 0 | |
| 19.1 | | |
| 19.1 | 3 (1 | |
| 19.1 | • | |
| | (0) | , 6 |

| | | \\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\ |
|--------|---------------------------------|--------------------------------------------|
| 19.2 | കുംഭ /കലശ ഉദ്വാപനം | 322 |
| 19.2. | 1 കലശ ഉദ്വാപന മന്ത്രാഃ | 322 |
| 19.3 | അഭിഷേകം | 324 |
| 19.4 | അലങ്കാരം, അർചനാ, പൂജാ | 325 |
| 19.4. | .1 ബിലാഷ്ടകം | 325 |
| 19.4. | .2 ധൂപം | 326 |
| 19.4. | .3 ദീപം | 327 |
| 19.4. | .4 നൈവേദ്യം | 327 |
| 19.4. | .5 താംബൂലം | 328 |
| 19.4. | .6 പഞ്ചമുഖ ദീപം | 328 |
| 19.4. | .7 കർപൂരനീരാജനം | 329 |
| 19.4. | .8 മന്ത്ര പുഷ്പം | 330 |
| 19.4. | .9 പ്രദക്ഷിണ നമസ്കാരഃ | 333 |
| 19.4. | | |
| 19.4. | .11 ചതുർവേദ പാരായണം | 335 |
| 19.4. | .12 ആപസ്തംബ ശ്രൗത സൂത്ര, പുരാ |)ണ, വാകൃാഃ 336 |
| 19.5 | നന്ദികേശാര പൂജാ | 336 |
| 19.6 | ക്ഷമാ പ്രാർത്ഥനാ | |
| 20 m | വസ്തി വചനം | 340 |
| 20.1 | പ്രാശനം പ്രസാദ വിനിയോഗം , ദക്ഷി | ണ സ്വീകരണം .342 |
| 20.1. | 1 ശംഖതീർത്ഥ പ്രോക്ഷണം | 342 |
| 20.1. | 2 അഭിഷേക– തീർഥപ്രാശനം | 342 |
| 20.1. | 3 പഞ്ചഗവൃ പ്രാശനം | 342 |
| 20.1. | 4 പ്രസാദ വിനിയോഗം (to yajama | anan)342 |
| 20.1. | 2 | |
| 21 ആ | രവവപളനമാ | 345 |
| 21.1 | ശിവാഷ്ടോത്തര ശതനാമാവളിഃ | |
| 22 (U | രീ ബോധായനമഹർഷി പ്രണീതാനി | |
| സുത്രാ | ണി | 351 |

| ശിവ | സ്തുതി |
|-----|--------|
|-----|--------|

SECTION 1 - POORVANGAM

1 Introduction

1.1 Purpose

This book has been compiled, as our sincere and modest effort, to help Veda students and learners to conduct Pradosha Pooja, Rudraaabhishekam Rudra Ekadasani and Maharudram. This book has been compiled based on the actual experience and practices in poojas/functions. Our heartfelt and sincere thanks to various people who have contributed to the compilation of this book.

The main purpose of this book is to act as a reference guide and we have tried to provide the subjects in the order in which functions are generally performed. In spite of the same, differences in the order of chanting or additional chanting are followed. Please note that this book is **not Exhaustive**.

1.2 Language and Versions

This book has been prepared in Tamil, Malayalam and Sanskrit versions, with all comments and Notes in English.

1.3 Method of compilation

The main source of various Sukthams and Mahanyaasam has been from the books published in Taittiriya Sakhaa compiled and commented by Shri. Sayanacharya of 13th Century and Shri Bhatta Bhaskaracharya (period unknown). Their manuscript compilations were later converted into books by great Scholars. One of such sets of "Taittiriya" was printed and published during earlier 1900 A.D. at Govt. Branch Press, Mysore and another set later published under "Anandaashram Series". These Books were referred to by us as our primary source material for this Book.

In addition, we have also referred to standard and reputed publications and internet sites. (Please seek the guidance of your Guru)

1.4 Acknowledgement

Our sincere thanks to all for proof-reading, typing, guiding in completion of all the three Versions of this book.

In spite of careful efforts, some mistakes might have crept in. We sincerely request the users of the books to send their feedback on corrections to **vedavms@gmail.com**. It is our endeavour to make this book error-free / accurate.

1.5 Important Notes

- 1. This book is **not meant for any Self Learning** exercise. Veda Mantras and related rituals are to be learnt from respective Gurus to gain experience on the subject over a period of time through practice and observations.
- 2. This book is meant only for "Private Circulation".
- 3. It is more appropriate to chant Mantras that sing praise of Lord Parameshwara (or other Deities/Devataas that are worshipped) during the Upachara Puja (Deeparaadhanai) as a part of Ekadasa Japam. Over a period of time, many Vedic Pandits/Scholars have added mantras that seek Abhishtas (wishes) from Deities/Devataas and many of them are in vogue today. We have included 10 sets of upachara mantras in that section which are normally chanted as a practice. Experienced Acharayas may chant different set of Mantras which are not given here.
- 4. Krama Paatam (Sections 15,16 and 17) has been given in a two-column table for convenience of the reader, representing two teams which render Kramam. One team starts rendering their Paatam after the other team just completes their Paatam.

Please note that when a padam is split, there is separator that is given as '-'. As per convention please give a pause, when a separator is there.

The rendering needs to be extended/elongated for the **last part of the word/padam**, when it is a Dheerga Swaritam or Anudatta Swaram **and** the letter is a Dheerga letter (e.g. aa, ee, O,) **or** a Anuswaram (letters ending as tam, sam, sham etc. with a dot in Sanskrit.

This is indicated through a ">" (arrow pointing to the right). Kindly note there are slight differences in the Font size/format of Sanskrit, Malayalam and Tamil texts. The Method of elongation varies between few schools in actual practice. Please refer to your Guru for further clarifications on rendering. This book follows the convention of Sayanacharya's Krama Paatam.

1.6 RUDRAIKAADASINI KUMBHA STAPANAM.

East

| 10 BHAVOTBHAVAM | 1 MAHADEVAM | 2 SHIVAM |
|-----------------|----------------|--------------------|
| 9 DEVADEVAM | 11 ADITYATMAKA | 3 RUDRAM |
| 8 BHIMAM | RUDRAM | 4 SHAMKARAM |
| 7 VIJAYAM | 6 EESHAANAM | 5 NEELA LOHITAM |

West

2 Pooja Preparations

2.1 Some Basics

The Word "Rudra" means" the one who drives away all sins which are the root cause of sorrow/sufferings.

The form of Lord Shivais worshipped in Eleven Rudra forms (Ganams);

They are :-

- 1. Mahadevam, 2. Shivam, 3. Rudram, 4. Shankaram,
- 5. Neelalohitam, 6. Eeshaanam, 7. Vijayam, 8. Bheemam,
- 9. Devadevam, 10. Bhavotbhavam and 11. Adityaathmaka Rudram.

In Poojas, each Ganam is represented through a Kumbha/Kalasham. Please see the picture in the preceding page for the position of the Kumbha Kalashams for Rudra Ekadasani.

In Maharudram and Athirudram, 11 such Ganams are formed, each with the repective name of the Rudra shown above in 1 to 11 numbers.

The forms of Rudra worship includes Japa, Homa, Arachana, Abhisheka with Prathakshina /Namaskaaram.

Normally, the Homam is performed on the strength/count total Rudrams, and normally the Homa count is of 10 percent of the Japam.

2.2 Forms of Rudra Japam

There are five forms (sampradaaya) to chants ShreeRudra japa.

<u>The 1st form-</u> We recite the full Shree Rudram (all 11 anuvaakams) and then full Chamakam (all 11 anuvaakams) once. This is called "NAMAKAM". This is for nithya paaraayanam.

2nd Form

Shree Rudram chanted full Once (all 11 anuvaakams) + 1st Anuvaakam of Chamakam only, and Shree Rudram full for 2nd round + 2nd Anuvaakam of Chamakam only, Shree Rudram full of 3rd round + 3rd Anuvaakam of Chamakam.

If one person chants in this order full Shree Rudram 11 times and each corresponding Chamaka one anuvaakam then this is called "Rudram". (Total count is 1 person x 11 Rudrams + 1 full Chamakam = 11 ShreeRudrams + 1 Chamakam

<u>3rd Form Rudra Ekadasani</u> - 11 times the chants as per Form number 2 is Rudraikaadasini . 11 Rutviks required.

Total count = 11 persons x 11 shree Rudrams =121 Rudrams 11 persons x 1 Chamakam = 11 Chamakam

4th Form Maharudram-This is equivalent to 11 "Rudraikaadasini". 121 persons required

Total count = 121 persons x 11 shree Rudrams =1331 Rudrams

121 persons x 1 Chamakam = 121 Chamakam

Eleven Ganams are created each with 11 Kalashams each representing the 11 individual Ganas. In each of the Ganas, 11 Rutviks recite 11 Rudram and One Chamakam. The Number of Rutviks is 121. Homam shall be performed by 12 (one additional) Rutvik by repeating Rudra Homam 11 times and Chamaka Homam once, taking the count of Homam to 132 Rudrams and 12 Chamakams. This is normally performed in a single day over a time span of 7/8 hours.

<u>5th Form Athirudram</u>: This is equivalent to 11 Maharudrams. 121 Rutviks chant 121 times Rudram and 11 times Chamakam over 11 days or 5/6 days (as per the event is planned).

Total count = 121 persons x 121 shree Rudrams x 11 =14641 Shree Rudrams.

121 persons x 11Chamakam=1331 Chamakams.

The Homam shall be performed by 12 Rutviks

2.3 Sadyo Jaatham

There are two practices, either to install additional Pancha Kalashams(5) or a single(Eka) Sadyo Jaatha Kalasham.

In case of (Eka) Sadyo Jaatha Kalasham, it is normally kept near the Abhisheka-Sthanam. The aavaahanam is done separately for this Kalasham during Kumbha/Kalasha aavaahanam. Abhishekam to the deity shall be performed first with this Kalasha jalam after Ekadasa japam/all dravya abhishekam. Therefore, the udvaapanam shall be performed separately to this Kalasham after Ekadasa Japam. "Namo Brahmane...." shall be chanted three times during the Udvaapanam.

When Pancha Kalashams (Paschimam-Sadyo Jaatham, Uttharam, Dakshinam, Poorvam and Madhyamam) are installed, then Sadyo Jaatham will be Paschimam Kalasham. The first abhisekham shall be performed from these Pancha Kalashams after Ekadasa japam/all dravya abhishekam.

In case of Rudra Ekadasani, the main Kumbham/Kalasha Jala Abhishekam to the Deities are performed after the Rudra Kramaarchana, Homa and the final udvaapanam of the Kalashams. In case of Rudraekadasani, conducted as a part of Shastyapthapoorthi or Sadaabhisekham, main Kumbha/Kalasha jala abhishekam is perfomed to the Yajamaana Dampathi.

2.4 Star (Nakshatra) and Rasi Table:

| Serial Star Name in Tamil / Star Name in Ra | | | | |
|---------------------------------------------|----------------------------|---------|----------------------|-----------|
| No | Malayalam | Padam | Sanskrit | |
| 1 | Ashvathi | 1,2,3,4 | Ashwini | Mesha |
| 2 | Bharani | 1,2,3,4 | Apa-Bharani | Mesha |
| 3 | Karthikai/Karthika | 1 | Krittikaa | Mesha |
| 4 | Karthikai/Karthika | 2,3,4 | Krittikaa | Vrushabha |
| 5 | Rohini | 1,2,3,4 | Rohini | Vrushabha |
| 6 | Mrugasheersham/Makeeryam | 1,2 | Mrugashirsha | Vrushabha |
| 7 | Mrugasheersham/Makeeryam | 3,4 | Mrugashirsha | Mithuna |
| 8 | Thiruvathirai/Thiruvathira | 1,2,3,4 | Aardraa | Mithuna |
| 9 | Punarpoosam | 1,2,3 | Punarvasu | Mithuna |
| 10 | Punarpoosam | 4 | Punarvasu | Kataka |
| 11 | Poosam | 1,2,3,4 | Pushya | Kataka |
| 12 | Aailyam | 1,2,3,4 | Aashleshaa | Kataka |
| 13 | Magham | 1,2,3,4 | Magha | Simha |
| 14 | Pooram | 1,2,3,4 | Poorva Phalgunee | Simha |
| 15 | Utthiram | 1 | Utthara Phalgunee | Simha |

ശിവ സ്തുതി

| 23 Anusham 1,2,3,4 Anuradha Vrishchika | | | | | |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----|---------------------|---------|--------------|------------|
| 18 Chitthirai/Chitra 1,2 Chitra Kanya 19 Chitthirai/Chitra 3,4 Chitra Thula 20 Swathi 1,2,3,4 Swathi Thula 21 Vishakam/Vishaka 1,2,3 Vishaka Thula 22 Vishakam/Vishaka 4 Vishaka Vrishchika 23 Anusham 1,2,3,4 Anuradha Vrishchika 24 Kettai/Trikketta 1,2,3,4 Jyeshta Vrishchika 25 Moolam 1,2,3,4 Moola Dhanur 26 Pooradam 1,2,3,4 Poorvashada Dhanur 27 Utharadam/Uthiradam 1 Uthirashada Dhanur 28 Utharadam/Uthiradam 2,3,4 Uthirashada Makara 29 Thiruvonam 1,2,3,4 Sravana Makara 30 Avittam 1,2 Shravishta Makara 31 Avittam 3,4 Shravishta Kumbha 32 Chathayam 1,2,3,4 Shatabhishak Kumbha 33 Poorattathi 1,2,3 Poorva Proshtapada Meena 34 Poorattathi 1,2,3,4 Uthira 35 Uthirattathi 1,2,3,4 Uthira 36 Poorva Proshtapada Meena | 16 | Utthiram | 2,3,4 | | Kanya |
| 19 Chitthirai/Chitra 3,4 Chitra Thula 20 Swathi 1,2,3,4 Swathi Thula 21 Vishakam/Vishaka 1,2,3 Vishaka Thula 22 Vishakam/Vishaka 4 Vishaka Vrishchika 23 Anusham 1,2,3,4 Anuradha Vrishchika 24 Kettai/Trikketta 1,2,3,4 Jyeshta Vrishchika 25 Moolam 1,2,3,4 Moola Dhanur 26 Pooradam 1,2,3,4 Poorvashada Dhanur 27 Utharadam/Uthiradam 1 Uthirashada Dhanur 28 Utharadam/Uthiradam 2,3,4 Uthirashada Makara 29 Thiruvonam 1,2,3,4 Sravana Makara 30 Avittam 1,2 Shravishta Makara 31 Avittam 3,4 Shravishta Kumbha 32 Chathayam 1,2,3,4 Shatabhishak Kumbha 33 Poorattathi 1,2,3 Poorva Proshtapada 34 Poorattathi 4 Poorva Proshtapada 35 Uthirattathi 1,2,3,4 Uthira Proshtapada | 17 | Hastham | 1,2,3,4 | Hastha | Kanya |
| 20Swathi1,2,3,4SwathiThula21Vishakam/Vishaka1,2,3VishakaThula22Vishakam/Vishaka4VishakaVrishchika23Anusham1,2,3,4AnuradhaVrishchika24Kettai/Trikketta1,2,3,4JyeshtaVrishchika25Moolam1,2,3,4MoolaDhanur26Pooradam1,2,3,4PoorvashadaDhanur27Utharadam/Uthiradam1UthirashadaDhanur28Utharadam/Uthiradam2,3,4UthirashadaMakara29Thiruvonam1,2,3,4SravanaMakara30Avittam1,2ShravishtaKumbha31Avittam3,4ShravishtaKumbha32Chathayam1,2,3,4ShatabhishakKumbha33Poorattathi1,2,3Poorva ProshtapadaKumbha34Poorattathi4Poorva ProshtapadaMeena35Uthirattathi1,2,3,4Uthira ProshtapadaMeena | 18 | Chitthirai/Chitra | 1,2 | Chitra | Kanya |
| 21Vishakam/Vishaka1,2,3VishakaThula22Vishakam/Vishaka4VishakaVrishchika23Anusham1,2,3,4AnuradhaVrishchika24Kettai/Trikketta1,2,3,4JyeshtaVrishchika25Moolam1,2,3,4MoolaDhanur26Pooradam1,2,3,4PoorvashadaDhanur27Utharadam/Uthiradam1UthirashadaDhanur28Utharadam/Uthiradam2,3,4UthirashadaMakara29Thiruvonam1,2,3,4SravanaMakara30Avittam1,2ShravishtaKumbha31Avittam3,4ShravishtaKumbha32Chathayam1,2,3,4ShatabhishakKumbha33Poorattathi1,2,3Poorva ProshtapadaKumbha34Poorattathi4Poorva ProshtapadaMeena35Uthirattathi1,2,3,4Uthira ProshtapadaMeena | 19 | Chitthirai/Chitra | 3,4 | Chitra | Thula |
| 22Vishakam/Vishaka4VishakaVrishchika23Anusham1,2,3,4AnuradhaVrishchika24Kettai/Trikketta1,2,3,4JyeshtaVrishchika25Moolam1,2,3,4MoolaDhanur26Pooradam1,2,3,4PoorvashadaDhanur27Utharadam/Uthiradam1UthirashadaDhanur28Utharadam/Uthiradam2,3,4UthirashadaMakara29Thiruvonam1,2,3,4SravanaMakara30Avittam1,2ShravishtaKumbha31Avittam3,4ShravishtaKumbha32Chathayam1,2,3,4ShatabhishakKumbha33Poorattathi1,2,3Poorva ProshtapadaKumbha34Poorattathi4Poorva ProshtapadaMeena35Uthirattathi1,2,3,4Uthira ProshtapadaMeena | 20 | Swathi | 1,2,3,4 | Swathi | Thula |
| 23Anusham1,2,3,4AnuradhaVrishchika24Kettai/Trikketta1,2,3,4JyeshtaVrishchika25Moolam1,2,3,4MoolaDhanur26Pooradam1,2,3,4PoorvashadaDhanur27Utharadam/Uthiradam1UthirashadaDhanur28Utharadam/Uthiradam2,3,4UthirashadaMakara29Thiruvonam1,2,3,4SravanaMakara30Avittam1,2ShravishtaKumbha31Avittam3,4ShravishtaKumbha32Chathayam1,2,3,4ShatabhishakKumbha33Poorattathi1,2,3Poorva ProshtapadaKumbha34Poorattathi4Poorva ProshtapadaMeena35Uthirattathi1,2,3,4Uthira ProshtapadaMeena | 21 | Vishakam/Vishaka | 1,2,3 | Vishaka | Thula |
| 24Kettai/Trikketta1,2,3,4JyeshtaVrishchika25Moolam1,2,3,4MoolaDhanur26Pooradam1,2,3,4PoorvashadaDhanur27Utharadam/Uthiradam1UthirashadaDhanur28Utharadam/Uthiradam2,3,4UthirashadaMakara29Thiruvonam1,2,3,4SravanaMakara30Avittam1,2ShravishtaMakara31`Avittam3,4ShravishtaKumbha32Chathayam1,2,3,4ShatabhishakKumbha33Poorattathi1,2,3Poorva ProshtapadaKumbha34Poorattathi4Poorva ProshtapadaMeena35Uthirattathi1,2,3,4Uthira ProshtapadaMeena | 22 | Vishakam/Vishaka | 4 | Vishaka | Vrishchika |
| 25 Moolam 1,2,3,4 Moola Dhanur 26 Pooradam 1,2,3,4 Poorvashada Dhanur 27 Utharadam/Uthiradam 1 Uthirashada Dhanur 28 Utharadam/Uthiradam 2,3,4 Uthirashada Makara 29 Thiruvonam 1,2,3,4 Sravana Makara 30 Avittam 1,2 Shravishta Makara 31 Avittam 3,4 Shravishta Kumbha 32 Chathayam 1,2,3,4 Shatabhishak Kumbha 33 Poorattathi 1,2,3 Poorva Proshtapada Kumbha Proshtapada S Uthirattathi 1,2,3,4 Uthira Proshtapada Meena Proshtapada | 23 | Anusham | 1,2,3,4 | Anuradha | Vrishchika |
| 26Pooradam1,2,3,4PoorvashadaDhanur27Utharadam/Uthiradam1UthirashadaDhanur28Utharadam/Uthiradam2,3,4UthirashadaMakara29Thiruvonam1,2,3,4SravanaMakara30Avittam1,2ShravishtaMakara31`Avittam3,4ShravishtaKumbha32Chathayam1,2,3,4ShatabhishakKumbha33Poorattathi1,2,3Poorva ProshtapadaKumbha34Poorattathi4Poorva ProshtapadaMeena35Uthirattathi1,2,3,4Uthira ProshtapadaMeena | 24 | Kettai/Trikketta | 1,2,3,4 | Jyeshta | Vrishchika |
| 27Utharadam/Uthiradam1UthirashadaDhanur28Utharadam/Uthiradam2,3,4UthirashadaMakara29Thiruvonam1,2,3,4SravanaMakara30Avittam1,2ShravishtaMakara31`Avittam3,4ShravishtaKumbha32Chathayam1,2,3,4ShatabhishakKumbha33Poorattathi1,2,3Poorva ProshtapadaKumbha34Poorattathi4Poorva ProshtapadaMeena35Uthirattathi1,2,3,4Uthira ProshtapadaMeena | 25 | Moolam | 1,2,3,4 | Moola | Dhanur |
| 28Utharadam/Uthiradam2,3,4UthirashadaMakara29Thiruvonam1,2,3,4SravanaMakara30Avittam1,2ShravishtaMakara31`Avittam3,4ShravishtaKumbha32Chathayam1,2,3,4ShatabhishakKumbha33Poorattathi1,2,3Poorva ProshtapadaKumbha34Poorattathi4Poorva ProshtapadaMeena35Uthirattathi1,2,3,4Uthira ProshtapadaMeena | 26 | Pooradam | 1,2,3,4 | Poorvashada | Dhanur |
| 29Thiruvonam1,2,3,4SravanaMakara30Avittam1,2ShravishtaMakara31`Avittam3,4ShravishtaKumbha32Chathayam1,2,3,4ShatabhishakKumbha33Poorattathi1,2,3Poorva ProshtapadaKumbha34Poorattathi4Poorva ProshtapadaMeena35Uthirattathi1,2,3,4Uthira ProshtapadaMeena | 27 | Utharadam/Uthiradam | 1 | Uthirashada | Dhanur |
| 30Avittam1,2ShravishtaMakara31`Avittam3,4ShravishtaKumbha32Chathayam1,2,3,4ShatabhishakKumbha33Poorattathi1,2,3Poorva ProshtapadaKumbha34Poorattathi4Poorva ProshtapadaMeena35Uthirattathi1,2,3,4Uthira ProshtapadaMeena | 28 | Utharadam/Uthiradam | 2,3,4 | Uthirashada | Makara |
| 31`Avittam3,4ShravishtaKumbha32Chathayam1,2,3,4ShatabhishakKumbha33Poorattathi1,2,3Poorva ProshtapadaKumbha34Poorattathi4Poorva ProshtapadaMeena35Uthirattathi1,2,3,4Uthira ProshtapadaMeena | 29 | Thiruvonam | 1,2,3,4 | Sravana | Makara |
| 32 Chathayam 1,2,3,4 Shatabhishak Kumbha 33 Poorattathi 1,2,3 Poorva Proshtapada Kumbha 34 Poorattathi 4 Poorva Proshtapada 35 Uthirattathi 1,2,3,4 Uthira Proshtapada Meena Proshtapada | 30 | Avittam | 1,2 | Shravishta | Makara |
| 33 Poorattathi 1,2,3 Poorva Proshtapada Kumbha Proshtapada 4 Poorva Proshtapada Meena Proshtapada 55 Uthirattathi 1,2,3,4 Uthira Proshtapada Proshtapada | 31` | Avittam | 3,4 | Shravishta | Kumbha |
| 34 Poorattathi 4 Poorva Meena Proshtapada 35 Uthirattathi 1,2,3,4 Uthira Poorkapada Proshtapada | 32 | Chathayam | 1,2,3,4 | Shatabhishak | Kumbha |
| Proshtapada 35 Uthirattathi 1,2,3,4 Uthira Proshtapada Meena Proshtapada | 33 | Poorattathi | 1,2,3 | | Kumbha |
| Proshtapada | 34 | Poorattathi | 4 | | Meena |
| 36 Revathi 1,2,3,4 Revathee Meena | 35 | Uthirattathi | 1,2,3,4 | | Meena |
| | 36 | Revathi | 1,2,3,4 | Revathee | Meena |

2.4.1 Days of the Week:

Sunday - Bhanu Vasaram

Monday - Indu or Soma Vasaram

Tuesday - Bowma Vasaram Wednesday - Sowmya Vasaram

Thursday - Guru Vasaram

Friday - Brigu (Shukra) Vasaram Saturday - Sthira (Mandha) Vasaram

2.4.2 Masam, Ruthu, Ayanam

The start of the Hindu month may vary from 13/14th day of the English Calendar Month to the 18th day of the Calendar month. So kindly refer to the Calendar published in Tamil or Malayalam for the current month.

| Middle of the English Month | Masam name in Tamil / Malayalam | Masam | Ruthu | Ayanam |
|--------------------------------|---------------------------------------|-----------|----------|--------------|
| Apr - May | Chithirai/ Medam | Mesha | Vasanta | Uttarayana |
| May June | Vaikasi/ Edavam | Vrushabha | Vasanta | Uttarayana |
| June July | Aani/Mithunam | Mithuna | Greeshma | Uttarayana |
| July August | Adi / Karkatakam | Kataka | Greeshma | Dakshinayana |
| August Sept. | Aavani/ Chingam | Simha | Varsha | Dakshinayana |
| Sept. October | Purattaasi/ Kanni | Kanya | Varsha | Dakshinayana |
| Oct November | Aippasi/ Thulam | Tula | Sarath | Dakshinayana |
| Nov - December | Karthikai/ Vruschikam | Vrischika | Sarath | Dakshinayana |
| Dec. Januaray | Margazhi/ Dhanu | Dhanur | Hemanta | Dakshinayana |
| Jan February | Thai/Makara | Makara | Hemanta | Uttarayana |
| Feb - March | Maasi/Kumbha | Kumbha | Shishira | Uttarayana |
| March - April | Panguni/ Meenam | Meena | Shishira | Uttarayana |

3 പൂർവാംഗ പൂജാ

3.1 <u>പൂജാ പ്രാരംഭ</u>ഃ

3.1.1 <u>ഭാഗൃ സൂക്തം</u>

(TB 2.9.8.7)

```
പ്രാതരഗ്നിം പ്രാതരിന്ദ്രം ഹവാമഹേ പ്രാതർ മിത്രാവരുണാ
പ്രാതരശ്വിനാ ।
പ്രാതർ ഭഗം പൂഷണം ബ്രഹ്മണസ്പതിം പ്രാതസ്സോമമുത
രുദ്ര⊍് ഹുവേമ ॥ 1
പ്രാതർജിതം ഭഗമുഗ്രം ഹുവേമ വയം പുത്രമദിതേരോ
വിധർതാ ।
ആദ്ധശ്ചിദൃം മന്യമാന–സ്തുരശ്ചിദ് രാജാ ചിദൃം ഭഗം
ഭക്ഷീതൃാഹ ॥ 2
ഭഗ പ്രണേതർ ഭഗ സതൃരാധോ ഭഗേമാം ധിയമുദവ ദദന്നു ।
ഭഗ പ്ര ണോ ജനയ ഗോഭിരശൈർ ഭഗ പ്ര നൃഭിർ
നൃവന്തസ്സ്യാമ ॥ 3
ഉതേദാനീം ഭഗവന്ത–സ്സ്യാമോത പ്രപിത്വ ഉത മദ്ധ്യേ അഹ്നാം ।
ഉതോദിതാ മഘവൻഥ് സൂരൃസ്യ വയം ദേവാനാഴ്
സുമതൗ സ്യാമ ॥ 4
ഭഗ് ഏവ ഭഗ്വാഴ് അസ്തു ദേവാസ്തേന വയം ഭഗവന്തസ്സ്യാമ ഭ
തം ത്വാ ഭഗ സർവ ഇജ്ജോഹവീമി സ നോ ഭഗ
പുരഏതാ ഭവേഹ ॥ 5
```

സമലാരായോഷസോ നമന്ത ദധിക്രാവേവ ശുചയേ പദായ ദ അർവാചീനം വസുവിദം ഭഗന്നോ രഥമിവാശാ വാജിന ആ വഹന്തു ല 6 അശാവതീർ ഗോമതീർ ന ഉഷാസോ വീരവതീ– സ്സ്ദമുച്ഛന്തു ഭദ്രാഃ । ഘൃതം ദുഹാനാ വിശ്വതഃ പ്രപിനാ യൂയം പാത സ്വസ്തിഭി–സ്സദാ നഃ ല 7 യോ മാടഗ്നേ ഭാഗിന്യ് സന്തമഥാ ഭാഗം ചികീർ.ഷതി । അഭാഗ–മഗ്നേ തം കുരു മാമഗ്നേ ഭാഗിനം കുരു ല 8

3.1.2 <u>ആചമൂ , പവിത്രം സ്വീകൃതൃ</u>

ആഗമനാർത്ഥം തു ദേവാനാം ഗമനാർത്ഥം തു രക്ഷസാം । ദേവതാ പൂജാർത്ഥായ ഘണ്റനാദം കരോമൃഹം ॥

(ഇതി ഘണ്റനാദം കൃത്വാ)

ള്ളുാസ്ത ഹ്വൈദർ നമസോപ്പ-സദ്യ ദ മിത്രം ദേവം മിത്രധേയ്ന്നോ അസ്തു ദ അനൂരാധാൻ. ഹവിഷാ വർദ്ധയ്ന്തഃ ദ ശതം ജീവേമ ശരദസ്സവീരാഃ ॥ (പവിത്രം ധൃത്വാ) നമസ്സദസേ നമസ്സദസ്പ്തയേ നമഃ സഖിനാം പുരോഗാണാം ചക്ഷുഷേ നമോ ദിവേ നമഃ പൃഥിവ്യെ । ഹരിഃ ഓം । (TS 3.2.4.4) സർവേദ്യോ ബ്രാഹ്മണേദ്യോ നമഃ । (അക്ഷതാൻ വികീര്യ)

3.1.3 <u>അനുജ്ഞാ</u>

അശേഷേ ഹേ പരിഷത് ഭവത് പാദമൂലേ മയാ സമർപിതാം ഇമാം സൗവർണീം യത്കിഞ്ചത് ദക്ഷിണാം യഥോക്ത ദക്ഷിണാമിവ സ്വീകൃത്യ I ഇദം സാംബപരമേശ്വര പൂജാ കർമകർത്തും യോഗ്യതാ സിദ്ധിം അനുഗ്രഹാണ I

(ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം –"യോഗൃതാ സിദ്ധിരസ്തു")

3.1.4 അനൂജ്ഞാ – പ്രദക്ഷിണ മന്ത്രാഃ

ധ്രൂവം തേ രാജാ വരുണോ ധ്രൂവം ദേവോ ബൃഹസ്പതിഃ ഭ ധ്രൂവം ത ഇന്ദ്ര–ശ്ചാഗ്നിശ്ച രാഷ്ട്രം ധാരയതാം ധ്രൂവം ॥ 1 (RV.10.173.5)

പർവത ഇവാവിചാചലിഃ । ഇന്ദ്ര ഇവേഹ ധ്രുവസ്തിഷ്ഠ । ഇഹ രാഷ്ട്രമു ധാരയ । അഭിതിഷ്ട പൃതനൃതഃ । അധരേ സന്തു ശത്രവഃ । ഇന്ദ്ര ഇവ വൃത്രഹാ തിഷ്ഠ । 2 (TB 2.4.2.9)

ദേവീം ്വാച്–മജനയന്ത ദേവാഃ । താം ്വിശ്വരൂപാഃ പശവോ വദന്തി । സാനോ മന്ദ്രേഷമൂർജം ദുഹാനാ । ധേനുർവാഗ്വസ്മാനുപ സുഷ്ട്രുതെതു ॥ 3 (TB 2.4.6.10)

ആരംഭകാല മുഹൂർത്തഃ സുമുഹൂർത്തോസ്ത്വിതി ഭവന്തോനുഹ്ണന്തൂ । (പ്രതിവചനം – "സുമൂഹുർതോസ്തു, സുപ്രതിഷ്ഠിതമസ്തു ") യേ അർവാങുതവാ പുരാണേ വേദം ്്വിദ്വായ് സ്മഭിതോ വദന്ത്യാദിതൃ മേവ തേ പരിവദന്തി സർവേ അഗ്നിം ദ്വിതീയം തൃതീയം ച ഹു്സമിതി യാവതീർ വൈ ദേവതാസ്താ സ്റ്റർവാ വേദ വിദി ബ്രാഹ്മണേ വസന്തി തസ്താദ് ബ്രാഹ്മണേഭ്യോ വേദവിദ്ഭയോ ദിവേ ദിവേ നമസ്കുര്യാന്നാശ്ലീല–ങ്കീർതയേദേതാ ഏവ ദേവതാം പ്രീണാതി **u 4 (TA 2.15.1)** നമോ മഹദ്ഭ്യോ നമോ അർഭകേഭ്യോ നമോ യുവദ്ഭ്യോ നമ ആശിനേഭ്യഃ । യജാമ ദേവാൻ യദിശക്സവാ മമാ ജൃായസഃ ശം സമാ വൃക്ഷി ദേവാഃ ॥ 5 (RV 1.27.13) സദസസ്പതി മദ്ഭുതം പ്രിയ–മിന്ദ്രസ്വ കാമൃം । സനിം മേധാമയാസിഷം II 6 (TA.6.1.4) സപ്രഥ സഭാം മേ ഗോപായ । യേ ച സഭ്യാ സ്സഭാസദഃ । താനിന്ദ്രിയാവതഃ കുരു । സർവമായു–രുപാസതാം । അഹേ ബുധ്നിയ മന്ത്രം മേ ഗോപായ । യമൃഷയസ്സ്ലെ–വിദാ വിദുഃ । ഋച സ്റ്റാമാനി യജൂ v്ഷി । സാ ഹി ശ്രീരമൃതാ സതാം । 7 (TB 1.2.1.26) അഗ്നിസ്തു വിശ്രവസ്തമം തുവി ബ്രഹ്മാണമുത്തമം । അതൂർത്തം ശ്രാവയത്പതിം പുത്രം ദദാതി ദാശുഷേ । **8 (RV.5.25.5)** നമഃ സഭാഭൃ സഭാപതിഭൃശ്ച വോ നമഃ ॥ 9

അശേഷേ ഹേ പരിഷത് ഭവത് പാദമൂലേ മയാ സമർപിതാം ഇമാം സൗവർണീം യത്കിഞ്ചത് ദക്ഷിണാം യഥോക്ത ദക്ഷിണാമിവ സ്വീകൃത്യ 1 ഇദം സാംബപരമേശ്വര പൂജാ കർമകർത്തും യോഗൃതാ സിദ്ധിം അനുഗ്രഹാണ 1

(ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം –"യോഗൃതാ സിദ്ധിരസ്തു")

3.1.5 <u>അനുജ്ഞാ (Rudra Ekadasini)</u>

(This Anujgya is ideally used for Rudra Ekadasini. However, appropriate changes can be made in the Sankhya (counts) for Japam/Homam in case of Maharudram)

ആചമ്യ 1

| ശുക്ലാംബരധരം വിഷ്ണും ശശിവർണം ചതുർഭുജം പ്രസന്ന വദനം |
|----------------------------------------------------------|
| ധ്യായേത് സർവ വിഘ്നോപശാന്തയേ । മമോപാത്ത സമസ്ത |
| ദുരിതക്ഷയദ്വാരാ ശ്രീ പരമേശ്വര പ്രീതൃർത്ഥം ശുഭേ ശോടനേ |
| മുഹൂർത്തേ, ആദ്യ ബ്രഹ്മണഃ, ദ്വിതീയ പരാർദ്ധേ, ശ്വേതവരാഹ |
| കല്പേ, വൈവസാത മനാന്തരേ, അഷ്ടാവിംശതി തമേ കലിയുഗേ, |
| പ്രഥമേ പാദേ, ജംബൂദ്വീപേ, ഭാരതവർഷേ, ഭരതഖണ്ഡേ, |
| മേരോഃ ദക്ഷിണേ പാർശ്വേ, ശകാബ്ലേ, അസ്മിൻ വർത്തമാനേ, |
| വൃവഹാരികേ പ്രഭവാദീനാം ഷഷ്പ്യാം സംവഥ്സരാണാം മദ്ധ്യേ |
| അയനേ നാമസംവഥ്സരേ്അയനേ ഋതൗ |
| മാസേപക്ഷേ(ശുഭതിഥൗ) |
| വാസരയുക്തായാംനക്ഷത്രയുക്തായാം ശുഭയോഗ |
| ശുഭകരണ ഏവം ഗുണ സകല വിശേഷണ വിശിഷ്ഠായാം അസ്യാം |
| ശുഭതിഥൗ മമോപാത്ത സമസ്ത ദുരിതക്ഷയദ്വാരാ |
| ശ്രീപരമേശ്വര പ്രീതൃർത്ഥം അനാദി അവിദൃാവാസനയാ |
| പ്രവർത്തമാനേ അസ്മിൻ മഹതി സംസാരചക്രേ വിചിത്രാഭിഃ |
| കർമഗതിഭിഃ വിചിത്രാസു പശു പക്ഷി മൃഗാദി യോനിഷു |
| പുനഃ പുനഃ അനേകദാ ജനിത്വാ, കേനാപി പുണൃകർമ വിശേഷേണ |
| ഇദാനീം തന മാനുഷ്യേ ദ്വിജന്മവിശേഷം പ്രാപ്തവതഃ |
| നക്ഷത്രേ രാശൗ ജാതസൃശർമണഃ മമ |
| സകുടുംബസ്യ, ജന്മാഭ്യാസാത് ജന്മപ്രഭൃതി ഏതത് ക്ഷണ പര്യന്തം |

ബാല്യേ വയസി കൗമാരേ യൗവനേ വാർദ്ധകേ ച ജാഗ്രത് സാപ്ന സുഷുപ്തി അവസ്ഥാസു, മനോവാക്കായ കർമേന്ദ്രിയ ജ്ഞാനേന്ദ്രിയ വ്യാപാരെം, കാമക്രോധ-ലോഭ-മോഹ-മദമാഥ്സരൈും, താക്ചക്ഷുഃ ശ്രോത്ര ജിഹാഘ്രാണ വാക്പാണി പാദപായു ഉപസ്ഥാഖ്യെഃ ദശഭിഃ ഇന്ദ്രിയെെം, മനോബുധി–ചിത്ത– അഹങ്കാരാഖ്യെഃ അന്തരിന്ദ്രിയേശ്ച കൃതാനാം, ഇഹജന്മനി ജന്മജന്മാന്തരേഷു വാ ജ്ഞാനതഃ അജ്ഞാനതോ വാ രഹസി പ്രകാശേഷു വാ സംഭാവിതാനാം പഞ്ച മഹാപാതകാനാം ഉപപാതകാനാം, ജ്ഞാനതഃ സകൃത്കൃതാനാം, അജ്ഞാനതഃ അസത്കൃതാനാം, ജ്ഞാനതഃ, അജ്ഞാനതശ്ച അഭ്യസ്താനാം, നിരന്തര അഭൃസ്താനാം, ചിരകാല അഭൃസ്താനാം , നിരന്തര ചിരകാല അഭൃസ്താനാം, ഏവം നവാനാം നവവിധാനാം, ബഹൂനാം ബഹുവിധാനാം, സർവേഷാം പാപാനാം, മദ്ധ്യേ സംഭാവിതാനാം സർവേഷാം പാപാനാം, സദൃഃ അപനോദനാർത്ഥം ആദിതൃാത്മകരുദ്ര പ്രസാദ സിദ്ധ്യർത്ഥം, മഹാദേവാദി ഏകാദശ അഭിന്നരൂപ ആദിത്യാത്മകരുദ്ര പ്രസാദേന, അസ്താകം സർവേഷാം ആദ്ധ്യാത്മിക ആധിഭൗതിക ആധിദൈവീക, നവനവ ജനിത താപത്രയ നിവൃത്യർത്ഥം ഏഭിഃ ബ്രാഹ്മണൈസ്റ്റഹ, മഹാർണ്ണവോക്ത പ്രകാരേണ, ആചാര്യമുഖേന ഋത്വിങ്മുഖേന ച , ഋഗൃജു–സ്സാമാഥർവണാഖ്യേഷു ചതുർഷു വേദേഷു മദ്ധ്യേ, ഏകാധിക ശതസംഖൃാക യജുശ്ശാഖാസു, ആദിഭൂത സംഹിതാശാഖാ അന്തർഭൂത അഗ്നികാണ്ഡ അന്തർ ഗതാനാം , സർവേഷു വേദേഷു, സർവാസു ഉപനിഷദ്സു, സ്മൃതീതിഹാസ പുരാണാദിഷു, സർവപാപ നിവർതകത്വേന, ദിവൃജ്ഞാന പ്രദതോന, മോക്ഷ പ്രദതോന ച, തത്രതത്ര ഉദ്ഘുഷ്ടാനാം "ചരമേഷ്ടകായാം ജുഹോതി" ഇതി ചരമേഷ്ട്രക ഉപയുക്താനാം, "ശതരുദ്രാൻ ജപേദൃസ്തു ധൃായമാനോ മഹേശ്വരം" ഇതി ശൈവ പുരാണ വചനേന, "യഃ ശതരുദ്രീയം അധീതേ , സ അഗ്നിപൂതോ" ഇതി കൈവല്യോപനിഷദ് വചനേന, "അഥ ഹൈനം ബ്രഹ്മചാരിണഃ ഊചുഃ । കിംജപ്യേന അമൃതത്വം നോ ഭവതി । സഹോവാച യാജ്ഞവൽകൃഃ ശതരുദ്രിയേണേതി । ഏതാനി ഹ വാ അമൃതസൃ നാമധേയാനി । ഏതൈർ ഹ വാ അമൃതോ ഭവതി । " ഇതി ജാബാലോപനിഷത് വചനേന ,

"രുദ്രാണാം ജപഹോമ അർച്ചനാ അഭിഷേകവിധിം വ്യാഖ്യാസ്യാമഃ" ഇത്യാദി ശ്രുതിസ്മ്യതി പുരാണവചന്റൈഃ പൂജാജപ ഹോമാദി കർമസു ഉപയുക്താനാം ഏകാദശ അനുവാക ആത്മകാനാം തത്ര "നമസ്തേ രുദ്രമനൃവേ ഇതി" പ്രഥമാനുവാകേ ദുഷ്ട്രസംഹാരാർത്ഥം സങ്കൃദ്ധ രുദ്രകോപ ആയുധാദിഭ്യഃ അഭയപ്രാർത്ഥനാ പ്രകാശകാനാം പഞ്ചദശ–സംഖ്യാകാനാം ഷോഡശോപചാര ഉപയുക്താനാം,

"നമോ ഹിരണ്യബാഹവേ ഇതൃാദി" അഷ്ഠാനുവാകേഷു വൈശ്വരൂപൃധ്യാന ഏകതോ–നമസ്കാര ഉഭയതോ–നമസ്കാര രൂപാണാം ഏകോന്നത്രിംശത് ഉത്തരശത സംഖ്യകാനാം ത്രിശത്യർച്ചനാ ഉപയുക്താനാം,

"ദ്രാപേ അന്ധസസ്പതേ" ഇതി ദശമാനുവാകേ ജാഗ്രത് സാപ്ന സുഷുപ്തി അവസ്താസു ജലപാത വിഷഭൂത ശത്രുമൃത്യു ജ്വരാദി സ്റ്റോടകാദി നാനാരോഗേഭ്യഃ നാനാഭിചാരേഭ്യഃ അഭയപ്രാർത്ഥനാ പ്രകാശകാനാം ദ്വാദശ സംഖൃാകാനാം, പ്രദക്ഷിണ ഉപയുക്താനാം "സഹസ്രാണി സഹസ്രശഃ" ഇതി ഏകദശാനുവാകേ സർവവ്യാപക രുദ്ര വിഭൂതി പ്രകാശകാനാം സാടനുഷംഗാണാം ത്രയോദശ സംഖൃാകാനാം നമസ്കാര ഉപയുക്താനാം, അഭീഫ്സിതാർത്ഥം യാചാനാസൂചക ചമകാനുവാക സംയുക്താനാം, മൂർതൃഷ്ടക മൂർതപഞ്ചക മൂർതിത്രയ അധിഷ്റാന പഞ്ചകൃത്യ വിധാന പഠീയസൃ, ശിവയാ ശൂലിനൃാ അധോരാഖൃായാ തനുവാ സർവോപാദാനതയാ സർവാത്മകതയാ സർവവേദ–ബോധിത സർവാത്മക സർവരീശ സകലധര പരമശിവാഖൃ സദാശിവ– ബ്രഹ്മമഞ്ച പരുകായമാണ പഞ്ചാക്ഷരാഖൃ മഹാമന്ത്രരത്ന മുഖൃകോശാനാം ശതരുദ്രീയാണാം ത്രേധാവിഭാഗദ്വയ ഷോഡാ വിഭാഗ ഷോഡശതാവിഭാഗ അഷ്ടാചത്വാരിംശധാ വിഭാഗ ഏകോനസപ്തതി അധിക ശതധാ വിഭാഗാനാം, ഷണ്ണാം വിഭാഗാനാം മദ്ധ്യേ, ഏകോന്നസപ്തതി അധിക ശതധാ വിഭാഗപക്ഷം ആശ്രിത്യ ശതാംശ ദശാംശ സംപൂർണ്ണ ഹോമാനാം മദ്ധ്യേ ദശാംശ ഹോമവിധാനേന ദ്വാത്രിശദുത്തരശത സംഖ്യാക നമക ചമക ജപാത്മക തദ് ദശാംശ പരിമിത ദ്വിചത്വാരിംശത് ഉത്തര ദ്വിസഹസ്ര സംഖ്യാക നമക ചമക ആഹുത്യാത്മകം അന്തേ വസോർധാരാ സഹിതം പ്രാച്യാംഗ ഉദീച്യാംഗ ഗോദാന

നാന്ദീശ്രാദ്ധ വൈഷ്ണവശ്രാദ്ധ ദശദാന സഹിതം കർമാനുഷ്ഠാന യോഗൃതാ സംപാതക പൂതത്വ സിദ്ധികര പ്രാജാപത്യ കൃഛ്ര പ്രത്യാമ്റ്റായ ഭൂത ഹിരണ്യദാന പൂർവകം സകല പാപനിവർത്തകം സർവാഭീഷ്ട്ര പ്രദായകം രുദ്രൈകാദശിന്യാഖ്യ മഹാപ്രായശ്ചിത്ത കർമകർത്തും യോഗൃതാസിദ്ധിഃ അസ്തിതി അനുഗ്രഹാണാ ॥

(യോഗൃതാ സിദ്ധിരസ്തു – ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതിവചനം)

3.2 <u>വിഘ്ലേശ്വരപൂജാ</u>

3.2.1 <u>ഘണ്ട പൂജാ</u>

ഘണ്ഠദേവതാഭ്യോ നമഃ । ഗന്ധപുഷ്പം സമർപയാമി । ആഗമനാർത്ഥം തു ദേവാനാം ഗമനാർത്ഥം തു രക്ഷസാം । ദേവതാ പൂജാനാർത്ഥായ ഘണ്ഠനാദം കരോമൃഹം ॥

(ഇതി ഘണ്റനാദം കൃത്വാ)

3.2.2 ആചമനം സങ്കല്പം

ആചമനം + ശുക്ലാംബരധരം വിഷ്ണും ശശിവർണം ചതുർഭുജം । പ്രസന്ന വദനം ധ്യായേത് സർവവിഘ്നോപ ശാന്തയേ । ഓം ഭൂം, ഓം ഭുവം, ഓഗ് സുവം, ഓം മഹം, ഓം ജനം, ഓം തപം, ഓഗ് സത്യം । ഓം തഥ്സ്വിതുർ വരേണ്യം । ഭർഗോദേവസ്യ് ധീമഹി । ധിയോ യോ നം പ്രചോദയാത് । ഓമാപോ ജ്യോതീരസോടമൃതം ബ്രഹ്മ ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । മമോപാത്ത സമസ്ത ദുരിതക്ഷയദ്വാരാ ശ്രീ പരമേശ്വര പ്രീത്യർത്ഥം, ശുഭേ ശോഭനേ മുഹൂർത്തേ ആദ്യബ്രഹ്മണം ദ്വിതീയ പരാർദ്ധേ ശ്വേതവരാഹകല്പേ വൈവസ്വത മന്വന്തരേ അഷ്ടാവിംശതിതമേ കലിയുഗേ പ്രഥമേ പാദേ ജംബൂദ്വീപേ

3.2.3 <u>ആവാഹനം ഉപചാരം</u>

ഓം ഗണാനാം ത്വാ ഗണപ്തി ് ഹവാമഹേ കവിം ക്വീനാ— മുപ്മശ്രവസ്തമം । ജേഷ്ട്രമാജം ബ്രഹ്മണാം ബ്രഹ്മണസ്പത ആ ന്നു ശൃൺവന്നൂതിഭിം സീദ്ദ സാദനം । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ ഹരിദ്രാബിംബേ സപരിവാരം വിഘ്നേശ്വരം ധൃായാമി , ആവാഹയാമി । വിഘ്നേശ്വരസൃ ഇദമാസനം । വിഘ്നേശ്വരായ നമഃ । പാദൃം സമർപയാമി । അർഘൃം സമർപയാമി । ആചമനീയം സമർപയാമി । മധുപർക്കം സമർപയാമി । സ്നാനം സമർപയാമി । സ്നാനാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । വസ്ത്രാർത്ഥം പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ഉത്തരീയാർത്ഥം പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ആഭരണാർത്ഥേ പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ദിവൃഗന്ധാൻ ധാരയാമി । ഹരിദ്രാകുംകുമം ധാരയാമി । അലങ്കരണാർത്ഥേ അക്ഷതാം സമർപയാമി । പഷ്പ്രൈ: പൂജയാമി ।

ഓം സുമുഖായ നമഃ I ഓം ഏകദന്തായ നമഃ I

ഓം കപിലായ നമഃ । ഓം ഗജകർണകായ നമഃ ।

ഓം ലംബോധരായ നമഃ I ഓം വികടായ നമഃ I

ഓം വിഘ്നരാജായ നമഃ । ഓം വിനായകായ നമഃ ।

ഓം ധൂമകേതവേ നമഃ I ഓം ഗണാദ്ധൃക്ഷായ നമഃ I

ഓം ഫാലചന്ദ്രായ നമഃ I ഓം ഗജാനനായ നമഃ I

ഓം വക്രതുണ്ഡായ നമഃ I ഓം ശൂർപ്പകർണായ നമഃ I

ഓം ഹേരംബായ നമഃ । ഓം സ്കന്ദ്രപൂർവജായ നമഃ ।

ഓം വിഘ്നേശ്വരായ നമഃ I ഓം ശ്രീ മഹാഗണപതയേ നമഃ II

നനാവിധ പരിമള പത്രപുഷ്പാണി സമർപയാമി ।

ധൂപാർത്ഥം പുഷ്പാണി സമർപയാമി ।

ദീപാർത്ഥം പുഷ്പാണി സമർപയാമി ।

3.2.4 <u>നൈവേദ്യം, പ്രാർത്ഥനാ</u>

ഓം ഭൂർഭുവസ്റ്റുവഃ । തഥ്സ്വിതുർ വരേണ്യം । ഭർഗോദ്ദേവസ്യ ധീമഹി । ധിയോ യോ നഃ പ്രചോദയാത് । ദേവ സവിതഃ പ്രസുവഃ । സത്യം ത്വർത്തേന പരിഷിഞ്ചാമി । ഓം വിഘ്നേശ്വരായ നമഃ ।

അമൃതം ഭവതു । അമൃതോപസ്തരണമസി ।

ഓം പ്രാണായ സ്വാഹാഃ I ഓം അപാനായ സ്വാഹാഃ I

ഓം വൃാനായ സ്വാഹാഃ । ഓം ഉദാനായ സ്വാഹാഃ । ഓം സമാനായ സ്വാഹാഃ । ഓം ബ്രഹ്മണേ സ്വാഹാഃ । ഓം വിഘ്നേശ്വരായ നമഃ । നാളികേരഖണ്ഡദ്വയം, കദളീഫലം നിവേദയാമി । മദ്ധ്യേ മദ്ധ്യേ അമൃതപാനീയം സമർപയാമി । അമൃതാപിധാനമസി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി ।

<u>താംബൂലം</u>

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ । പൂഗീഫലസമായുക്തം നാഗവല്ലി ദളൈർയുതം । കർപൂര–ചൂർണ സംയുക്തം താംബൂലം പ്രതിഗൃഹൃതാം । ഓം വിഘ്നേശ്വരായ നമഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി । (സമർപയാമി)

<u>ദീപാരാധനാ</u>

നമോ വ്രാതപതയേ, നമോ ഗണപതയേ, നമഃ പ്രമഥപതയേ, നമസ്തേ അസ്തു ലംബോദരാ–യൈകദന്തായ വിഘ്ന(വി)നാശിനേ, ശിവസുതായ, ശ്രീ വരദമൂർത്തയേ നമഃ ।

(അഥവാ)

രാജാധിരാജായ പ്രസഹൃ സാഹിന്നേ നമോ വയം
പ്രവ്യവണായ കുർമഹേ 1 സ മേ കാമാൻ കാമകാമായ മഹൃം 1
കാമേശ്വരോ വൈശ്രവണോ ദ്ദാതു 1 കുബേരായ വൈശ്രവണായ 1
മഹാരാജായ നമഃ 1 കർപൂര നീരാജനം പ്രദർശയാമി 1
നീരാജനാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി 1

യോടപാം പുഷ്പം ്വേദ് । പുഷ്പവാൻ പ്രജാവാൻ പശുമാൻ ഭവതി । ചന്ദ്രമാ വാ അപാം പുഷ്പം । പുഷ്പവാൻ പ്രജാവാൻ പശുമാൻ – – – – ഭവതി ।

ശ്രീ വിഘ്നേശ്വരായ നമഃ । വേദോക്ത–മന്ത്രപുഷ്പം സമർപയാമി । സുവർണ പുഷ്പം സമർപയാമി । സമസ്തോപചരാൻ സമർപയാമി ।

പ്രാർത്ഥനാ

വക്രതുണ്ഡ മഹാകായ സൂര്യകോടീ സമപ്രഭ । നിർവിഘ്നം കുരു മേ ദേവ സർവ കാര്യേഷു സർവദാ ॥

നമോ നമോ ഗണേശായ നമസ്തേ ശിവസൂനവേ । നിർവിഘ്നം കുരു മേ ദേവേശ നമാമി ത്വാം ഗണാധിപ । വിഘ്നേശ്വര മഹാഭാഗ സർവ ലോകനമസ്ക്കൃത । മയാടടരബ്ധമിദം കർമ നിർവിഘ്നം കുരു സർവദാ ॥

3.3 <u>പ്രാർത്ഥനാ പൂജാ പ്രാരംഭഃ</u>

(രൂദ്ര വിധാനേന മഹാന്യാസപൂർവകം പഞ്ചായതന പൂജാ പ്രാരംഭഃ)

3.3.1 <u>പ്രാർത്ഥനാ</u>

നമോ ബ്രഹ്മണൃ ദേവായ ഗോബ്രാഹ്മണ ഹിതായ ച । ജഗദ്ധിതായ കൃഷ്ണായ ശ്രീ ഗോവിന്ദായ നമോ നമഃ ॥

ആബ്രഹ്മലോകാ-ദാശേഷാദാ-ലോകാല്ലോക പർവതാത് । യേ വസന്തി ദ്വിജാ ദേവാസ്തേഭ്യോ നിത്യം നമോ നമഃ ॥ ഓം നമോ ബ്രഹ്മാദിഭ്യോ ബ്രഹ്മവിദ്യാ സംപ്രദായകർത്തൃഭ്യോ വംശഋഷിഭ്യോ ഗുരുഭ്യോ മഹദ്ഭ്യഃ ॥

3.3.2 ആസന പുജാ

അസ്യ ശ്രീ ആസന മഹാമന്ത്രസ്യ, പൃഥിവ്യാ മേരുപൃഷ്യ ഋഷിഃ । സുതലം ഛന്ദഃ । കൂർമോ ദേവതാ । ആസനേ വിനിയോഗഃ । പൃഥി തായാ ധൃതാലോകാ ദേവി താം വിഷ്ണുനാ ധൃതാ । താം ച ധാരയ മാം ദേവി പവിത്രം കുരു ആസനം ॥ അപസർപന്തു തേ ഭൂതാ യേ ഭൂതാ ഭുവി സംസ്ഥിതാഃ । യേ ഭൂതാ വിഘ്നകർതാരസ്തേ ഗച്ഛന്തു ശിവാജ്ഞയാ ॥ അപക്രാമന്തു ഭൂതാനി പിശാച സർവതോ ദിശാം । സർവേഷാ–മവിരോധേന പൂജാകർമ സമാരംഭേ ॥ യോഗാസനായ നമഃ । വീരാസനായ നമഃ । ശരാസനായ നമഃ ।

(ഇതി ഭൂമീ പുഷ്പാഞ്ജലി വികിരേത്)

3.4 <u>സങ്കല്പം</u>

(The brief Sankalpam shall be used for Shiva Pooja at home, Rudraabhishekam and Pradosha Poojas)

3.4.1 <u>സങ്കല്പം (No. 1)</u>

| ആചമനം , ശുക്ലാംബരധരം , പ്രാണായാമം , | | | | |
|-----------------------------------------------------------|--|--|--|--|
| മമോപാത്ത സമസ്ത ദുരിതക്ഷയദ്വാരാ ശ്രീ പരമേശ്വര | | | | |
| പ്രീത്യർത്ഥം, ശുഭ്ദേ ശോഭനേ മുഹൂർത്തേ ആദ്യബ്രഹ്മണഃ ദ്വിതീയ | | | | |
| പരാർദ്ധേ ശ്വേതവരാഹ കല്പേ വൈവസാത മന്വന്തരേ | | | | |
| അഷ്ടാവിംശതി തമേ കലിയുഗേ പ്രഥമേ പാദേ ജംബൂദ്വീപേ | | | | |
| ഭാരതവർഷേ ഭരതഖണ്ഡേ മേരോഃ ദക്ഷിണേ പാർശോ ശകാബ്ദേ | | | | |
| അസ്തിൻ വർത്തമാനേ വൃവഹാരികേ പ്രഭവാദി ഷഷ്ട്യാഃ | | | | |
| സംവഥ്സരാണാം മദ്ധ്യേ നാമസംവഥ്സരേ്അയനേ | | | | |
| ഋതൗ മാസേപക്ഷേ ശുഭതിഥൗ | | | | |
| വാസരയുക്തായാംനക്ഷത്രയുക്തായാം ശുഭയോഗ | | | | |
| ശുഭകരണ ഏവം ഗുണ സകല വിശേഷണ വിശിഷ്ടായാം അസ്യാം | | | | |
| ശുഭതിഥൗ മമോപാത്ത സമസ്ത ദുരിതക്ഷയദ്വാരാ | | | | |
| ശ്രീ പരമേശ്വര പ്രീതൃർത്ഥം നക്ഷത്രേരാശൗ ജാതസ്യ | | | | |
| രാശൗജാതയാഃ | | | | |
| ആവയോഃ സകുഢുംബായോഃസപുത്രകയോഃ | | | | |
| സബന്ധുവർഗയോഃ സാശ്രിതജനയോശ്ച ക്ഷേമ–സ്ഥൈര്യ–വീര്യ– | | | | |
| വിജയ, ആയുരാരോഗൃ–ഐശ്വരൃാണാം അഭിവൃദ്ധ്യർത്ഥം, | | | | |
| ധർമാർത്ഥ–കാമ–മോക്ഷ–ചതുർ വിധ ഫലപുരുഷാർത്ഥ | | | | |
| സിദ്ധ്യർത്ഥം, സർവാരിഷ്ട ശാന്ത്യർത്ഥം, സർവാഭീഷ്ട | | | | |
| സിദ്ധ്യർത്ഥം , സപരിവാര് സോമാസ്കന്ദ പരമേശ്വര | | | | |
| ചരണാരവിന്ദയോഃ അചഞ്ചല–നിഷ്കപ്ട–ഭക്തി സിദ്ധ്യർത്ഥം , | | | | |
| യാവച്ഛക്തി പരിവാര സഹിത രുദ്രവിധാനേന ധൃാന– | | | | |
| ആവാഹനാദി–ഷോഡശോപചാരപൂജാ പുരസ്സരം മഹാന്യാസജപ | | | | |
| (ലഘുനൃാസജപ) രുദ്രാഭിഷേക അർച്ചനാദി സഹിത | | | | |
| സാംബശിവ പൂജാം കരിഷ്യേ । | | | | |
| തദംഗം കലശ–ശംഖ–ആത്മ–പീഠ–പൂജാം ച കരിഷ്യേ । (ദ്വി) | | | | |

(ഇതി സങ്കല്പം । അപ ഉപസ്റ്റൂശൃ)

========

3.4.2 <u>സങ്കല്പം (No. 2)</u>

(This little Elaborate Sankalpam is ideally used for Rudraabhishekam in a Samajam, Mandal, Public function.)

ആചമനം, ശുക്ലാംബരധരം, പ്രാണായാമം – മമോപാത്ത സമസ്ത ദുരിതക്ഷയദ്വാരാ ശ്രീ പരമേശ്വര പ്രീതൃർത്ഥം , ഏതത് മണ്ഡലീ ഭ്ക്തജനാനാം അഖില ഭാരതീയാനാം, അഖില ഭൂമണ്ഡല നിവാസാനാം, ഏതത് കർമ പ്രവർത്തകാനാം, പ്രോഥ്സാഹകാനാം, സാഹായകാരീണാം, നാനാവിധ ദ്രവ്യ ദാതൃകാണാം, ദർശനാർത്ഥം ആഗതാനാം ആഗമിഷ്യാണാം സകുടുംബാനാം സാശ്രിത ബന്ധുമിത്രാണാം, സർവേഷാം മഹാജനാനാം, ജന്മാഭൃാസാത് ജന്മപ്രഭൃതി ഏതത്ക്ഷണ–പരൃന്തം ബാല്യേ വയസി കൗമാരേ യൗവനേ വാർദ്ധകേ ച, ജാഗ്രത് സിപ്ന സുഷുപ്തി അവസ്ഥാസു, മനോവാക്കായ കർമേന്ദ്രിയ ജ്ഞാനേന്ദ്രിയ വൃാപാര്രെം, കാമക്രോധ–ലോഭ–മോഹ–മദമാഥ്സരൈും , രഹസി പ്രകാശേ ച ജ്ഞാനാജ്ഞാനകൃതാനാം മഹാപാതകാനാം, അതിപാതകാനാം, ഉപപാതകാനാം, സങ്കരീകരണാനാം, മലിനീകരണാനാം, അപാത്രീകരണാനാം ജാതിഭ്രംശ–കരണാനാം പ്രകീർണകാനാം ജ്ഞാനതഃ സകൃത്–കൃതാനാം, അജ്ഞാനതഃ അസത്-കൃതാനാം, ജ്ഞാനാതോജ്ഞാനാശ്ച അഭൃസ്താനാം, നിരന്തരാഭൃസ്താനാം ചിരകാലാഭൃസ്താനാം, ഏവം നവാനാം നവവിധാനാം ബഹൂനാം ബഹുവിധാനാം പാപാനാം, മദ്ധ്യേ സംഭാവിധാനാം സർവേഷാം പാപാനാം സദ്യഃ അപനോദനാർത്ഥം, മഹാദേവാദീനാം രുദ്രാണാം പ്രസാദ സിദ്ധ്യർത്ഥം, മഹാദേവാദീനാം രുദ്രാണാം പ്രസാദേന രാജ്യ നിർവാഹകാനാം മന്ത്രിവരുാണാം, അന്യോനു മഥ്സരബുദ്ധി നിരസനദ്വാരാ സദ്ബുദ്ധി ഉദയസിദ്ധ്യർത്ഥം, തദ്വാരാ ഇദാനീം അനുഭൂയമാന നിത്യോപയോഗ സാധന ഉത്പന്ന അലഭൃതാ നിവൃത്തിദ്വാരാ സുലഭൃതാ സിദ്ധ്യർത്ഥം, സർവദ്രവൃ നിർമാണ-ശാലാസു ജനിത ജായമാന അഗ്നിബാധാ പ്രവൃത്തി ബന്ധനാദി നിവൃത്തിദ്വാരാ ഉത്തരോത്തരം ലാഭാടഭിവൃദ്ധ്യർത്ഥം, ആന്തരീക്ഷാത് ഉത്ഭൂത, ഉത്പാത, ഉത്പസ്യമാന സകല കണ്ഡക നിവൃതൃർത്ഥം, തദ്വാരാ ഇന്ധന–ജല–വിദ്യുശ്ചക്തി ക്ഷാമ നിവുതൃർത്ഥം, അതിവൃഷ്ടി–വായുമർദന–ഉഗ്രതാപ–

സമുദ്രക്കേശനാദി നിവൃത്തിദ്വാരാ സർവവിധ പ്രകൃതി അനുകൂലസിദ്ധ്യർത്ഥം, ശരീരേ ബാദ്ധ്യമാന ബാധിഷ്യമാണ ചിത്തഭ്രമ–ശിരോരോഗ–ചർമരോഗ– മനോരോഗ–അക്ഷിരോഗ പതനാതി ജനിത അസ്ഥിച്ചേദാനാദി സകലരോഗ നിവൃതൃർത്ഥം, ഭൂജലവായു സഞ്ചാരകാല ജനിത-ജായമാന സകലദുരിത നിവൃത്യർത്ഥം , ആതുരാണാം രോഗീണാം വൈദ്യശാലാസു ഉത്തമ ഭിഷഗാര സേവനാ രോഗമുക്ത ഔഷധാദി സിദ്ധിദ്വാരാ അരോഗ്യദൃഢഗാത്രതാ സിദ്ധ്യർത്ഥം, അപമൃത്യു നിവാരണാർത്ഥം, ക്ഷേമ-സ്ഥൈര്യ-വീര്യ-വിജയ ആയുരാരോഗ്യ-ഐശ്വര്യാണാം അഭിവൃദ്ധ്യർത്ഥം, ധർമാർത്ഥ–കാമ–മോക്ഷ– ചതുർവിധ ഫലപുരുഷാർത്ഥ സിദ്ധ്യർത്ഥം, സർവാരിഷ്ടശാന്ത്യർത്ഥം, സർവാഭീഷ്ട സിദ്ധ്യർത്ഥം, സകല സാമ്രാജ്യ അഭിവൃദ്ധ്യർത്ഥം, ഐകമത്യ സിദ്ധ്യർത്ഥം, വിദ്ധ്യാർത്ഥീനാം വിദ്ധ്യാർത്ഥിനീനാം ച ബാലപാഠശാലാസു നിഷ്പ്രയാസേന പ്രവേശ സിദ്ധ്യർത്ഥം, തത്ര പ്രതിവർഷ പരീക്ഷാസു പ്രഥമ ഗണനീയ വിജയ പ്രാപ്ന്യർത്ഥം, അഭൃസ്ത നാനാബിരുധ ധാരീണാം അനുചിത സ്ഥിര ഉദ്യോഗ പ്രാപ്തൂർത്ഥം, അലാഭൗജനിത ക്ലേശ നിവൃത്തിദ്വാരാ ഉന്നത ഉദ്യോഗ പ്രാപ്തൃർത്ഥം, ചതുർവർണാനാം തത്തത് വർണാശ്രമ കർമാസു പൂർണ ഉഥ്സുഹതാ സിദ്ധ്യർത്ഥം, ഉത്തമവർണേന നിത്യ നൈമത്തിക കാമ്യ ശ്രൗത സ്മാർത്ത വിഹിത കർമാനുഷ്പാനേ സോഥ്സാഹതാ സിദ്ധ്യർത്ഥം, സുഹാസിനീനാം ദീർഘസൗമംഗലൃ സിദ്ധ്യർത്ഥം, കനക–വസ്തു–വാഹനാദി പുത്ര– പൗത്ര സഹിത സുഖജീവിത്വ സിദ്ധ്യർത്ഥം, വര–വധൂനാം ച വിവാഹ പ്രതിബന്ധകീഭൂത ദുരിത നിവൃത്തിദ്വാരാ ഉചിതകാലേ മനോടഭീഷ്ട വിവാഹ പ്രാപ്ത്യർത്ഥം, ആസ്തികാനാം സ്വധർമാഭിരുചി സിദ്ധ്യർത്ഥം, സദ്യഃ സുവൃഷ്ട്യാ വാപീ കൂപ തടാകാനാം സമൃദ്ധ്യർത്ഥം, സർവ സസ്യാഭിവൃദ്ധ്യർത്ഥം, അന്ന സമൃദ്ധ്യർത്ഥം, ക്ഷാമ–ക്ഷോഭ നിവൃത്ത്യർത്ഥം, സകലശ്രേയഃ പ്രാപ്തി ഹേതുഭൂത സാംബപരമേശ്വര പരിപൂർണ അനുഗ്രഹ സിദ്ധ്യർത്ഥം, കുടുംബക്ഷേമാഭിവൃദ്ധ്യർത്ഥം, ഐഹിക ആമുഷ്തിക സകല ശ്രേയാഭിവൃദ്ധ്യർത്ഥം, യാവച്ഛക്തി പരിവാര സഹിത രുദ്രവിധാനേന ധ്യാന–ആവാഹനാദി–ഷോഡശോപചാരപൂജാ

പുരസ്സരം മഹാന്യാസജപ (ലഘുന്യാസജപ) രുദ്രജപ–സഹിത ഏകദശവാര രുദ്രാഭിഷേകസഹിത യഥാശക്തി ത്രിശതി അർചനാ ക്രമാർചനാ അന്യ അർചനാദി സഹിത സാംബശിവ പൂജാം കരിഷ്യേ I തദംഗം കലശ–ശംഖ–ആത്മ–പീഠ–പൂജാം ച കരിഷ്യേ I (ദ്വി) (അപ ഉപസ്ത്യശ്യ)

3.4.3 <u>സങ്കല്പം (No. 3)</u>

(This Elaborate Sankalpam used for Rudra Ekadasini generally) ്ആചമനം ശുക്ലാംബരധരം പ്രാണായാമം –മമോപാ<mark>ത്ത</mark>്സമസ്ത ദുരിതക്ഷയദ്വാരാ ശ്രീ പരമേശ്വര പ്രീത്യർത്ഥം, ശുഭേ ശോഭന മുഹൂർത്തേ ആദ്യബ്രഹ്മണഃ ദ്വിതീയ പരാർധേ ശ്വേതവരാഹകല്പേ വൈവസാത മനാന്തരേ അഷ്മാവിംശതി തമേ കലിയുഗേ പ്രഥമേ പാദേ ജംബൂദ്വീപേ ഭാരതവർഷേ ഭരതഖണ്ഡേ മേരോഃ ദക്ഷിണേ പാർശോ ശകാബ്ദേ അസ്തിൻ വർത്തമാനേ വ്യവഹാരികേ പ്രഭവാദി ഷഷ്ട്യാഃ സംവഥ്സരാണാം മദ്ധ്യേനാമസംവഥ്സരേ മാസേപക്ഷേ ശുഭതിഥൗവാസരയുക്തായാം നക്ഷത്രയുക്തായാം ശുഭയോഗ ശുഭകരണ ഏവം ഗുണ സകല വിശേഷണ വിശിഷ്ടായാം അസ്യാം ശുഭതിഥൗ മമോപാത്ത സമസ്ത ദുരിതക്ഷയ്ദ്വാരാ ശ്രീ പരമേശ്വര പ്രീത്യർത്ഥം, അനാദി അവിദ്യാവാസനയാ പ്രവർത്തമാനേ അസ്തിൻ മഹതി സംസാരചക്രേ വിചിത്രാഭിഃ കർമഗതിഭിഃ വിചിത്രാസു അനേകാസു പശു–പക്ഷി മൃഗാദി യോനിഷു പുനഃ പുനഃ അനേകധാ ജനിത്വാ കേനാപി പുണ്യകർമ വിശേഷേണ ഇദാനീംതന മാനുഷ്യേ ദിജന്മ വിശേഷം പ്രാപ്തവതഃനക്ഷത്രേരാശൗജാതയാഃ മമ ധർമപത്ന്യാശ്ച ആവയോഃ സകുടുംബയോഃ സപുത്രകയോഃ സബന്ധുവർഗയോഃ സാശ്രിത ജനയോശ്ച ജന്മാഭൃാസാത് ജന്മപ്രഭൃതി ഏതത്ക്ഷണ പരൃന്തം ബാല്യേ വയസി കൗമാരേ യൗവനേ വാർധകേ ച ജാഗ്രത് സാപ്ന സുഷുപ്തി അവസ്ഥാസു മനോവാക്കായ കർമേന്ദ്രിയ ജ്ഞാനേന്ദ്രിയ വൃാപാരൈഃ കാമക്രോധ–ലോഭ–മോഹ–മദമാഥ്സരെുഃ രഹസി പ്രകാശേ ച ജ്ഞാനാജ്ഞാനകൃതാനാം മഹാപാതകാനാം അതിപാതകാനാം

ഉപപാതകാനാം സങ്കരീകരണാനാം മലിനീകരണാനാം അപാത്രീകരണാനാം ജാതിഭ്രംശകരണാനാം പ്രകീർണകാനാം ജ്ഞാനതഃ സകൃത്കൃതാനാം അജ്ഞാനതഃ അസത്കൃതാനാം ജ്ഞാനതോദ്ദ്ജ്ഞാനതശ്ച അഭൃസ്താനാം ചിരകാലാഭൃസ്താനാം നിരന്തര ചിരകാലാഭൃസ്താനാം ഏവം നവാനാം നവവിധാനാം ബഹൂനാം ബഹുവിധാനാം പാപാനാം മദ്ധ്യേ സംഭാവിധാനാം സർവേഷാം പാപാനാം സദ്യഃ അപനോദനാർത്ഥം, മഹാദേവാദീനാം രുദ്രാണാം ആദിതൃാത്മകരുദ്രസൃ ച പ്രസാദസിദ്ധ്യർത്ഥം, ആയുരാരോഗ്യ–പുത്രപൗത്ര–ധന–ധാന്യ തേജോലക്ഷ്മൃാദി സകല–സാമ്രാജൃാ–ഭിവൃദ്ധൃർത്ഥം, ശരീരേ വർത്തമാന–വർത്തിഷൃമാന സമസ്ത–രോഗപീഡാ പരിഹാരദ്വാരേ ക്ഷിപ്രാരോഗ്യ സിദ്ധ്യർത്ഥം, സർവേഗ്രഹാനുകൂല്യ സിദ്ധ്യർത്ഥം, ആരോഗ്യ–ദൃഢഗാത്രതാ സിദ്ധ്യർത്ഥം, അപമൃത്യുദോഷ പരിഹാരാർത്ഥം, (വാർഷിക ജന്മനക്ഷത്രേ തിഥിവാര നക്ഷത്രേ ലഗ്ന–യോഗകരണ– ഗ്രഹാസ്ഥിതൃാഭിഃ സംബന്ധേന സംസുചിത സർവദോഷ ശാന്ത്യർത്ഥം, സർവാരിഷ്ട– ശാന്ത്യർത്ഥം, ചിത്തശുദ്ധ്യർത്ഥം, സർവാഭീഷ്ട-സിദ്ധ്യർത്ഥം) മഹാർണവ–വായുപുരാണ–ഉക്തപ്രകാരേണ ആചാരൃമുഖേന ചമകമന്ത്ര സംയുക്തസൃ ശതരുദ്രിയസൃ ഏകോനസപ്തതൃധിക– ശതധാ വിഭാഗ പഞ്ചാശ്രയേണ ദശാംശഹോമ വിധാനപക്ഷാശ്രയണേ ച സംഭാവിത ദ്വാത്രിംശത് ഉത്തരശതസംഖൃാക നമക-ചമക ജപ തന്മന്ത്ര ജപ ദശാംശ പരിമിത ദ്വിചത്വാരിംശത് ഉത്തര ദ്വിസഹസ്ര സംഖൃാക നമകമന്ത്ര ചമകമന്ത്രാ–ഹുതൃാത്മകം അന്തേ വസോർധാരയാ സഹിതം കർമാനുഷ്ടാന യോഗൃതാ സംപാദകപൂതത്വാ സിദ്ധികര പ്രാജാപതൃ കൃച്ഛേ പ്രത്യാമ്റ്റായ ഭൂത ഹിരണ്യദാന പൂർവകം പ്രാച്യാംഗ നാന്ദീശ്രാദ്ധ–ഗോദാന–ഉദിച്ച്യാംഗ വൈഷ്ണവ ശ്രാദ്ധ കർമ–സാദ്ഗുണൃപ്രദ ദശദാന ഫലതാംബൂല സഹിതം രുദ്രൈകാദശിനി കർമകർത്തും യോഗൃതാ–സിദ്ധിരസ്തു ഇതി അനുഗ്രഹാണാ । **(യോഗൃതാ സിദ്ധിരസ്തു – ഇതി പരിഷത്** ബ്രാഹ്മണ പ്രതിവചനം) ।

3.4.4 <u>സങ്കലും (ഘഴ. 4)</u>

This very Elaborate and detailed Sankalpam can be used for Rudra Ekadasani and also for Maharudram, where appropriate changes need to be made for various Sankhya(counts) of Japam/Homam.)

ആചമനം , ശുക്ലാംബരധരം, പ്രാണായാമം മമോപാത്ത സമസ്ത ദുരിതക്ഷയദ്വാരാ ശ്രീ പരമേശ്വര പ്രീത്യർത്ഥം , ശുഭേ ശോഭനേ മു്ഹൂർത്തേ ആദ്യബ്രഹ്മണഃ ദ്വിതീയ പരാർധേ ശോതവരാഹകല്പേ വൈവസാത മനാന്തരേ അഷ്ടാവിംശതി തമേ കലിയുഗേ പ്രഥമേ പാദേ ജംബൂദ്വീപേ ഭാരതവർഷേ ഭരതഖണ്ഡേ മേരോഃ ദക്ഷിണേ പാർശ്വേ ശകാബ്ലേ അസ്മിൻ വർത്തമാനേ വൃവഹാരികേ പ്രഭവാദി ഷഷ്ട്യാഃ സ്ംവഥ്സ്രാണാം മദ്ധ്യേ നാമസംവഥ്സരേഅയ്നേഋതൗ മാസേവക്ഷേ ശുഭതിഥൗവാസരയുക്തായാം നക്ഷത്രയുക്തായാം ശുഭയോഗ ശുഭകരണ ഏവം ഗുണ സകല വിശേഷണ വിശിഷ്ടായാം അസ്യാംശുഭതിഥൗ മമോപാത്ത സമസ്ത ദുരിതക്ഷയ്ദ്വാരാ ശ്രീ പരമേശ്വര പ്രീതൃർത്ഥം അനാദി അവിദ്ൃാവാസനയാ പ്രവർത്തമാനേ അസ്തിൻ മഹതി സംസാരചക്രേ വിചിത്രാഭിഃ കർമഗതിഭിഃ വിചിത്രാസു അനേകാസു പശുപക്ഷി മൃഗാദി യോനിഷു പുനഃ പുനഃ അനേകധാ ജനിത്വാ കേനാപി പുണൃകർമ വിശേഷേണ ഇദാനീം തനമാനുഷ്യേ ദ്വിജന്മ വിശേഷം പ്രാപ്തവതഃനക്ഷത്രേ......ന രാശൗ ജാതസൃർമണഃ മമ നക്ഷത്രേരാശൗജാതയാഃമമ ധർമപത്ന്യാശ്ച ആവയോഃ സകുടുംബയോഃ, സപുത്രകയോഃ സബന്ധുവർഗയോഃ സാശ്രിത ജനയോശ്ച, ജന്മാഭ്യാസാത് ജന്മപ്രഭൃതി ഏതത്ക്ഷണ പരൃന്തം ബാലേൃ വയസി കൗമാരേ യൗവനേ വാർധകേ ച, ജാഗ്രത് സാപ്ന സുഷുപ്തി അവസ്ഥാസു മനോവാക്കായ കർമേന്ദ്രിയ ജ്ഞാനേന്ദ്രിയ വൃാപാര്രെം, കാമക്രോധ–ലോഭ–മോഹ–മദമാഥ്സരൈും, താക്ചക്ഷും ശ്രോത്ര ജിഹ്വാ–ഘ്രാണാ വാക്പാണി പാദപായു ഉപസ്ഥാഖൈുഃ ദശഭിഃ ഇന്ദ്രിയെെം, മനോബുധി-ചിത്ത-അഹങ്കാരാഖ്യെം അന്തരിന്ദ്രിയൈശ്ച കൃതാനാം, ഇഹജന്മനി ജന്മജന്മാന്തരേഷു വാ ജ്ഞാനതഃ അജ്ഞാനതോ വാ, രഹസി പ്രകാശേഷുവാ സംഭാവിതാനാം, ബ്രഹ്മഹനന സുരാപാന സ്വർണസ്തേയ

ഗുരുതല്പഗമന തഥ്സംഖയോഗാഖ്യ പഞ്ചമഹാപാതകാനാം, മഹാപാതക സംബന്ധിത്വ ജ്ഞാപയിതൃത്വ പ്രയോജകത്വ നിമിത്തതാ ഉപദേഷ്ട്രതാ പ്രോഥ്സാകതാ അനുമന്ത്രതാദീനാം മഹാപാതക വ്രതാതിദേശിക രൂപാണാം, അവിജ്ഞാത ഗർഭഹനന കൂട സാക്ഷിപാദ നിന്ദിതകർമ അഭ്യാസ ദൈവബ്രാഹ്മണ ധന അപഹരണാദീനാം അതിപാതകാനാം, സോമ യാഗസ്ഥ ക്ഷത്രിയ വൈശു വധ സഭാമദ്ധൃഗത ബ്രാഹ്മണ അപമാനന, സദാപൈ ശൂന്യഭാഷണ ആദീനാം ബ്രഹ്മഹത്യാ സമാനാനാം വേദവിസ്ത്യതി വേദനിന്ദ സമുത്കർഷാർത്ഥം അനൃതവചന കളംജഭക്ഷണ അഭക്ഷൃ ഭക്ഷണാദീനാം സുരാപാന സമാനാനാം, നിക്ഷേപഹരണ ഗോഭൂമിഹരണ, സുഹൃധന ഹരണാദീനാം സ്വർണസ്തേയ സമാനാനാം, സതീ സഖിപത്നീ ജ്യേഷ്റപത്നീ ഗുരുപത്നീ മാതുലാനീ അന്തൃജാ ഗമനാദീനാം ഗുരുതല്പഗ സമാനാനാം പതിത, സഹവാസ സഹഭോജന അന്തൃജാ വാടികാ നിഷേപണ ആദീനാം, തഥ്സംയോഗാഖൃ സമാനാനാം, ഗോവധ ആത്മാർത്ഥ ക്രിയാരംഭ മാതൃപിതൃ ഗുരുത്യാഗ, പരദാര അഭിമർശന, ഭൈഷജ്യകരണ, അപണൃവിക്രയ, ഋണ അനപാകരണ, നിതൃകർമലോപ, ദുർദ്ദാന പ്രതിഗ്രഹ ആദീനാം, ഉപപാതകാനം അജാവി ഗജോഷ്ട്ര മൃഗേഭ മീനാഹി മഹിഷീവധ സാളഗ്രാമ ശിവലിംഗ വിക്രയ ദൂർദ്ദേശഗമന, ക്രീടാന്നഭോജന ആദീനാം, സംകരീകരണാനാം ഫലകുസുമസ്സേയ മഖാനുഗതഭോജന, ധാനൃഹരണ, വസ്ത്രാപഹരണാദീനാം, മലിനീകരണാനാം, കുസീദ ജീവന, വാണീജൃകരണ, അസതൃഭാഷണ, അസ്നാനഭോജന ആദീനാം, അപാത്രീകരണാനാം, ശൂദ്രാന്നഭോജന, മദ്ധ്യാഘ്രാണ പതിത സഹവാസ ആദീനാം, ജാതിഭ്രംശകരണാനാം സീമാതിദ്യക്രമ, ശപഥാല്ലംഗന, ഉച്ഛിഷ്ടഭക്ഷണ, അവിഹിതകർമ ആചരണ വിഹിതകർമതൃാഗാദീനാം പ്രകീർണകാനാം, ജ്ഞാനതഃ സകൃത്കൃതാനാം അജ്ഞാനതഃ അസത്കൃതാനാം ജ്ഞാനതഃ അജ്ഞാനതശ്ച അഭൃസ്താനാം നിരന്തര അഭൃസ്താനാം ചിരകാല അഭൃസ്താനാം നിരന്തര ചിരകാലഅഭൃസ്താനാം ഏവം നവാനാം നവവിധാനാം ബഹൂനാം ബഹുവിധാനാം സർവേഷു പാപാനാം മദ്ധ്യേ സംഭാവിതാനാം സർവേഷാം പാപാനാം സദ്യഃ

അപനോദനാർത്ഥം, ആദിതൃാത്മകരുദ്ര പ്രസാദ സിദ്ധ്യർത്ഥം, മഹാദേവാദി ഏകാദശ അഭിന്നരൂപ ആദിതൃാത്മകരുദ്ര പ്രസാദേന അസ്താകം സർവേഷാം ആദ്ധ്യാത്മിക ആധിഭൗതിക ആധിദൈവിക നവനവജനിത താപത്രയ നിവൃത്തൃർത്ഥം,(യഥോചിതം സങ്കല്പം) ഏഭിഃ ബ്രാഹ്മണൈസ്സഹ മഹാർണവോക്ത പ്രകാരേണ ആചാരൃ മുഖേന ഋത്വിങ്മുഖേന ച ഋഗൃജു–സ്സാമ– അഥർവണാഖ്യേഷു ചതുർഷു വേദേഷു മദ്ധ്യേ ഏകാധിക ശതസംഖ്യാക യജുശ്ശാഖാസു ആദിഭൂത സംഹിതാശാഖാ അന്തർഭൂത അഗ്നികാണ്ഡ അന്തഃ പാതിനാം സർവേഷു വേദേഷു സർവാസു ഉപനിഷഥ്സു സ്തൃതീതിഹാസ പുരാണാദിഷു സർവപാപ നിവർത്തകതോന, ദിവൃജ്ഞാന പ്രദതോന, മോക്ഷ പ്രദതോന, ച തത്രതത്ര ഉദ്ഘുഷ്ടാനാം ചരമായാം ഇഷ്ടകായാം ജുഹോതി ഇതി ചരമേഷ്ടകാ ഉപയുക്താനാം, "ശതരുദ്രാൻ ജപേദൃസ്തു ദൃായമാനോ മഹേശ്വരം" ഇതി ശൈവ പുരാണ വചനേന, "യഃ് ശതരുദ്രീയം അധീതേ, സ അഗ്നിപൂതോ " ഇതി കൈവല്യോപനിഷദ് വചനേന, "അഥ ഹൈനം ബ്രഹ്മചാരിണഃ ഊചുഃ । കിംജപ്യേന അമൃതത്വം നോ ഭവതി । സഹോ വാച യാജ്ഞവൽകൃഃ ശതരുദ്രിയേണേതി । ഏതാനി ഹ വാ അമൃതസൃ നാമധേയാനി । ഏതൈർ ഹ വാ അമൃതോ ഭവതി । " ഇതി ജാബാലോപനിഷത് വചനേന , "രുദ്രാണാം ജപഹോമ അർച്ചനാ അഭിഷേകവിധിം വ്യാഖ്യാസ്യാമഃ" ശ്രുതിസ്തൃതി പുരാണവചന്നെഃ പൂജാജപ ഹോമാദി കർമസു ഉപയുക്താനാം ഏകാദശ അനുവാക ആത്മകാനാം തത്ര "നമസ്തേ രുദ്രമനൃവേ ഇതി" പ്രഥമാനുവാകേ ദുഷ്ടസംഹാരാർത്ഥം ആയുധാദിഭൃഃ അഭയപ്രാർത്ഥനാ സങ്ക്രുദ്ധ രുദ്രകോപ പ്രകാശകാനാം ഉപയുക്താനാം, ഹിരണൃബാഹവേ "നമോ ഇതൃാദി" അഷ്ടാനുവാകേഷു വൈശ്വരൂപൃദ്ധ്യാന ഏകതോ-നമസ്കാര ഉഭയതോ–നമസ്കാര രൂപാണാം ഏകോന്നത്രിംശത് ഉത്തരശത സംഖൃകാനാം ത്രിശതൃർച്ചനാ ഉപയുക്താനാം, "ദ്രാപേ അന്ധസസ്പതേ" ഇതി ദശമാനുവാകേ ജാഗ്രത് സാപ്ന സുഷുപ്തി അവസ്താസു ജലവാത വിഷഭൂത ശത്രുമൃത്യു ജ്വരാദി

സ്റ്റോടകാദി നാനാരോഗേഭൃഃ നാനാടഭിചാരേഭൃഃ അഭയപ്രാർത്ഥനാ പ്രകാശകാനാം ദ്വാദശ സംഖൃാകാനാം, പ്രദക്ഷിണ ഉപയുക്താനാം "സഹസ്രാണി സഹസ്രശഃ" ഇതി ഏകദശാനുവാകേ സർവവ്യാപക രുദ്ര വിഭൂതി പ്രകാശകാനാം സാടനുഷംഗാണാം ത്രയോദശ സംഖൃാകാനാം നമസ്കാര ഉപയുക്താനാം, അഭീഫ്സിതാർത്ഥ യാചാനാസൂചക ചമകാനുവാക സംയുക്താനാം, മൂർത്തൃഷ്ടക മൂർത്തപഞ്ചക മൂർത്തിത്രയ അധിഷ്റാന പഞ്ചകൃത്യ വിധാന പടീയസൃ, ശിവയാ ശൂലിനൃാ അധോരാഖൃായാ തനുവാ സർവോപാദാനതയാ സർവാത്മകതയാ സർവവേദ ബോധിത സർവാത്മക ശർവരീശ ശകലധര പരമശിവാഖൃ സദാശിവ– ബ്രഹ്മമഞ്ച പരൃംകായമാണ പഞ്ചാക്ഷരാഖ്യ മഹാമന്ത്രരത്ന മുഖൃകോശാനാം ശതരുദ്രീയാണാം ത്രേധാവിഭാഗദ്വയ ഷോഢാ വിഭാഗ ഷോഢശധാവിഭാഗ അഷ്ടാചത്വാരിംശധാ വിഭാഗ ഏകോനസപ്പതി അധിക ശതധാ വിഭാഗാനാം, ഷണ്ണാം വിഭാഗാനാം മദ്ധ്യേ, ഏകോന്ന സപ്തതി അധിക ശതധാ വിഭാഗപക്ഷം ആശ്രിത്യ ശതാംശ ദശാംശ സംപൂർണ്ണ ഹോമാനാം മദ്ധ്യേ ദശാംശ ഹോമവിധാനേന ദ്വാത്രിംശദുത്തരശതസംഖ്യാക നമക ചമക ജപാത്മക തദ് ദശാംശ പരിമിത ദ്വിചത്വാരിംശത് ഉത്തര ദ്വിസഹസ്ര സംഖ്യാക നമക ചമക ആഹുത്യാത്മകം അന്തേ വസോർധാരാ സഹിതം പ്രാച്യാംഗ ഉദീച്യാംഗ ഗോദാന നാന്ദീശ്രാദ്ധ വൈഷ്ണവശ്രാദ്ധ ദശദാന സഹിതം കർമാനുഷ്ടാന യോഗൃതാ സംപാതക പൂതത്വ സിദ്ധികര പ്രാജാപതൃ കൃഛ്ര പ്രത്യാമ്റ്റായ ഭൂത ഹിരണ്യദാന പൂർവകം സകല പാപനിവർത്തകം സർവാഭീഷ്ട്ര പ്രദായകം രുദ്രൈകാദശിന്യാഖ്യ **(മഹാരുദ്രാഖ്യ)** മഹാപ്രായശ്ചിത്ത കർമകർത്തും യോഗൃതാസിധിഃ അസ്ത്വിതി അനുഗ്രഹാണാ ॥

3.4.5 <u>വിഘേശ്വര ഉദ്വാപനം</u>

ഓം ഗണാനാം ത്വാ ഗണപതി്് ഹവാമഹേ കവിം കവീനാ-മുപമശ്രവസ്തമം । ജേഷ്മരാജം ബ്രഹ്മണാം ബ്രഹ്മണസ്പത ആ ന്ദ ശൂണ്വന്നൂതിഭിം സീദ സാദനം । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മാത് ഹരിദ്രാബിംബാത് വിഘ്നേശ്വരം യഥാസ്ഥാനം

പ്രതിഷ്റാപയാമി । (ശോഭനാർത്ഥേ ക്ഷേമായ പുനാരാഗമനായ ച) ।

3.5 <u>പൂണൃാഹവാചനം</u>

3.5.1 <u>സങ്കല</u>്പം

ആചമനം–പവിത്രം–ദർഭാസനം– ദർഭാൻ ധാരയാമാണം – ശുക്ലാംബരധരം – പ്രാണായാമം । മമോപാത്ത സമസ്ത ദുരിതക്ഷയദ്വാരാ ശ്രീ പരമേശ്വര പ്രീത്യർത്ഥം, ശുഭേ ശോഭനേ മുഹൂർതേ ആദ്യബ്രഹ്മണഃ ദ്വിതീയ പരാർധേ ശോതവരാഹകല്പേ വൈവസാത മനാന്തരേ അഷ്ടാവിംശതി തമേ കലിയുഗേ പ്രഥമേ പാദേ ജംബൂദ്വീപേ ഭാരതവർഷേ ഭരതഖണ്ഡേ മേരോഃ ദക്ഷിണേ പാർശോ ശകാബ്ദേ അസ്തിൻ വർത്തമാനേ വൃവഹാരികേ പ്രഭവാദി–ഷഷ്ട്യാഃ–സംവഥ്സരാണാം മദ്ധ്യേ നാമസംവഥ്സരേ......അയനേ ഋതൗ മാസേപക്ഷേ ശുഭതിഥൗ..... വാസരയുക്തായാംനക്ഷത്രയുക്തായാം ശുഭയോഗ ശുഭകരണ ഏവം ഗുണ സകല വിശേഷണ വിശിഷ്ടായാം അസ്യാം ശ്രീ പരമേശ്വര പ്രീത്യർത്ഥം (യജമാനസ്യ) ആത്മശുദ്ധ്യർത്ഥം, ശരീരശുദ്ധ്യർത്ഥം, സർവോപകരണ ശുദ്ധ്യർത്ഥം, ശുദ്ധ്യർത്ഥ-ശുദ്ധി പുണ്യാഹവാചനം കരിഷ്യേ (ദ്വിഃ) (ഇതി സങ്കല്പ്യ ദർഭാൻ നിരസ്യ, അപ ഉപസ്സൃശ്യ)

3.5.2 കുംഭ പ്രതിഷ്ടാ മന്ത്രാഃ (TS 1.5.11.3) ______ ഉദുത്തമം ്വരുണ പാശമസ്തദവാധമം ്വി മദ്ധ്യമ⊌ ശ്രഥായ । അഥാ വയമാദിതൃ വ്രതേ തവാനാഗസോ അദിതയേ സൃാമ ॥ 1 (TS 1.2.8.1) അസ്തഭ്നാത് ദൃാമൃഷഭോ അന്തരിക്ഷ–മമിമീത വരിമാണം പൃഥിവൃാ ആടസിദദിശ്വാ ഭുവനാനി സമ്രാഡ് വിശേചത്താനി വരുണസൃ വ്രതാനി ॥ 2 (TS 3.4.11.6) യത് കിഞ്ചേദം ്വരുണ ദൈവ്യേ ജനേ ടഭിദ്രോഹം മനുഷൃാശ്ചരാമസി । അചിത്തീ യത്തവ ധർമാ യുയോപിമ മാ ന സ്തസ്താദേനസോ ദേവ രീരിഷഃ ॥ 3 (TS 3.4.11.6) കിതവാസോ യദ്–രിരിപുർ ന ദീവി യദ്വാ ഘാ സതൃ– മുതയന്ന വിദ്മ । സർവാ താ വി ഷൃ ശിഥിരേവ ദേവാഥാ തേ സൃാമ വരുണ പ്രിയാസഃ ॥ 4 (TS 1.5.11.3) _____ അവ തേ ഹേഡോ വരുണ നമോഭിരവ യജ്ഞേഭി–രീമഹേ ഹവിർഭിഃ ।

ക്ഷയന്നസൂഭൃ−മസുര പ്രചേതോ രാജന്നേനാം്സി ശിശ്രഥഃ

കൃതാനി ॥ 5

(T.S. 2.1.11.6)

തത്വാ യാമി ബ്രഹ്മണാ വന്ദമാന സ്തദാശാസ്തേ യജമാനോ ഹവിർഭിഃ । അഹേഡമാനോ വരുണേഹ ബോദ്ധ്യുരുശ*്*സ മാ ന ആയുഃ പ്ര മോഷീഃ ॥ 6

OR

ഇമം മേ വരുണ ശ്രുധീ ഹവമദ്ധ്യാ ച മൂഡയ । ത്വാമവസ്യു രാചകേ । തത്വാ യാമി ബ്രഹ്മണാ വന്ദമാനസ്തദാ ശാസ്തേ യജ്മാനോ ഹവിർഭിഃ । അഹേയമാനോ വരുണേഹ ബോദ്ധ്യുരുശ∨്സ മാ ന ആയുഃ പ്രമോഷീഃ ॥

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്തിൻ കുംഭേ വരുണം ധ്യായാമി ആവാഹയാമി । വരുണായ നമഃ । രത്ന സിംഹാസനം സമർപയാമി । പാദ്യം സമർപയാമി ।

അർഘും സമർപയാമി । ആചമനീയം സമർപയാമി । മധുപർകം സമർപയാമി । സ്നാനം സമർപയാമി । സ്നാനാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । വസ്ത്രോത്തരീയം സമർപയാമി । ഉപവീതം സമർപയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । ഹരിദ്രാ–കുംകുമം സമർപയാമി । അക്ഷതാൻ സമർപയാമി । പുഷ്ട്രൈം പൂജയാമി ।

- ഒാം വരുണായ നമഃ
 ഒാം പ്രചേതസേ നമഃ
- 3. ഓം സുരൂപിണേ നമഃ 4. ഓം അപാംപതയേ നമഃ

- 5. ഓം മകരവാഹനായ നമഃ 6. ജലാധിപതയേ നമഃ
- 7. ഓം പാശഹസ്തായ നമഃ 8. ഓം തീർത്ഥരാജായ നമഃ । ഓം വരുണായ നമഃ । നാനാവിധ പരിമള പത്ര പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ । ഓം തഥ്സ്വിതുർവരേണ്യം ഭർഗോ ദേവസു ധീമഹി । ധിയോ യോനഃ പ്രചോദയാത് । ദേവ സവിതഃ പ്രസുവഃ । സതൃം ത്വർതേന പരിഷിഞ്ചാമി । (രാത്രൗ – ഋതം ത്വാ സത്യേന പരിഷിഞ്ചാമി) । ഓം വരുണായ നമഃ । അമൃതം ഭവതു । അമൃതോപസ്തരണമസി । ഒാം പ്രാണായ സ്വാഹാ I ഓം അപാനായ സ്വാഹാ I ഒാം വൃാനായ സ്വാഹാ I ഓം ഉദാനായ സ്വാഹാ I ഒാം സമാനായ സ്വാഹാ । ഒാം ബ്രഹ്മണേ സ്വാഹാ । കദളീഫലം (മഹാനൈവേദൃം) നിവേദയാമി । മദ്ധ്യേ മദ്ധ്യേ അമൃതപാനീയം സമർപയാമി । അമൃതാപിധാനമസി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । താംബൂലം സമർപയാമി । കർപൂര നീരാജനം പ്രദർശയാമി । നീരാജനാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । മന്ത്ര പുഷ്പം സമർപയാമി । സുവർണ പുഷ്പം സമർപയാമി । സമസ്തോപചരാൻ സമർപയാമി ॥

| ബ്രാഹ്മണ വചനം | ബ്രാഹ്മണ പ്രതിവചനം | | |
|-----------------------------|----------------------|--|--|
| ഭവദ്ഭി അനുജ്ഞാതഃ പുണൃാഹം | വാചൃതാം | | |
| വാചയിഷൃ | | | |
| കർമണഃ പുണ്യാഹം ഭവന്തോ | പുണ്യാഹം കർമണോടസ്തു | | |
| ബ്രുവന്തു | പുണ്യം ഭവതു | | |
| കർമണേ സാസ്തി ഭവന്തോ | സ്വസ്തി കർമണോടസ്തു | | |
| ബ്രുവന്തു | | | |
| സർവോപകരണ ശുദ്ധികർമണേ | സർവോപകരണ ശുദ്ധികർമണേ | | |
| സ്വസ്തി ഭവന്തോ ബ്രുവന്തു | സ്വസ്തി | | |
| കർമണ ഋദ്ധി ഭവന്തോ ബ്രുവന്തു | കർമ ഋദ്ധ്യതാം | | |
| ഋദ്ധി സമൃദ്ധിഃ | പുണൃാഹ സമൃദ്ധിഃ | | |
| ശിവം കർമ | അസ്തു | | |

ശാന്തിരസ്തു പുഷ്ടിരസ്തു

തുഷ്ടിരസ്തു ജ്ചിരസ്തു

അവിഘ്നമസ്തു ആയുഷ്യമസ്തു

ആരോഗ്യമസ്തു ധനധാന്യ സമൃദ്ധിരസ്തു

ഗോബ്രാഹ്മണേഭ്യഃ ശുഭം ഭവതു ।

(ഐശാന്യാം ദിശി ബഹിദ്ദേശേ) അരിഷ്ട്രനിരസനമസ്തു ।

ഉത്തരേ കർമണി അവിഘ്നമസ്തു । ഉത്തരോത്തരാഭിവൃദ്ധിഃ അസ്തു ।

സർവേശോഭനമസ്തു സർവാഃ സംപദഃ സന്തു

3.5.3 <u>വേദാരംഭേ ജപൂാഃ മന്ത്രാഃ</u>

```
ഹരിഃ ഓം , ശ്രീ ഗുരുഭ്യോ നമഃ, ഹരിഃ ഓം ।
ഓം ഭൂഃ – തഥ്സവിതുർവരേണ്യം ।
ഓം ഭൂവഃ – ഭർഗോ ദേവസൃ ധീമഹി ।
ഓ∨് സുവഃ– ധിയോ യോനഃ പ്രചോദയാത് ।
ഓം ഭൂഃ – തഥ്സവിതുർവരേണ്യം ഭർഗോ ദേവസ്യ ധീമഹി ദ
ഓം ഭൂവഃ – ധിയോ യോനഃ പ്രചോദയാത് ।
ഓ∨് സുവഃ – തഥ്സവിതുർവരേണൃം ഭർഗോ ദേവസു ധീമഹി
ധിയോ യോനഃ പ്രചോദയാത് । ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ ।
ദധിക്രാവ്ണ്ണോ അകാരിഷം ജിഷ്ണോരശാസൃ വാജിനഃ i സുരഭി
നോ മുഖാ കരത് പ്രണ ആയു ഗ്ഷി താരിഷത് । ആപോഹിഷ്റാ
മയോഭുവ–സ്താന ഊർജേ ദധാതന । മഹേരണായ ചക്ഷസേ ।
യോ വ ശ്ശിവതമോ രസ–സ്തസൃ ഭാജയതേ ഹ നഃ ।
ഉശതീരിവ മാതരഃ । തസ്മാ അരംഗമാമ വോ യസ്യ ക്ഷയായ
ജിന്വഥ । ആപോ ജനയഥാ ച നഃ ।
ആപോ വാ ഇദം ്് സർവം വിശ്വാ ഭൂതാന്യാപഃ പ്രാണാ വാ
ആപഃ പശവ ആപോടന്നമാപോ–ടമൃതമാപ–സ്സമ്രാഡാപോ
വിരാഡാപ–സ്റ്റ്വരാഡാപ–ശ്ശന്ദാ৺ സൃാപോ ജ്യോതീ৺ഷൃാപോ
യജൂ ⊎ഷൃാപ–സ്സതൃമാപ–സ്സർവാ ദേവതാ
ആപോ ഭൂർഭുവസ്സുവരാപ ഓം ।
```

3.6 <u>പവമാന സൂക്തം</u>

TS 5,6.1.1 ഹിരണൃവർണാഃ ശുചയഃ പാവകാ യാസു ജാതഃ കശൃപോ യാസ്വിന്ദ്രഃ । അഗ്നിം ^{*}യാ ഗർഭം ദധിരേ വിരൂപാസ്താന ആപശ്ശ^{്യ} സ്യോനാ ഭവന്തു ॥ യാസാ⊍് രാജാ വരുണോ യാതി മദ്ധ്യേ സത്യാനൃതേ അവപശൃൻ ജനാനാം । മധുശ്ചുത–ശ്ശുചയോ യാഃ പാവകാസ്താ ന ആപശ്ശ⊎ സ്യോനാ ഭവന്തു ॥ യാസാം ദേവാ ദിവി കൃണ്വന്തി ഭക്ഷം ്യാ അന്തരിക്ഷേ ബഹുധാ ഭവന്തി । യാഃ പൂഥിവീം പയസോന്ദന്തി ശുക്രാസ്താ ന ആപശ്ശ 🗵 സ്യോനാ ഭവന്തു ॥ ശിവേന മാ ചക്ഷുഷാ പശൃതാപ ശ്ശിവയാ തനുവോപ സ്പൃശത താചം മേ । സർവാഴ് അഗ്നീഴ് രഫ്സുഷദോ ഹുവേ വോ മയി വർചോ ബലമോജോ നി ധത്ത ॥ TB 1.4.8.1 (for item No. 1 to 6) പവമാന്ന–സ്സുവർജനഃ । പവിത്രേണ വിചർ.ഷണിഃ । യഃ പോതാ സ പുനാതു മാ । പുനന്തു മാ ദേവജനാഃ । പുനന്തു മനവോ ധിയാ । പുനന്തു വിശ് ആയവഃ । ജാതവേദഃ പവിത്രവത് । പവിത്രേണ പുനാഹി മാ ।

ശുക്രേണ ദേവ ദീദൃത്। അഗ്നേ ക്രത്വാ–ക്രതൂ v്രനു ॥ 1

```
യത്തേ പവിത്ര-മർചിഷി । അഗ്നേ വിതത-മന്തരാ ।
ബ്രഹ്മ തേന പുനീമഹേ । ഉഭാഭ്യാം ദേവ സവിതഃ ।
പവിത്രേണ സവേന ച । ഇദം ബ്രഹ്മ പുനീമഹേ ।
വൈശ്വദേവീ പുനതീ ദേവ്യാഗാത് ।
യസ്യൈ ബഹ്വീ–സ്തനുവോ വീതപൃഷ്ഠാഃ ।
തയാ മദന്ത–സ്സധമാദ്യേഷു ।
വയ⊎ സൃാമ പതയോ രയീണാം । 2
വൈശ്വാനരോ രശ്മിഭിർ മാ പുനാതു ।
വാതഃ പ്രാണേനേഷിരോ മയോഭൂഃ ।
ദൃാവാപൃഥിവീ പയസാ പയോഭിഃ ।
ഋതാവരീ യജ്ഞിയേ മാ പുനീതാം ।
ബൃഹദ്ഭി–സ്സവിതസ്തൃഭിഃ । വർ.ഷിഷ്യൈർ ദേവമന്മഭിഃ ।
അഗ്നേ ദക്ഷെഃ പുനാഹി മാ । യേന ദേവാ അപുനത ।
യേനാപോ ദിവൃങ്കശഃ । തേന ദിവേൃന ബ്രഹ്മണാ । 3
ഇദം ബ്രഹ്മ പുനീമഹേ । യഃ പാവമാനീ-രദ്ധേതി ।
ഋഷിഭ്വ–സ്സംഭൃത്യ രസം । സർവ്യ സ പൂതമശ്ഞാതി ।
സ്വദിതം മാതരിശ്വനാ । പാവമാനീര്യോ അദ്ധ്യേതി ।
ഋഷിഭി−സ്സംഭൃതഴ് രസം । തസ്മൈ സരസ്വതീ ദുഹേ ।
ക്ഷീര⊍് സർപിർ മധൂദകം । പാവമാനീ സ്റ്റ്വസ്തൃയനീഃ ॥ 4
സുദുഘാ ഹി പയസ്വതീഃ । ഋഷിഭി–സ്സംഭൃതോ രസഃ ।
ബ്രാഹ്മണേഷ്വമൃത്യ് ഹിതം । പാവമാനീർ ദിശന്തു നഃ ।
```

```
ഇമം ്ലോകമഥോ അമും । കാമാൻഥ് സമർദ്ധയന്തു നഃ ।
ദേവീർ ദേവൈഃ സമാഭൂതാഃ । പാവമാനീ-സ്റ്റ്വസ്തൃയനീഃ ।
സുദുഘാ ഹി ഘൃതശ്ചുതഃ । ഋഷിഭി–സ്സംഭൃതോ രസഃ ॥ 5
ബ്രാഹ്മണേഷ്വ–മൃത്യ ഹിതം। യേന ദേവാഃ പവിത്രേണ ।
ആത്മാനം പുനതേ സദാ । തേന സഹന്ര്ര ധാരേണ ।
പാവമാനൃഃ പുനന്തു മാ । പ്രാജാപതൃം പവിത്രം ।
ശതോദൃാമ 🗸 ഹിരഞ്ചയം । തേന ബ്രഹ്മവിദോ വയം ।
പൂതം ബ്രഹ്മ പുനീമഹേ । ഇന്ദ്ര–സ്സുനീതീ സഹ മാ പുനാതു ।
സോമ-സ്സിസ്ത്യാ വരുണ-സ്സമീച്യാ ।
യമോ രാജാ പ്രമൃണാഭിം പുനാതു മാ ।
ജാതവേദാ മോർജയന്ത്യാ പുനാതു । 6
ഭൂർഭുവസ്സുവഃ ॥
TB 3.5.11.1
തച്ഛം യോരാവൃണീമഹേ । ഗാതും ്യജ്ഞായ ।
ഗാതും "യജ്ഞപതയേ 1 ദൈവ" സാസ്തിരസ്തു നഃ 1
സാസ്തിർ മാനുഷേഭ്യഃ । ഊർദ്ധാം ജിഗാതു ഭേഷജം ।
ശന്നോ അസ്തു ദ്വിപദേ । ശം ചതുഷ്പദേ ॥
3.6.1 <u>വാസ്കൂ മന്ത്രം</u>
TS 3.4.10.1
വാസ്തോഷ്പതേ പ്രതി ജാനീഹൃസ്താൻഥ് സ്വാവേശോ
അനമീവോ ഭവാ നഃ । യത്തോമഹേ പ്രതി തന്നോ ജുഷസാ ശന്ന
ഏധി ദ്വിപദേ ശം ചതുഷ്പദേ ।
```

വാസ്തോഷ്പതേ ശ_ഗമയാ സൗ്സദാ തേ സക്ഷീമഹി രണ്വയാ ഗാതുമത്യാ । ആവഃ ക്ഷേമ ഉത യോഗ്രേ വരന്നോ യൂയം പാത സാസ്തിഭി–സ്സദാ നഃ । APMB (EAK) - 2.15.19 വാസ്തോഷ്പതേ പ്രതരണോ ന ഏധി ഗോഭിരശോഭിരിന്ദോ । അജരാസസ്തേ സഖ്യേ സ്യാമ പിതേവ പുത്രാൻ പ്രതി നോ ജുഷസ്വ ദ അമീവഹാ വാസ്തോഷ്പതേ വിശ്വാ രൂപാണ്യാവിശന്ന് i സഖാ സുശേവ ഏധിനഃ । ശിവഴ് ശിവം ॥ ഭൂർഭുവസ്സുവോ ഭൂർഭുവസ്സുവോ ഭൂർഭുവസ്സുവഃ ॥ 3.6.2 <u>വരൂണ ഉദ്ധാപനം</u> ഓം നമോ ബ്രഹ്മണേ നമോ അസ്ത്വഗ്നയേ നമഃ പൃഥിവ്യെ നമ ഓഷധീഭൃഃ । നമോ വാചേ നമോ വാചസ്പതയേ നമോ വിഷ്ണവേ ബൃഹതേ കരോമി । **(ത്രിവാരം ജപേത്)** വരുണായ നമഃ സകലാരാധന്നെഃ സ്വർചിതം । തത്വാ യാമി ബ്രഹ്മണാ വന്ദമാനസ്തദാശാസ്തേ യജമാനോ ഹവിർഭിഃ । അഹേഡമാനോ വരുണേഹ ബോദ്ധ്യുരുശ്യ്സ മാ ന ആയുഃ പ്രമോഷീഃ ॥ ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മാത് കുംഭാത് ആവാഹിതം സകല തീർത്ഥാധിപതിം വരുണം യഥാസ്ഥാനം പ്രതിഷ്ഠാപയാമി । ശോഭനാർത്ഥേ ക്ഷേമായ പുനരാഗമനായ ച ।

3.6.3 പ്രോക്ഷണ മന്ത്രാഃ

```
TB 2.6.5.2 for 1 to 3 / TS 1.7.10.3 for 4, 5 / TB 3.5.10.4 for 6 & 7 /
T.B.2.4.4.10 for 8 / RV 10.137.6 for 9 / TA 1.26.5 for 10
ദേവസൃത്വാ സവിതുഃ പ്രസവേ । അശിനോർ ബാഹുഭൃാം ।
പൂഷ്ണോ ഹസ്സാഭ്യാം । അശിനോർ ഭൈഷജ്യേന ।
തേജസേട ബ്രഹ്മവർചസായാഭിഷിഞ്ചാമി ॥ 1
ദേവസൃത്വാ സവിതുഃ പ്രസവേ । അശിനോർ ബാഹുഭൃാം ।
പൂഷ്ണോ ഹസ്താഭ്യാം 1 സരസ്വത്ത്യെ ഭൈഷജ്യേന 1
വീര്യായാന്നാദ്യായാഭിഷിഞ്ചാമി ॥ 2
ദേവസൃത്വാ സവിതുഃ പ്രസവേ 1 അശിനോർ ബാഹുഭൃാം 1
പൂഷ്ണോ ഹസ്താഭൃാം । ഇന്ദ്രസ്യേന്ദ്രിയേണ ।
ശ്രിയൈ യശസേ ബലായാഭിഷിഞ്ചാമി i 3
സോമ∀് രാജാനം വരുണ–മഗ്നി മന്വാരഭാമഹേ ।
ആദിതൃാൻ. വിഷ്ണു∀് സൂരൃം ബ്രഹ്മാണഞ്ച ബൃഹസ്പതിം ॥ 4
ദേവസൃത്വാ സവിതുഃ പ്രസവേ ടശ്വിനോർ ബാഹുഭൃാം
പൂഷ്ണോ ഹസ്താഭ്യാഴ് സരസ്വത്ത്യെ വാചോയന്തുർ യന്ത്രേണാ–
ഗേസ്ത്വാ സാമ്രാജ്യേനാഭിഷിഞ്ചാമീന്ദ്രസൃത്വാ
സാമ്രാജ്യേനാഭിഷിഞ്ചാമി ബൃഹസ്പതേസ്ത്വാ
സാമ്രാജൃനാഭിഷിഞ്ചാമി 🛚 5
ത്തുയു –രാശാസ്തേ । സുപ്രജാസ്ത്വ–മാശാസ്തേ ।
സജാതവനസൃാ–മാശാസ്തേ ।
ഉത്തരാൻദേവ–യജ്യാ–മാശാസ്തേ ।
```

```
ഭൂയോ ഹവിഷ്കരണ–മാശാസ്തേ ।
ദിവൃന്ധാ–മാശാസ്തേ । വിശ്വം പ്രിയ–മാശാസ്തേ ।
യദനേന ഹവിഷാശാസ്തേ 🛚 6
തദശ്യാത്-തദൃദ്ധ്യാത് । തദസ്തൈ ദേവാ രാസന്താം ।
തദഗ്നിർ ദേവോ ദേവേഭ്യോ വനതേ ।
വയമഗ്നേർ മാനുഷാഃ । ഇഷ്ടം ച വീതം ച ।
ഉഭേ ച നോ ദൃാവാപൃഥിവീ അഴ്ഹസസ്പാതാം ।
ഇഹ ഗതിർ വാമസ്യേദം ച । നമോ ദേവേഭൃഃ ॥ 7
ദ്രുപദാദിവേൻ മുമുചാനഃ । സ്വിന്നഃ സ്നാത്വീ മലാദിവ ।
പൂതം പവിത്രേണേ വാജ്യം । ആപഃ ശുന്ധന്തു മൈനസഃ ।
ഭൂർഭുവസ്സുവോ ഭൂർഭുവസ്സുവോ ഭൂർഭുവസ്സുവഃ ॥ 8
പ്രാശന മന്ത്രഃ
ആപ ഇദ്വാ ഉ ഭേഷജീഃ । ആപോ അമീവചാതനീഃ ।
ആപസ്സർവസ്യ ഭേഷജീ 1 താസ്തേ കൃണ്വന്തു ഭേഷജം ॥ 9
[അകാല മൃത്യു ഹരണം സർവ വ്യാധി നിവാരണം ।
സർവ(സമസ്ത) പാപക്ഷയഹരം (ദേവതാ "നാമ") വരുണ*
പാതോദകം ശുഭം । ]
<u>സ്ത്രീണാം പ്രാശനേഃ</u>
ആമയാവീ ചിന്വീത । ആപോ വൈ ഭേഷജം ।
ഭേഷജമേവാസ്കൈ കരോതി । സർവമായുരേതി || 10
```

3.6.4 ഗ്രഹ പ്രീതി

മമോപാത്ത സമസ്ത ദുരിതക്ഷയദ്വാരാ ശ്രീ പരമേശ്വര പ്രീതൃർത്ഥം ഗ്രഹപ്രീതികര ഹിരണ്യദാനം കരിഷ്യേ । ഹിരണൃഗർഭ ഗർഭസ്ഥം ഹേമബീജം ബിഭാവസോഃ ।

അനന്ത പുണൃ ഫലതം അതഃ ശാന്തിം പ്രയശ്ചമേ ।

മയാ സങ്കല്പിത ശ്രീരുദ്രഏകാദശിന്യാഖ്യ (മഹാരുദ്രാഖ്യ) മഹാപ്രായശ്ചിത്ത രൂപ ശിവാരാധന കർമ ആരംഭ മുഹൂർത്ത ലഗ്നാപേക്ഷയാ, ആദിത്യാനാം നവാനാം ഗ്രഹാണാം ആനുകുല്യ സിദ്ധർത്ഥം, യേ യേ ഗ്രഹാഃ ശുഭ സ്ഥാനേഷു സ്ഥിതാഃ യേ യേ ഗ്രഹാഃ ശുഭ ഇതര സ്ഥാനേഷു സ്ഥിതാശ്ച,

തേഷാം തേഷാം ഗ്രഹാണാം അതൃന്ത അതിശയിത ശുഭഫലപ്രസാതൃത്വ സിദ്ധ്യർത്ഥം ആദിതൃാദി നവഗ്രഹ പ്രസാദ സിദ്ധർത്ഥം, യത് കിഞ്ചിത് ഹിരണൃം ബ്രാഹ്മണേഭൃഃ സംപ്രദദേ ॥ ഓം തത് സത് ।

3.6.5 പൂർവാംഗ നാന്ദീ ശ്രാർദ്ധം

സപത്നീകേന മയാ ക്രിയമാണ രുദ്രൈകാദശിനീ (മഹാരുദ്ര) കർമണഃ പുർവാംഗത്വേന വിഹിത നാന്ദീശ്രാദ്ധേ യേ വിഹിതാഃ തേഷാമിദമാസനം 1

(ഇതി സർവേഷാം ആസനാദ്യുപചാരം കുർയാത്)

ഹിരണൃഗർഭ ഗർഭസ്ഥം ഹേമബീജം ബിഭാവസോഃ । അനന്ത പുണൃ ഫലതം അതഃ ശാന്തിം പ്രയശ്ചമേ । സപത്നീകേന മയാ ക്രിയമാണ രുദ്രൈകാദശിനീ കർമണഃ പുർവാംഗത്വേന വിഹിത നാന്ദീശ്രാദ്ധേ യേ വിഹിതാഃ തേഷാം പ്രീതൃർത്ഥം ഇദം ഹിരണൃം ബ്രാഹ്മണേഭൃഃ സംപ്രദദേ ॥ ഒാം തത് സത് രാന്ദീശോഭന ദേവതാഃ പ്രീയന്താം ര

3.6.6 <u>വൈഷ്കവ ശ്രാദ്ധം</u>

ഹിരണൃഗർഭ ഗർഭസ്ഥം ഹേമബീജം ബിഭാവസോഃ । അനന്ത പുണൃ ഫലതം അതഃശാന്തിം പ്രയശ്ചമേ । സപത്നീകേന മയാ ക്രിയമാണ രുദ്വൈകാദശിനീ (മഹാരുദ്ര) കർമണഃ പുർവാംഗത്വേന വിഹിത വൈഷ്ണവശ്രാദ്ധേ മഹാവിഷ്ണു പ്രീതൃർത്ഥം ഇദം ഹിരണൃം ബ്രാഹ്മണേഭൃഃ സംപ്രദദേ ॥ ഒാം തത് സത് ।

3.6.7 ഗോദാനം

പരമേശ്വര സ്വരൂപസ്യ ബ്രാഹ്മണസ്യ ഇദമാസനം । സകലാരാധന്നെഃ സ്വർച്ചിതം । ഹിരണൃഗർഭ ഗർഭസ്ഥം ഹേമബീജം ബിഭാവസോഃ । അനന്ത പുണൃ ഫലതം അതഃ ശാന്തിം പ്രയശ്ചമേ । ഗവാമംഗേഷു തിഷ്റ്റന്തി ഭുവനാനി ചതുർദശ ।

തസ്മാസ്വസ്യാഃ പ്രദാനേന അതഃ ശാന്തിം പ്രയശ്ച മേ ॥ സപത്നീകേന മയാ ക്രിയമാണ രുദ്രൈകാദശിനീ (മഹാരുദ്ര) കർമണഃ പുർവാംഗത്വേന വിഹിത ഗോപ്രതിനിധി ഇദം ഹിരണൃം (ഗോമൂലൃം) സദക്ഷിണാകം തുഭ്യമഹം സംപ്രദദേ ॥ ഓം തത് സത് । പരമേശ്വര പ്രീയതാം

3.6.8 ദശ ദാനം

പരമേശ്വര സ്വരൂപസൃ ബ്രാഹ്മണസൃ ഇദമാസനം I സകലാരാധനൈഃ സ്വർച്ചിതം I

ഹിരണൃഗർഭ ഗർഭസ്ഥം ഹേമബീജം ബിഭാവസോഃ । അനന്ത പുണൃ ഫലതം അതഃ ശാന്തിം പ്രയശ്ചമേ । ഗോ, ഭൂ, തില, ഹിരണൃ, ആജൃ, വാസഃ, ധാനൃഃ, ഗുളഃ, രൗപൃ ലവണാഖൃ ദശദ്രവൃാനാം പ്രതിനിധി യത് കിഞ്ചിത് ഇദം ഹിരണൃം സദക്ഷിണാകം തുഭൃമഹം സംപ്രദദേ ॥ ഓം തത് സത് ।

3.6.9 <u>കൃച്ഛാചരണം</u>

ഹിരണൃഗർഭ ഗർഭസ്ഥം ഹേമബീജം ബിഭാവസോഃ । അനന്ത പുണൃ ഫലതം അതഃ ശാന്തിം പ്രയശ്ചമേ । ശ്രീ രുദ്രൈകാദശിനൃാഖൃ (മഹാരുദ്രാഖൃ) മഹാപ്രായശ്ചിത്ത ശിവാരാധന യോഗൃതാ സിദ്ധൃർത്ഥം പൂതത്വ സിദ്ധൃർത്ഥം കൃച്ഛോചരണ പ്രതിനിധി യത് കിഞ്ചിത് ഇദം ഹിരണൃം സദക്ഷിണാകം ബ്രാഹ്മണേഭൃഃ തുഭൃമഹം സംപ്രദദേ ॥ ഓം തത് സത് ।

3.6.10 <u>ജത്വിഗ് വരണം</u>

അസ്മിൻ രുദ്രൈകാദശിനീ (മഹാരുദ്ര) കർമണി മഹാദേവ (കലശ) പൂജാ രുദ്ര ജപ ഹോമാർത്ഥം ഋത്വിജം വൃണേ ।

(ഏവം ഭവോദ്ഭവ പരുന്തം വൃത്വാ)

3.6.11 <u>ആചാരൃ വരണം</u>

അസ്മിൻ രുദ്രൈകാദശിനീ കർമണി ആദിതൃാമക രുദ്ര കലശ പൂജാ രുദ്ര ജപ ഹോമാർത്ഥം സകല കർമ കർത്തും ആചാര്യം ത്വാം വൃണേ I

3.6.12 <u>ഋത്വിഗ് വരണം (Rutvik performing Abishekam)</u>

അസ്മിൻ രുദ്രൈകാദശിനീ (മഹാരുദ്ര) കർമണി മഹാന്യാസ പൂർവ രുദ്രജപ ഏകാദശവാര രുദ്രജപ അഭിഷേകാർത്ഥം ഋത്വിജം ത്വാം വൃണേ । സർവേഭ്യോ ബ്രാഹ്മണേഭ്യോ നമഃ

രുദ്രൈകാദശിനീ (മഹാരുദ്ര) കർമ അന്യോന്യ സഹായേന കുരുദ്ധാം I (വയം കുർമഃ –ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതിവചനം)

3.6.13 <u>ആചാരൃസൃ ഋത്വിജാം ച സംകൽപ</u>ഃ

3.6.14 <u>കലശാദിപൂജാ</u>

കലശായ നമഃ । ദിവൃഗന്ധാൻ ധാരയാമി । ഗംഗായൈ നമഃ । യമുനായൈ നമഃ । ഗോദാവരുൈ നമഃ । സരസ്വത്ത്യെ നമഃ । നർമദായൈ നമഃ । സിന്ധവേ നമഃ । കാവേരുെ നമഃ । സപ്തകോടി മഹാതീർത്ഥാൻ ആവാഹയാമി । (അഥ കലശം സ്പൃഷ്ട്വാ ജപം കുര്യാത്)

ആപോ വാ ഇദം ് സർവം ്വിശ്വാ ഭൂതാന്യാപം പ്രാണാ വാ ആപം പശവ ആപോടന്നമാപോ–ടമൃതമാപ്–സ്സമ്രാഡാപോ വിരാഡാപ്–സ്സ്വരാഡാപ–ശ്ശന്ദാ ്യസ്യാപോ ജ്യോതീ്്ഷ്യാപോ യജൂ്്ഷ്യാപ്–സ്സതൃമാപ–സ്സർവാ ദേവതാ ആപോ ഭൂർഭുവസ്സുവരാപ ഓം ।

കലശസ്യ മുഖേ വിഷ്ണുഃ കണ്റേ രുദ്രഃ സമാശ്രിതഃ ।

മൂലേ തത്ര സ്ഥിതോ ബ്രഹ്മാ മദ്ധ്യേ മാതൃഗണാഃ സ്മൃതാഃ I കുക്ഷൗ തു സാഗരാഃ സർവേ സപ്തദ്വീപാ വസുന്ധരാ അംഗൈശ്ച സഹിതാഃ സർവേ കലശാംബു സമാശ്രിതാഃ I നർമദേ സിന്ധു കാവേരി ജലേടസ്മിൻ സന്നിധിം കുരു I സർവേ സമുദ്രാഃ സരിതഃ തീർത്ഥാനി ച ഹ്രദാ നദാഃ I അയാന്തു ശിവപൂജാർത്ഥം ദുരിതക്ഷയകാരകാഃ I ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവോ ഭൂർഭുവസ്സുവോ ഭൂർഭുവസ്സുവഃ II (ഇതി കലശജലേന സർവോപകരണാനി,

3.6.15 <u>ശംഖപൂജാ</u>

(കലശജലേന ശംഖം പ്രക്ഷാള്യ, പുനഃ കലശജലേന ശംഖം ഗായത്ര്യാ പ്രപൂര്യഃ) പാഞ്ചജന്യായ നമഃ । ദിവൃഗന്ധാൻ ധാരയാമി । (ശംഖമൂലേ) ബ്രഹ്മണേ നമഃ । (ശംഖമദ്ധ്യേ) ജനാർദനായ നമഃ । (ശംഖാഗ്രേ) ചന്ദ്രശേഖരായ നമഃ ।

(ഇതി അഭൂർച്ചു । ശംഖം സ്റ്റൂഷ്ട്വാ ജപേത് ।)

ശംഖം ചന്ദ്രാർക്കളൈവത്യം മദ്ധ്യേ വരുണസംയുതം । പൃഷ്ടേ പ്രജാപതിശൈചവ അഗ്രേ ഗംഗാ സരസ്വതീ ॥ ത്രെലോക്യേ യാനി തീർത്ഥാനി വാസുദേവസ്യ ചാജ്ഞയാ ശംഖേ തിഷ്ഠതി വിപ്രേന്ദ്രാഃ തസ്മാച്ഛംഖം പ്രപൂജയേത് ।

ത്വം പുരാസാഗരോത്പന്നോ വിഷ്ക്കുനാ വിധൃതഃ കരേ *പൂജിതഃ സർവദേവൈഗ്ചെ പാഞ്ചജന്യ* നമോടസ്തുതേ *।* ഗർഭാ ദേവാരിനാരീണാം വിശീരൃന്തേ സഹസ്രധാ *തവ നാദേന പാതാളേ പാഞ്ചജന്യ* നമോടസ്തുതേ *I* ഓം പാഞ്ചജനൃായ വിദ്മഹേ പവമാനായ ധീമഹി **ദ** തന്നഃ ശംഖഃ പ്രചോദയാത് (ഇതി ത്രിവാരം ജപിത്വാ) **അഗ്നേർ മനോ** പ്രഥമസൃ പ്രചേതസോ യം പാഞ്ചജനൃം ബഹവ സ്റ്റമിന്ധതേ । വിശാസൃാം ്വിശി പ്രവിവിശിവാം്സ–മീമഹേ സ നോ മുഞ്ചതാഴ്ഹസഃ । (ഇതി ശംഖജലം കലശജലേ കിഞ്ചിത് ആസിചൃ, ശിഷ്മജലേന "ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവോ ഭൂർഭുവസ്സുവോ ഭൂർഭുവസ്സുവഃ" ഇതി സർവോപകരണാനി പ്രോക്ഷ്യ, ആത്മാനം ച പ്രോക്ഷ്യ, കലശോദകേന പുനശ്ച ശംഖം ഗായത്ര്യാ പൂരയിത്വാ)

3.6.16 ആത്മപുജാ

ആത്മനേ നമഃ । ദിവൃഗന്ധാൻ ധാരയാമി । ആത്മനേ നമഃ । അന്തരാത്മനേ നമഃ । യോഗാത്മനേ നമഃ । ജീവാത്മനേ നമഃ । പരമാത്മനേ നമഃ । ജ്ഞാനാത്മനേ നമഃ । സമസ്തോപചാരാൻ സമർപയാമി । ദേഹോ ജീവാലയഃ പ്രോക്തോ ജീവോ ദേവഃ സനാതനഃ । തൃജേദജ്ഞാന നിർമാല്യം സോടഹംഭാവേന പൂജയേത് ।

3.6.17 <u>പീഠപൂജാ</u>

1. ആധാരശകൈതൃ നമഃ

3. ആദികൂർമായ നമഃ

5. അനന്തായ നമഃ

7. രത്നമണ്ഡപായ നമഃ

9. സ്വർണസ്തംഭായൈ നമഃ

11. കല്പകവൃക്ഷായ നമഃ

13. സിതചാമരാഭ്യാം നമഃ

2. മൂലപ്രകൃത്ത്യെ നമഃ

4. ആദിവരാഹായ നമഃ

6. പൃഥിവൈൃ നമഃ

8. രത്നവേദികായൈ നമഃ

10. ശ്വേതഛത്രായ നമഃ

12. ക്ഷീരസമുദ്രായ നമഃ

14. യോഗപീഠാസനായ നമഃ

3.6.18 <u>നന്ദികേശ്വര അനുജ്ഞാ</u>

വേദാന്തവേദ്യാഖില വിശ്വമൂർത്തേ

വിഭോ വിരൂപാക്ഷ വിശേഷശൂന്യ ।

വിശോശാരാശേഷ–ഗണേശവന്ദ്യ

കവാടമുദ്ഘാടയ കാലാകാല

നന്ദികേശ്വരായ നമഃ ।

നന്ദികേശ്വര സർവജ്ഞ ശിവദ്ധ്യാന പരായണ

മഹേശ്വരസൃ പൂജാർത്ഥം അനുജ്ഞാം ദാതുമർഹസി ।

3.7 <u>പഞ്ചകലശ സ്ഥാപനം</u>

3.7.1 <u>പശ്ചിമം</u>

സദ്യോ ജാതം പ്രപദ്യാമി സദ്യോ ജാതായ വൈ നമോ നമഃ । ഭവേ ഭവേ നാതിഭവേ ഭവസ്വ മാം । ഭവോദ്ഭവായ നമഃ ॥ ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ പശ്ചിമകലശേ സദ്യോജാതം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।

3.7.2 ഉത്തരം

വാമദേവായ നമോ ജ്യേഷ്ഠായ നമാ ശ്രേഷ്ഠായ നമോ രുദ്രായ നമാ കാലായ നമാ കലവികരണായ നമോ ബലവികരണായ നമോ ബലവികരണായ നമോ ബലായ നമോ ബലപ്രമഥനായ നമാ സർവഭൂതദമനായ നമോ മനോന്മനായ നമാ । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്തിൻ ഉത്തരകലശേ വാമദേവം ധൃായാമി । ആവാഹയാമി ।

3.7.3 <u>ദക്ഷിണം</u>

അഘോരേഭ്യോ ടഥഘോരേഭ്യോ ഘോരഘോരതരേഭ്യഃ । സർവേഭ്യഃ സർവശർവേഭ്യോ നമസ്തേ അസ്തു രുദ്രരൂപേഭ്യഃ ॥ ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ ദക്ഷിണകലശേ അഘോരം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।

3.7.4 <u>പൂർവം</u>

തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ മഹാദ്ദേവായ ധീമഹി । തന്നോ രുദ്രഃ പ്രചോദയാത് ॥ ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ പൂർവകലശേ തത്പുരുഷം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।

3.7.5 മദ്ധ്യമം

ഈശാനഃ സർവവിദ്യാനാ-മീശ്വരഃ സർവഭൂതാനാം ബ്രഹ്മാധിപതിർ ബ്രഹ്മണോടധിപതിർ ബ്രഹ്മാ ശിവോ മേ അസ്തു സദാശിവോം II ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം I അസ്മിൻ മദ്ധ്യമ കലശേ ഈശാനം ധ്യായാമി I ആവാഹയാമി I സ്വാമിൻ സർവജഗന്നാഥ യാവത് പൂജാവസാനകം താവത് ത്വം പ്രീതിഭാവേന കുംഭേടസ്തിൻ സംന്നിധിം കുരു I

```
ആവാഹിതോ ഭവ । സ്ഥാപിതോ ഭവ । സന്നിഹിതോ ഭവ ।
സന്നിരുദ്ധോ ഭവ । അവകുണ്ഠിതോ ഭവ । സുപ്രീതോ ഭവ ।
സുപ്രസന്നോ ഭവ । വരദോ ഭവ ।
സ്വാഗതം അസ്തു । പ്രസീദ പ്രസീദ ।
3.7.6 ഉപചാരപൂജാ
```

സദ്യോ ജാതായ വൈ നമോ നമഃ – രത്നസിംഹാസനം സമർപയാമി । ഭവേ ഭവേ നാതിഭവേ ഭവസാ മാം – പാദ്യം സമർപയാമി ഭ — । ഭവോദ്ഭവായ നമഃ – അർഘൃം സമർപയാമി । – ആചമനീയം സമർപയാമി । വാമദേവായ നമഃ – മധുപർക്കം സമർപയാമി । ജ്യേഷ്ഠായ നമഃ – സ്കാനം സമർപയാമി । ശ്രേഷ്പായ നമഃ സ്നാനാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । – വസ്ത്രോത്തരീയം സമർപയാമി । രുദ്രായ നമഃ യജ്ഞോപവീതാഭരണാനി സമർപയാമി । കാലായ നമഃ – ഗന്ധാക്ഷതാൻ സമർപയാമി । കലവികരണായ നമഃ – പുഷ്പാണി സമർപയാമ<u>ി</u> । ബലവികരണായ നമഃ ബലായ നമഃ – ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । – ദീപം ദർശയാമി । ബലപ്രമഥനായ നമഃ – നൈവേദ്യം നിവേദയാമി । സർവേഭൂതദമനായ നമഃ – താംബൂലം സമർപയാമി । മനോന്മനായ നമഃ

```
സപരിവാര ശ്രീ സാംബപരമേശ്വരായ നമഃ ।
സർവോപചാരാർത്ഥേ കർപൂരനീരാജനം പ്രദർശയാമി ।
അഘോരേട്യോടഥ ഘോരേട്യോ ഘോരഘോര് തരേട്യുഃ ।
സർവേട്യുഃ സർവശർവേട്യോ നമസ്തേ അസ്തു രുദ്രരൂപേടുഃ ॥
തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ മഹാദ്ദേവായ ധീമഹി ।
തന്നോ രുദ്രഃ പ്രചോദയാത് ॥
ഈശാനഃ സർവവിദ്യാനാ–മീശ്വരഃ സർവഭൂതാനാം
ബ്രഹ്മാധിപതിർ ബ്രഹ്മണോടധിപതിർ–ബ്രഹ്മാ ശിവോ
മേ അസ്തു സദാശിവോം ॥
നമോ ഹിരണ്യബാഹവേ ഹിരണ്യവർണായ ഹിരണ്യരൂപായ ഹിരണ്യപതയേ ടംബികാപതയ ഉമാപതയേ
```

| . ^ | | | ^ |
|--------------|--------|-----|---|
| (M) | \cap | സ്വ | ത |
| \mathbf{v} | `~ | \ | |

SECTION 2 - MahAnyAsam

4 മഹാന്യാസഃ

4.1 കലശ പ്രതിഷ്ടാപന മന്ത്രാഃ

ബ്രഹ്ജജ്ഞാനം പ്രഥമം പുരസ്താദ് വി സിമത–സ്സൂരുചോ വേന ആവഃ । സ ബുധ്നിയാ ഉപമാ അസൃ വിഷ്യാ–സ്സതശ്ച യോനി–മസതശ്ച വിവഃ ।

നാകേ സുപർണ–മുപയത് പതന്ത്യ് ഹ്യൂദാ വേനന്തോ അഭ്യചക്ഷത ത്വാ । ഹിരണൃപക്ഷം ്വരുണസ്യ ദൂതം ്യമസ്യ യോനൗ ശകുനം ഭുരണ്യും ।

ആപുായസ്വ സമേതു തേ വിശ്വതഃ സോമ വൃഷ്ണിയം । ഭവാ വാജസൃ സംഗഥേ ।

യോ രൂദ്രോ അഗ്നൗ യോ അഫ്സു യ ഓഷ്ധീഷു യോ രൂദ്രോ വിശ്വാ ഭുവനാ ടടവിവേശ തസ്മൈ രുദ്രായ നമോ അസ്തു ല

(അപ ഉപസ്പൃശൃ)

ഇദം ്വിഷ്ണൂർ വിച്ക്രമേ ത്രേധാ നിദ്ധേ പദം ഭ സമൂഢമസൃ പാഴ് സുരേ ഭ

ഇന്ദ്രം ്്വിശ്വാ അവീവൃധൻ ഥ്സമുദ്രവൃചസം ഗിരഃ ദ രഥീതമ്യ് രഥീനാം ്വാജാനാ⊻് സത്പതിം പതിം ദ

```
ആപോ വാ ഇദം ്യ സർവം വിശ്വാ ഭൂതാന്യാപഃ പ്രാണാ വാ
ആപഃ പശവ ആപോടന്നമാപോ–ടമൃതമാപ–സ്സമ്രാഡാപോ
വിരാഡാപ–സ്റ്റുരാഡാപ–ശ്ശന്ദാ∀സൃാപോ ജ്യോതീ∀ഷൃാപോ
യജൂ ്ലഷ്യാപ–സ്സത്യമാപ–സ്സർവാ ദേവതാ ആപോ
ഭൂർഭുവസ്സുവരാപ ഓം । 2
അപഃ പ്രണയതി । ശ്രദ്ധാ വാ ആപഃ ।
ശ്രദ്ധാമേവാരഭ്യ പ്രണീയ പ്രചരതി । അപഃ പ്രണയതി ।
യജ്ഞോ വാ ആപം । യജ്ഞമേവാരഭു പ്രണീയ പ്രചരതി ।
അപഃ പ്രണയതി ।
വജ്രോ വാ ആപഃ । വജ്രമേവ ഭ്രാതൃവേൃഭൃഃ പ്രഹൃതൃ
പ്രണീയ പ്രചരതി । അപഃ പ്രണയതി ।
ആപോ വൈ രക്ഷോഘ്നീഃ । രക്ഷസാമപഹത്ത്യെ ।
അപഃ പ്രണയതി ।
ആപോ വൈ ദേവാനാം പ്രിയം ധാമ ।
ദേവാനാമേവ പ്രിയം ധാമ പ്രണീയ പ്രചരതി । അപഃ പ്രണയതി ।
ആപോ വൈ സർവാ ദേവതാഃ ।
ദേവതാ ഏവാരഭൃ പ്രണീയ പ്രചരതി 1 അപഃ പ്രണയതി 1
ആപോ വൈ ശാന്താഃ । ശാന്താഭിരേവാസൃ ശുചൎൗ് ശമയതി ।
ദേവോ വഃ സവിതോത് പുനാതിച്ഛിദ്രേണ പവിത്രേണ
വസോസ്സൂര്യസ്യ രശ്മിഭിഃ ॥ 3
```

കൂർചാഗ്രൈർ രാക്ഷസാൻ ഘോരാൻ ഛിന്ധി കർമവിഘാതിനഃ । ത്വാമർപയാമി കുംഭേടസ്തിൻ സാഫല്യം കുരു കർമണി । വൃക്ഷരാജ സമുദ്ഭൂതാഃ ശാഖായാഃ പല്ലവത്വചഃ । യുഷ്ടാൻ കുംഭേഷ്യർപയാമി സർവപാപാപനുത്തയേ । നാളികേര–സമുദ്ഭൂത ത്രിനേത്ര ഹര സമ്മിത । ശിഖയാ ദുരിതം സർവം പാപം പീഡാം ച മേ നുദ । സ ഹി രത്നാനി ദാശുഷേ സുവാതി സവിതാ ഭഗഃ । തം ഭാഗം ചിത്രമ[ീ]മഹേ । (RV 5.82.3) തത്വാ യാമി ബ്രഹ്മണാ വന്ദമാന–സ്തദാശാസ്തേ യജമാനോ ഹവിർഭിഃ । അഹേഡമാനോ വരുണേഹ ബോദ്ധ്യുരുശ്യ്സ മാ ന ആയുഃ പ്രമോഷീഃ ॥ ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । (അസ്തിൻ കുംഭേ വരുണമാവാഹയാമി । വരുണസൃ ഇദമാസനം । വരുണായ നമഃ । സകലാരാധന്നൈഃ സ്വർചിതം । രത്നസിംഹാസനം സമർപയാമി । പാദൃം സമർപയാമി । അർഘൃം സമർപയാമി । ആചമനീയം സമർപയാമി । മധുപർക്കം സമർപയാമി । സ്നാനം സമർപയാമി । സ്നാനാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । വസ്ത്രോത്തരീയം സമർപയാമി । ഉപവീതം സമർപയാമി । ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । അക്ഷതാൻ സമർപയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി ।

- 1. ഒാം വരുണായ നമഃ
- 2. ഓം പ്രചേതസേ നമഃ
- 3. ഓം സുരൂപിണേ നമഃ
- 4. ഒാം അപാംപതയേ നമഃ
- 5. ഓം മകരവാഹനായ നമഃ
- 6. ജലാധിപതയേ നമഃ
- 7. ഓം പാശഹസ്തായ നമഃ
- 8. ഓം തീർത്ഥരാജായ നമഃ

ഒാം വരുണായ നമഃ ।

നാനാവിധ പരിമള പത്ര പുഷ്പാണി സമർപയാമി ।

ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ । ഓം തഥ്സ്വിതുർവരേണ്യം ഭർഗോ ദേവസു ധീമഹി । ധിയോ യോന പ്രചോദയാത് । ദേവ സവിതഃ പ്രസുവഃ । സതൃം ത്വർതേന പരിഷിഞ്ചാമി । (രാത്രൗ – ഋതം ത്വാ സത്യേന പരിഷിഞ്ചാമി) । ഓം വരുണായ നമഃ । അമൃതം ഭവതു । അമൃതോപസ്തരണമസി । ഒാം പ്രാണായ സ്വാഹാ I ഓം അപാനായ സ്വാഹാ I ഓം വൃാനായ സ്വാഹാ । ഓം ഉദാനായ സ്വാഹാ । ഒാം സമാനായ സ്വാഹാ । ഒാം ബ്രഹ്മണേ സ്വാഹാ । കദളീഫലം നിവേദയാമി । മദ്ധ്യേ മദ്ധ്യേ അമൃതപാനീയം സമർപയാമി । അമൃതാപിധാനമസി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । താംബുലം സമർപയാമി । കർപൂര നീരാജനം പ്രദർശയാമി । നീരാജനാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി ।

മന്ത്ര പുഷ്പം സമർപയാമി । സുവർണ പുഷ്പം സമർപയാമി । സമസ്തോപചരാൻ സമർപയാമി ॥

4.2 <u>മഹാന്യാസ മന്ത്രപാഠ പ്രാരംഭ</u>ം

അഥാതഃ പഞ്ചാംഗരുദ്രാണാം നൃാസപൂർവകം

ജപഹോമാർചനാഭിഷേക–വിധിം വൃാഖൃാസൃാമഃ ।

Note: The Mahanyasa Rishi here explains to his students the vidhi (method) and pooja vyakyaanam while teaching Mahanayasam and hence he uses the words as

"വിധിം വൃാഖൃാസൃാമഃ".

Here you, as the kartha, are not doing "vidhi" ("vidhi" meaning the trial method as how to conduct the pooja) or "pooja vyakyaanam" (pooja explantion) but actually doing the pooja itself.

Hence it would be more appropriate to say

"അഥാതഃ പഞ്ചാംഗരുദ്രാണാം നൃാസപൂർവകം

ജപ–ഹോമാർചനാ–ഭിഷേകം കരിഷ്യമാണഃ " ।

5 പ്രഥമ ന്യാസഃ

യാ തേ രുദ്ര ശിവാ തനൂരഘോരാടപാപകാശിനീ । തയാ ന സ്തനുവാ ശന്തമയാ ഗിരിശന്താഭിചാകശീഹി । (ശിഖായൈ നമഃ) 1

അസ്മിൻ മഹതൃർണവേ ടന്തരിക്ഷേ ഭവാ അധി । തേഷാ ് സഹസ്രയോജനേ ടവ്ധന്വാനി തന്മസി । (ശിരസേ നമഃ) । 2

സഹസ്രാണി സഹസ്രശോ യേ രൂദ്രാ അധി ഭൂമ്യാം । തേഷാഴ് സഹസ്രയോജനേടവധന്വാനി തന്മസി । (ലലാടായ നമഃ) । 3

ഹൗ്സ-ശ്ശ്യചിഷദ് വസുരന്തരിക്ഷസദ് ധോതാ വേദിഷദതിഥിർ ദുരോണസത് റ നൃഷദ് വരസദ് ഋതസദ് വേൃാമസ-ദബ്ജാ ഗോജാ ഋത്ജാ അദ്രിജാ ഋതം ബൃഹത് റ (ഭ്രുവോർ മദ്ധ്യായ നമഃ) റ 4

ത്രൃംബകം യജാമഹേ സുഗന്ധിം പുഷ്ടിവർദ്ധനം ല ഉർവാരുകമിവ ബന്ധനാൻ മൃത്യോർ മുക്ഷീയ മാടമൃതാത് ല (നേത്രാഭ്യാം നമഃ) । 5

നമഃ സ്രുതൃായ ച പഥ്യായ ച നമഃ കാട്യായ ച നീപ്യായ ച । (കർണാഭൃാം നമഃ) । 6

മാ ന്സ്തോകേ തന്യേ മാ ന ആയുഷി മാ നോ ഗോഷു മാ നോ അശോഷു രീരിഷഃ ॥ വീരാന്മാനോ രുദ്രഭാമിതോ വധീർ. ഹവിഷ്മന്തോ നമസാ വിധേമ തേ । (നാസികാഭ്യാം നമഃ) । 7 അവതതൃ ധനുസ്താ∀് സഹസ്രാക്ഷ ശതേഷുധേ । നിശീരൃ ശലൃാനാം മുഖാ ശിവോ നഃ സുമനാ ഭവ । (മുഖായ നമഃ) । 8 നീലഗ്രീവാ ശ്ശിതികണ്ടാം ശർവാ അധം ക്ഷമാചരാം । തേഷാഴ് സഹസ്രയോജനേട വധന്വാനി തന്മസി I (കണ്റായ നമഃ) I 9 A നീലഗ്രീവാ ശ്ശിതികണ്ഠാ ദിവ 🔍 രുദ്രാ ഉപശ്രിതാഃ । തേഷാ 🔾 സഹസ്രയോജനേട വധന്വാനി തന്മസി । (ഉപകണ്റായ നമഃ) । 9B നമസ്തേ അസ്ത്വായുധായാനാതതായ ധൃഷ്ണവേ 1 ഉഭാഭ്യാമുത തേ നമോ ബാഹുഭ്യാം തവ ധന്വനേ । **(ബാഹുഭ്യാം നമഃ)** । **10** യാ തേ ഹേതിർ മീഢുഷ്ടമ ഹസ്സേ ബഭൂവ തേ ധനും । തയാടസൂാൻ വിശ്വതസ്ത്വമയക്ഷ്മയാ പരിബ്ഭുജ । (ഉപബാഹുഭൃാം നമഃ) । 11 പരിണോ രുദ്രസ്യ ഹേതിർ വൃണക്തു പരിതോഷസ്യ ദുർമതിരഘായോഃ । അവ സ്ഥിരാ മഘവദ്ഭൃഃ തനുഷാ മീഢാസ്തോകായ തനയായ മൃഡയ । (മണിബന്ധാഭൃാം നമഃ) । 12 യേ തീർത്ഥാനി പ്രചരന്തി സൂകാവന്തോ നിഷങ്ഗിണഃ । തേഷാഗ് സഹസ്രയോജനേ ടവധന്വാനി തന്മസി । **(ഹസ്താഭ്യാം നമഃ)** । 13 സദ്യോ ജാതം പ്രപദ്യാമി സദ്യോ ജാതായ വൈ നമോ നമഃ । ഭവേ ഭവേ നാതി ഭവേ ഭവസാ മാം । ഭവോദ്ഭവായ നമഃ ॥ (അംഗുഷ്പാഭ്യാം നമഃ) । 14 A

വാമദേവായ നമോ ജ്യേഷ്റായ നമഃ ശ്രേഷ്റായ നമോ രുദ്രായ നമഃ കാലായ നമഃ കലവികരണായ നമോ ബലവികരണായ നമോ ബലായ നമോ ബലപ്രമഥനായ നമഃ സർവഭൂതദമനായ നമോ മനോന്മനായ നമഃ । (തർജനീഭ്യാം നമഃ) 14B അഘോരേഭ്യോ ടഥഘോരേഭ്യോ ഘോരഘോരതരേഭ്യഃ I സർവേട്യും സർവ ശർവേട്യോ നമസ്തേ അസ്തു രുദ്ര രൂപേട്യും ॥ (മദ്ധ്യമാഭ്യാം നമഃ) । 14 C തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ മഹാദേവായ ധീമഹി । തന്നോ രുദ്രഃ പ്രചോദയാത് ॥ (അനാമികാഭ്യാം നമഃ) । 14D ഈശാനഃ സർവവിദ്യാനാ–മീശ്വരഃ സർവഭൂതാനാം ബ്രഹ്മാധിപതിർ ബ്രഹ്മണോ ടധിപതിർ ബ്രഹ്മാ ശിവോ മേ അസ്തു സദാശിവോം ॥ (കനിഷ്പികാഭൃാം നമഃ) 14E നമോ വഃ കിരികേഭ്യോ ദേവാനാ ്യ ഹൃദയേഭ്യഃ । (ഹൃദയായ നമഃ) । 15 നമോ ഗണേഭ്യോ ഗണപതിഭൃശ്ച വോ നമഃ । (പൃഷ്ടായ നമഃ) । 16 നമോ ഹിരണൃബാഹവേ സേനാന്യേ ദിശാഞ്ച പതയേ നമഃ i (പാർശ്വാഭൃാം നമഃ) । 17 വിജൃം ധനുഃ കപർദിനോ വിശ്ല്യോ ബാണ്വാഴ് ഉത ഭ അനേശന്നസൃഷവ ആഭുരസൃ നിഷങ്ഗഥിഃ । (ജഠരായ നമഃ) । 18 ഹിരണൃഗർഭ സ്റ്റമവർത്തതാഗ്രേ ഭൂതസ്യ ജാതഃ പതിരേക ആസീത് । സദാധാര പൃഥിവീം ദൃാമുതേമാം കസ്സൈ ദേവായ ഹവിഷാ വിധേമ । (നാഭൈൃ നമഃ) । 19 മീഡുഷ്ടമ ശിവതമ ശിവോ ന സ്സുമനാ ഭവ । പരമേ വൃക്ഷ ആയുധം നിധായ കൃത്തിം ്വസാന ആചര പിനാകം ബിഭ്രദാഗഹി । (കരെം നമഃ) । 20 യേ ഭൂതാനാ–മധിപതയോ വിശിഖാസം കപർദിനഃ । തേഷാ 🤟 സഹസ്രയോജനേ ടവധമ്പാനി തന്മസി । (ഗുഹൃായ നമഃ) | 21 യേ അന്നേഷു വിവിദ്ധൃന്തി പാത്രേഷു പിബതോ ജനാൻ । തേഷാ 🔄 സഹസ്രയോജനേ ടവധമ്പാനി തന്മസി । (അണ്ഡാഭൃാം നമഃ) । 22 സ ശിരാ ജാതവേദാ അക്ഷരം പരമം പദം । വേദാനാ ്് ശിരസി മാതാ ആയുഷ്ണന്തം കരോതു മാം । (അപാനായ നമഃ) । 23 മാ നോ മഹാന്തമുത മാ നോ അർഭകം മാ ന ഉക്ഷന്തമുത മാ ന ഉക്ഷിതം । മാ നോ വധീഃ പിതരം മോത മാതരം പ്രിയാ മാ നസ്തനുവോ രുദ്ര രീരിഷഃ । **(ഊരുഭൃാം നമഃ)** । **24** ഏഷ തേ രുദ്രഭാഗസ്തഞ്ഞുഷസ്വ തേനാവസേന പരോ മൂജവതോ ടതീഹൃവതതധന്വാ പിനാകഹസ്തഃ കൃത്തിവാസാഃ i (ജാനുഭൃാം നമഃ) 25

സൗ്സൃഷ്ടജീഥ് സോമപാ ബാഹുശർദ്ധ്യൂർധ്വ ധന്വാ പ്രതിഹിതാഭിരസ്താ । ബൂഹസ്പതേ പരിദീയാ രഥേന രക്ഷോഹാടമിത്രായ് അപബാധമാനഃ । **(ജംഘാഭൃാം നമഃ) 26** വിശാം ഭൂതം ഭുവനം ചിത്രം ബഹുധാ ജാതം ജായമാനം ച യത് । സർവോ ഹൃേഷ രുദ്ര–സ്തസ്കെ രുദ്രായ നമോ അസ്തു ॥ (ഗുല്പാഭൃാം നമഃ) 27 യേ പഥാം പഥിരക്ഷയ ഐലബൂദാ യവ്യുധഃ । തേഷാ*്* സഹസ്രയോജനേ ടവധന്വാനി തന്മസി । **(പാദാഭൃാം നമഃ)** । **28** അദ്ധൃവോചദധിവക്താ പ്രഥമോ ദൈവൃോ ഭിഷക് । അഹീയ്ശച സർവാൻ ജംഭയൻ ഥ്സർവാശ്ച യാതുധാന്യഃ । (കവചായ ഹും) **।** 29 നമോ ബില്മിനേ ച കവചിനേ ച നമഃ ശ്രുതായ ച ശുതസേനായ ച । **(ഉപകവചായ ഹും) 30** നമോ അസ്തു നീലഗ്രീവായ സഹസ്രാക്ഷായ മീഢുഷേ । അഥോ യേ അസൃ സത്വാനോ ടഹം തേഭ്യോ ടകരന്നമഃ I (നേത്രത്രയായ വൗഷട്) 31 പ്രമുഞ്ച ധന്വനസ്ത്വ-മുഭയോരാർത്നിയോർജ്യാം 1 യാശ്ച തേ ഹസ്ത ഇഷവഃ പരാ താ ഭഗവോ വപ । (അസ്ത്രായ ഫട്) 32

| രി | M | സ്തു | തി |
|----|---|----------------|----|
| 90 | | `' <i>`</i> &\ | |

| യ ഏതാവന്യത് ഭൂയാ∨്സശ്ച ദിശോ രുദ്രാ വിതസ്ഥിരേ ദ |
|--------------------------------------------------|
| ് സഹസ്രയോജനേ ടവധന്വാനി തന്മസി । |
| (ഇതി ദിഗ്ബന്ധഃ) 33 |
| <u>ഇ</u> തി പ്രഥമ നൃാസഃ |
| (ശിഖാദി അസ്ത്രപരൃന്തം ഏകത്രിംശദംഗന്യാസഃ ദിഗ്ബന്ധ |
| (0) |

6 <u>ദ്വിതീയ നൃാസഃ</u>

(ഓം നമോ ഭഗവതേ രുദ്രായേതി നമസ്കാരാൻ നൃസേത്) ഓം നമഃ (മൂർഡ്സി) । നം നമഃ (നാസികാഗ്രേ) । മോം നമഃ (ലലാടായ) । ഭം നമഃ (മുഖായ) । ഗം നമഃ (കണ്യായ) । വം നമഃ (ഹൃദയായ) । തേം നമഃ (ദക്ഷിണ ഹസ്തായ) । രും നമഃ (വാമ ഹസ്തായ) । ദ്രാം നമഃ (നാടെു) । യം നമഃ (പാദാഭുാം) ॥
—————ഇതി ദ്വിതീയ നൃാസഃ—————
മൂർധാദി പാദാന്തം ദശാംഗ നൃാസഃ ദ്വിതീയഃ

7 തൃതീയന്യാസഃ

സദ്യോ ജാതം പ്രപദ്യാമി സദ്യോ ജാതായ വൈ നമോ നമഃ ല ഭവേ ഭവേ നാതിഭവേ ഭവസ്വ മാം ലഭവോദ്ഭവായ നമഃ ॥ (പാദാഭ്യാം നമഃ) । 1

വാമദേവായ നമോ ജ്യേഷ്ഠായ നമഃ ശ്രേഷ്ഠായ നമോ രുദ്രായ നമഃ കാലായ നമഃ കലവികരണായ നമോ ബലവികരണായ നമോ ബലായ നമോ ബലപ്രമഥനായ നമ സ്റ്റർവഭൂതദമനായ നമോ മനോന്മനായ നമഃ । (ഊരുഭ്യാം നമഃ) । 2

അഘോരേഭ്യോ ടഥഘോരേഭ്യോ ഘോരഘോരതരേഭ്യഃ । — " — " — " — പ — പ സർവേഭ്യഃ സർവ്വ ശർവേഭ്യോ നമസ്തേ അസ്തു രുദ്രരൂപേഭ്യഃ ॥ (ഹൃദയായ നമഃ) । 3

തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ മഹാദേവായ ധീമഹി । തന്നോ രുദ്രഃ പ്രചോദയാത് ॥ (മുഖായ നമഃ) | 4

ഈശാനഃ സർവവിദ്യാനാ-മീശ്വരസർവ് ഭൂതാനാം ബ്രഹ്മാധിപതിർ ബ്രഹ്മണോ ടധിപതിർ ബ്രഹ്മാ ശിവോ മേ അസ്തു സദാശിവോം ല ഹംസ ഹംസ I (മൂർധ്നേ നമഃ) I 5

7.1 <u>ഹംസ ഗായത്ര</u>ീ

അസ്യ ശ്രീ ഹംസഗായത്രീ മഹാമന്ത്രസ്യ, അവൃക്ത പരബ്രഹ ഋഷിഃ, അനുഷ്ടുപ് ഛന്ദഃ, പരമഹംസോ ദേവതാ । ഹംസാം ബീജം , ഹംസീം ശക്തിഃ । ഹംസൂം കീലകം । പരമഹംസ പ്രസാദ സിദ്ധ്യർത്ഥേ ജപേ വിനിയോഗഃ ॥ 1 ഹംസാം അംഗുഷ്ഠാഭൃാം നമഃ । ഹംസീം തർജനീഭൃാം നമഃ । ഹംസൂം – മദ്ധ്യമാഭൃാം നമഃ । ഹംസൈം – അനാമികാഭൃാം നമഃ । ഹംസൗം – കനിഷ്ഠികാഭൃാം നമഃ । ഹംസഃ – കരതല കരപൃഷ്ഠാഭൃാം നമഃ । 2

ഹംസാം – ഹൃദയായ നമഃ । ഹംസീം – ശിരസേ സ്വാഹാ । ഹംസൂം – ശിഖായൈ വഷട് । ഹംസൈം – കവചായ ഹും । ഹംസൗം – നേത്രത്രയായ വൗഷട് । ഹംസഃ – അസ്ത്രായ ഫട് ॥ ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോമിതി ദിഗ്ബന്ധഃ । **3**

॥ ധൃാനം ॥

ഗമാഗമസ്ഥം ഗമനാദിശൂന്യം ചിദ് രൂപദീപം തിമിരാപഹാരം । പശൃാമി തേ സർവജനാന്തരസ്ഥം നമാമി ഹംസം പരമാത്മരൂപം ॥ 4

ഹംസ ഹംസായ വിദ്മഹേ പരമഹംസായ ധീമഹി । തന്നോ ഹംസഃ പ്രചോദയാത് ॥ 5 (three times)

ഹംസ ഹംസേതി യോ ബ്രൂയാത് ഹംസോ (ബ്രൂയാദ്ധംസോ) നാമ സദാശിവഃ ।

ഏവം ന്യാസ വിധിം കൃത്വാ തതഃ സംപുടമാരഭേത് ॥ 6

7.2 <u>ദിക് സംപൂടനൃാസഃ</u>

ദേവതാ – ഇന്ദ്രഃ

<u>ദിക് – പൂർവം</u>

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । ലം । ത്രാതാരമിന്ദ്ര–മവിതാര–മിന്ദ്രൗ് ഹവേഹവേ സുഹവൗ് ശൂരമിന്ദ്രം । ഹുവേ നു ശക്രം പുരുഹൂതമിന്ദ്രൗ് സ്വസ്തി നോ മഘവാ ധാതിന്ദ്രഃ ॥ (TS 1.6.12.5)

ലം ഇന്ദ്രായ വജ്രഹസ്തായ സുരാധിപതയേ ഐരാവത വാഹനായ സാംഗായ സായുധായ സശക്തി പരിവാരായ ഉമാമഹേശ്വര പാർഷദായ നമഃ ।

ലം ഇന്ദ്രായ നമഃ । പൂർവ ദിഗ്ഭാഗേ (ലലാടസ്ഥാനേ) ഇന്ദ്രഃ സുപ്രീതോ വരദോ ഭവതു । 1

<u>ദേവതാ– അഗ്നി</u> <u>ദിക്– ദക്ഷിണപൂർവം (ആഗ്നേയ ദിക്)</u>

ഒാം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । രം ।
ത്വന്നോ അഗ്നേ വരുണസ്യ വിദ്വാൻ ദേവസ്യ ഹേഡോ ടവ്
യാസിസീഷ്ഠാഃ । യജിഷ്ഠോ വഹ്നിതമഃ ശോശുചാനോ
വിശ്വാ ദേഷാ ്സി പ്രമുമുഗ്ദ്ധ്യസ്മത് ॥ (T.S.2.5.12.3)
രം അഗ്നയേ ശക്തിഹസ്തായ തേജോടധിപതയേ അജവാഹനായ സാംഗായ സായുധായ സശക്തി പരിവാരായ ഉമാമഹേശ്വര പാർഷദായ നമഃ ।

രം അഗ്നയേ നമഃ । ആഗ്നേയ ദിഗ്ഭാഗേ (നേത്രസ്ഥാനേ) അഗ്നിഃ സുപ്രീതോ വരദോ ഭവതു । 2

ദേവതാ – യമഃ

<u>ദിക് – ദക്ഷിണം</u>

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം വഹം വ സുഗന്നഃ പസ്ഥാമഭയം കൃണോതു വയസ്മിന്നക്ഷത്രേ യമ ഏതി രാജാ വയസ്മിന്നേന–മഭൃഷിഞ്ചന്ത ദേവാഃ വത്രസൃ ചിത്ര്യ് ഹവിഷാ യജാമ വഅപ പാപ്മാനം ഭരണീർ ഭരന്തു വ(T.B.3.1.2.11) ഹം യമായ ദണ്ഡഹസ്തായ ധർമാധിപതയേ മഹിഷവാഹനായ സാംഗായ സായുധായ സശക്തി പരിവാരായ ഉമാമഹേശ്വര

പാർഷദായ നമഃ । **ഹം** യമായ നമഃ । ദക്ഷിണദിഗ്ഭാഗേ

(കർണസ്ഥാനേ) യമഃ സുപ്രീതോ വരദോ ഭവതു । 3

<u>ദേവതാ– നിർ.ഋതി</u>

ദിക് – ദക്ഷിണ പശ്ചിമം

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । ഷം । അസുന്വന്ത–മയജമാന–മിച്ഛ സ്തേനസ്യേത്യാം തസ്കരസ്യാനോഷി । അന്യമസ്മദിച്ഛ സാ ത ഇത്യാ നമോ ദേവി നിർ.ഋത്രേ തുഭ്യമസ്തു ॥ (TS 4.2.5.4)

ഷം നിർ.ഋതയേ ഖഡ്ഗഹസ്തായ രക്ഷോധിപതയേ നരവാഹനായ സാംഗായ സായുധായ സശക്തി പരിവാരായ ഉമാമഹേശ്വര പാർഷദായ നമഃ । ഷം നിർ.ഋതയേ നമഃ । നൈർ.ഋത ദിഗ്ഭാഗേ (മുഖസ്ഥാനേ) നിർ.ഋതിഃ സുപ്രീതോ വരദോ ഭവതു । 4

ദേവതാ- വരുണഃ

<u>ദിക് – പശ്ചിമ</u>ം

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । വം । തത്വാ യാമി ബ്രഹ്മണാ വന്ദമാന സ്തദാശാസ്തേ യജ്മാനോ ഹവിർഭിഃ । അഹേഡമാനോ വരുണേഹ ബോദ്ധ്യുരുശ്യസ് മാ ന ആയുഃ പ്രമോഷീഃ ॥ (TS 2.1.11.6)

വം വരുണായ പാശഹസ്തായ ജലാധിപതയേ മകരവാഹനായ സാംഗായ സായുധായ സശക്തി പരിവാരായ ഉമാമഹേശ്വര പാർഷദായ നമഃ । വം വരുണായ നമഃ । പശ്ചിമദിഗ്ഭാഗേ (ബാഹുസ്ഥാനേ) വരുണഃ സുപ്രീതോ വരദോ ഭവതു । 5

ദേവതാ – വായുഃ

<u>ദിക്– ഉത്തര പശ്ചിമം</u>

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । യം । ആ നോ നിയുദ്ഭിഃ ശതിനിഭിരധ്വരം । സഹസ്രിണിഭിരുപ് യാഹി യജ്ഞം । വായോ അസ്മിൻ. ഹവിഷി മാദയസ്വ । യൂയം പാത സ്വസ്തിഭിസ്സദാ നഃ ॥ (T.B.2.8.1.2)

യം വായവേ സാംകുശധ്വജ ഹസ്തായ പ്രാണാധിപതയേ മൃഗവാഹനായ സാംഗായ സായുധായ സശക്തി പരിവാരായ ഉമാമഹേശ്വര പാർഷദായ നമഃ । യം വായവേ നമഃ । വായവൃ ദിഗ്ഭാഗേ (നാസികാസ്ഥാനേ) വായുഃ സുപ്രീതോ വരദോ ഭവതു ॥ 6

ദേവതാ - സോമഃ

<u>ദിക് – ഉത്തരം</u>

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । **സം** । വയ∨്സോമ വ്രതേ തവ । മനസ്തനൂ–ഷു ബിഭ്രതഃ । — ് പ്രോവന്തോ അശീമഹി ॥ T.B.2.4.2.7

സം സോമായ അമൃതകലശ ഹസ്തായ നക്ഷത്രാധിപതയേ അശ്വവാഹനായ സാംഗായ സായുധായ സശക്തി പരിവാരായ ഉമാമഹേശ്വര പാർഷദായ നമഃ । സം സോമായ നമഃ । ഉത്തര ദിഗ്ഭാഗേ (ഹൃദയസ്ഥാനേ) സോമഃ സുപ്രീതോ വരദോ ഭവതു ॥ 7

<u>ദേവതാ– ഈശാനഃ</u>

<u>ദിക് –ഉത്തര പൂർവം</u>

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । **ശം** । തമീശാനം (തമീശാനം) ജഗത–സ്തസ്ഥുഷസ്പതിം । ധിയംജിന്വമവസേ ഹൂമഹേ വയം । പൂഷാ നോ യഥാ വേദ — — — — — — — — — — — — — — — സാമസദ് വൃധേ രക്ഷിതാ പായുരദബ്ധഃ സ്വസ്തയേ ॥ (RV.1.89.5)

ശം ഈശാനായ ശൂലഹസ്തായ വിദ്യാധിപതയേ വൃഷഭവാഹനായ സാംഗായ സായുധായ സശക്തി പരിവാരായ ഉമാമഹേശ്വര പാർഷദായ നമഃ । ശം ഈശാനായ നമഃ । ഐശാന ദിഗ്ഭാഗേ (നാഭിസ്ഥാനേ) ഈശാനഃ സുപ്രീതോ വരദോ ഭവതു || 8

ദേവതാ- ബ്രഹ്മാ

ദിക് – ഊർധ്വം

അം ബ്രഹ്മണേ പദ്മഹസ്തായ ലോകാധിപതയേ ഹംസവാഹനായ സാംഗായ സായുധായ സശക്തി പരിവാരായ ഉമാമഹേശ്വര പാർഷദായ നമഃ । **അം** ബ്രഹ്മണേ നമഃ । ഊർധ്വദിഗ്ഭാഗേ (മൂർധസ്ഥാനേ) ബ്രഹ്മാ സുപ്രീതോ വരദോ ഭവതു ॥ **9**

ദേവതാ–വിഷ്കു

<u>ദിക് – അധോ ദിക്</u>

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । ഹ്രീം । — ് സ്യോനാ പൃഥിവി ഭവാ ടനൃക്ഷരാ നിവേശനീ । യച്ഛാ നഃ ശർമ സപ്രഥാഃ ॥ (TA. 6.1.10)

ഹ്രീം വിഷ്ണവേ ചക്രഹസ്തായ നാഗാധിപതയേ ഗരുഡവാഹനായ സാംഗായ സായുധായ സശക്തി പരിവാരായ ഉമാമഹേശ്വര പാർഷദായ നമഃ । ഹ്രീം വിഷ്ണവേ നമഃ । അധോ ദിഗ്ഭാഗേ (പാദസ്ഥാനേ) വിഷ്ണുസ്സുപ്രീതോ വരദോ ഭവതു ॥ 10

7.3 <u>ഷോഡശാംഗ രൗദ്രീകരണം</u> (TS 1 3 3 1)

(TS 1.3.3.1) വിഭൂരസി പ്രവാഹണോ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാ്ടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹിൗ്സീഃ । 1 വഹ്നിരസി ഹവൃവാഹനോ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹി⊍്സീഃ । 2 ശ്വാത്രോടസി പ്രചേതാ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹി⊍്സീഃ । 3 തുഥോടസി വിശ്വവേദാ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹി⊍്സീഃ । 4 ഉശിഗ്സി കവീ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാ്ടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹിഴ്സീഃ । 5 അംഘാരിരസി ബംഭാരീ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹിഴ്സീഃ । 6 അവസ്യുര്സി ദുവസ്വാൻ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹി⊍്സീഃ । 7 ശുന്ധ്യൂര്സി മാർജാലീയോ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗേന പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹി⊍്സീഃ । 8 സമ്രാഡ്സി കൃശാനൂ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹി⊎്സീഃ । 9 പരിഷദ്യോസി പവമാനോ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാ്ടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹി⊍്സീഃ । 10 പ്രതക്വാടസി നഭസ്വാൻ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹി⊍്സീഃ ।11 അസംമൃഷ്ടോടസി ഹവൃസൂദോ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാ്ടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹി⊍്സീഃ । 12 ഋതധാമാസി സുവർജ്യോതീ __ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹി⊍്സീഃ । 13 ബ്രഹ്ജ്യാതിരസി സുവർദ്ധാമാ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാ്ടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹി∨്സീഃ । 14 അജോടസുക്പാദ് രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹി⊍്സീഃ । 15 അഹിരസി ബുധ്ലിയോ രൗദ്രേണാനീകേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹിഴ്സീഃ । 16 ത്വഗസ്ഥിഗത്തെഃ സർവപാപൈഃ പ്രമുച്യതേ । സർവഭൂതേഷ്വ–പരാജിതോ ഭവതി । തഥോ ഭൂത–പ്രേത–പിശാച–ബ്രഹ്മരാക്ഷസ–യക്ഷ–യമദൂത– ശാകിനീ–ഡാകിനീ–സർപ–ശ്വാപദ–വൃശ്ചിക– തസ്കരാദ് ഉപദ്രവാദ് ഉപഘാതാഃ । സർവേ (ഗ്രഹാഃ) ജ്വലന്തം പശൃന്തു । മാം രക്ഷന്തു । യജമാനം സകുടുംബം രക്ഷന്തു । സർവാൻ മഹാജനാൻ രക്ഷന്തു । —————ഇതി തൃതീയഃ ന്യാസഃ—————— പാദാതി മൂർധാന്തം പഞ്ചാംഗ ന്യാസഃ തൃതീയഃ

8 <u>ചതുർത്ഥ നൃാസഃ</u>

8.1 <u>മനോ ജ്യോതി</u>ഃ

```
മനോ ജ്യോതിർ ജുഷതാ–മാജ്യം ്വിച്ഛിന്നം ്യജ്ഞ∀് സമിമം
.
ദധാതു । യാ ഇഷ്ടാ ഉഷസോ നിമ്രുചശച താ സ്സന്ദധാമി
ഹവിഷാ ഘൃതേന । (ഗുഹൃായ നമഃ) । 1 (TS 1.5.10.2)
അബോദ്ധൃഗ്നിഃ സമിധാ ജനാനാം പ്രതിധേനു–മിവായതീ–
മുഷാസം । യഹ്വാ ഇവ പ്ര വയാ–മുജ്ജിഹാനാഃ
പ്ര ഭാനവഃ സിസ്രതേ നാകമച്ചു । (നാട്ടൈ നമഃ) । 2 (TS 4.4.4.2)
അഗ്നിർമൂർദ്ധാ ദിവഃ കകുത്പതിഃ പൃഥിവ്യാ അയം ।
അപായ് രേതായ്സി ജിന്വതി । (ഹൃദയായ നമഃ) । 3 (TS 1.5.5.1)
മൂർദ്ധാനം ദിവോ അരതിം പൃഥിവ്യാ വൈശ്വാനര–മൃതായ
ജാതമഗ്നിം । കവിഋ് സമ്രാജ–മതിഥിം ജനാനാ–
മാസന്നാ പാത്രം ജനയന്ത ദേവാഃ । (കണ്റായ നമഃ) । 4 (TS 1.4.13.1)
മർമാണി തേ വർമഭി ശ്ഛാദയാമി സോമസ്ത്വാ രാജാ
ടമൃതേനാഭിവന്താം । ഉരോർ വരിയോ വരിവന്തേ അസ്തു ജയന്തം
ത്വാമനു മദന്തു ദേവാഃ । (മുഖായ നമഃ) । 5 (TS 4.6.4.5)
ജാതവേദാ യദി വാ പാവകോടസി । വൈശ്വാനരോ യദി
വാ വൈദ്യുതോടസി । ശം പ്രജാഭ്യോ യജമാനായ ലോകം ।
ഊർജം പുഷ്ടിം ദദ-ദഭ്യാവവൂഥ്സാ ॥ (ശിരസേ നമഃ) ॥ 6 (TB 3.10.5.1)
```

8.2 <u>ആത്മരക്ഷാ</u>

(T.B.2.3.11.1 to T.B.2.3.11.4) for full "8.2" ബ്രഹ്മാത്മൻവദസൂജത । തദകാമയത । സമാത്മനാ പദ്യേയേതി । ആത്മന്നാ–ത്മന്നിതൃാമന്ത്രയത । തസ്സൈ ദശമ്യ് ഹൂതഃ പ്രതൃശൃണോത് । സ ദശഹൂതോടഭവത് । ദശഹൂതോ ഹ വൈ നാമൈഷഃ । തം ്വാ ഏതം ദശഹൂത⊻് സന്തം । ദശഹോതേത്യാ– ചക്ഷതേ പരോക്ഷേണ । പരോക്ഷപ്രിയാ ഇവ ഹി ദേവാഃ ॥ 1 ആത്മന്നാ–ത്മന്നിതൃാമന്ത്രയത । തസ്ലൈ സപ്തമ∀് ഹൂതഃ പ്രതൃശൃണോത് । സ സപ്തഹൂതോടഭവത് । സപ്തഹൂതോ ഹ വൈ നാളൈഷഃ । തം ്വാ ഏതഴ് സപ്തഹൂതഴ് സന്തം । സപ്തഹോതേതൃാചക്ഷതേ പരോക്ഷേണ । പരോക്ഷപ്രിയാ ഇവ ഹി ദേവാഃ ॥ 2 ആത്മന്നാ–ത്മന്നിതൃാമന്ത്രയത । തസ്മൈ ഷഷ്യ∀് ഹൂതഃ പ്രതൃശൃണോത് । സ ഷഡ്സൂതോടഭവത് । ഷഡ്സൂതോ ഹ വൈ നാമൈഷഃ । തം ്വാ ഏതഴ് ഷഡ്ഢൂതഴ് സന്തം । ഷഡ്ഡോതേത്യാ-ചക്ഷതേ പരോക്ഷേണ । പരോക്ഷപ്രിയാ ഇവ ഹി ദേവാഃ ॥ 3 ആത്മന്നാ–ത്മന്നിതൃാ–മന്ത്രയത । തസ്മൈ പഞ്ചമ്യ് ഹൂതഃ പ്രതൃശൃണോത് । സ പഞ്ചഹൂതോടഭവത് । പഞ്ചഹൂതോ ഹ വൈ നാമൈഷഃ । താ ്വാ ഏതാ പഞ്ചഹൂതഴ് സന്താ ।

പഞ്ചഹോതേതൃാചക്ഷതേ പരോക്ഷേണ । പരോക്ഷ്പ്രിയാ ഇവ ഹി ദേവാഃ ॥ 4 ആത്മന്നാ–ത്മന്നിതൃാമന്ത്രയത । തസ്കൈ ചതുർത്ഥ∀് ഹൂതഃ പ്രതൃശൃണോത് । സ ചതുർഹൂതോടഭവത് । ചതുർഹൂതോ ഹ വൈ നാമൈഷഃ । തം ്വാ ഏതം ചതുർഹൂത ്ര സന്തം । ചതുർ ഹോതേത്യാചക്ഷതേ പരോക്ഷേണ । പരോക്ഷപ്രിയാ ഇവ ഹി ദേവാഃ ॥ 5 തമ്ബ്രവീത് । താം ്വൈ മേ നേദിഷ്ഠ 🗸 ഹൂതഃ പ്രതൃശ്രാഷീഃ । ത്വയൈനാനാഖൃാതാര ഇതി । തസ്മാന്നുഹൈനായ–ശച്തുർ ഹോതാര ഇതൃാചക്ഷതേ । തസ്മാച്ഛുശ്രൂഷുഃ പുത്രാണാ ഗ് ഹൃദ്യതമഃ । നേദിഷ്ഠോ ഹൃദ്യതമഃ । നേദിഷ്ഠോ ബ്രഹ്മണോ ഭവതി । യ ഏവം വേദ ॥ **6 (ആത്മനേ നമഃ)** -––-ഇതി ചതുർത്ഥ നൃാസഃ––––-ഗുഹൃാദി മസ്തകാന്ത ഷഡംഗന്യാസഃ ചതുർത്ഥഃ

9 പഞ്ചമ ന്യാസഃ

9.1 <u>ശിവ സംകല്ല</u>ഃ

```
(Rig veda Khila Kaandam, 4th Capter, 11 Suktam for full 9.1)
യേനേദം ഭൂതം ഭുവനനം ഭവിഷ്യത് പരിഗൃഹീത–മമൃത്നേ സർവം വ
യേന് യജ്ഞസ്തായതേ (Or യജ്ഞസ്ത്രായതേ) സപ്ത ഹോതാ
തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 1
യേന കർമാണി പ്രചരന്തി ധീരാ യതോ വാചാ മനസാ
ചാരുയന്തി । യഥ് സമ്മിതമനു സം്യന്തി പ്രാണിനസ്സന്മേ
മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 2
യേന കർമാണൃപസോ മനീഷിണോ യജ്ഞേ കൃണ്വന്തി
വിദഥേഷു ധീരാം വയുപൂർവം യക്ഷ്മന്തം (യക്ഷമന്തം) പ്രജാനാം
തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 3
യത്പ്രജ്ഞാന്–മുത ചേതോ ധൃതിശ്ച യജ്ജ്യോതി–രന്തരമൃതം
പ്രജാസു । യസ്മാന്ന ഋതേ കിഞ്ചന കർമ ക്രിയതേ
തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 4
സുഷാരഥി–രശ്വാനിവ യന്മനുഷൃാൻ നേനീയതേ ടഭീശുഭിർ
വാജിന് ഇവ । ഹൃത് പ്രതിഷ്ഠം ്യദ്ജിരം ജവിഷ്ഠം
തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 5
```

```
യസ്മിൻ ഋച–സ്സാമ–യജൂ 🗸 ഷി യസ്മിൻ പ്രതിഷ്ഠിതാ
രഥനാഭാവിവാരാഃ । യസ്മി⊎ശ്ചിത്ത⊎് സർവമോതം പ്രജാനാം
തന്മേ മനഃ ശിവസംകപ്പുമസ്തു ॥ 6
തദശ്ര ഷഷ്ഠം ശ്രിശയറ്റ് സുവീരം ക്തുജ്ഞസ്, ഗുഹ്യം
നവ നാവമായ്യം । ദശപഞ്ചത്രി ്ശതം ്യത്പരം ച
തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 7
യജ്ജാഗ്രതോ ദൂരമുദൈതി ദൈവം തദു സുപ്തസ്യ
തഥൈവെതി । ദൂരംഗമം ജ്യോതിഷാം ജ്യോതിരേകം
തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 8
യേനേദം ്വിശാം ജഗ്തോ ബഭൂവ യേ ദേവാപി മഹതോ
ജാതവേദാഃ । തദേവാഗ്നി–സ്തമസോ ജ്യോതിരേകം
തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 9
യേന ദൃൗഃ പൂഥിവീ ചാന്തരിക്ഷം ച യേ പർവതാഃ പ്രദിശോ
ദിശ⁄ശ്ച । യേനേദം ജഗദ് വൃാപ്തം പ്രജാനാം തന്മേ
മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 10
യേ മനോ ഹൃദയം യേ ച ദേവാ യേ ദിവൃാ ആപോ യേ
സൂര്യരശ്തിഃ । തേ ശ്രോത്രേ ചക്ഷുഷീ സഞ്ചരന്തം
തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 11
```

```
അചിന്തും ചാപ്രമേയം ച വൃക്താവൃക്ത പരം ച യത്।
സൂക്ഷ്മാത് സൂക്ഷ്മതരം ജ്ഞേയം
തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 12
ഏകാ ച ദശ ശതം ച സഹസ്രം ചായുതം ച നിയുതം ച
പ്രയുതം ചാർബുദം ച നൃർബുദം ച സമുദ്രശ്ച മദ്ധ്യം ചാന്തശ്ച
പരാർധശ്ച തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 13
യേ പഞ്ചപഞ്ച ദശ ശത്യ് സഹസ്ര–മയുത–ന്നുർബുദം ച i
തേ അഗ്നിചിതൃഷ്ടകാസ്ത∀് ശരീരം
തന്മേ മനഃ ശിവസംകച്പമസ്തു ॥ 14
വേദാഹമേതം പുരുഷം മഹാന്ത–മാദിതൃ–വർണം തമസഃ
പരസ്താത് । യസ്യ യോനിം പരിപശ്യന്തി ധീരാസ്തമ്മേ
മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 15
യസ്യേദം ധീരാഃ പുനന്തി കവയോ ബ്രഹ്മാണമേതം ത്വാ വൃണത
ഇന്ദും । സ്ഥാവരം ജംഗമം ദൃൗരാകാശം
തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 16
പരാത് പരതരം ചൈവ യത് പരാശൈവ യത്പരം I
യത്പരാത് പരതോ ജ്ഞേയം തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 17
പരാത് പരതരോ ബ്രഹ്മാ തത്പരാത് പരതോ ഹരിഃ i
തത്പരാത് പരതോ ടധീശന്തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമന്തു । 18
```

```
യാ വേദാദിഷു് ഗായത്രീ സർവവ്യാപി മഹേശ്വരീ ।
ഋഗ്–യജു –സ്റ്റാമാ–ഥർവൈശ്ച തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 19
യോ വൈ ദേവം മഹാദേവം പ്രണവം പരമേശ്വരം I
യം സർവേ സർവ വേട്ടൈശ്ച തന്മേ മനം ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 20
പ്രയതഃ പ്രണവോങ്കാരം പ്രണവം പുരുഷോത്തമം ।
ഓം കാരം പ്രണവാത്മാനം തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 21
യോടസൗ സർവേഷു വേദേഷു പഠൃതേ ഹൃജ ഈശിരഃ ।
അകായോ നിർഗുണോ ഹൃാത്മാ തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 22
ഗോഭിർ ജുഷ്ടം ധനേന ഹൃായുഷാ ച ബലേന ച ।
പ്രജയാ പശുഭിഃ പുഷ്കരാക്ഷം തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 23
കൈലാസ ശിഖരേ രമ്യേ ശംകരസു ശിവാലയേ ।
ഭ്രേവതാസ്തത്ര മോദ്രന്തേ തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 24
ത്ര്യംബകം "യജാമഹേ സുഗന്ധിം പുഷ്ടിവർദ്ധനം ।
ഉർവാരുകമിവ ബന്ധനാൻ മൃത്യോർ മുക്ഷീയ മാടമൃതാത്
തന്മേ മനഃ ശിവസംകച്പമസ്തു ॥ 25
വിശാത–ശ്ചക്ഷുരുത വിശാതോ മുഖോ വിശാതോ ഹസ്ത ഉത
വിശ്വത്സ്പാത് । സം ബാഹുഭ്യാം നമതി സംപതത്രൈർ
ദ്യാവാപൃഥിവീ ജനയൻ ദ്രേവ ഏകസ്തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥
26
```

ചതുരോ വേദാനധീയ<u>ീത</u> സർവശാസ്ത്രമയം ^{*}വിദുഃ I ഇതിഹാസപുരാണാനാം തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 27 മാ നോ മഹാന്തമുത മാ നോ അർഭകം മാ ന ഉക്ഷന്തമുത മാ ന് ഉക്ഷിതം । മാ നോ വധീഃ പിതരം മോത മാതരം പ്രിയാ മാ നസ്തനുവോ രുദ്ര രീരിഷസ്തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 28 മാ നസ്തോകേ തനയേ മാ ന ആയുഷി മാ നോ ഗോഷു മാ നോ അശോഷു രീരിഷഃ । വീരാന്മാനോ രുദ്ര ഭാമിതോ വധീർ. ഹവിഷ്തന്തോ നമസാ വിധേമ തേ തന്മേ മനഃ ശ<u>ി</u>വസംകല്പമസ്തു ॥ 29 ഋത്യ സത്യം പരം ബ്രഹ്മ പുരുഷം കൃഷ്ണപിങ്ഗലം । ഊർദ്ധാരേതം ്വിരൂപാക്ഷം വിശാരൂപായ വൈ നമോ നമസ്തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 30 കദ് രുദ്രായ പ്രചേതസേ മീഢുഷ്ട്രമായ തവൃസേ । വോചേമ ശന്തമ്യ് ഹൃദേ I സർവോ ഹൃഷ രുദ്രസ്തസ്ക്കെന്നു രുദ്രായ നമോ അസ്തു തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 31 ബ്രഹ്ജജ്ഞാനം പ്രഥമം പുരസ്താദ് വിസിമത സ്സൂരുചോ വേന ആവഃ । സ ബുധ്നിയാ ഉപമാ അസൃ വിഷ്ഠാ സ്സതശ്ച യോനി– മസതശ്ച വിവസ്തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 32

യഃ പ്രാണതോ നിമിഷതോ മഹിത്തെക ഇദ്രാജാ ജഗതോ ബഭൂവ് । യ ഈശേ അസൃ ദ്വിപദ–ശ്ചതുഷ്പദഃ കസ്മൈ ദേവായ ഹവിഷാ വിധേമ തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 33 യ ആത്മദാ ബലദാ യസൃ വിശി ഉപാസ്തേ പ്രശിഷം യസ്യ ളേവാഃ । യസു ഛായാടമൃതം ്യസു മൃത്യുഃ കസ്റ്റൈ ദേവായ ഹവിഷാ വിധേമ തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 34 യോ രുദ്രോ അഗ്നൗ യോ അഫ്സു യ ഓഷധീഷു യോ രുദ്രോ വിശ്വാ ഭുവനാ ssവിവേശ തസ്സൈ രുദ്രായ നമോ അസ്തു തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 35 ഗന്ധദ്വാരാം ദുരാധർ.ഷാം നിതൃപുഷ്ടാം കരീഷിണ്ലം । ഈശ്വരീ 🤟 സർവ ഭൂതാനാം താമിഹോപഹ്വയേ ശ്രിയം തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 36 യ ഇദ 🔖 ശിവസംകല്പ 🗡 സദാ ധ്യായന്തി ബ്രാഹ്മണാഃ । തേ പരം മോക്ഷം ഗമിഷൃന്തി തന്മേ മനഃ ശിവസംകല്പമസ്തു ॥ 37 (ഹൃദയായ നമഃ)

Korvai for Sivasankalpam

- 1. യേനേദം, യേന കർമാണി, യേനകർമാണൃപസോ, യത് പ്രജ്ഞാനഗ്ം, സുഷാരഥിർ, യസ്മിന്നുചോ, യദത്ര ഷഷ്ഠം, യജ്ജാഗ്രതോ, യേനേദം, യേന ദൃൗഃ പൃഥിവീ ദശ ।
- 2. യേ മനോ ഹൃദയ, മചിന്തൃ, മേകാ ച, യേ പഞ്ച, വേദാഹമേതം, യസ്യേദം ധീരാഃ, പരാത് പരതരം ചൈവ, പരാത് പരതരോ ബ്രഹ്മാ, യാ വേദാദിഷു, യോ വൈ ദേവം ദശ ।
- 3. പ്രയതോ, യോടസൗ, ഗോഭിർ ജുഷ്ടം, കൈലാസ ശിഖരേ, ത്രൃംബകം, വിശ്വതശ്ചക്ഷു, ശ്ചതുരോ വേദാൻ, മാനോ മഹാന്ത, മ്മാനസ്തോക, ഋതഴ് സതൃം ദശ ।
- 4. കദ് രുദ്രായ, ബ്രഹ്മജ്ഞാനം, യഃ പ്രാണതോ, യ ആത്മദാ, യോ രുദ്രോ, ഗന്ധദ്വാരാം, യ ഇദഴ് ശിവസങ്കല്പഴ് സപ്തത്രിഴ്ശത്.

9.2 <u>പൂരൂഷ സൂക്തം</u> (T.A.3.12.1 to T.A.3.12.7) സഹസ്രശീർ.ഷാ പുരുഷഃ । സഹസ്രാക്ഷഃ സഹസ്രപാത് । സ ഭൂമിം ്വിശ്വതോ വൃത്വാ । അതൃതിഷ്പദ് ദശാങ്ഗുലം । പുരുഷ ഏവേദ 🗸 സർവം । യദ്ഭൂതം ്യച്ച ഭവ്യം । ഉതാമൃതത്വസ്യേശാനഃ । യദന്നേനാതിരോഹതി । ഏതാവാനസൃ മഹിമാ । അതോ ജൃായാ⊌ശ്ച പുരുഷഃ ॥ 1 പാദോടസൃ വിശാാ ഭൂതാനി । ത്രിപാദസൃാമൂത്ന്ദിവി । ത്രിപാദൂർദ്ധാ ഉദൈത് പുരുഷഃ । പാദോസ്യേഹാടടഭവാത്പുനഃ । തതോ വിഷാങ് വൃക്രാമത് । സാശനാനശനേ അഭി । തസ്താദ് വിരാഡജായത । വിരാജോ അധി പൂരുഷഃ । സ ജാതോ അതൃരിചൃത । പശ്ചാദ് ഭൂമിമഥോ പുരഃ ॥ 2 യത് പുരുഷേണ ഹവിഷാ । ദേവാ യജ്ഞമതന്വത । വസന്തോ അസൃാസീദാജ്യം । ഗ്രീഷ്ത ഇദ്ധ്മ–ശ്ശരദ്ധവിഃ । സപ്താസ്യാസൻ പരിധയഃ । ത്രിസ്സപ്ത സമിധഃ കൃതാഃ । ദേവാ യദ്യജ്ഞം–തമ്പാനാഃ । അബദ്ധ്നൻ പുരുഷം പശും ॥ തം ^{*}യജ്ഞം ബർ.ഹിഷി പ്രൗക്ഷന്ന് । പുരുഷം ജാതമഗ്രതഃ ॥ 3 തേന ദേവാ അയജന്ത 1 സാദ്ധ്യാ ഋഷയശ്ച യേ 1 തസ്താദ് യജ്ഞാഥ് സർവഹുതഃ । സംഭൃതം പൃഷദാജ്യം । പശൂ⊎സ്താ⊎ശ്ചക്രേ വായവ്യാൻ । ആരണ്യാൻ–ഗ്രാമ്യാശ്ച യേ ।

```
തസ്താദ് യജ്ഞാഥ് സർവഹുതഃ । ഋചഃ സാമാനി ജജ്ഞിരേ ।
ഛന്ദാ√സി ജജ്ഞിരേ തസൂാത് । യജുസ്തസൂാദജായത ॥ 4
തസ്മാദശ്വാ അജായന്ത । യേ കേ ചോഭയാദതഃ ।
ഗാവോ ഹ ജജ്ഞിരേ തസ്താത് । തസ്താജ്ജാതാ അജാവയഃ ।
യത്പുരുഷം ്വൃദധുഃ । കതിധാ വൃകല്പയന്ന് ।
മുഖം കിമസ്യ കൗ ബാഹൂ । കാവൂരൂ പാദാവുച്യേതേ ।
ബ്രാഹ്മണോടസ്യ മുഖമാസീത് । ബാഹൂ രാജന്യഃ കൃതഃ ॥ 5
ഊരൂ തദസ്യ യദ് വൈശ്യഃ । പദ്ഭ്യാ ് ശൂദ്രോ അജായതഃ ।
ചന്ദ്രമാ മനസോ ജാതഃ । ചക്ഷോ–സ്സൂര്യോ അജായത ।
മുഖാദിന്ദ്രശ്ചാഗ്നിശ്ച । പ്രാണാദ് വായു–രജായത ।
നാഭ്യാ ആസീദന്തരിക്ഷം । ശീർഫ്ക്കോ ദൃൗഃ സമവർത്തത ।
പദ്ഭ്യാം ഭൂമിർ ദിശഃ ശ്രോത്രാത് ।
തഥാ ലോകാഴ് അകല്പയന്ന് ॥ 6
വേദാഹമേതം പുരുഷം മഹാന്തം ।
ആദിതൃവർണം തമസസ്തു പാരേ ।
സർവാണി രൂപാണി വിചിതൃ ധീരഃ ।
നാമാനി കൃത്വാഭിവദൻ. യദാസ്തേ ।
ധാതാ പുരസ്താദൃമുദാ ജഹാര ।
ശക്രഃ പ്രവിദ്വാൻ പ്രദിശശ്ചതസ്രഃ ।
തമേവം ്വിദ്ധാനമൃത ഇഹ ഭവതി ।
നാനൃഃ പന്ഥാ അയനായ വിദൃതേ ।
യജ്ഞേന യജ്ഞ-മയജന്ത ദേവാः ।
```

താനി ധർമാണി പ്രഥമാന്യാസന്ന് । തേ ഹ നാകം മഹിമാനസ്സചന്തേ । യത്ര പൂർവേ സാദ്ധ്യാ–സ്സന്തി ദേവാഃ ॥ 7 (ശിരസേ സ്വാഹാ)

9.3 <u>ഉത്തര നാരായണം</u>

(T.A.3.13.1 to T.A.3.13.2)

```
അദ്ഭൃസ്സംഭൂതഃ പൃഥിവ്വൈ രസാച്ച ।
വിശ്വകർമണഃ സമവർത്തതാധി ।
______
തസൃ താഷ്ടാ വിദധദ് രൂപമേതി ।
തത്പുരുഷസൃ വിശ്ചമാജാനമഗ്രേ । 1
വേദാഹമേതം പുരുഷം മഹാന്തം ।
ആദിതൃവർണം തമസഃ പരസ്താത് ।
തമേവം <sup>*</sup>വിദ്ധാനമൃത ഇഹ ഭവതി I
നാനൃഃ പന്ഥാ വിദൃതേടയനായ । 2
പ്രജാപതിശ്ചരതി ഗർഭേ അന്തഃ ।
അജായമാനോ ബഹുധാ വിജായതേ I
തസൃ ധീരാഃ പരിജാനന്തി യോനിം ।
മരിചീനാം പദമിച്ഛന്തി വേധസ്ഃ । 3
യോ ദേവേഭൃ ആത്പതി । യോ ദേവാനാം പുരോഹിതഃ ।
പൂർവോ യോ ദേവേഭ്യോ ജാതഃ । നമോ രുചായ ബ്രാഹ്മയേ । 4
```

രുചം ബ്രാഹ്മ-ഞ്ജനയ്ന്തഃ । ദേവാ അഗ്രേ തദ്ബുവന്ന് । യസ്ക്കൈവം ബ്രാഹ്മണോ വിദ്യാത് । തസ്യ ദേവാ അസ്നാശേ । 5 ഹ്രീശ്ച് തേ ലക്ഷ്മീശ്ച പത്നുൗ് । അഹോരാത്രേ പാർശോ । നക്ഷത്രാണി രൂപം । അശിനൗ വ്യാത്തം । ഇഷ്ടം മനിഷാണ । അമും മനിഷാണ । സർവം മനിഷാണ ॥ 6

(ശിഖായൈ വഷട്)

9.4 <u>അപ്രതിരഥം</u>

(TS 4.6.4.1 to TS 4.6.4.5)

ആശും ശിശാനോ വൃഷഭോ ന യുധ്മോ ഘനാഘനഃ ക്ഷോഭണ – ശ്ചർ.ഷണീനാം । സംക്രദ്രേനാടനിളിഷ ഏകവീര ശ്ശതഴ് സേനാ അജയഥ് സാകമിന്ദ്രഃ । സംക്രദ്രനേനാനിളിഷേണ് ജിഷ്ണുനാ യുത്കാരേണ് ദുശ്ചൃവനേന് ധൃഷ്ണുനാ । തദിന്ദ്രേണ ജയത തഥ് സഹദ്ധം യുധോ നര ഇഷുഹസ്തേന വൃഷ്ണാ । സ ഇഷുഹസ്തൈസ്ത്രഃ സ നിഷംഗിഭിർ വശീ സംസ്രഷ്ടാ സ യുധ ഇന്ദ്രോ ഗണേന । സംസൃഷ്ടങ്ങിഥ് സോമപാ ബാഹുശർദ്ധ്യൂർദ്ധാധനാ പ്രതിഹിതാഭിരസ്താ । ബൃഹസ്പതേ പരി ദീയാ രഥേന രക്ഷോഹാ

```
പ്രഭംജൻഥ് സേനാഃ പ്രമൃണോ യുധാ ജയന്നസ്മാക-
മേദ്ധൃവിതാ രഥാനാം ।
ഗോത്രഭിദം ഗോവിദം <sup>ട്</sup>വജ്രബാഹും ജയന്തമജ്മ
പ്രമൃണന്ത–മോജസാ ।
ഇമ< സജാതാ അനു വീരയദ്ധ്വമിന്ദ്ര< സഖായോടനു
ഗര് യജ്ബം ി
ബലവിജ്ഞായഃ സ്ഥവിരഃ പ്രവീര-സ്റ്റഹസ്വാൻ.
വാജീ സഹമാന ഉഗ്രഃ ।
അഭിവീരോ അഭിസത്വാ സഹോജാ ജൈത്രമിന്ദ്ര
രഥമാതിഷ്റ ഗോവിത് । 2
അഭി ഗോത്രാണി സഹസാ ഗാഹമാനോടദായോ
വീര ശ്ശതമന്യൂരിന്ദ്രഃ 1
ദുശ്ചൃവനഃ പൃതനാഷാഡയുദ്ധ്യോസ്മാക 🗸 സേനാ അവതു
പ്ര യുഥ്സു ।
ഇന്ദ്ര ആസാം നേതാ ബൃഹസ്റ്റതിർ ദക്ഷിണാ യജ്ഞഃ
പുര ഏതു സോമഃ ।
ദേവസേനാനാ-മഭിഭഞ്ജതീനാം ജയന്തീനാം മരുതോ
വ സ്വാഗ്രേ വ
ഇന്ദ്രസൃ വൃഷ്ണോ വരുണസൃ രാജ്ഞ ആദിതൃാനാം മരുതാഴ്
ശർദ്ധ ഉഗ്രം ।
മഹാമനസാം ഭുവനചൃവാനാം ഘോഷോ ദേവാനാം
ജയതാ-മുദസ്ഥാത് ।
```

```
അസ്മാക–മിന്ദ്ര സ്സമൃതേഷു ധ്വജേഷ്വസ്മാകം ്യാ
ഇഷവസ്താ ജയന്തു । 3
അസ്മാകം ്വീരാ ഉത്തരേ ഭവന്ത്വസ്മാനു ദേവാ അവതാ
ഹവേഷു ।
ഉദ്ധർ.ഷയ മഘവ–ന്നായുധാന്ന്യുഥ് സത്വനാം മാമകാനാം
മഹാഴ്സി ।
ഉദ്–വൃത്രഹൻ വാജിനാം ്വാജിനാന്യുദ്–രഥാനാം
ജയതാമേതു ഘോഷഃ ।
ഉപ പ്രേത ജയതാ നരഃ സ്ഥിരാ വ സ്റ്റന്തു ബാഹവഃ ।
ഇന്ദ്രോ വഃ ശർമ യച്ഛതാനാധൃഷ്യാ യഥാ ടസ്ഥ ഭ
അവസൃഷ്ടാ പരാ പത ശരവേൃ ബ്രഹ്മസ<sup>്</sup>ശിതാ i 4
ഗച്ഛാമിത്രാൻ പ്ര വിശ മൈഷാം കഞ്ചനോച്ഛിഷഃ ।
മർമാണി തേ വർമഭി ശ്ശാദയാമി സോമസ്ത്വാ രാജാ
ടമൃതേനാഭി വസ്താം ।
ഉരോർ വരിയോ വരിവസ്തേ അസ്തു ജയന്തം ത്വാമനു
മദന്തു ദേവാഃ ।
യത്ര ബാണാ സ്സംപതന്തി കുമാരാ വിശിഖാ ഇവ ।
ഇന്ദ്രോ ന സ്തത്ര വൃത്രഹാ വിശ്വാഹാ ശർമ യച്ചതു ॥ 5
(കവചായ ഹും)
```

9.5 പ്രതി പുരുഷദ്വയം

(TS 1.8.6.1 to TS 1.8.6.2 for para 1 to 2 (T.B.1.6.10.1 to T.B.1.6.10.5 for para 3 to 7)

പ്രതിപൂരുഷ-മേകകപാലാൻ നിർവപത്യേക-മതിരിക്തം യാവന്തോ ഗൂഹൃാഃ സ്മസ്തേഭൃഃ കമകരം പശൂനാഴ് ശർമാസി ശർമ യജമാനസ്യ ശർമ മേ യച്ഛെക് എവ രുദ്രോ ന ദ്വിതീയായ തസ്ഥ ആഖുസ്തേ രുദ്ര പശുസ്തം ജുഷസൈഷ തേ രുദ്ര ഭാഗഃ സഹ സ്വസാടംബികയാ തം ജുഷസ്വ ഭേഷജം ഗവേടശ്വായ പുരുഷായ ഭേഷജമഥോ അസ്മഭ്യം ഭേഷജ്യ് സുഭേഷജം യഥാടസ്തി പ്ര

സുഗം മേഷായ മേഷ്യാ അവാംബ രുദ്ര–മദിമഹൃവ ദേവം — — — തൃംബകം I

യഥാ ന്നു ശ്രേയ്സു കരദ് യഥാ നോ വസൃസു കരദ് യഥാ നാ പശുമതു കരദ് യഥാ നോ വൃവസായയാത് ॥ ത്രംബകം യജാമഹേ സുഗന്ധിം പുഷ്ടിവർദ്ധനം । ഉർവാരുക–മിവ ബന്ധനാൻ മൃത്യോർ മുക്ഷീയ മാടമൃതാത് ॥ എഷ തേ രുദ്ര ഭാഗസ്തം ജുഷസ്വ തേനാവസേന പരോ മൂജവതോടതീഹൃ വത്തധന്വാ പിനാകഹസ്തു

കൃത്തിവാസാഃ ॥ 2

പ്രതിപൂരുഷ–മേക്കപാലാൻ നിർവ്പതി 1 ജാതാ ഏവ പ്രജാ രുദ്രാൻ നിരവദയതേ 1 ഏകമതിരിക്തം 1 ജനിഷൃമാണാ ഏവ പ്രജാ രുദ്രാൻ നിരവദയതേ 1 ഏക്കപാലാ ഭവന്തി 1 ഏകധൈവ രുദ്രം നിരവദയതേ । നാഭിഘാരയതി । യദഭിഘാരയേത് । അന്തരവചാരിണ 🧡 രുദ്രം കുര്യാത് । ഏകോൽമുകേന യന്തി 1 3 തദ്ധി രുദ്രസൃ ഭാഗധേയം । ഇമാം ദിശം ്യന്തി । ഏഷാ വൈ രുദ്രസൃ ദിക് । സ്വായാമേവ ദിശി രുദ്രം നിരവദയതേ । രുദ്രോ വാ അപശുകായാ ആഹുത്ത്യെ നാതിഷ്പത । അസൗ തേ പശുരിതി നിർദിശേദൃം ദ്വിഷൃാത് । യമേവ ദ്വേഷ്ടി । തമസ്കൈ പശും നിർദിശതി । യദി ന ദ്വിഷ്യാത് । ആഖുസ്തേ പശുരിതി ബ്രൂയാത് i **4** ന ഗ്രാമ്യാൻ പശൂൻ. ഹിനസ്തി । നാരണ്യാൻ । ചതുഷ്പഥേ ജുഹോതി । ഏഷ വാ അഗ്നീനാം പഡ്ബിശോ നാമ । അഗ്നിവത്യേവ ജുഹോതി । മദ്ധ്യമേന പർണേന ജുഹോതി । സ്രുഗ്ഘൃഷാ । അഥോ ഖലു । അന്തമേനൈവ ഹോതവ്യം । അന്തത ഏവ രുദ്രം നിരവദയതേ 1 5 ഏഷ തേ രുദ്രഭാഗഃ സഹ സ്വസാംടബികയേത്യാഹ । ശരദ്വാ അസൃാംബികാ സ്വസാ । തയാ വാ ഏഷ ഹിനസ്തി । യ ് ഹിനസ്തി । തയൈവൈന ए സഹ ശമയതി । ഭേഷജം ഗവ ഇതൃാഹ । യാവന്ത ഏവ ഗ്രാമൃാഃ പശവഃ । തേട്യോ ട്രേഷജം കരോതി 1 അവാംബ രുദ്രമദിമഹീത്യാഹ 1 ആശിഷ-മേവൈ-താ-മാശാസ്തേ । 6

ത്ര്യംബകം ്യജാമഹ ഇത്യാഹ । മൃത്യോർ മുക്ഷീയ മാടമൃതാദിതി വാവൈതദാഹ । ഉത്കിരന്തി । ഭഗസ്യ ലീഫ്സന്തേ । മൂതേ കൃത്വാ ടടസ്ജന്തി । യഥാജനം ്യതേടവസം കരോതി । താദൃഗേവ തത് । ഏഷ തേ രുദ്രഭാഗ ഇത്യാഹ നിരവത്ത്യെ । അപ്രതീക്ഷമായന്തി । അപഃ പരിഷിഞ്ചതി । രുദ്രസ്യാന്തർ. ഹിത്യൈ । പ്ര വാ ഏതേടസ്മാ-ല്ലോകാ-ച്ചുവന്തേ । യേ ത്രൃംബകൈ-ശ്ചരന്തി । ആദിതൃം ചരും പുനരേത്യ നിർവപതി । ഇയം ്വാ അദിതിഃ । അസ്യാമേവ പ്രതിതിഷ്ഠന്തി ॥ 7

9.6 <u>ശത രൂദ്രീയം</u>

T.B.3.11.2.1 to T.B.3.11.2.4 for full 9.6

ത്വമസേ രുദ്രോ അസുരോ മഹോ ദിവഃ I ത്വഴ് ശർലോ മാരുതം പൂക്ഷ ഈശിഷേ I ത്വം വാതൈരരുണൈർ യാസി ശംഗയഃ I ത്വം പൂഷാ വിധതഃ പാസി നു ത്മനാഃ I ദേവാ ദേവേഷു ശ്രയദ്ധം I ത്യതിയാ–ശ്ചതുർഥേഷു ശ്രയദ്ധം I ചതുർത്ഥാഃ പഞ്ചമേഷു ശ്രയദ്ധം I പഞ്ചമാഃ ഷഷ്യേഷു ശ്രയദ്ധം I 1 ഷഷ്യാഃ സ്പ്തമേഷു ശ്രയദ്ധം I നവമാ ദശമേഷു ശ്രയദ്ധം I ദാദശാ ഏകാദശേഷു ശ്രയദ്ധം I നവമാ ദശമേഷു ശ്രയദ്ധം I ദാദശാ ഏതാദശേഷു ശ്രയദ്ധം I ഏകാദശാ ദാദശേഷു ശ്രയദ്ധം I ദാദശാ ശ്രയാദശേഷു ശ്രയദ്ധം I എതാദശാ ദാദശേഷു ശ്രയദ്ധം I

```
ചതുർദശാഃ പഞ്ചദശേഷു ശ്രയദ്ധാം ।
പഞ്ചദശാഃ ഷോഡശേഷു ശ്രയദ്ധാം । 2
ഷോഡശാഃ സപ്തദശേഷു ശ്രയദ്ധാം 1
സപ്തദശാ അഷ്ടാദശേഷു ശ്രയദ്ധാം 1
അഷ്ടാദശാ ഏകാന്നവിപ്ശേഷു ശ്രതങ്നം i
ഏകാന്നവി∀്ശാ വി∀്ശേഷു ശ്രയദ്ധം ദ
ഏകവി∕്ശാ ദാവി∕്ശേഷു ശ്രതങ്നാ ദ
ദാം പ്രത്യാവി ക്രയഷ്യ ശ്രതങ്നം വ
ത്രതോവിക്രാ ത്വയിയുന്നിക്രേഷ്യ ശ്രത്യാം 1
ചതുർവി≃്ശാഃ പഞ്ചവി≃്ശേഷു ശ്രയദ്ധാം ദ
പഞ്ചവിഴ്ശാഃ ഷഡ്വിഴ്ശേഷു ശ്രയദ്ധാം i 3
ഷഡി ഗ്രാ സ്സ്പ്ലവി ഗ്രേഷു ശ്രയദ്ധം ദ
സപ്തവിഴ്ശാ അഷ്ടാവിഴ്ശേഷു ശ്രയദ്ധം 1
അഷ്ടാവിഴ്ശാ ഏകാന്നത്രിഴ്ശേഷു ശ്രയദ്ധം ദ
ഏകാന്നത്രിഴ്ശാ സ്ത്രിഴ്ശേഷു ശ്രയദ്ധാം ।
്രോ ഏകത്രിപ്രേഷു ശ്രത്താം ദ
ഏകത്രിഴ്ശാ ദ്വാത്രിഴ്ശേഷു ശ്രയദ്ധം ദ
ദായ്രി പ്രാ ഡ്രീതഗ്രീ പ്രയേഷി ശ്രതങ്ങം ।
```

ദേവാസ്ത്രിരേകാദശാ സ്ത്രിസ്ത്രയസ്ത്രി ്ശാഃ । ഉത്തരേ ഭവത । ഉത്തര വർത്മാന ഉത്തര സത്വാനഃ । യത്കാമ ഇദം ജൂഹോമി । തന്മേ സമ്യിദ്ധ്യതാം । വയം സ്യാമ പതയോ രയീണാം । ഭൂർഭുവസ്വസ്സ്വാഹാ । 4 (അസ്ത്രായ ഫട്)

9.7 <u>പഞ്ചാംഗ ജപഃ</u>

ഫ്യ്സ ശ്ശുചിഷദ് വസുരന്തരിക്ഷ സദ്ധോതാ വേദിഷ ദതിഥിർ ദുരോണസത് റ നൃഷദ് വരസദ് ഋതസദ് വേൃാമസദബ്ഛാ ഗോജാ ഋതജാ അദ്രിജാ ഋതം ബൃഹത് റ 1 (TS 4.2.1.5)

ത്ര്യംബകം 'യജാമഹേ സുഗന്ധിം പുഷ്ടിവർദ്ധനം । ഉർവാരുകമിവ ബന്ധനാൻ മൃത്യോർ മുക്ഷീയ മാടമൃതാത് । 3

തഥ്സ്വിതുർ വൃണീമഹേ । വയം ദേവസ്വ ഭോജനം । ശ്രേഷ്ഠ് സർവധാതമം । തുരം ഭഗസൃ ധീമഹി । 4 (TA 1.11.3)

വിഷ്ണൂർ യോനിം കല്പയതു । താഷ്ടാ രൂപാണി പി∨്ശതു । ആസിഞ്ചചതു പ്രജാപതിഃ । ധാതാ ഗർഭം ദധാതു തേ । 5 (EAK 1.13.1)

```
<u>അഷ്ടാങ്ഗ പ്രണാമഃ</u>
ഹിരണൃഗർഭഃ സ–മവർതതാഗ്രേ ഭൂതസു ജാതഃ പതിരേക്
ആസീത് । സ ദാധാര പൃഥിവീം ദൃാ–മുതേമാം കസ്സൈ ദേവായ
ഹവിഷാ വിധേമ । (ഉമാമഹേശ്വരാഭൃാം നമഃ) । 1 (TS 4.1.8.3)
യഃ പ്രാണതോ നിമിഷതോ മഹിത്തെക ഇദ്–രാജാ ജഗതോ
ബഭൂവ । യ ഈശേ അസൃ ദ്വിപദശ്ചതുഷ്പദഃ കസ്മൈ ദേവായ
ഹവിഷാ വിധേമ ॥ (ഉമാമഹേശാരാഭൃാം നമഃ) । 2 (TS 4.1.8.4)
ബ്രഹ്മജജ്ഞാനം പ്രഥമം പുരസ്താദ് വിസിമത–സ്സുരുചോ
വേന ആവഃ । സ ബുധ്നിയാ ഉപമാ അസൃ വിഷ്ഠാസ്സതശ്ച
യോനിമ–സതശ്ച വിവഃ । (ഉമാമഹേശ്വരാഭൃാം നമഃ) । 3 (TS 4.2.8.2)
മഹീ ദൃൗഃ പൃഥിവീ ച ന ഇമം ്യജ്ഞം മിമിക്ഷതാം ।
പിപൃതാന്നോ ഭരിമഭിഃ । (ഉമാമഹേശാരാഭൃാം നമഃ) । 4 (TS 3.3.10.2)
ഉപ ശ്വാസയ പൃഥിവീ–മുത ദൃാം പുരുത്രാ തേ മനുതാം
്വിഷ്റിതം ജഗത് । സ ദുന്ദുഭേ സജൂരിന്ദ്രേണ ദേവൈർ
ദൂരാദ്–ദവിയോ അപ്സേധ ശത്രൂൻ । (ഉമാമഹേശചരാഭൃാം നമഃ) । 5
(TS 4.6.6.6)
അഗ്നേ നയ സുപഥാ രായേ അസ്മാൻ. വിശ്വാനി ദേവ
വയുനാനി വിദ്വാൻ । യുയോദ്ധ്യസ്മ–ജ്ജുഹുരാണ–മേനോ
```

ഭൂയിഷ്റാന്തേ നമഉക്തിം ^{*}വിധേമ ॥

യാ തേ അഗ്നേ രുദ്രിയാ തനൂസ്തയാ നഃ പാഹി തസ്യാസ്തേ സ്വാഹാ । (ഉമാമഹേശ്വരാഭൃാം നമഃ) । 7 (TS 1.2.11.2)

ഇമം ്യമ പ്രസ്തര-മാ ഹി സീദാംഗിരോഭിഃ പിതൃഭി സ്റ്റം്വിദാനഃ । ആത്വാ മന്ത്രാഃ കവിശസ്താ വഹന്ത്വേനാ രാജൻ. ഹവിഷാ മാദയസ്വ ॥ (ഉമാമഹേശ്വരാഭൃാം നമഃ) । 8 (TS 2.6.12.6)

Note: The following is only a sloka which says as to what are the 8 angas with which one has to do Pranamam / Namaskaram. This is not a Mantra.

(ഉരസാ, ശിരസാ, ദൃഷ്ട്യാ, മനസാ, വചസാ തഥാ ।

പദ്ഭ്യാം, കരാഭ്യാം, കർണാഭ്യാം, പ്രണാമോടഷ്ടാംഗ ഉചൃതേ)

9.9 <u>ധ്യാനം</u>

അഥാത്മാനം ശിവാത്മാനം ശ്രീ രുദ്രരൂപം ധ്യായേത് ॥ ശുദ്ധസ്റ്റടിക സങ്കാശം ത്രിനേത്രം പഞ്ച വക്ത്രകം । ഗങ്ഗാധരം ദശഭുജം സർവാഭരണ ഭൂഷിതം ॥ 1 നീലഗ്രീവം ശശാങ്കാങ്കം നാഗ യജ്ഞോപവീതിനം । വൃാഘ്ര ചർമോത്തരീയം ച വരേണ്യ–മഭയ പ്രദം ॥ 2 കമണ്ഡലാക്ഷ സൂത്രേച ദധാനം ശൂലപാണിനം । (or കമണ്ഡലാക്ഷ സൂത്രാണം ധാരിണം ശുലപാണിനം) I ജ്വലന്തം പിങ്ഗലജടം (or ജടാ) ശിഖാ മദ്ധ്യോദ–ധാരിണം и 3 വൃഷസ്കന്ധ സമാരൂഢം ഉമാ ദേഹാർദ്ധ ധാരിണം । അമൃതേനാപ്പുതം ഹൃഷ്റം (ശാന്തം) ദിവൃഭോഗ സമന്വിതം ॥ 4 ദിഗ്ദേവതാ സമായുക്തം സുരാസുര നമസ്കൂതം । നിതൃം ച ശാശ്വതം ശുദ്ധം ധ്രുവ–മക്ഷര–മവൃയം । സർവ വ്യാപിന–മീശാനം രുദ്രം വൈ വിശ്വരൂപിണം ॥ 5 (ഉമാമഹേശ്വരാഭ്യാം നമഃ ।) ----ഇതി പഞ്ചമഃ നൃാസഃ----

ഹൃദയാദി അസ്ത്രാന്തം ഷഡംഗ നൃാസഃ പഞ്ചമഃ

10 ഷഷ്ഠ ന്യാസഃ (ലഘു ന്യാസഃ)

(This mantra seems to be broken into Ruks, from some source and the Swaram marking does not follow some basic conventions.e.g. swaritam at the beginning of a Ruk which are not definitely Nitya swara formation. Many Vedic Schools render the following nyasa without swaram as there is no authentic source with swaram for this mantra in classic Vedic text according to them.)

- 1. പ്രജനനേ ബ്രഹ്മാ തിഷ്പതു ।
- 2. പാദയോർ വിഷ്ണുസ്തിഷ്ഠതു ।
- ഹസ്തയോർ ഹരസ്തിഷ്ഠതു ।
- 4. ബാഹ്വോരിന്ദ്രസ്തിഷ്ഠതു ।
- 5. ജഠരേടഗ്നിസ്തിഷ്പതു I
- 6. ഹൃദയേ ശിവസ്തിഷ്പതു ।
- 7. കണ്റേ വസവസ്തിഷ്പന്തു ।
- 8. വക്രേത സരസ്വതീ തിഷ്പതു ।
- 9. നാസികയോർ വായുസ്തിഷ്പതു ।
- 10. നയനയോഃ ചന്ദ്രാദിതൃൗ തിഷ്പേതാം ।
- 11. കർണയോഃ അശ്വിനൗ തിഷ്പേതാം ।
- 12. ലലാടേ രുദ്രാസ്തിഷ്പന്തു ।
- 13. മൂർധ്ന്യാ–ദിത്യാസ്തിഷ്പന്തു ।
- 14. ശിരസി മഹാദേവസ്തിഷ്പതു ।
- 15. ശിഖായാം വാമദേവസ്തിഷ്പതു ।
- 16. പൃഷ്ടേ പിനാകീ തിഷ്ടതു ।
- 17. പുരതഃ ശൂലീ തിഷ്ടതു ।
- 18. പാർശായോഃ ശിവാശങ്കരൗ തിഷ്പേതാം ।

```
19. സർവതോ വായുസ്തിഷ്പതു ।
20. തതോ ബഹിഃ സർവതോടഗ്നിർ ജ്വാലാമാലാപരിവൃതസ്തിഷ്പതു ।
21. സർവേഷ്വങ്ഗേഷു സർവാ ദേവതാഃ യഥാസ്ഥാനം തിഷ്പന്തു । 1
മാം രക്ഷന്തു । യജമാനം സകുടുംബം രക്ഷന്തു ।
സർവാൻ മഹാജനാൻ രക്ഷന്തു ।
<u>അഗ്നിർമേ വാചി ശ്രിതഃ</u>
(T.B.3.10.8.4 to T.B.3.10.8.10) for para 1
അഗ്നിർ മേ വാചി ശ്രിതഃ । വാഗ്ഘൃദയേ । ഹൃദയം മയി ।
അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
വായുർ മേ പ്രാണേ ശ്രിതഃ । പ്രാണോ ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി ।
അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
സൂര്യോ മേ ചക്ഷുഷി ശ്രിതഃ । ചക്ഷുർ. ഹൃദയേ ।
ഹൃദയം മയി । അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
ചന്ദ്രമാ മേ മനസി ശ്രിതഃ । മനോ ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി ।
അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
ദിശോ മേ ശ്രോത്രേ ശ്രിതാഃ । ശ്രോത്ര ് ഹൃദയേ ।
ഹൃദയം മയി । അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
ആപോ മേ രേതസി ശ്രിതാഃ । രേതോ ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി ।
അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
പൂഥിവീ മേ ശരീരേ ശ്രിതാ । ശരീര ഗ് ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി ।
അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
```

```
ഓഷധിവനസ്പതയോ മേ ലോമസു ശ്രിതാഃ । ലോമാനി
ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി । അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
ഇന്ദ്രോ മേ ബലേ ശ്രിതഃ । ബല ് ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി ।
അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
പർജന്യോ മേ മൂർധ്ലി ശ്രിതഃ । മൂർധാ ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി ।
അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
ഈശാനോ മേ മനൃൗ ശ്രിതഃ । മന്യൂർ. ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി ।
അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
ആതമാ മ ആത്മനി ശ്രിതഃ I ആത്മാ ഹൃദയേ I ഹൃദയം മയി I
അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി ।
പുനർ മ ആത്മാ പുനരായു –രാഗാത് i
പുനഃ പ്രാണഃ പുനരാകൂതമാഗാത് । വൈശ്വാനരോ രശ്മിഭിർ
വാവൂധാനഃ । അന്തസ്തിഷ്പത്വമൃതസൃ ഗോപാഃ ॥ 1
ആരാധിതോ മനുഷ്യെസ്ത്വം സിജൈർ ദേവാസുരാദിഭിഃ ।
ആരാധയാമി ഭക്തൃാ ത്വാടനുഗ്രഹാണ മഹേശ്വര ॥ 2
(Note for point No.2)
```

Given as per existing convention in use, source not available in classic vedic texts.

11 <u>രുദ്ര ജപം (Methods)</u>

There are 2 methods generally in practise before chanting 1st round Rudra Japam.

11.1 First method

The order of first method is as follows:

- 1. കലശ ധ്യാനം "ധ്യായേന്നിരാമയം വസ്തു " (item 12.1)
- 2. ആവാഹനം (item 12.2.1 to 12.2.18)
- 3. പ്രാണ പ്രതിഷ്റാ (item 12.3)
- 4. ഉപചാരം (item 12.4)
- 5. ത്രിശതി (item no. 12.5)
- 6. പ്രദക്ഷിണം (item no. 12.6)
- 7. നമസ്കാരഃ (item no. 12.7)
- 8. ചമക പ്രാർത്ഥന (item no. 12.8)
- 9. അഘോരേഭ്യോ (item no. 12.9)
- 10. ശ്രീരുദ്രസ്യ ഋഷിച്ഛങോ ദേവതാ ധ്യാനം (item 12.10)
- 11. ഓം ഗണാനാം ത്വാ (item 12.11)
- 12. ശ് ച മേ (item 12.12)
- 13. ശ്രീ രുദ്ര ദശാക്ഷരീ മഹാമന്ത്രഃ (item 12.13)
- 14. രുദ്രം (item 12.14)

11.2 Second method

15.

ശക്തി പഞ്ചാക്ഷരീ (item 11.6) 1. ശ്രീരുദ്രസ്യ ഋഷിച്ഛന്ദോ ദേവതാ ധ്യാനം (item 12.10) 2. കലശ ധ്യാനം "ധ്യായേന്നിരാമയം വസ്തു " (item 12.1) 3. ആവാഹനം (item 12.2.1 to 12.2.18) 4. പ്രാണ പ്രതിഷ്റാ (item 12.3) 5. ഉപചാരം (item 12.4) 6. ത്രിശതി (item no. 12.5) 7. പ്രദക്ഷിണം (item no. 12.6) 8. നമസ്കാരഃ (item no. 12.7) 9. ചമക പ്രാർത്ഥന (item no. 12.8) 10. അഘോരേട്യോ (item no. 12.9) 11. ഓം ഗണാനാം ത്വാ (item 12.11) 12. ശം ച മേ (item 12.12) 13. ശ്രീ രുദ്ര ദശാക്ഷരീ മഹാമന്ത്രഃ (item 12.13) 14. രുദ്രം (item 12.14)

11.3 <u>കൂംഭ (ഏക കലശ) (പ്രധാന കലശ) സ്ഥാപനം</u>

(ധാന്യ–തണ്ഡുലോപരി ആമ്രപല്ലവ–നാളികേര സഹിത ആദിതൃാത്മകരുദ്രം / വരുണം ആവാഹയേത്)

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കലശേ ആദിതൃാത്മകരുദ്രം / വരുണം ധൃായാമി । ആവാഹയാമി । ബ്രഹ്മജ്ജ്ഞാനം പ്രഥമം പുരസ്താദ്വിസീമതസ്സുരുചോ വേന ആവഃ । സുവർണപുഷ്പം സമർപയാമി । സമസ്തോപചാരാൻ സമർപയാമി ।

11.4 (ഏകാദശ കലശ) സ്ഥാപനം

പ്രാച്യാം ഏക കലശഃ । ആഗ്നേയീമാരഭ്യ നൈർ.ഋതികലശ പര്യന്തം ചത്വാരഃ കലശാഃ । പ്രതീച്യാം ഏകഃ । വായവീമാരഭ്യ ഐശാനീ പര്യന്തം ചത്വാരകലശാഃ । മദ്ധ്യേ പ്രധാനകലശഃ । ഏവം ഏകാദശകലശാൻ പ്രതിഷ്റാപ്യ പൂജാ കർത്തവ്യാ)

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ മഹാദേവം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി । (ഏവം ക്രമേണ ശിവം, രുദ്രം, ശങ്കരം, നീലലോഹിതം, ഈശാനം, വിജയം, ഭീമം, ദേവദേവം, ഭവോദ്ഭവം । മദ്ധ്യേ ആദിത്യാത്മകരുദ്രം [ഇതി തത്തത് കലശേഷു] (തദനു പ്രാണ പ്രതിഷ്ഠാ ച കുര്യു)

=============

11.5 <u>അഭിഷേക സ്ഥാന പീട</u>ം

(ഇതി ഘണ്ഠനാദം കൃത്വാ, സംപ്രാർത്ഥ്യ, നിർമാല്യം ഉധൃത്യ, ദേവതാഃ സ്നാനപീഠേ സ്ഥാപയേത്, തദ്യഥാ മദ്ധ്യേ ശംഭൂഃ, ആഗ്നേയാം സൂര്യഃ, നൈർ.ഋത്യാം വിഘ്നേശ്വരഃ , വായവ്യാം അംബികാ, ഐശാന്യാം ഹരിഃ ഇതി ക്രമേണ ശിവലിംഗാദീനി തത്തത് സ്ഥാനേഷു സ്ഥാപയിത്വാ, പഞ്ചകലശാംശ്ച (ചതസ്രഷു ദിക്ഷു ചതുരഃ, മദ്ധ്യേ, ഏകം ച)

11.6 ശ്രീ ശക്തിപഞ്ചാക്ഷരീ മഹാമന്ത്രഃ

One should get proper "deeksha" from guru to recite this mahamantram as per tradition. This is applicable only for Method 2 (Refer 11.2)

അസൃ ശ്രീ ശക്തിപഞ്ചാക്ഷരീ മഹാമന്ത്രസൃ വാമദേവ ഋഷിഃ, പംക്തിശ്ചന്ദഃ, ശ്രീ സാംബസദാശിവോ ദേവതാ ।

ഹ്രാം ബീജം, ഹ്രീം ശക്തിഃ, ഹ്രൂം കീലകം, ശ്രീ സാംബസദാശിവ പ്രസാദ സിദ്ധ്യർത്ഥേ ജപേ, പൂജായാം, ഹോമേ ച വിനിയോഗഃ ।

<u>കരനൃാസഃ</u>

ഓം ഹ്രാം സർവജ്ഞശക്തിധാമ്റ്റേ അംഗു നം ഹ്രീം നിതൃതൃപ്തിശക്തിധാമ്റ്റേ തർജ്ജ മം ഹ്രൂം അനാദിബോധശക്തിധാമ്റ്റേ മദ്ധ്യമാ ശിം ഹ്രൈം സ്വതന്ത്രശക്തിധാമ്റ്റേ അനാമ വാം ഹ്രൗം അലുപ്തശക്തിധാമ്റ്റേ കനിഷ്ട യം ഹഃ അനന്ത ശക്തിധാമ്റ്റേ കരതല

അംഗുഷ്ഠാഭ്യാം നമഃ തർജ്ജനീഭ്യാം നമഃ മദ്ധ്യമാഭ്യാം നമഃ അനാമികാഭ്യാം നമഃ കനിഷ്ഠികാഭ്യാം നമഃ കരതല–കരപൃഷ്ഠാഭ്യാം നമഃ

അംഗനൃാസഃ

ഓം ഹ്രാം സർവജ്ഞശക്തിധാമ്പ്നേ ഹൃദയായ നമഃ നം ഹ്രീം നിതൃതൃപ്തിശക്തിധാമ്പ്നേ ശിരസേ സ്വാഹാ മം ഹ്രൂം അനാദിബോധശക്തിധാമ്പ്നേ ശിഖായൈ വഷട് ശിം ഹ്രൈം സ്വതന്ത്രശക്തിധാമ്പ്നേ കവചായ ഹും വാം ഹ്രൗം അലുപ്തശക്തിധാമ്പ്നേ നേത്രത്രയായ വൗഷട് യം ഹഃ അനന്ത ശക്തിധാമ്പ്നേ അസ്ത്രോയ ഫട് ഭൂർഭുവസ്സുവരോം ഇതി ദിഗ്ബന്ധഃ

<u>ംനവുധ</u>

മൂലേ കൽപദ്രുമസ്യ ദ്രുതകനകനിഭം ചാരുപദ്മാസനസ്ഥം । വാമാങ്കാരൂഢ ഗൗരീനിബിഡകുചഭരാ ഭോഗഗാഢോപഗൂഡം । നാനാലങ്കാരദീപ്തം വരപരശു മൃഗാഭീതിഹസ്തം ത്രിനേത്രം । വന്ദേ ബാലേന്ദുമൗളിം ഗജവദനഗുഹാശ്ലിഷ്ടപാർശ്വം മഹേശം ॥

പഞ്ചോപചാര പുജാ

ലം പൃഥിവൃാത്മനേ ഗന്ധം കൽപയാമി ഹം ആകാശാത്മനേ പുഷ്പം കൽപയാമി യം വായ്വാത്മനേ ധൂപം ആഘ്രാപയാമി രം വഹ്നൃാത്മനേ ദീപം ദർശയാമി വം അമൃതാത്മനേ അമൃതം നിവേദയാമി സം സർവാത്മനേ സർവോപചാരാൻ സമർപയാമി മൂലമന്ത്രഃ – " ഒാം ഹ്രീം നമശ്ശിവായ" (അഷ്ടോത്തരം വാ, ദ്വാത്രിംശതം വാ, യഥാശക്തി ജപേത്)

12 രുദ്ര വിദാനം

12.1 <u>കലശേഷൂ ധ്യാനം</u>

ധ്യായേന്നിരാമയം വസ്തു സർഗസ്ഥിതി ലയാദികം । നിർഗുണം നിഷ്കളം നിതൃം മനോ വാചാമഗോചരം ॥ 1 ഗംഗാധരം ശശിധരം ജടാമകുട ശോഭിതം । ശോതഭൂതി ത്രിപുണ്ഡേണ വിരാജിത ലലാടകം ॥ **2** ലോചനത്രയ സംപന്നം സ്വർണകുണ്ഡല ശോഭിതം । സ്തേരാനനം ചതുർ ബാഹും മുക്താഹാരോപശോഭിതം ॥ 3 അക്ഷമാലാം സുധാകുംഭം ചിന്മയീം മുദ്രികാമപി । പുസ്തകം ച ഭുജൈർ ദിവൈൃർ ദധാനം പാർവതീപതിം ॥ 4 ശോതാംബരധരം ശോതം രത്നസിംഹാസനസ്ഥിതം । സർവാഭീഷ്ട പ്രദാതാരം വടമൂല നിവാസിനം 🛭 5 വാമാംഗേ സംസ്ഥിതാം ഗൗരീം ബാലാർകായുത സന്നിഭാം । ജപാകുസുമസാഹസ്ര സമാനശ്രിയ–മീശ്വരീം ॥ 6 സുവർണരത്നഖചിത മകുടേന വിരാജിതാം । ലലാടപട്ടസംരാജത് സംലഗ്നതിലകാഞ്ചിതാം ॥ 7 രാജീവായതനേത്രാന്താം നീലോത്പല ദളേക്ഷണാം । സംതപ്ത ഹേമരചിത താടങ്കാഭരണാന്നിതാം ॥ 8 താംബൂല ചർവണരത രക്ത ജിഹ്വാ വിരാജിതാം । പതാകാ ഭരണോപേതാം മുക്താ ഹാരോപ ശോഭിതാം **॥ 9**

സ്വർണ കംകണ സംയുക്കൈ ശ്ചതുർഭിർ ബാഹുഭിർ യുതാം । സുവർണ രത്നഖചിത കാഞ്ചീദാമ വിരാജിതാം 🛭 10 കദളീലലിതസ്തംഭ സംന്നിഭോരു യുഗാന്ഥിതാം । ശ്രിയാ വിരാജിതപദാം ഭക്തത്രാണ പരായണാം ॥ 11 അന്യോന്യാ-ശ്ലിഷ്ടഹൃദ് ബാഹു ഗൗരീശങ്കര-സംജ്ഞകം । സനാതനം പരംബ്രഹ്മ പരമാത്മാന-മവൃയം ॥ 12 (മംഗളായ തനം ദേവം യുവാന–മതിസുന്ദരം । ധ്യായേത് കലപതരോർമൂലേ സുഖാസീനം സഹോമയാ ॥ ആവാഹയാമി ജഗതാ–മീശ്വരം പരമേശ്വരം ॥) 13 (ആഗച്ചാടടഗച്ച് ഭഗവൻ ദേവേശ പരമേശാര । സച്ചിദാനന്ദ ഭൂതേശ പാർവതീ ച നമോസ്കുതേ) ആത്വാ വഹന്തു ഹരയസ്സചേതസഃ ശ്വേതൈരശൈ സ്സഹ കേതുമദ്ഭിഃ । വാതാജിതൈർ ബലവദ്ഭിർ മനോജവൈ രായാഹി ശീഘ്രം മമ ഹവ്യായ ശർവോം ।

12.2.1 For Eka kalasam / Ekadasa kalasam

ത്ര്യംബകം യജാമഹേ സുഗന്ധിം പുഷ്ടിവർധനം ദ ഉർവാരുകമിവ ബന്ധനാൻ മൃത്യോർ മുക്ഷീയ മാടമുതാത് ദ ഗൗരീ മിമായ സലിലാനി തക്ഷത്യേക്പദീ ദ്വിപദി സാ ചതുഷ്പദീ ദ അഷ്ടാപദീ നവ്പദീ ബഭൂവുഷീ സഹസ്രാക്ഷരാ പരമേ വ്യോമൻ ദ

(Eka Kalasa Avaahanam)

(ഓം ഹ്രീം നമ്ഃ ശിവായ । സദ്യോജാതം പ്രപദ്യാമി । ഓം ഭൂർഭൂവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ

ശ്രീ സോമാസ്കന്ദ പരമേശ്വരം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।)

(Ekadasa Kalasa Avaahanam)

നമസ്തേ രുദ്ര മന്യവ് ഉതോത ഇഷവേ നമ്ഃ । നമസ്തേ അസ്തു ധന്വനേ ബാഹുഭ്യാമുത തേ നമ്ഃ । ഓം ഹ്രീം നമ്ഃ ശിവായ । സദ്യോജാതം പ്രപദ്യാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ മഹാദേവം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി । ശിവം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി । രുദ്രം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി । നീലലോഹിതം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി । ഈശാനം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി । വിജയം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി । ദേവദേവം ധൃായാമി । ആവാഹയാമി । ഭവോദ്ഭവം ധൃായാമി । ആവാഹയാമി । ആദിതൃാത്മകരുദ്രം ധൃായാമി । ആവാഹയാമി । (Note: Some of the Aavahana mantras are from Slokas and not from Vedas. Scholars from various schools use different swarams. We have not provided the swarams consciously.)

12.2.2 മഹാഗണപതി ആവാഹനം

ഓം വ്യാന്താ ഗണപതി്് ഹവാമഹേ കവിം കവീനാമു്പ – മശ്രവസ്തമം വജ്യേഷ്ഠരാജം ബ്രഹ്മണാം ബ്രഹ്മണസ്പത് ആ നശ്ശൂണ്വന്നൂതിഭിം സീദ സാദനം പ്ര 2.3.14.3 തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ വക്രതുണ്ഡായ ധീമഹി വ തന്നോ ദന്തിം പ്രചോദയാത് വ ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം വഅസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ ശ്രീ മഹാഗണപതിം ധൃായാമി വആവാഹയാമി വ

12.2.3 സൂബ്രഹ്മണൃ ആവാഹനം

നിഘൂഷൈ രസമായുത്തെ പകാലൈർ. ഹരിത്വമാപ്നെ വ ഇന്ദ്രായാഹി സഹസ്രയുക് പഅഗ്നിർ വിഭ്രാഷ്ട്രിവസനഃ പ വായുശ്ശേത് സികദ്രുകഃ പസം വഥ്സരോ വിഷൂവർണ്ണൈ പ നിത്യാസ്തേ ടനുചരാസ്തവ പ സുബ്രഹ്മണ്യോ സുബ്രഹ്മണ്യോ സുബ്രഹ്മണ്യോ പ്രവാദ്യായ സുബ്രഹ്മണ്യോ സുബ്രഹ്മണ്യോ പ്രവാദയാത് പരാം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം പ അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ വള്ളി–ദേവസേനാ സമേത ശ്രീ സുബ്രഹ്മണൃസ്വാമിനം ധൃായാമി ആവാഹയാമി ।

12.2.4 <u>ദൂർഗാ ദേവീ ആവാഹനം</u>

ജാതവേദസേ സുനവാമ സോമ മരാതീയതോ നിദ്ഹാതി വേദ്ഃ വ സനഃ പർ.ഷളതി ദുർഗാണി വിശ്വാ നാവേവ സിന്ധും ദുരിതാതൃഗ്നിഃ । T.A.6.2.1

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ

ശ്രീ ദുർഗാദേവീം/അംബികാം ധൃായാമി । ആവാഹയാമി ।

12.2.5 മഹാവിഷ്കു ആവാഹനം

സഹസ്രശീർ.ഷാ പുരുഷഃ । സഹസ്രാക്ഷഃ സഹസ്രപാത് । സ ഭൂമിം ്വിശാതോ വൃതാ । അതൃതിഷ്ഠദ്യശാങ്ഗുലം । T.A.3.12.1 നാരായണായ വിദ്മഹേ വാസുദേവായ ധീമഹി । തന്നോ വിഷ്ക്രുഃ പ്രചോദയാത് ।

ം ടൂർഭുവസ്സുവരോം I അസ്തിൻ കുംഭേ/കലശേ

ശ്രീ ഭൂമി സമേത ശ്രീ മഹാവിഷ്ണും ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।

12.2.6 മഹാലക്ഷ്മീ ആവാഹനം

ഹിരണൃവർണാം ഹരിണീം സുവർണരജതസ്രജാം । ചന്ദ്രാം ഹിരഞ്ഞയീം ലക്ഷ്മീം ജാതവേദോ മ ആവഹ ।

(Rig Veda Khila Kaandam - 5.8.7.1)

മഹാദേവൈൃ ച വിദ്മഹേ വിഷ്ണുപത്തെൃ ച ധീമഹി । — — — " — " — " — തന്നോ ലക്ഷ്മീഃ പ്രചോദയാത് । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം ।

അസൂിൻ കുംഭേ/കലശേ മഹാലക്ഷ്മീം ധൃായാമി, ആവാഹയാമി ।

12.2.7 മഹാസരസ്വതീ ആവാഹനം

പ്രണോ ദേവീ സരസാതീ വാജേഭിർ വാജിനിവതി ദ ധീനാമ വിത്രുവതു ര TS 1.8.22.1 വാഗ്ദേവുെ ച വിദമഹേ വിരിഞ്ചി പത്തുെ ച ധീമഹി ദ തന്നോ വാണീ പ്രചോദയാത് ദ

അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ മഹാസരസ്വതീം ധൃായാമി । ആവാഹയാമി ।

12.2.8 സദ്ഗൂരു ആവാഹനം

ഗുരവേ സർവലോകാനാം ഭിഷജേ ഭവരോഗിണാം । നിധയേ സർവ വിദൃാനാം । ശ്രീ ദക്ഷിണാ മൂർത്തയേ നമഃ । ഗുരുർ ബ്രഹ്മ ഗുരുർ വിഷ്ണുഃ ഗുരുർ ദേവോ മഹേശ്വരഃ । ഗുരുസാക്ഷാത് പരം ബ്രഹ്മ തസ്മൈ ശ്രീ ഗുരവേ നമഃ ॥ ഓം ഗുരുദേവായ വിദ്മഹേ പരബ്രഹ്മണേ ധീമഹി । തന്നോ ഗുരുഃ പ്രചോദയാത് । ഒാം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ സദ്ഗുരും ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।

12.2.9 <u>അന്നപൂർണി ആവാഹനം</u>

ആവഹന്തീ വിതന്വാനാ । കൂർവാണാ ചീര്–മാത്മന്ഃ । വാസായ്സി മമ ഗാവശച് । അന്നപാനേ ച സർവദാ । തതോ മേ ശ്രിയ മാവഹ । ലോമശാം പശുഭിസ്സഹ സ്വാഹാ് । T.A.5.4.1 ഓം ഭഗവത്തുെ ച വിദ്മഹേ മാഹേശ്വര്യൈ ച ധീമഹി । തന്നോ അന്നപൂർണീ പ്രചോദയാത് । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്തിൻ കുംഭേ/കലശേ അന്നപൂർണീം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।

12.2.10 <u>ശാസ്കാ ആവാഹനം</u>

ധാതാ വിധാതാ പരമോത സന്ദ്യക് പ്രജാപതിഃ പരമേഷ്ഠീ വിരാജാ । സ്തോമാശ്ചന്ദായ്സി നിവിദോ മ ആഹുരേതസ്മെ രാഷ്ട്രമഭി സന്നമാമ । അഭ്യാവർത്തധ്വ–മുപമേത് സാകമയ്യ് ശാസ്താടധിപതിർ വോ അസ്തു । അസ്യ വിജ്ഞാന– മനു സ്യ രഭധ്യമിമം പശ്ചാദനു ജീവാഥ സർവേ । TS 5.7.4.4 ഓം ഭൂതനാഥായ വിദ്മഹേ ഭവപുത്രായ ധീമഹി । തന്നഃ ശാസ്താ പ്രചോദയാത് ।

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ പൂർണാ–പുഷ്കലാംബാ സമേത ശ്രീ ഹരിഹരപുത്ര സ്വാമിനം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।

12.2.11 <u>അനന്ത (സർപ്പ രാജാ) ആവാഹനം</u>

നമോ അസ്തു സർപേട്യോ യേ കേ ച പൃഥിവീമനു । യേ അന്തരിക്ഷേ യേ ദിവി തേഭ്യ സ്സർപേട്യോ നമഃ । യേ ടദോ രോചനേ ദിവോ യേ വാ സൂര്യസൃ രശ്മിഷു । യേഷാമപ്പു സദഃ കൃതം തേഭ്യ സ്സർപേട്യോ നമഃ । യാ ഇഷവോ യാതുധാനാനാം യവാ വനസ്പതീഴ് രനു । യേ വാടവടേഷു ശേരതേ തേഭ്യ സ്സർപേട്യോ നമഃ । TS 4.2.8.3

```
സർപരാജായ വിദ്മഹേ സഹസ്രഫണായ ധീമഹി ।
തന്നോ അനന്തഃ പ്രചോദയാത് ।
ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്തിൻ കുംഭേ/കലശേ സർപരാജം
ധൃായാമി । ആവാഹയാമി ।
12.2.12 <u>സൂരൃനാരായണ ആവാഹനം</u>
ആ സത്യേന രജസാ വർത്തമാനോ നിവേശയന്നമൂതം
മർത്തും ച । ഹിരണൃയേന സവിതാ രഥേനാടട ദേവോ യാതി
ഭുവനാ വിപശൃന്ന് । TS 3.4.11.2
ഭാസ്കരായ വിദ്മഹേ മഹദൃുതികരായ ധീമഹി ।
തന്നോ ആദിതൃ പ്രചോദയാത് ।
ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്തിൻ കുംഭേ/കലശേ
ഛായാ–സുവർച്ചലാംബാ സമേത ശ്രീ സൂരൃനാരായണം
ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।
        നക്ഷത്ര ദേവതാ ആവാഹനം
അഗ്നിർ നഃ പാതു കൃത്തികാഃ । നക്ഷത്രം ദേവമിന്ദ്രിയം ।
ഇദമാസാം ്വിചക്ഷണം । ഹവിരാസം ജുഹോതന ।
യസൃ ഭാന്തി രശ്ശയോ യസ്യ കേതവഃ ।
യസേൃമാ വിശ്വാ ഭുവനാനി സർവാ് ।
സ കൃത്തികാ–ഭിരഭി–സം്വസാനഃ ।
അഗ്നിർ നോ ദേവസ്സുവിതേ ദധാതു ॥
```

അപപാപ്മാനം ഭരണീർ ഭരന്തു) T.B.3.1.1.1 to T.B.3.1.2.11

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം ।

അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ നക്ഷത്രദേവതാം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।

12.2.14 നന്ദികേശ്വര ആവാഹനം

ശൂലാങ്കുശധരം ദേവം മഹാദേവസ്യ വല്ലഭം । ശിവകാര്യ വിധാനഞ്ചം ധ്യായേത് ത്വാം നന്ദികേശ്വരം । തത് പുരുഷായ വിധമഹേ ചക്രതുണ്ഡായ ധീമഹി । തന്നോ നന്ദിഃ പ്രചോദയാത് ।

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ നന്ദികേശ്വരം ധൃായാമി । ആവാഹയാമി ।

12.2.15 ആയൂർദേവതാ ആവാഹനം

ആയുഷ്ടേ വിശാതോ ദധദയമഗ്നിർ വരേണുഃ പുന്സ്ക് പ്രാണ ആ ടയതി (Or ആയാതി) പരായക്ഷ്മ്യ് സുവാമി തേ പത്രയുർദ്ധാ അഗ്നേ ഹവിഷോ ജുഷാണോ ഘൃതപ്രതീകോ ഘൃതയോനിരേധി പ ഘൃതം പീത്വാ മധു ചാരു ഗവൃം പിതേവ പുത്ര–മഭി രക്ഷതാദിമം ല

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ ആയുർദേവതാം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।

രാമായ രാമഭദ്രായ രാമചന്ദ്രായ വേദസേ । രഘുനാഥായ നാഥായ സീതായാഃ പതയേ നമഃ । ദാശരഥായ വിദ്മഹേ സീതാവല്ലഭായ ധീമഹി । തന്നോ രാമഃ പ്രചോദയാത് । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ സീതാ–ലക്ഷ്മണ–ഭരത–ശത്രുഘ്ന–ഹനുമത് സമേത ശ്രീ രാമചന്ദ്രസ്വാമിനം ധൃായാമി । ആവാഹയാമി ।

12.2.17 ശ്രീകൃഷ്ഷ ആവാഹനം

കൃഷ്ണായ വാസുദേവായ ദേവകീ നന്ദനായ ച । നന്ദഗോപ കുമാരായ ശ്രീ ഗോവിന്ദായ നമോ നമഃ । ഓം ദേവകീനന്ദനായ വിദ്മഹേ വാസുദേവായ ധീമഹി । തന്നോ കൃഷ്ണ പ്രചോദയാത് ।

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ രുകൃണീ–സതൃഭാമാ സമേത ശ്രീ കൃഷ്ണസ്വാമിനം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി ।

12.2.18 ആഞ്ചനേയ ആവാഹനം

ബുദ്ധിർബലം യശോധൈര്യം നിർഭയത്വം അരോഗതാ ദ അജാട്യം വാക്പടുത്വം ച ഹനുമത് സ്മരണാത് ഭവേത് ദ ശ്രീരാമദൂതായ വിദ്മഹേ വായുപുത്രായ ധീമഹി ദ തന്നോ ഹനുമന്തഃ പ്രചോദയാത് ദ

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ വേദശാസ്ത്ര പണ്ഡിത പരമ ഭാഗവതോത്തമ ശ്രീ ആഞ്ചനേയസ്വാമിനം ധൃായാമി । ആവാഹയാമി ।

12.3 <u>പ്രാണ പ്രതിഷ്ടാ</u>

ആദിതൃാത്മകരുദ്രസ്യ, ആവാഹിതാനാം സർവാസാം ദേവതാനാം പ്രാണപ്രതിഷ്ഠാ മഹാമന്ത്രസ്യ ബ്രഹ്മ–വിഷ്ണു–മഹേശ്വരാ ഋഷയഃ । ഋഗൃജുസ്സാമാഥർവാണി ഛന്ദാംസി । സകലജഗത് സൃഷ്ട്രി–സ്ഥിതി–സംഹാരകാരിണീ പ്രാണശക്തിഃ പരാദേവതാ ।

ആം ബീജം I ഹ്രീം ശക്തിഃ I ക്രോം കീലകം I ആദിത്യാത്മകരുദ്രസ്യ ആവാഹിതാനാം സർവാസാം ദേവതാനാം പ്രാണപ്രതിഷ്ഠാർത്ഥേ ജപേ വിനിയോഗഃ II ആം അംഗുഷ്ഠാഭ്യാം നമഃ I ഹ്രീം തർജനീഭ്യാം നമഃ I ക്രോം മദ്ധ്യമാഭ്യാം നമഃ I ആം അനാമികാഭ്യാം നമഃ I ഹ്രീം കനിഷ്ഠികാഭ്യാം നമഃ I ക്രോം കരതലകരപൃഷ്ഠാഭ്യാം നമഃ I ത്രം ഹൃദയായ നമഃ I ഹ്രീം ശിരസേ സ്വാഹാ I ക്രോം ശിഖായൈ വഷട് I ആം കവചായ ഹും I

<u>ംനവേധ</u>

ഭൂർഭുവസ്സുവരോമിതി ദിഗ്ബന്ധഃ ।

രക്താംഭോധിസ്ഥപോതോല്ലസദരുണ–സരോജാ ധിരൂഢാ– കരാണ്ല്ലൈ: । പാശം കോദണ്ഡമിക്ഷൂദ് ഭവ മളിഗുണമപൃംകുശം പഞ്ചബാണാൻ । ബിഭ്രാണാസൃക്കപാലാം ത്രിനയന ലസിതാ പീന– വക്ഷോരുഹാഢ്യാ । ദേവീ ബാലാർക്കവർണാ ഭവതു സുഖകരീ പ്രാണാശക്തിഃ പരാ നഃ ॥

ആം ഹ്രീം ക്രോം ക്രോം ഹ്രീം ആം । യരലവശഷസഹോം ।

ക്ഷം ഹംസഃ സോഹം സോഹംഹംസഃ ।

ആദിതൃാത്മകരുദ്രസൃ, ആവാഹിതാനാം സർവാസാം ദേവതാനാം പ്രാണാ ഇഹ പ്രാണാഃ I

ആം ഹ്രീം ക്രോം ക്രോം ഹ്രീം ആം । യ ര ല വ ശ ഷ സ ഹോം । ക്ഷം ഹംസഃ സോഹം സോഹം ഹംസഃ ।

ആദിതൃാത്മകരുദ്രസൃ ആവാഹിതാനാം സർവാസാം ദേവതാനാം ജീവ ഇഹ സ്ഥിതഃ I

ആം ഹ്രീം ക്രോം പ്രോം ഹ്രീം ആം । യ ര ല വ ശ ഷ സ ഹോം । ക്ഷം ഹംസഃ സോഹം സോഹം ഹംസഃ ।

ആദിതൃാത്മകരുദ്രസൃ, ആവാഹിതാനാം സർവാസാം ദേവതാനാം സർവേന്ദ്രിയാണി വാങ്മനശ്ചക്ഷു–ശ്രോത്ര–ജിഹ്വാ–ഘ്രാണ– പ്രാണാപാന–വൃാനോദാന–സമാനാ ഇഹൈവാഗതൃ ഇഹൈവാസ്മിൻ (ഏഷു കുംഭേഷു കലശേഷു, അസൃാം പ്രതിമായാം, അസ്മിൻ ലിങ്ഗേ, അസ്മിൻ സാലഗ്രാമേ ശിലാ ചക്രേ) സുഖം ചിരം തിഷ്കന്തു സ്വാഹാ ॥

അസുനീതേ പുന്രസ്മാസു ചക്ഷുഃ പുനഃ പ്രാണമിഹ നോ ധേഹി ഭോഗം । ജ്യോക് പശ്യേമ സൂര്യമുച്ചരന്ത–മനുമതേ മൂഡയാ നസ്സ്വസ്തി ॥ RV 10.59.6

ആവാഹിതോ ഭവ । സ്ഥാപിതോ ഭവ । സന്നിഹിതോ ഭവ । സന്നിരുദ്ധോ ഭവ । അവകുണ്ഠിതോ ഭവ । സുപ്രീതോ ഭവ । സുപ്രസന്നോ ഭവ । വരദോ ഭവ । പ്രസീദ പ്രസീദ ॥ സ്വാമിൻ സർവജഗന്നാഥ യാവത്പൂജാവസാനകം താവത് ത്വം പ്രീതിഭാവേന കുംഭേടസ്മിൻ സന്നിധിം കുരു । ആദിത്യാത്മക–രുദ്രസ്യ പ്രാണാൻ പ്രതിഷ്ഠാപയാമി ॥ (പഞ്ചോപചാര പൂജാ, ധൂപ, ദീപ, നൈവേദ്യം,താംബൂലം, നീരാജനം) ॥ യത്കിംചിന്നിവേദനം ॥)

12.4 ഉപചാരം

യാ ത് ഇഷും ശിവതമാ ശിവം ബഭൂവ് തേ ധനും । ശിവാ ശരവുാ യാ തവ തയാ നോ രുദ്ര മൂഡയ । ഓം ഹ്രീം നമം ശിവായ । സദ്യോ ജാതായ വൈ നമോ നമം । രത്നസിംഹാസനം സമർപയാമി ॥

യാ തേ രുദ്ര ശിവാ തനൂരഘോരാടപാപ കാശിനീ । തയാ നസ്തനുവാ ശന്തമയാ ഗിരിശന്താ-ഭിചാകശീഹി ॥ ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । ഭവേ ഭവേ നാതിഭവേ ഭവസ്വ മാം । പാദയോഃ പാദ്യം സമർപയാമി ॥

```
യാമിഷും ഗിരിശന്ത ഹസ്തേ ബിഭർ.ഷൃസ്തവേ വ
ശിവാങ്ഗിരിത്ര താങ്കുരു മാ ഹിഴ്സീഃ പുരുഷം ജഗത് ।
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । ഭവോദ്ഭവായ നമഃ ।
അർഘൃം സമർപയാമി ॥
ശിവേന വച്സാ ത്വാ ഗിരിശാച്ഛാ വദാമസി ।
യഥാ നസ്സർവമിജ്ജഗദയക്ഷ്മ ്യ സുമനാ അസത് ।
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ I വാമദേവായ നമഃ I
ആചമനീയം സമർപയാമി ॥
അദ്ധൃവോച–ദധിവക്താ പ്രഥമോ ദൈവേുാ ഭിഷക് ।
അഹീയ്യ്യ സർവാൻ ജംഭയൻ ഥ്സർവാശ്ച യാതുധാനൃഃ ॥
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । ജ്യേഷ്റായ നമഃ । മധുപർകം സമർപയാമി
അസൗ യസ്താമ്രോ അരുണ ഉത ബഭ്രുസ്സുമങ്ഗലം ।
യേ ചേമായ് രുദ്രാ അഭിതോ ദിക്ഷു ശ്രിതാഃ സഹസ്രശോ
ടവൈഷാ ്യ ഹേഡ ഈമഹേ ।
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । ശ്രേഷ്റായ നമഃ ।
സ്നാനം സമർപയാമി । സ്നാനാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി ।
അസൗ യോടവസർപതി നീലഗ്രീവോ വിലോഹിതഃ i
ഉതെന്നം ഗോപാ അദൃശന്നദൃശൻ ഉദഹാര്യഃ ।
ഉതൈനം ്വിശാ ഭൂതാനി സ ദൃഷ്ടോ മൃഡയാതി നഃ ।
```

```
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । രുദ്രായ നമഃ ।
വസ്ത്രോത്തരീയം സമർപയാമി ।
നമോ അസ്തു നീലഗ്രീവായ സഹസ്രാക്ഷായ മീഢുഷേँ ।
അഥോ യേ അസ്യ സത്വാനോടഹം തേഭ്യോടകരന്നമഃ I
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । കാലായ നമഃ ।
യജ്ഞോപവീതാഭരണാനി സമർപയാമി ।
പ്രമുംച ധന്വനഃ ത്വമുഭയോ–രാർത്നിയോർ ജൃാം ।
യാശ്ച തേ ഹസ്ത ഇഷവഃ പരാ താ ഭഗവോ വപ ।
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । കലവികരണായ നമഃ ।
ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । ഗന്ധോപരി അക്ഷതാൻ സമർപയാമി ।
അവതതൃ ധനുസ്താഴ് സഹസ്രാക്ഷ ശതേഷുധേ ।
നിശീരൃ ശലൃാനാം മുഖാ ശിവോ നഃ സുമനാ ഭവ ।
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । ബലവികരണായ നമഃ ।
പുഷ്പാണി സർപ്പയാമി ।
   1. ഓം ഭവായ ദേവായ നമഃ I
```

- 2. ഓം ശർവായ ദേവായ നമഃ ।
- 3. ഓം ഈശാനായ ദേവായ നമഃ ।
- 4. ഓം പശുപതയേ ദേവായ നമഃ ।
- 5. ഓം രുദ്രായ ദേവായ നമഃ I
- 6. ഓം ഉഗ്രായ ദേവായ നമഃ ।
- 7. ഓം ഭീമായ ദേവായ നമഃ ।
- 8. ഓം മഹതേ ദേവായ നമഃ ।

```
1. ഓം ഭവസൃ ദേവസൃ പത്തുെ നമഃ ।
```

- 2. ഓം ശർവസൃ ദേവസൃ പത്തുെ നമഃ ।
- 3. ഓം ഈശാനസൃ ദേവസൃ പത്ത്വൈ നമഃ ।
- 4. ഓം പശുപതേർ ദേവസൃ പത്തുെ നമഃ ।
- 5. ഓം രുദ്രസൃ ദേവസൃ പത്ത്വൈ നമഃ ।
- 6. ഓം ഉഗ്രസൃ ദേവസൃ പത്ത്വൈ നമഃ ।
- 7. ഓം ഭീമസൃ ദേവസൃ പത്തുെ നമഃ ।
- 8. ഓം മഹതോ ദേവസൃ പത്തുെ നമഃ നാനാവിദ പരിമള പത്ര–പുഷ്പാണി സമർപയാമി ॥

വിജൃം ധനും കപർദിനോ വിശ്ല്യോ ബാണ്വാ ഗ് ഉത । അനേശന്നസൃഷവ ആഭുരസൃ നിഷങ്ഗഥിം । ഓം ഹ്രീം നമം ശിവായ । ബലായ നമം । ധൂപമാഘ്രാപയാമി ।

യാ തേ ഹേതിർ മിഡുഷ്ടമ ഹസ്തേ ബഭൂവ തേ ധനുഃ । തയാടസൂാൻ വിശ്വ-തസ്ത്വ-മയക്ഷ്മയാ പരിബ്ഭുജ । ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । ബലപ്രമഥനായ നമഃ । ദീപം ദർശൃാമി ।

ധൂപ–ദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി ।

നൈവേദ്യം

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ । തഥ്സ്വിതുർവരേണ്യം ഭർഗോ ദേവസൃ ധീമഹി । ധിയോ യോ നഃ പ്രചോദയാത് । ദേവ സവിതഃ പ്രസുവഃ । സത്യം താർത്തേന പരിഷിഞ്ജാമി । ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭ്യോ ദേവതാഭ്യോ നമഃ । അമൃതം ഭവതു । അമൃതോപസ്തരണമസി ।

```
ഒാം (പാണായ സ്വാഹാ I ഓം അപാനായ സ്വാഹാ I
ഓം വൃാനായ സ്വാഹാ । ഓം ഉദാനായ സ്വാഹാ ।
ഒാം സമാനായ സ്വാഹാ । ഒാം ബ്രഹ്മണേ സ്വാഹാ ।
നമസ്തേ അസ്ത്വായുധായാനാതതായ ധൃഷ്ണവേ ।
ഉഭാഭ്യാമുത തേ നമോ ബാഹുഭ്യാം തവ ധനിനേ ।
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । സർവഭൂതദമനായ നമഃ ।
        നിവേദയാമി । മദ്ധ്യേ മദ്ധ്യേ അമൃതപാനീയം
സമർപയാമി । അമൃതാപിധാനമസി । ഹസ്തപ്രക്ഷാളനം
സമർപയാമി । പാദപ്രക്ഷാളനം സമർപയാമി । നൈവേദ്യാനന്തരം
അചമനീയം സമർപയാമി ।
പരി തേ ധനാനോ ഹേതിരസ്താൻ വൃണക്തു വിശാതഃ ।
അഥോ യ ഇഷുധിസ്തവാരേ അസ്തന്നിധേഹിതം ॥
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । മനോന്മനായ നമഃ ।
കർപൂരതാംബൂലം നിവേദയാമി ।
നമസ്തേ അസ്തു ഭഗവൻ വിശോശാരായ മഹാദേവായ ത്ര്യംബകായ
ത്രിപുരാന്തകായ ത്രികാഗ്നികാലായ കാലാഗ്നിരുദ്രായ
നീലകണ്ഠായ മൃത്യുഞ്ജയായ സർവേശ്വരായ സദാശിവായ
ശങ്കരായ ശ്രീമൻമഹാദേവായ നമഃ ॥
ങാം മഹാദേവാദിഭ്യോ രുദ്രേഭ്യോ നമഃ ।
സർവോപചാരാത്ഥേ കർപൂരനീരാജനദീപം പ്രദർശയാമി ।
നീരാജനാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി 1
```

ബൃഹഥ്സാമ ക്ഷത്രഭൃദ് വൃദ്ധവൃഷ്ണിയം ത്രിഷ്ടുഭൗജ്ശുഭിത-മുഗ്രവിരം (ഇന്ദ്രസ്തോമേന പഞ്ചദശേന മദ്ധ്യമിദം ്വാതേന സഗരേണ രക്ഷ (രക്ഷാം ധാരയാമി (ഓം ഹര, ഓം ഹര , ഓം ഹര) ആവാഹിതാഭൃദ സർവാഭ്യോ ദേവേഭ്യോ നമ്പു (സർവോപചാരാൻ സമർപയാമി (

12.5 ത്രിശതി

"പ്രണവേന വിഹീനോ യഃ മന്ത്രഃ പ്രാണഹീനകഃ സർവ മന്ത്രേഷു മന്ത്രാണം പ്രാണഃ പ്രണവ ഉചൃതേ" (According to the above sloka "OM" has to be added before each naama archana.)

- 1. ഓം നമോ ഹിരണൃബാഹവേ നമഃ **ദ**
- 2. ഓം സേനാനുേ നമഃ ।
- 3. ഓം ദിശാം ച പതയേ നമഃ ।
- 4. ഓം നമോ വൃക്ഷേഭേൃാ നമഃ ।
- 5. ഓം ഹരികേശേഭ്യോ നമഃ ।
- 6. ഓം പശൂനാം പതയേ നമഃ ।
- 7. ഓം നമഃ സസ്പിഞ്ഞുരായ നമഃ ।
- 8. ഓം ത്വിഷിമതേ നമഃ ।
- 9. ഓം പഥീനാം പതയേ നമഃ ।
- 10. ഓം നമോ ബഭ്ലുശായ നമഃ ।
- 11. ഓം വിവൃാധിനേ നമഃ ।
- 12. ഓം അന്നാനാം പതയേ നമഃ ।
- 13. ഓം നമോ ഹരികേശായ നമഃ ।
- 14. ഓം ഉപവീതിനേ നമഃ ।
- 15. ഓം പുഷ്ടാനാം പതയേ നമഃ ।
- 16. ഓം നമോ ഭവസു ഹേത്തുെ നമഃ ।
- 17. ഓം ജഗ്താം പതയേ നമഃ ।
- **18.** ഓം നമോ രുദ്രായ നമഃ I

19. ഓം ആതതാവിനേ നമഃ I **20.** ഓം ക്ഷേത്രാണാം പതയേ നമഃ I 21. ഓം നമഃ സൂതായ നമഃ I 22. ഓം അഹന്ത്യായ നമഃ । **23.** ഓം വനാനാം പതയേ നമഃ I **24.** ഓം നമോ രോഹിതായ നമഃ I **25.** ഓം സ്ഥപതയേ നമഃ I **26.** ഓം വൃക്ഷാണാം പതയേ നമഃ I 27. ഓം നമോ മന്ത്രിണേ നമഃ । **28.** ഓം വാണിജായ നമഃ । **29.** ഒാം കക്ഷാണാം പതയേ നമഃ I **30.** ഓം നമോ ഭുവന്തയേ നമഃ । 31. ഓം വാരിവസ്കൂതായ നമഃ । 32. ഓം ഓഷധീനാം പതയേ നമഃ । 33. ഓം നമ ഉച്ചൈർഘോഷായ നമഃ । 34. ഓം ആക്രന്ദയതേ നമഃ । 35. ഓം പത്തീനാം പതയേ നമഃ । 36. ഓം നമഃ കൃഥ്സ്നവീതായ നമഃ । 37. ഓം ധാവതേ നമഃ । **38.** ഓം സത്വനാം പതയേ നമഃ I

39. ഓം നമഃ സഹമാനായ നമഃ । **40.** ഓം നിവൃാധിനേ നമഃ । 41. ഓം ആവൃാധിനീനാം പതയേ നമഃ । 42. ഓം നമഃ കകുഭായ നമഃ । 43. ഓം നിഷങ്ഗിണേ നമഃ । 44. ഓം സ്തേനാനാം പതയേ നമഃ । **45.** ഓം നമോ നിഷങ്ഗിണേ നമഃ ו 46. ഓം ഇഷുധിമതേ നമഃ । **47.** ഓം തസ്തരാണാം പതയേ നമഃ I **48.** ഓം നമോ വഞ്ചതേ നമഃ I **49.** ഓം പരിവഞ്ചതേ നമഃ । 50. ഓം സ്കായൂനാം പതയേ നമഃ । 51. ഓം നമോ നിചേരവേ നമഃ । 52. ഓം പരിചരായ നമഃ । 53. ഓം അരണൃാനാം പതയേ നമഃ । 54. ഓം നമഃ സൃകാവിഭ്യോ നമഃ I **55.** ഓം ജിഘാ**്**സദ്ഭൃോ നമഃ ദ 56. ഓം മുഷ്ണതാം പതയേ നമഃ । 57. ഓം നമോടസിമദ്ഭ്യോ നമഃ I 58. ഓം നക്തംചരദ്ഭ്യോ നമഃ I 59. ഓം പ്രകൃന്താനാം പതയേ നമഃ । **60.** ഓം നമ ഉഷ്ണീഷിണേ നമഃ ।

```
61. ഓം ഗിരിചരായ നമഃ ।
62. ഓം കുലുഞ്ചാനാം പതയേ നമഃ ।
63. ഓം നമ ഇഷുമദ്ഭ്യോ നമഃ ।
64. ഓം ധന്വാവിഭൃശ്ച നമഃ ।
65. ഓം വോ നമഃ I
66. ഓം നമ ആതമ്പാനേട്യോ നമഃ I
67. ഓം പ്രതിദധാനേഭൃശ്ച നമഃ ।
68. ഓം വോ നമഃ I
69. ഓം നമ ആയച്ഛദ്ഭ്യോ നമഃ ।
70. ഓം വിസൃജദ്ഭൃശ്ച നമഃ  ।
71. ഓം വോ നമഃ I
72. ഓം നമോടസൃദ്ഭ്യോ നമഃ I
73. ഓം വിദ്ധ്യദ്ഭൃശ്ച നമഃ ।
74. ഓം വോ നമഃ I
75. ഓം നമ ആസീനേഭ്യോ നമഃ I
76. ഓം ശയാനേഭൃശ്ച നമഃ I
77. ഓം വോ നമഃ I
78. ഓം നമഃ സാപദ്ഭ്യോ നമഃ ।
79. ഓം ജാഗ്രദ്ഭൃശ്ച നമഃ ।
80. ഓം വോ നമഃ I
81. ഓം നമസ്തിഷ്ഠദ്ഭ്യോ നമഃ ।
82. ഓം ധാവദ്ഭൃശ്ച നമ<del>ഃ</del> ।
83. ഓം വോ നമഃ I
```

```
84. ഓം നമസ്സഭാഭ്യോ നമഃ I
85. ഓം സഭാപതിഭൃശ്ച നമഃ ।
86. ഓം വോ നമഃ I
87. ഓം നമോ അശോഭ്യോ നമഃ 1
88. ഓം അശാപതിഭൃശ്ച നമഃ ।
89. ഓം വോ നമഃ I
90. ഓം നമ ആവ്യാധിനിട്യോ നമഃ I
91. ഓം വിവിദ്ധൃന്തീഭൃശ്ച നമ<del>ഃ</del> ।
92. ഓം വോ നമഃ I
93. ഓം നമ ഉഗണാഭ്യോ നമഃ ।
94. ഓം തൃ ്രഹതീഭൃശ്ച നമഃ I
95. ഓം വോ നമഃ I
96. ഓം നമോ ഗൃഥ്സഭ്യോ നമഃ ।
97. ഓം ഗൃഥ്സപതിഭൃശ്ച നമഃ ।
98. ഓം വോ നമഃ I
99. ഓം നമോ വ്രാതേഭ്യോ നമഃ 1
100. ഓം വ്രാതപതിഭൃശ്ച നമഃ ।
    ഒാം വോ നമഃ I
    ഓം നമോ ഗണേട്യോ നമ<del>ഃ</del> I
103. ഓം ഗണപതിഭൃശ്ച നമ<del>ഃ</del> ।
    ഒാം വോ നമഃ I
105. ഓം നമോ വിരൂപേട്യോ നമഃ ।
```

```
ഓം വിശ്വരുപേഭൃശ്ച നമ<del>ഃ</del> ।
107.
     ഓം വോ നമഃ I
108.
     ഒാം നമോ മഹദ്ഭേഗ നമ<del>ഃ</del> I
     ഓം ക്ഷില്കേഭ്യത്പ് നമഃ 1
109.
110.
     ഓം വോ നമഃ I
     ഓം നമോ രഥിഭ്യോ നമ<del>ഃ</del> ।
112.
     ഓം അരഥേഭൃശ്ച നമഃ ।
113.
     ഓം വോ നമഃ I
     ഒാം നമോ രഥേട്ടോ നമ<del>ഃ</del> I
     ഓം രഥപതിഭൃശ്ച നമ<del>ഃ</del> ।
116.
     ഓം വോ നമഃ I
     ഓം നമസ്സേനാഭ്യോ നമഃ I
     ഓം സേനാനിഭൃശ്ച നമഃ ।
119.
     ഓം വോ നമഃ I
     ഓം നമഃ ക്ഷത്തൃഭേൃാ നമഃ I
     ഓം സംഗ്രഹീതൃഭൃശ്ച നമഃ ।
122.
     ഓം വോ നമഃ I
     ഓം നമസ്തക്ഷഭേൃ<u>ാ</u> നമഃ I
124.
     ഓം രഥകാരേഭൃശ്ച നമ<del>ഃ</del> ।
125.
     ഓം വോ നമഃ I
     ഓം നമഃ കുലാലേഭ്യോ നമഃ I
     ഓം കർമാരേഭൃശ്ച നമഃ I
```

128. ഓം വോ നമഃ I

```
ഓം നമഃ പുംജിഷ്ടേട്യോ നമഃ I
129.
     ഓം നിഷാദേഭൃശ്ച നമ<u>ഃ</u> ।
131.
     ഒാം വോ നമ<del>ഃ</del> ।
     ഓം നമ ഇഷുകൃദ്ഭ്യോ നമഃ ।
     ഓം ധമ്പകൃദ്ഭൃശ്ച നമഃ I
     ഓം വോ നമഃ I
     ഓം നമോ മൃഗയുഭേ്യോ നമഃ I
     ഓം ശ്വനിഭൃശ്ച നമഃ I
     ഒാം വോ നമ<del>ഃ</del> ।
     ഒാം നമഃ ശ്വഭേൃാ നമഃ I
     ഓം ശ്വപതിഭൃശ്ച നമ<del>ഃ</del> ।
139.
     ഒാം വോ നമഃ ॥
     ഒാം നമോ ഭവായ ച നമ<del>ഃ</del> ।
     ഓം രുദ്രായ ച നമഃ ।
     ഓം നമശ്ശർവായ ച നമഃ 1
     ഓം പശുപതയേ ച നമ<del>ഃ</del> ।
     ഓം നമോ നീലഗ്രീവായ ച നമ<del>ഃ</del> ।
     ഓം ശിതികണ്റായ ച നമഃ I
     ഓം നമഃ കപർദിനേ ച നമഃ ।
147.
     ഓം വ്യുപ്പകേശായ ച നമഃ ।
149.
     ഓം നമസ്സഹസ്രാക്ഷായ ച നമഃ ।
```

ഓം ശതധമ്പനേ ച നമഃ I

- 151. ഓം നമോ ഗിരിശായ ച നമഃ ।
- 152. ഓം ശിപിവിഷ്ടായ ച നമഃ ।
- 153. ഓം നമോ മീഡുഷ്ടമായ ച നമഃ ।
- 154. ഓം ഇഷുമതേ ച നമഃ ।
- 155. ഓം നമോ ഹ്രസ്വായ ച നമഃ ।
- 156. ഓം വാമനായ ച നമഃ ।
- 157. ഓം നമോ ബൃഹതേ ച നമഃ ।
- 158. ഓം വർ.ഷിയസേ ച നമഃ ।
- 159. ഓം നമോ വൃദ്ധായ ച നമഃ ।
- 160. ഓം സംവൃധാനേ ച നമഃ ।
- 161. ഓം നമോ അഗ്രിയായ ച നമഃ ।
- 162. ഓം പ്രഥമായ ച നമഃ । —.— — —.
- 163. ഓം നമ ആശവേ ച നമഃ ।
- 164. ഓം അജിരായ ച നമഃ I
- 165. ഓം നമഃ ശീഘ്രിയായ ച നമഃ ।
- 166. ഓം ശീഭ്യായ ച നമഃ ।
- 167. ഓം നമ ഊർമ്യായ ച നമഃ I
- 168. ഓം അവസാനൃായ ച നമഃ ।
- 169. ഓം നമഃ സ്രോതസൃായ ച നമഃ ।
- 170. ഓം ദ്വീപൃായ ച നമഃ ।

ഓം നമോ ജൃഷ്റായ ച നമഃ । **171.** ഓം കനിഷ്റായ ച നമഃ । ഓം നമഃ പൂർവജായ ച നമഃ । 173. 174. ഓം അപരജായ ച നമഃ I ഓം നമോ മദ്ധ്യമായ ച നമഃ । 176. ഓം അപഗൽഭായ ച നമഃ । ഓം നമോ ജഘനൃായ ച നമഃ । **178.** ഓം ബുധ്നിയായ ച നമഃ । ഓം നമഃ സോഭൃായ ച നമഃ I ഓം പ്രതിസര്യായ ച നമഃ । ഓം നമോ യാമൃായ ച നമ<mark>ഃ</mark> । 181. ഒാം ക്ഷേമൃായ ച നമഃ । ഓം നമ ഉർവരൃായ ച നമഃ । 184. ഓം ഖലൃായ ച നമഃ । ഓം നമഃ ശ്ലോക്യായ ച നമഃ । ഓം അവസാന്യായ ച നമഃ । 187. ഓം നമോ വനൃായ ച നമഃ । 188. ഓം കക്ഷ്യായ ച നമഃ । ഓം നമഃ ശ്രവായ ച നമഃ I 190. ഓം പ്രതിശ്രവായ ച നമഃ । 191. ഓം നമ ആശുഷേണായ ച നമഃ । ഓം ആശുരഥായ ച നമഃ । ഓം നമഃ ശുരായ ച നമഃ I

ഓം അവഭിന്ദതേ ച നമഃ । 194. ഓം നമോ വർമിണേ ച നമഃ । ഓം വരൂഥിനേ ച നമഃ । 196. ഓം നമോ ബില്മിനേ ച നമ<u>ഃ</u> । 197. 198. ഓം കവചിനേ ച നമഃ । 199. ഓം നമശ്ശ്രുതായ ച നമഃ । ഓം ശ്രുതസേനായ ച നമഃ । **200**. ഓം നമോ ദുന്ദുഭൃായ ച നമഃ । 202. ഓം ആഹനനൃായ ച നമഃ । ങാം നമോ ധൃഷ്ണവേ ച നമഃ । 203. 204. ഓം പ്രമൃശായ ച നമഃ I 205. ഓം നമോ ദൂതായ ച നമഃ I 206. ഓം പ്രഹിതായ ച നമഃ । ഓം നമോ നിഷങ്ഗിണേ ച നമഃ । 207. ഓം ഇഷുധിമതേ ച നമഃ । 208. ഓം നമസ്തീക്ഷ്ണേഷവേ ച നമഃ । 209. ഓം ആയുധിനേ ച നമഃ । 210. ഓം നമഃ സ്വായുധായ ച നമഃ I 212. ഓം സുധന്വനേ ച നമഃ । 213. ഓം നമഃ സ്രുത്യായ ച നമഃ I ഓം പഥൃായ ച നമഃ I

ഓം നമഃ കാടൃായ ച നമഃ I

ഓം നീപൃായ ച നമഃ । 216. ഓം നമഃ സൂദൃായ ച നമഃ I ഓം സരസൃായ ച നമഃ । ഓം നമോ നാദ്യായ ച നമഃ । ഓം വൈശന്തായ ച നമഃ । ഓം നമഃ കൂപ്യായ ച നമഃ । ഓം അവടുായ ച നമഃ I ഓം നമോ വർഷൃായ ച നമഃ । ഓം അവർഷ്യായ ച നമഃ । ഓം നമോ മേഘ്യായ ച നമഃ । ഓം വിദ്യുതൃായ ച നമഃ । ഓം നമ ഈധ്രിയായ ച നമഃ । ഓം ആതപൃായ ച നമഃ । ഓം നമോ വാതൃായ ച നമഃ । ഒാം രേഷ്ടിയായ ച നമഃ । ഓം നമോ വാസ്തവൃായ ച നമഃ । ഓം വാസ്തുപായ ച നമഃ I **ങാം നമഃ സോമായ ച നമഃ I** ഓം രുദ്രായ ച നമഃ । ങാം നമസ്താമ്രായ ച്ച നമഃ ।

ഓം അരുണായ ച നമഃ ।

ഒാം നമഃ ശങ്ഗായ ച നമഃ I

236.

- 242. ഓം ദൂരേവധായ ച നമഃ I
- 243. ഓം നമോ ഹന്ത്രേ ച നമഃ ।
- 244. ഓം ഹനിയസേ ച നമഃ ।
- 245. ഓം നമോ വൃക്ഷേഭ്യോ നമഃ ।
- 246. ഓം ഹരികേശേഭ്യോ നമ<mark>്ങ</mark> ദ
- 247. ഓം നമസ്താരായ നമഃ ।
- 248. ഓം നമശ്ശംഭവേ ച നമഃ I
- 249. ഓം മയോഭവേ ച നമഃ I
- 250. ഓം നമശ്ശംകരായ ച നമഃ ।
- 251. ഓം മയസ്കരായ ച നമഃ I
- 252. ഓം നമഃ ശിവായ ച നമഃ ।
- **253.** ഓം ശിവതരായ ച നമഃ I
- 254. ഓം നമസ്തീർത്ഥ്യായ ച നമഃ ।
- 255. ഓം കൂല്യായ ച നമഃ I
- 256. ഓം നമഃ പാര്യായ ച നമഃ ।
- 257. ഓം അവാര്യായ ച നമഃ ।
- 258. ഓം നമഃ പ്രതരണായ ച നമഃ ।
- 259. ഓം ഉത്തരണായ ച നമഃ ।
- 260. ഓം നമ ആതാരൃായ ച നമഃ ।

ഓം ആലാദ്യായ ച നമഃ I **261.** ഓം നമഃ ശഷ്പ്യായ ച നമഃ I ഓം ഫേനൃായ ച നമഃ । ഓം നമഃ സികതൃായ ച നമഃ । 265. ഓം പ്രവാഹൃായ ച നമഃ I ഓം നമ ഇരിണൃായ ച നമ്ദ । ഒാം പ്രപഥൃായ ച നമഃ I ഓം നമഃ കി∨്ശിലായ ച നമഃ । ഓം ക്ഷയണായ ച നമഃ । ഒാം നമഃ കപർദിനേ ച നമഃ I ഓം പുലസ്തയേ ച നമഃ । ഓം നമോ ഗോഷ്ഠ്യായ ച നമഃ I ഓം ഗൃഹൃായ ച നമഃ । ഓം നമസ്തല്പ്യായ ച നമഃ । ഓം ഗേഹൃായ ച നമഃ । 276. ഓം നമഃ കാടൃായ ച നമഃ I ഓം ഗഹിരേഷ്ഠായ ച നമഃ । ഓം നമോ ഹ്രദയ്യായ ച നമഃ I ഓം നിവേഷ്പ്യായ ച നമഃ । 279. ഓം നമഃ പാ∨്സവൃായ ച നമഃ । ഓം രജസൃായ ച നമഃ । ഓം നമഃ ശുഷ്ക്യായ ച നമഃ ।

- 286. ഓം നമ ഊർവുായ ച നമഃ ।
- 287. ഓം സൂർമൃായ ച നമഃ ।
- 288. ഓം നമഃ പർണൃായ ച നമഃ ا
- 289. ഓം പർണശദ്യായ ച നമഃ I
- 290. ഓം നമോടപഗുരമാണായ ച നമഃ I
- 291. ഓം അഭിഘത ച നമഃ ।
- 292. ഓം നമ ആക്ഖിദതേ ച നമഃ ।
- 293. ഓം പ്രക്ഖിദതേ ച നമഃ ।
- **294.** ഓം നമോ വോ നമഃ ।
- 295. ഓം കിരികേഭ്യോ നമഃ ।
- 296. ഓം ദേവാനാ ് ഹൃദയേഭ്യോ നമഃ ।
- 297. ഓം നമോ വിക്ഷീണകേഭ്യോ നമഃ ।
- 298. ഓം നമോ വിചിൻവത്കേഭ്യോ നമഃ ।
- 299. ഓം നമ ആനിർ.ഹതേട്യോ നമഃ ।
- 300. ഓം നമ ആമീവത്കേഭ്യോ നമ<mark>്ങ</mark> ദ

12.6 <u>പ്രദക്ഷിണം</u>

```
ദ്രാപേ അന്ധസസ്പതേ ദരിദ്രന്നീല്ലോഹിത ഭ
ഏഷാം പുരുഷാണാമേഷാം പശൂനാം മാ ഭേർ മാടരോ മോ
ഏ്ഷാം കിഞ്ചനാമമത് i 1
യാ തേ രുദ്ര ശിവാ തനൂശ്ശിവാ വിശ്വാഹഭേഷജീ ।
ശിവാ രുദ്രസ്യ ഭേഷജീ തയാ നോ മൃഡ ജീവസേ ।
                                              2
ഇമാ ് രുദ്രായ തവസേ കപർദിനേ ക്ഷയദ്വീരായ പ്ര ഭരാമഹേ
മതിം । യഥാ നഃ ശമസദ്–ദ്വിപദേ ചതുഷ്പദേ വിശ്വം പുഷ്ടം ഗ്രാമേ
അസ്തിന്നനാതുരം 1 3
മൃഡാ നോ രുദ്രോ തനോ മയ്സ്കൃധി ക്ഷയദ്വീരായ നമസാ
വിധേമ തേ । യച്ഛഞ്ച യോശ്ച മനുരായജേ പിതാ തദശ്യാമ
തവ് രുദ്ര പ്രണ<sup>ീ</sup>തൗ । 4
മാ നോ മഹാന്തമുത മാ നോ അർഭകം മാ ന ഉക്ഷന്തമുത മാ ന
ഉക്ഷിതം । മാ നോ വധീഃ പിതരം മോത മാതരം പ്രിയാ
മാനസ്തനുവോ രുദ്ര രീരിഷഃ । 5
മാ നസ്സോകേ തനയേ മാ ന ആയുഷി മാ നോ ഗോഷു
മാ നോ അശോഷു രീരിഷഃ । വീരാന്മാ നോ രുദ്ര ഭാമിതോ
വധീർ. ഹവിഷ്മന്തോ നമസാ വിധേമ തേ । 6
```

ആരാത്തേ ഗോഘ്ന ഉത പൂരുഷഘ്നേ ക്ഷയദ്വീരായ സുമ്ല–മസ്തേ തേ അസ്സു । രക്ഷാ ച നോ അധി ച ദേവ ബ്രൂഹൃധാ ച നഃ ശർമ യച്ച ദ്വിബർ.ഹാഃ । **7** സ്തുഹി ശ്രുതം ഗർത്തസദം യുവാനം മൃഗന്നഭീമ–മുപഹത്നു– മുഗ്രം 1 മൃഡാ ജരിത്രേ രുദ്ര സ്തവാനോ അന്യന്തേ അസ്മന്നി വപന്തു സേനാഃ । പരിണോ രുദ്രസ്യ ഹേതിർ വൃണക്തു പരി തോഷസ്യ ദുർമതിരഘായോഃ । അവ സ്ഥിരാ മഘവദ്ഭൃ–സ്തനുഷ്വ മീഡ്വസ്തോകായ തനയായ മൃഡയ । 9 മീഡുഷ്മ ശിവതമ ശിവോ നസ്സുമനാ ഭവ । പരമേ വൃക്ഷ ആയുധന്നിധായ കൃത്തിം വസാന ആ ചര പിനാകം ബിഭ്രദാ ഗഹി । 10 വികിരിദ വിലോഹിത നമസ്തേ അസ്തു ഭഗവഃ । യാസ്തേ സഹസ്ര് ഹേതയോടനൃ−മസ്തന്നി വപന്തു താഃ । 11 സഹസ്രാണി സഹസ്രധാ ബാഹുവോസ്തവ ഹേതയഃ । താസാമീശാനോ ഭഗവഃ പരാചീനാ മുഖാ കൃധി । 12

12.7 **Mary** 308 സഹസ്രാണി സഹസ്രശോ യേ രുദ്രാ അധി ഭൂമ്യാം ഭ തേഷാ 🗸 സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി ദ (രുദ്രേഭ്യോ നമഃ) അസ്മിൻ മഹതൃർണവേ ടന്തരിക്ഷേ ഭവാ അധി I തേഷാ 💛 സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി । 2 (രുദ്രേഭ്യോ നമഃ) നീല്ഗ്രീവാഃ ശിതികണ്റാഃ ശർവാ അധഃ ക്ഷമാചരാഃ । തേഷാ 💛 സഹസ്രയോജനേ ടവ ധമ്പാനി തന്മസി । 3 (രുദ്രേഭ്യോ നമഃ) നീലഗ്രീവാ ശ്ശിതികണ്ഠാ ദിവ 🔄 രുദ്രാ ഉപ്ശ്രിതാഃ ദ തേഷാ 💛 സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി । 4 (രുദ്രേഭ്യോ നമഃ) യേ വൃക്ഷേഷ്, സസ്പിഞ്ജ്രാ നീല്ഗ്രീവാ വിലോഹിതാഃ । തേഷാ 🗸 സഹസ്രയോജനേ ടവ ധമ്പാനി തന്മസി । 5 (രുദ്രേഭ്യോ നമഃ) യേ ഭൂതാനാ–മധിപതയോ വിശിഖാസം കപർദിനം ഭ തേഷാ 💛 സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി । 6 (രുദ്രേഭ്യോ നമഃ)

യേ അന്നേഷു വിവിദ്ധൃന്തി പാത്രേഷു പിബ്തോ ജനാൻ । തേഷാ 💛 സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി । 7 (രുദ്രേഭ്യോ നമഃ) യേ പഥാം പഥിരക്ഷയ ഐലബൂദാ യവ്യുധം । തേഷായ് സഹസ്രയോജനേ ടവ ധമ്പാനി തന്മസി ദ 8 (രുദ്രേഭ്യോ നമഃ) യേ തീർത്ഥാനി പ്രചരന്തി സൂകാവതോ നിഷങ്ഗിണ്ട് ല തേഷാഴ് സഹസ്രയോജനേ sവ ധമ്പാനി തന്മസി i 9 (രുദ്രേഭ്യോ നമഃ) യ ഏതാവനത്യ ഭൂയാ ഗ്സശ്ച ദിശോ രുദ്രാ വിതസ്ഥിരേ । തേഷായ് സഹസ്രയോജനേ ടവ ധമ്പാനി തന്മസി । 10 (രുദ്രേട്യോ നമഃ) നമോ രുദ്രേഭ്യോ യേ പ്ലഥിവൃാം ്യേഷാമന്നമിഷ്വ സ്തേഭ്യോ ദശ പ്രാചീർ ദശ ദക്ഷിണാ ദശ പ്രതീചീർ ദശോദിചീർ ദശോർധ്വാ–സ്കേഭ്യോ നമസ്തേ നോ മൃഡയന്തു തേ യം ദിഷ്ടോ യശ്ച് നോ ദോഷ്ടി തം ്വോ ജംഭേ ദധാമി ॥ 11 (രുദ്രേഭ്യോ നമഃ)

നമോ രുദ്രേഭ്യോ യോടന്തരിക്ഷേ യേഷാം ്വാത ഇഷ്വ–സ്തേഭ്യോ ദശ പ്രാചീർ ദശ ദക്ഷിണാ ദശ പ്രതീചീർ ദശോദിചീർ ദശോർധാ–സ്തേഭ്യോ നമസ്തേ നോ മൃഡയന്തു തേ യം ദ്വിഷ്മോ യശ്ച നോ ദേഷ്ട്രി തം ്വോ ജംഭേ ദധാമി ॥ 12 (രുദ്രേഭ്യോ നമു)

നമോ രുദ്രേട്യോ യേ ദിവി യേഷാം ്വർ.ഷമിഷ്വ–സ്തേട്യോ ദശ പ്രാചീർ ദശ ദക്ഷിണാ ദശ പ്രതീചീർ ദശോദിചീർ ദശോർധാ–സ്തേട്യോ നമസ്തേ നോ മൃഡയന്തു തേ യം ദ്വിഷ്മോ യശ്ച നോ ദേഷ്ട്രി തം ്വോ ജംഭേ ദധാമി ॥ 13 (രുദ്രേട്യോ നമഃ)

12.8 ചമക പ്രാർത്ഥന

<u>പ്രഥമോ ടനുവാകഃ</u>

അഗ്നാവിഷ്ണൂ സജോഷസേമാ വർദ്ധന്തു വാങ്ഗിരഃ । ദ്യുംനൈർ വാജേഭിരാഗതം ॥ വാജ്ശ്ച മേ, പ്രസവശ്ച മേ, പ്രയ്തിശ്ച മേ, പ്രസിതിശ്ച മേ, ധീതിശ്ച മേ, ക്രതുശ്ച മേ, സാരശ്ച മേ, ശ്ലോകശ്ച മേ, ശ്രാവശ്ച് മേ, ശ്രുതിശ്ച മേ, ജ്യോതിശ്ച മേ, സുവശ്ച മേ, പ്രാണശച് മേ, ടപാനശ്ച മേ, വ്യാനശ്ച മേ, ടസുശ്ച മേ, ചിത്തം ച്മ, ആധിതം ചമേ, വാക്ച് മേ, മനശച മേ, ചക്ഷുശ്ച മേ, ശ്രോത്രം ച മേ, ദക്ഷശ്ച മേ, ബലം ച മ, ഓജ്ശ്വമേ, സഹ്ശ്വമ, ആയുശ്വമേ, ജരാച്മ, ആതമാച്മേ, തനൂശച്മേ, ശർമ്ചമേ, വർമ്ചമേ, ടങ്ഗാനി ച മേ, ടസ്ഥാനി ച മേ, പരൂ ഗ്ഷി ച മേ, ശരീരാണി ച മേ ॥ 1 (36)

<u>ദ്വിതീയോ ടനുവാകഃ</u>

ജെയ്യെയ്യാ പ്രമു ആധിപത്യം ച മേ, മന്യുശച് മേ, ഭാമശച്ച മേ, ടമശച്ച മേ, ടമശച്ച മേ, ജമാ ച മേ, മഹിമാ ച മേ, വരിമാ ച മേ, വരിമാ ച മേ, വരിമാ ച മേ, വരി.ഷ്മാ ച മേ, ദ്രാഘുയാ ച മേ, വൃദ്ധം ച മേ, വൃദ്ധം ച മേ, വൃദ്ധം ച മേ, സത്യം ച മേ, ശ്രദ്ധാ ച മേ,

ജഗച്ച മേ, ധനം ച മേ, വശ്ശ്ച മേ, തിഷിശ്ച മേ, ക്രീഡാ ച മേ, മോദശ്ച മേ, ജാതം ച മേ, ജനിഷ്യമാണം ച മേ, സൂക്തം ച മേ, സുകൃതം ച മേ, വിത്തം ച മേ, വേദ്യം ച മേ, ഭൂതം ച മേ, ഭവിഷ്യച്ച മേ, സുഗം ച മേ, സുപഥം ച മ, ഇദ്ധം ച മ, ഋദ്ധിശ്ച മേ, ക്ലൂപ്ലം ച മേ, ക്ലൂപ്ലിശ്ച മേ, മതിശ്ച മേ, സുമതിശ്ച മേ ॥ 2 (38)

ശം ച്ളേ, മയശ്ചളേ, പ്രിയം ച്ളേ, ടനുകാമശ്ചളേ, കാമശ്ചളേ, സൗമനസശ്ചളേ, ഭദ്രം ച്ളേ, ശ്രേയശ്ചളേ, പരുതിശ്ചളേ, വസൃശ്ചളേ, ധർതാ ച്ളേ, കേഷമശ്ചളേ, ധൃതിശ്ചളേ, വിശ്വം ചളേ, മഹശ്ചളേ, സാറ്റിച്ചളെ, ജ്ഞാത്രം ചളേ, സൂതിം ചളേ, പരസൂശ്ചളേ, സീരം ചളേ, ലയശ്ചമ, ലയശ്ചമ, ജീവാതൃശ്ചളേ, ദീർഘായുതാം ചളേ, ടന്നമയച്ചളേ, അൂഗ്രം ചളേ, ടന്നമയ്യ്യളെ, സൂഗം ച്ളേ, ശയനം ചളേ, സുഗം ച്ളേ, ശയനം ചളേ, സൂഹം ച്ളേ, സുദിനം ചളേ, സുഹം ച്ളേ, സുദിനം ചളേ, സുഹം ച്ളേ, സുദിനം ചളേ, സുഹം ച്ളേ, സുദിനം ചളെ പ്രൂ (36)

<u>ചതൂർത്ഥോ ടനൂവാകഃ</u>

ഊർക് ച് മേ, സൂനൃതാ ച മേ, പയ്ശ്ച മേ, രസ്ശ്ച മേ, സ്വ്യാത മ് മേ, മധു ച മേ, സ്വ്യാത മേ, സ്വ്യാത മേ, സ്വ്യാത മേ, സ്വ്യാത മേ, സ്വ്യാത മേ, ന്യായ്യാ മേ, ഒഴുദ്ഭിദ്യം ച മേ, ഒഴുദ്ഭിദ്യം ച മേ, ഒഴുദ്ഭിദ്യം ച മേ, ഒഴുദ്ഭിദ്യം ച മേ, രയിശ്ച് മേ, രായ്ശ്ച മേ, പുഷ്ടം ച മേ, പുഷ്ടിശ്ച മേ, വിഭു ച മേ, പൂർണതരം ച മേ, ടക്ഷിതിശ്ച മേ, കൂയവാശ്ച മേ, പൂർണതരം ച മേ, ടക്ഷിതിശ്ച മേ, കൂയവാശ്ച മേ, മാഷാശ്ച മേ, തിലാശ്ച മേ, മുദ്ഗാശ്ച് മേ, ഖലാശ്ച മേ, ഗോധുമാശ്ച മേ, മസുരാശ്ച മേ, പ്രിയംഗവശ്ച മേ, ടണ്വശ്ച മേ, ശ്യാമാകാശ്ച മേ, നീവാരാശ്ച മേ ॥ 4 (38)

<u>പഞ്ചമോ ടനുവാകഃ</u>

അശ്മാ ച മേ, മൃത്തികാ ച മേ, ഗിരയ്ശ്ച മേ, പർവതാശ്ച മേ, സിക്താശ്ച മേ, വനസ്പതയശ്ച മേ, ഹിരണ്യം ച മേ, ടയ്ശ്ച മേ, സീസം ച മേ, ത്രപുശ്ച മേ, ശ്യാമം ച മേ, ലോഹം ച മേ, ടഗ്നിശ്ച മ, ആപശ്ച മേ, വീരുധശ്ച മ, ഓഷധയശ്ച മേ, കൃഷ്ടപ്പച്യം ച മേ, ടകൃഷ്ടപ്പച്യം ച മേ, ത്രാമ്പയയ്ച്ച മേ, ത്രാമ്യാശ്ച് മേ, പരവ ആരണ്യാശ്ച് യജ്ഞേന് കല്പന്താം, വീത്തം ച മേ, വിത്തിശ്ച മേ, ഭൂതിശ്ച മേ, പരിത്തിശ്ച മേ, ഭൂതിശ്ച മേ,

വസു ച മേ, വസതിശച് മേ, കർമ ച മേ, ശക്തിശച മേ, ടർഥശച മ, ഏമശച മ, ഇതിശച മേ, ഗതിശച മേ ॥ 5 (32) <u>ഷഷ്ടോ ടനൂവാകഃ</u> അഗ്നിശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, — — — — സോമശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, സരസാതീ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, ബൃഹസ്പതിശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, പൂഷാ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, മിത്രശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, വരുണശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, ധാതാ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, തിഷ്ടാ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, വിഷ്ണുശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ , ടശിനൗ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, മരുതശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, വിശോ ച മേ, ദേവാ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, പൃഥിവീ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, ടന്തരിക്ഷം ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ**,** ദൃൗശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, ദിശശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ**,** മൂർധാ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ, പ്രജാപതിശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ ॥ 6 (21) <u>സപ്തമോ ടനുവാകഃ</u> ടദാഭൃശ്ച മേ, ടധിപതിശ്ച മ, അംഗ്ശുശ്ച മേ, രശ്ശിശ്ചമേ, ഉപാഴ്ശുശ്ച മേ, ടന്തരൃാമശ്ച മ, ഐന്ദ്രവായവശ്ച മേ, മൈത്രാവരുണശ്ച മ, പ്രതിപ്രസ്ഥാനശ്ച മേ, ആശിനശ്ച മേ, മന്ഥീ ച മ, ശുക്രശ്ച മേ, വൈശാദേവശ്ച മേ, ആഗ്രയണശ്ച മേ, ധ്രുവശ്ച മേ, വൈശ്വാനരശ്ച മ,

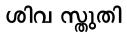
```
ടതിഗ്രാഹൃാശ്ച മ,
ഋതുഗ്രഹാശ്ച മേ,
                       വൈശാദേവശ്ച മേ,
ഐന്ദ്രാഗ്നശ്ച മേ,
മരുത്വതീയാശ്ച മേ,
                       മാഹേന്ദ്രശ്ച മ,
                       സാവിത്രശ്ച മേ,
ആദിതൃശ്ച മേ,
സാരസ്വതശ്ച മേ,
                       പൗഷ്ണശ്ച മേ,
പാത്നീവതശ്ച മേ,
                       ഹാരിയോജനശ്ച മേ ॥ 7 (28)
<u>അഷ്ടമോ ടനൂവാകഃ</u>
ഇഭ്യൂശ്ച മേ, ബർ.ഹിശ്ച മേ, വേദിശ്ച മേ, ധിഷ്ണിയാശ്ച മേ,
സ്രുചശ്ച മേ, ചമസാശ്ച മേ, ഗ്രാവാണശ്ച മേ, സ്വരവശ്ച മ,
ഉപരവാശ്ച മേ,
                       ടധിഷവണേ ച മേ,
                      വായവൃാനി ച മേ,
ദ്രോണകലശശ്ച മേ,
                      ആധവനീയശ്ച മ,
പൂതഭൃച്ച മ,
ആഗ്നീധ്രം ച മേ,
                       ഹവിർധാനം ച മേ,
ഗൃഹാശ്ച് മേ, സദശ്ച മേ, പുരോഡാശാശ്ച മേ, പചതാശ്ച് മേ,
ടവഭൃഥശ്ച മേ, സാഗാകാരശ്ച മേ ॥ 8 (22)
<u>നവമോ ടനുവാകഃ</u>
അഗ്നിശ്ച് മേ, ഘർമശ്ച് മേ ടർകശ്ച് മേ, സൂര്യശ്ച മേ,
പ്രാണശ്ച മേ, ടശാമേധശ്ച മേ, പൃഥിവീ ച മേ, ടദിതിശ്ച മേ,
യജ്ഞേന് കല്പന്താ–മൃക്ച് മേ, സാമ ച മേ,
സ്കോമശ്ച മേ, യജുശ്ച മേ,
```

ടഹോരാത്രയോർ വൃഷ്ട്യാ**,** ബൃഹദ്രഥന്തരേ ച മേ യജ്ഞേന കല്പേതാം ॥ 9 (21) <u>ദശമോ ടനുവാകഃ</u> ഗർഭായ മേ, വഥ്സാശ്ച് മേ, ത്രൃവിശ്ച മേ, ത്രൃവീച് മേ, ദിതൃവാട് ച മേ, ദിതൃൗഹീ ച മേ, പഞ്ചാവിശ്ച മേ, പഞ്ചാവീ ച മേ, ത്രിവഥ്സശ്ച് മേ, ത്രിവഥ്സാ ച് മേ, തുരൃവാട് ച മേ, തുരൃൗഹീ ച മേ, പഷ്റവാട് ച മേ, പഷ്യാഹീ ച മ, ഉക്ഷാ ച മേ, വശാ ച മ, ഋഷഭശച് മേ, വേഹച്ച് മേ, ടനഡാൻ ച മേ, ധേനുശ്ച മ, ആയുർ യജ്ഞേന കല്പതാം, പ്രാണോ യജ്ഞേന കല്പതാ-മപാനോ യജ്ഞേന് കല്പതാം , ്വ്യാനോ യജ്ഞേന് കല്പതാം ചക്ഷുർ യജ്ഞേന് കല്പതായ, ശ്രോത്രം യജ്ഞേന് കല്പതാം മനോ യജ്ഞേന് കല്പതാം , ്വാഗൃജ്ഞേന് കല്പതാ– മാത്മാ യജ്ഞേന് കല്പതാം , ്യജ്ഞോ യജ്ഞേന് കല്പതാം ॥ 10 (29) <u>ഏകാദശോ ടനുവാകഃ</u> ഏകാ ച മേ, തിസ്രശ്ച മേ, പഞ്ച ച മേ, സപ്ല ച മേ, നവ ച മ, ഏകാദശ ച മേ, ത്രയോദശ ച മേ, പഞ്ചദശ ച മേ, സപ്സദശ ച മേ, നവദശ ച മ, ഏക്വിയ്ശതിശ്ച മേ, ത്രയോവിയ്ശതിശ്ച മേ,

പഞ്ചവിയ്ശതിശ്ച മേ, സപ്തവിയ്ശതിശ്ച മേ, നവവി യ്ശതിശ്ച മ, ഏകത്രി യ്ശച്ച മേ, ത്രയ്സ്ത്രിയ്ശച്ച മേ, ചത്സ്രശ്ച മേ, ടഷ്ട ∞ ച മേ , ദ്വാദശ ച മേ , ഷോഡശ ച മേ, വി ്യതിശച മേ, ചതു॑ർവി৺്ശതിശ്ച മേ, ടഷ്ടാവിൎ് ശതിശ്ച മേ ദാത്രിയ്ശച്ച മേ, ഷട്ത്രിയ്ശച്ച മേ, ചത്വാരി ഗ്രച്ച് മേ , ചതുശചത്വാരി ഗ്രച്ച മേ ടഷ്ടാച്താരി∨്ശച്ച മേ, വാജ്ശ്ച പ്രസവശ്ചാ–പിജശ്ച ക്രതൃശ്ച സുവയാ മൂർധാ ച വൃശ്ഞിയ–ശ്ചാന്ത്യായന–ശ്ചാന്തൃശ്ച ഭൗവനശ്ച ഭുവനശ്ചാ–ധിപതിശ്ച । 11 (41) ഇഡാ ദേവഹൂർ മനുർ യജ്ഞനീർ ബൃഹസ്പതി– രുക്ഥാമദാനി ശ∨്സിഷദ്–വിശേവദേവാഃ സൂക്തവാചഃ പൃഥിവിമാതർ മാ മാ ഹി∨്സീർ മധു മനിഷേൃ മധു ജനിഷേൃ മധു വക്ഷ്യാമി മധു വദിഷ്യാമി മധുമതീം ദേവേഭ്യോ വാചമുദ്യാസ്് ശുശ്രൂഷേണ്യാം മനുഷ്യേഭൃസ്തം മാ ദേവാ അവന്തു ശോഭായൈ പിതരോ ടനുമദന്തു **॥** ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ **॥**

12.9 അഘോരേട്ടോ ടഥഘോരേട്ടോ

```
അഘോര്ഭേട്യാ ടഥഘോര്ഭേട്യാ ഘോരഘോര്തരേഭ്യഃ ।
സർവ്യോ സർവ്യൻവേട്യോ നമസ്തേ അസ്തു രുദ്രരൂപേട്യഃ ॥
തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ മഹാദ്ദേവായ ധീമഹി ।
തന്നോ രുദ്രഃ പ്രചോദയാത് ॥
ഈശാനഃ സർവ്വിദ്യാനാ–മീശ്വരഃ സർവ്ഭൂതാനാം
ബ്രഹ്മാധിപതിർ ബ്രഹ്മണോടധിപതിർ ബ്രഹ്മാ ശിവോ മേ അസ്തു
സദാശിവോം ॥
((നമോ ഹിരണ്യബാഹവേ ഹിരണ്യവർണായ ഹിരണ്യരൂപായ
ഹിരണ്യപതയേ ടംബികാപതയ ഉമാപതയേ
```



SECTION 3 – RUDRA JAPAM

12.10 ശ്രീരുദ്രസൃ ഋഷിച്ഛന്ദോ ദേവതാ ധ്യാനം

അസ്യ ശ്രീ രുദ്രാദ്ധ്യായ പ്രശ്ന മഹാമന്ത്രസ്യ അഘോര ഋഷിഃ, അനുഷ്ടുപ് ചന്ദഃ, സംകർഷണമൂർത്തി സ്വരൂപോ യോടസാവാദിത്യ സ ഏഷ മൃത്യുംജയരുദ്രോ ദേവതാ ।

നമഃ ശിവായേതി ബീജം, ശിവതരായേതി ശക്തിഃ, നമഃ സോമായേതി കീലകം **(മഹാദേവായേതി)** കീലകം, ശ്രീ സോമാസ്കന്ദപരമേസ്വര **(സാംബസദാശിവ)**

പ്രസാദ സിദ്ധ്യർത്ഥേ ജപേ വിനിയോഗഃ ।

<u>കരനൃാസഃ</u>

അഗ്നിഹോത്രാത്മനേ അംഗുഷ്ടാഭൃാം നമഃ

ദർശപുർണമാസാത്മനേ തർജ്ജനീഭ്യാം നമഃ

ചാതുർമാസ്യാത്മനേ മദ്ധ്യമാഭ്യാം നമഃ

നിരൂഢപശുബന്ധാത്മനേ അനാമികാഭ്യാം നമഃ

ജ്യോതിഷ്ടോമാത്മനേ കനിഷ്പികാഭ്യാം നമഃ

സർവക്രത്വാത്മനേ കരതലകരപൃഷ്പാഭൃാം നമഃ

<u>അംഗനൃാസഃ</u>

അഗ്നിഹോത്രാത്മനേ ഹൃദയായ നമഃ

ദർശപുർണമാസാത്മനേ ശിരസേ സ്വാഹാ

ചാതുർമാസൃാത്മനേ ശിഖായൈ വഷട്

നിരൂഢപശുബന്ധാത്തനേ കവചായ ഹും

ജ്യോതിഷ്ടോമാത്മനേ നേത്രത്രയായ വൗഷട്

സർവക്രത്വാത്മനേ അസ്ത്രായ ഫട്

ഭൂർഭുവസ്സുവരോം ഇതി ദിഗ്ബന്ധഃ

<u>ധൃാനം</u>

ആപാതാളനഭഃ സ്ഥലാന്തഭുവന ബ്രഹ്മാണ്ഡ–മാവിസ്പുരജ്– ജ്യോതിഃ സ്ഫാടികലിംഗമൗളിവിലസത് പൂർണ്ണേന്ദുവാന്താമൃത്തെഃ । അസ്തോകാപ്ലുതമേക–മീശമനിശം രുദ്രാനുവാകാൻ ജപൻ– ധ്യായേന്നീപ്പിതസിദ്ധയേ ടദ്രുവ (ദ്രുത) പദം വിപ്രോടഭിഷിഞ്ചേച്ഛിവം । 1

പീഠം യസ്യ ധരിത്രീ ജലധരകലശം ലിംഗമാകാശമൂർത്തിം നക്ഷത്രം പുഷ്പമാല്യം ഗ്രഹകണകുസുമം ചന്ദ്രവഹ്ന്യർക്കനേത്രം കുക്ഷിഃ സപ്തസമുദ്രം ഭുജഗിരിശിഖരം സപ്ത പാതാളപാദം വേദം വക്ത്രം ഷഡംഗം ദശദിശി വസനം ദിവ്യലിംഗം നമാമി ॥ 2 ബ്രഹ്മാണ്ഡവ്യാപ്തദേഹാ ഭസിതഹിമ രുചാ ഭാസമാനാ ഭുജംഗൈഃ കൺഠേ കാലാഃ കപർദാ—കലിതശശികലാ ശ്ചണ്ഡ കോദണ്ഡഹസ്താഃ ത്രൃക്ഷാ രുദ്രാക്ഷമാലാ പ്രണത ഭയഹരാഃ (പ്രകടിതവിഭവാഃ) ശാംഭവാ മൂർത്തിഭേദാഃ ।

12.11 <u>ഗണാനാം ത്വാ</u>

ഗണാനാം ത്വാ ഗണപ്തി ഗ് ഹവാമഹേ കവിം ക്വീനാ– മുപ്മശ്രവസ്തമം । ജേഷ്ഠരാജം ബ്രഹ്മണാം ബ്രഹ്മണസ്പത് ആ നഃ ശൃൺവന്നൂതിഭിഃ സീദ സാദനം । ശ്രീ മഹാ ഗണപതയേ നമഃ ।

രുദ്രാഃ ശ്രീരുദ്ര സൂക്ത പ്രകടിതവിഭവാഃ നഃ പ്രയച്ഛന്തു സൗഖ്യം ॥

ശം ച് മേ, മയ്ശ്ച മേ, പ്രിയം ച് മേ, ടനുകാമശ്ച് മേ, കാമശ്ച മേ, സൗമനസശ്ച് മേ, ഭദ്രം ച് മേ, ശ്രേയശ്ച മേ, വസൃശ്ച മേ, യശ്ശ്ച മേ, ഭഗ്ശ്ച മേ, ദ്രവിണം ച മേ, യന്താ ച് മേ, ധർതാ ച് മേ, ക്ഷേമശ്ച മേ, ധൃതിശ്ച മേ, വിശ്ചം ച മേ, മഹ്ശ്ച മേ, സം്വിച്ച് മേ, ജ്ഞാത്രം ച മേ, സൂശ്ച് മേ, പ്രസൂശ്ച് മേ, സീരം ച മേ, ലയശ്ച് മ ,

ളതം ച്മേ, ടമുതം ച മേ, ടയക്ഷ്മം ച മേ, ടനാമയച്ച മേ, ജീവാതുശ്ച മേ, ദീർഘായുത്വം ച മേ, ടനമിത്രം ച മേ, ടഭയം ച മേ,

സുഗം ച് മേ, ശയനം ച മേ, സൂഷാ ച മേ, സുദിനം ച മേ ॥ 3 (36)

ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ ।

12.13 ശ്രീരൂദ്ര ദശാക്ഷരീ മഹാമന്ത്രഃ

അസൃ ശ്രീരുദ്ര ദശാക്ഷരീ മഹാമന്ത്രസൃ, ബോധായന ഋഷിഃ, പങ്ക്തിഃ ഛന്ദഃ, സദാശിവ രുദ്രോ ദേവതാ ।

<u>ധൃാനം</u>

കൈലാസാചല സന്നിഭാ ത്രിനയനം പഞ്ചാസ്യമംബായുതം । നീലഗ്രീവമഹീശ–ഭൂഷണധരം വ്യാഘ്രത്വചാ പ്രാവൃതം । അക്ഷസ്രഗ്വര–കുണ്ഡികാഭയകരം ചാന്ദ്രീം കലാം ബിഭ്രതം । ഗംഗാഭോ വിലസജ്ജടം ദശഭുജം വന്ദേ മഹേശം പരം ॥

മൂലമന്ത്രഃ

"ഓം നമോ ഭഗവതേ രുദ്രായ"

It is customary to chant "Shree Rudram" after this Dyanam and Moola Mantram.

12.14 <u>O)(Bo</u>

<u>പ്രഥമോ ടനൂവാകഃ</u>

| CHILLIAND SCHOOL | |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|
| ങാം നമോ ഭഗവതേ രുദ്രായ ॥ | |
| ങാം നമസ്തേ രുദ്ര മനൃവ ഉതോ ത ഇഷവേ നമഃ । | |
| നമസ്തേ അസ്തു ധനിനേ ബാഹുഭ്യാമുത തേ നമഃ । | 1.1 |
| യാ ത ഇഷും ശിവതമാ ശിവം ബഭൂവ തേ ധനും । | |
| ശിവാ ശ്രവ്യാ യാ തവ തയാ നോ രുദ്ര മൃഡയ । | 1.2 |
| യാ തേ രുദ്ര ശിവാ തനൂരഘോരാ ടപാപകാശിനീ I | |
| തയാ നസ്തനുവാ ശന്തമയാ ഗിരിശന്താ–ഭി ചാകശീഹി । | 1.3 |
| യാമിഷും ഗിരിശന്ത് ഹസ്തേ ബിഭ്ടർഷൃസ്തവ । | |
| ശിവാങ്–ഗിരിത്ര താങ്കുരു മാ ഹിഴ്സീഃ പുരുഷം ജഗത് । | 1.4 |
| ശിവേന വചസാ ത്വാ ഗിരിശാച്ഛാ വദാമസി । | |
| യഥാ നസ്സർവമി–ജ്ജഗദയക്ഷ്മഗ് സുമനാ അസ്ത് । | 1.5 |
| അദ്ധൃവോച–ദധിവക്താ പ്രഥമോ ദൈവ്യോ ഭിഷക് i | |
| അഹീഴ്ശ്ച സർവാൻ ജംഭയ്ൻ ഥ്സർവാശ്ച യാതുധാനൃഃ | ۱ 1.6 |
| അസൗ യസ്താമോ അരുണ ഉത ബഭ്രുസ്സുമങ്ഗലഃ । | |
| യേ ചേമാ∀് രുദ്രാ അഭിതോ ദിക്ഷു ശ്രിതാഃ | |
| ു സഹസ്രശോ ടവൈഷായ് ഹേഡ ഈമഹേ । | 1.7 |

| അസൗ യോ ടവസർപ്തി നീല്ഗ്രീവോ വിലോഹിതഃ i | |
|------------------------------------------------------------------------------------|------|
| ഉതെനം ഗോപാ അദൃശൻ–നദൃശൻ–നുദഹാരൃഃ । | |
| ഉതൈനം ്വിശ്വാ ഭൂതാനി സ ദ്യഷ്ടോ മൃഡയാതി നഃ । | 1.8 |
| നമോ അസ്തു നീലഗ്രീവായ സഹസ്രാക്ഷായ മീഢുഷേ । | |
| അഥോ യേ അസ്യ സത്വാനോടഹം തേഭ്യോ ടകരന്നമഃ I | 1.9 |
| പ്രമുഞ്ച ധന്വന–സ്ത്വമുഭയോ–രാർത്നിയോർജ്യാം । | |
| യാശ്ച തേ ഹസ്ത ഇഷവഃ പരാ താ ഭഗവോ വപ । | 1.10 |
| അവതതൃ ധനുസ്താഴ് സഹസ്രാക്ഷ ശതേഷുധേ । | |
| ് _ ് ് _ നിശീരൃ ശുലൃാനാം മുഖാ ശിവോ നഃ സുമനാ ഭവ । | 1.11 |
| ് വിജൃം ധനുഃ കപർദിനോ വിശല്യോ ബാണവാ∀് ഉത । | |
| അനേശന്നസൃഷവ ആഭുരസൃ നിഷങ്ഗഥിഃ । | 1.12 |
| — — — — — — — — — — — — — — — — — — — | |
| — °്ട്– ്ത് – ° – °്ത് തയാടസൂാൻ. വിശാത സ്താമയക്ഷ്മയാ പരിബ്ഭുജ । | 1.13 |
| | |
| ഉഭാഭ്യാമുത തേ നമോ ബാഹുഭ്യാം തവ ധമ്പനേ I | 1.14 |
| | |
| പരി തേ ധന്വനോ ഹേതിരസ്മാൻ വൃണക്തു വിശ്വതഃ । ———————————————————————————————————— | 1.15 |
| | |

| നമസ്തേ അസ്തു ഭഗവൻ വിശോശ്വരായ മഹാദ്രേവായ | |
|---------------------------------------------------|------|
| ത്രൃംബകായ ത്രിപുരാന്തകായ ത്രികാഗ്നികാലായ | |
| കാലാഗ്നിരുദ്രായ നീലകണ്ഠായ മൃത്യുഞ്ജയായ സർവേശ്വരായ |) |
| സദാശിവായ ശങ്കരായ ശ്രീമൻ മഹാദേവായ നമഃ ॥ | |
| <u>ദ്വിതീയോ ടനൂവാകഃ</u> | |
| നമോ ഹിര്ണൃ ബാഹവേ സേനാനൃ ദിശാം ച പതയേ നമോ | 2.1 |
| നമോ വൃക്ഷേഭ്യോ ഹരികേശേഭ്യഃ പശൂനാം പതയേ നമോ | 2.2 |
| നമ സ്സസ്പിഞ്ഞ്രായ ത്വിഷീമതേ പഥീനാം പതയേ നമോ | 2.3 |
| നമോ ബഭ്ലുശായ വിവൃാധിനേ–ടന്നാം പതയേ നമോ | 2.4 |
| നമോ ഹരികേശായോ–പവീതിനേ പുഷ്ടാനാം പതയേ നമോ | 2.5 |
| നമോ ഭവസൃ ഹേതൈൃ ജഗതാം പതയേ നമോ | 2.6 |
| നമോ രുദ്രായാ–തതാവിനേ ക്ഷേത്രാണാം പതയേ നമോ | 2.7 |
| നമഃ സൂതായാ–ഹന്തൃായ വനാനാം പതയേ നമോ | 2.8 |
| നമോ രോഹിതായ സ്ഥപതയേ വൃക്ഷാണാം പതയേ നമോ | 2.9 |
| നമോ മന്ത്രിണേ വാണിജായ കക്ഷാണാം പതയേ നമോ | 2.10 |
| നമോ ഭുവന്തയേ വാരിവസ്കൂതാ–യൗഷധീനാം പതയേ നമോ | 2.11 |
| നമ ഉച്ചെർഘോഷായാക്രന്ദയതേ പത്തീനാം പതയേ നമോ | 2.12 |
| നമും കൃഥ്സ്നവീതായ ധാവതേ സതിനാം പതയേ നമും ॥ | 2.13 |
| <u>തൃതീയോ ടനൂവാക</u> ഃ | |
| നമസ്സഹമാനായ നിവ്യാധിന് ആവ്യാധിനിനാം പതയേ നമോ | 3.1 |
| നമഃ കകുഭായ നിഷങ്ഗിണേ സ്തേനാനാം പതയേ നമോ | 3.2 |
| നമോ നിഷങ്ഗിണ് ഇഷുധിമതേ തസ്തരാണാം പതയേ നമോ | 3.3 |
| | 3.4 |

| നമോ നിചേരവേ പരിചരായാ–രണ്യാനാം പതയേ നമോ | 3.5 |
|-----------------------------------------------------|------------|
| നമഃ സൂകാവിഭേൃാ ജിഘാ ്സദ്ഭൃോ മുഷ്ണതാം പതയേ നമോ | 3.6 |
| നമോ ടസിമദ്ഭ്യോ നക്തം ചരദ്ഭ്യഃ പ്രകൃന്താനാം പതയേ നമോ | 3.7 |
| നമ് ഉഷ്ണീഷിണേ ഗിരിചരായ കുലുഞ്ചാനാം പതയേ നമോ | 3.8 |
| നമ ഇഷുമദ്ഭ്യോ ധന്വാവിഭൃശ്ച വോ നമോ | 3.9 |
| നമ ആതന്വാനേഭൃഃ പ്രതിദധാനേഭൃശ്ച വോ നമോ | 3.10 |
| നമ ആയച്ഛദ്ഭ്യോ വിസൂജദ്ഭൃശ്ച വോ നമോ | 3.11 |
| നമോടസൃദ്ഭേൃ <u>ാ</u> വിദ്ധൃഭൃശ്ച വോ നമോ | 3.12 |
| നമ ആസിനേഭ്യഃ ശയാനേഭൃശ്ച വോ നമോ | 3.13 |
| നമസ്സ്വപദ്ഭ്യോ ജാഗ്രദ്ഭൃശ്ച വോ നമോ | 3.14 |
| നമസ്തിഷ്ഠദ്ഭ്യോ ധാവദ്ഭൃശ്ച വോ നമോ | 3.15 |
| നമസ്സഭാഭ്യ സ്സഭാപതിഭൃശ്ച വോ നമോ | 3.16 |
| നമോ അശ്വേഭ്യോ ടശിപതിഭൃശ്ച വോ നമഃ ॥ | 3.17 |
| <u>ചതൂർത്ഥോ ടനൂവാക</u> ഃ | |
| നമ ആവ്യാധിനിഭ്യോ വിവിദ്ധൃന്തീഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.1 |
| നമ ഉഗണാഭൃ–സ്തൃ്യ്ഹതീഭൃശ്ച വേ_ നമോ | 4.2 |
| നമോ ഗൂഥ്സേഭ്യോ ഗൂഥ്സപതിഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.3 |
| നമോ വ്രാതേഭ്യോ വ്രാതപതിഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.4 |
| നമോ ഗണേഭ്യോ ഗണപതിഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.5 |
| നമോ വിരൂപേഭ്യോ വിശാരൂപേഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.6 |
| നമോ മഹദ്ഭ്യഃ ക്ഷുല്ലകേഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.7 |
| നമോ രഥിഭേൃാ ടരഥേഭൃശച വോ നമോ | 4.8 |
| നമോ രഥേഭ്യോ രഥപതിഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.9 |

| | 30 H 2 H 30 H 30 H 30 H 30 H 30 H 30 H 3 |
|---------------------------------------|------------------------------------------|
| നമഃ സേനാഭൃ സ്സേനാനിഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.10 |
| നമഃ ക്ഷത്തൃഭൃ സ്സംഗ്രഹീതൃഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.11 |
| നമസ്തക്ഷഭ്യോ രഥകാരേഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.12 |
| നമഃ കുലാലേഭൃഃ കർമാരേഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.13 |
| | 4.14 |
| | 4.15 |
| നമോ മൃഗയുഭൃ ശ്ശാനിഭൃശ്ച വോ നമോ | 4.16 |
| — | 4.17 |
| <u>പഞ്ചമോ ടനൂവാക</u> ഃ | |
| നമോ ഭവായ ച രുദ്രായ ച | |
| നമ ശ്ശർവായ ച പശുപതയേ ച | |
| നമോ നീലഗ്രീവായ ച ശിതികണ്യായ ച | |
| നമഃ കപ്പർദിനേ ച വ്യൂപ്തകേശായ ച | |
| നമ സ്സഹസ്രാക്ഷായ ച ശതധനിനേ ച | |
| നമോ ഗിരിശായ ച ശിപിവിഷ്ടായ ച | |
| നമോ മീഢുഷ്ടമായ ചേഷുമതേ ച | |
| നമോ ഹ്രസ്വായ ച വാമനായ ച | |
| നമോ ബൃഹതേ ച വർ.ഷീയസേ ച | |
| നമോ വൃദ്ധായ ച സം്വൃധിനേ ച | |
| — | |
| ് — ് ് ് — — — നമ ആശവേ ചാജിരായ ച | |
| നമഃ ശീഘിയായ ച ശീഭൃായ ച | |
| നമ ആശവേ ചാജിരായ ച | |

നമ് ഊർമുായ ചാവസ്വനുായ ച നമഃ സ്രോതസുായ ച ദ്വീപുായ ച || 5

<u>ഷഷ്ടോ ടനൂവാകഃ</u>

നമോ ജൃഷ്ഠായ ച കനിഷ്ഠായ ച നമഃ പൂർവജായ ചാപരജായ ച നമോ മദ്ധ്യമായ ചാപഗല്ഭായ ച നമോ ജഘനൃായ ച ബുധ്നിയായ ച നമ സ്സോഭ്യായ ച പ്രതിസര്യായ ച നമോ യാമൃായ ച ക്ഷേമൃായ ച നമ ഉർവര്യായ ച ഖല്യായ ച നമ ശ്ലോകൃായ ചാവസാന്യായ ച നമോ വനൃായ ച കക്ഷ്യായ ച നമ ശ്ശേവായ ച പ്രതിശ്രവായ ച നമ ആശുഷേണായ ചാശുരഥായ ച നമഃ ശൂരായ ചാവഭിന്ദതേ ച നമോ വർമിണേ ച വരൂഥിനേ ച നമോ ബില്മിനേ ച കവചിനേ ച നമഃ ശ്രുതായ ച ശ്രുതസേനായ ച ॥ 6

സപ്തമോ ടനുവാകഃ

നമോ ദുന്ദുഭ്യായ ചാഹന്നന്യായ ച നമോ ധൃഷ്ണവേ ച പ്രമൃശായ ച നമോ ദൂതായ ച പ്രഹിതായ ച നമോ നിഷങ്ഗിണേ ചേഷുധിമതേ ച നമ് സ്തീക്ഷ്ണേഷവേ ചായുധിനേ ച നമ്: സ്വായുധായ ച സുധനിനേ ച നമ സ്റ്റ്രുത്യായ ച പഥ്യായ ച നമ്: കാട്യായ ച നീപ്യായ ച നമ്: സൂദ്യായ ച സരസ്യായ ച നമ്: സൂദ്യായ ച സരസ്യായ ച നമോ നാദ്യായ ച വൈശന്തായ ച നമോ നാദ്യായ ച വൈശന്തായ ച നമോ വർഷ്യായ ചാവർഷ്യായ ച നമോ മേഘ്യായ ച വിദ്യുത്യായ ച നമ ഈധ്രിയായ ചാതപ്യായ ച നമോ വാതൃായ ച രേഷ്മിയായ ച നമോ വാതൃായ ച രേഷ്മിയായ ച

<u>അഷ്ടമോ ടനുവാകഃ</u>

നമഃ സോമായ ച രുദ്രായ ച നമസ്താമ്രായ ചാരുണായ ച നമസ്താമ്രായ ചാരുണായ ച നമ ശ്രൂങ്ഗായ ച പശുപതയേ ച നമ ശ്രൂങ്ഗായ ച ഭീമായ ച പ രൂരേവധായ ച നമോ അഗ്രേവധായ ച ദൂരേവധായ ച നമോ ഹന്ത്രേ ച ഹനീയസേ ച നമോ വൃക്ഷേട്യോ ഹരികേശേട്യോ നമസ്താരായ പ നമ ശ്രൂടെവേ ച മയോഭവേ ച നമ ശ്രൂക്രമായ ച മയന്തൂരായ ച നമ ശ്രൂക്രമായ ച വയസ്തൂരായ ച

നമ് ശ്ശിവായ ച ശിവത്രായ ച നമസ്തീർഥ്യായ ച കൂല്യായ ച നമഃ പാര്യായ ചാവാര്യായ ച നമഃ പ്രതരണായ ചോത്തരണായ ച നമ ആതാര്യായ ചാലാദ്യായ ച നമ ശ്ശഷ്യായ ച ഫേന്യായ ച നമ് ശ്രഷ്യായ ച പ്രവാഹ്യായ ച ॥ 8

<u>നവമോ ടനൂവാകഃ</u>

നമ ഇരിണൃായ ച പ്രപഥൃായ ച നമഃ കി৺്ശിലായ ച ക്ഷയണായ ച നമഃ കപർദിനേ ച പുലസ്തയേ ച നമോ ഗോഷ്ഠ്യായ ച ഗൃഹ്യായ ച നമ സ്തല്പ്യായ ച ഗേഹൃായ ച നമഃ കാടൃായ ച ഗഹ്വരേഷ്ഠായ ച നമോ ഹ്രദയ്യായ ച നിവേഷ്പ്യായ ച നമഃ പാ∨്സവൃായ ച രജസൃായ ച നമഃ ശുഷ്ക്യായ ച ഹരിത്യായ ച നമോ ലോപൃായ ചോലപൃായ ച നമ ഊർവ്യായ ച സൂർമ്യായ ച നമഃ പർണ്യായ ച പർണശദ്യായ ച നമോടപഗുരമാണായ ചാഭിഘതേ ച നമ ആക്ഖിദതേ ച പ്രക്ഖിദതേ ച

| നമോ വഃ കിരികേഭ്യോ ദേവാനാ⊻് ഹൃദയേഭ്യോ | |
|---------------------------------------------------------------|-------------|
| നമോ വിക്ഷീണകേഭേൃാ നമോ വിചിൻവത്കേഭേൃാ | |
| നമ ആനിർ.ഹതേഭ്യോ നമ ആമീവത്കേഭ്യഃ ॥ 9 | |
| <u>ദശമോ ടനൂവാകഃ</u> | |
| ദ്രാപേ അന്ധസസ്പതേ ദരിദ്രന്നീലലോഹിത । | |
| ഏഷാം പുരുഷാണാമേഷാം പശൂനാം മാ ഭേർ മാടരോ | |
| മോ ഏഷാം കിഞ്ചനാമമത് । ———————————————————————————————————— | 10.1 |
| । യാ തേ രുദ്ര ശിവാ തനൂശ്ശിവാ വിശ്വാഹഭേഷജീ । | |
| ് ' ് ' " ശിവാ രുദ്രസൃ ഭേഷജീ തയാ നോ മൃഡ ജീവസേ । _ | 10.2 |
| ഇമാ ് രുദ്രായ തവസേ കപർദിനേ ക്ഷയദ്ധീരായ പ്രഭരാമപേ | Ω |
| മതിം । യഥാ നഃ ശമസ്ദ്–ദ്വിപദേ ചതുഷ്പദേ വിശാം പുഷ്ടം ഗ്ര | റാമേ |
| അസ്മി–ന്നനാതുരം । — | 10.3 |
| മൂഡാ നോ രുദ്രോ തനോ മയ്സ്കൂധി ക്ഷയദ്ധിരായ നമസാ | |
| വിധേമ തേ । യച്ഛഞ്ച യോശ്ച മനുരായജേ പിതാ തദശൃാമ | |
| തവ് രുദ്ര പ്രണിതൗ । | 10.4 |
| മാ നോ മഹാന്തമുത മാ നോ അർഭകം മാ ന ഉക്ഷന്തമുത മാ | |
| ന് ഉക്ഷിതം । മാ നോ വധീഃ പിതരം മോത മാതരം പ്രിയാ മാ |) |
| ന്സ്ത്നുവോ രുദ്ര രീരിഷഃ । | 10.5 |
| മാ നന്ത്രാകേ തന്യേ മാ ന ആയുഷി മാ നോ ഗോഷു | |
| മാ നോ അശേപഷു രീരിഷഃ । വീരാന്മാനോ രുദ്ര ഭാമിതോ | |
| വധീർ. ഹവിഷ്മന്തോ നമസാ വിധേമ തേ । | 10.6 |

| ആരാത്തേ ഗോഘ്ന ഉത പൂരുഷഘ്നേ ക്ഷയദ്വീരായ സുമ്ല– | |
|--------------------------------------------------|-------|
| മസ്മേ ത്രേ അസ്തു । രക്ഷാ ച നോ അധി ച ദേവ ബ്രൂഹൃധാ | |
| ച നഃ ശർമ യച്ഛദ്വിബർ.ഹാഃ । | 10.7 |
| സ്തുഹി ശ്രൂതം ഗർത്തസദം ്യുവാനം മൂഗന്ന ഭീമ–മുപഹര | നു– |
| മുഗ്രം । മൂഡാ ജരിത്രേ രുദ്ര സ്തവാനോ അനൃന്തേ | |
| അസ്മന്നിവ്പന്തു സേനാം i | 10.8 |
| പരി ണോ രുദ്രസൃ ഹേതിർ വൃണക്തു പരി ത്വേഷസൃ | |
| ദുർമതിര്ഘായോഃ । അവ സ്ഥിരാ മഘവദ്ഭൃ–സ്തനുഷ്വ | |
| മീഢിസ്തോകായ തനയായ മൃഡയ । | 10.9 |
| മീഢുഷ്ട്രമ ശിവതമ ശിവോ ന് സ്സുമനാ ഭവ । | |
| പരമേ വൃക്ഷ ആയുധന്നിധായ കൃത്തിം വസാന ആ ചര | |
| പിനാകം ബിഭ്രദാ ഗഹി । 1 | 0.10 |
| വികിരിദ്ര വിലോഹിത്ര നമസ്തേ അസ്തു ഭഗവഃ । | |
| യാസ്തേ സ്ഥഹസ്ര⊎് ഫേതയോടനൃ–മസൂന്നിവ്പന്തു താഃ । | 10.11 |
| സഹസ്രാണി സഹസ്രധാ ബാഹുവോസ്തവ ഹേതയഃ । | |
| താസാമീശാനോ ഭഗവഃ പരാചീനാ മുഖാ കൃധി । | 10.12 |
| | |
| സ്ഹസ്രാണി സഹസ്രശോ യേ രുദ്രാ അധി ഭൂമ്യാം । | |
| തേഷായ് സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി । | 11.1 |

തമുഷ്ടുഹി യഃ സ്ഥിഷുഃ സുധന്വാ യോ വിശ്വസ്യ ക്ഷയതി ഭേഷജസൃ । യക്ഷ്വാമഹേ സൗമനസായ രുദ്രം നമോഭിർ– ദേവമസുരം ദുവസ്യ 1 3 അയം മേ ഹസ്തോ ഭഗവാനയം മേ ഭഗവത്തരഃ I അയം മേ വിശ്വ–ഭേഷജോയ v് ശിവാഭിമർശനഃ i 4 യേ തേ സഹസ്രമയുതം പാശാ മൃത്യോ മർത്യായ ഹന്തവേ । താൻ. യജ്ഞസൃ മായയാ സർവാനവ യജാമഹേ 1 5 മൃതൃവേ സ്വാഹാ മൃതൃവേ സ്വാഹാ । 6 ഓം നമോ ഭഗവതേ രുദ്രായ വിഷ്ണവേ മൃത്യുർ മേ പാഹി ॥ പ്രാണാനാം ഗ്രന്ഥിരസി രുദ്രോ മാ വിശാന്തകഃ । തേനാന്നേനാപുായസ്വ 🏾 7 നമോ രുദ്രായ വിഷ്ണവേ മൃത്യുർമേ പാഹി ॥ ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ **॥**

13 Details of "Dravya sampradaayam" in Rudraikaadasini

പ്രഥമം **ഗന്ധതൈലം** ച **പഞ്ചാമൃതം** തൃതീയം ച പഞ്ചമം **പയസാ** സ്റ്റാനം സപ്തമം **മധുനാ** സ്റ്റാനം നവമം **നിംബതോയം** ച ഏകാദശം **ഗന്ധതോയം** ച ദ്വിതീയം **പഞ്ചഗവൃകം** ചതുർത്ഥം **ഘൃതമേവ** ച **ദധ്നാ** സ്നാനം തു ഷഷ്പകം അഷ്ടമം **ചേഷുദണ്ഡജം** ദശമം **നാളികേരജം** അഥ കുംഭാഭിഷേചനം

<u>ദ്രവൃ സംപ്രദായം (Purusha sookta abhishekam)</u>

തോയം തു ശാന്തിദം പ്രോക്തം **പഞ്ചഗവൃം** പവിത്രം ച **ഘൃതം** മോക്ഷപ്രദം വിദ്യാത് **ദധി** സംപത്പ്രദം ചൈവ **ഇക്ഷുസാരം** ബലാരോഗൃം നാളികേരോദകം ചൈവ **രജനീ** രാജവശൃം ച **ആമലകം** പിത്തശമനം **ദ്രാക്ഷാരൂക്ഷ**ഹരാ നിതൃം **ഗന്ധോദകൈശ്ച** സംസ്കാപൃ

ദാഡിമീ = മാതളം പഴം)

ഗന്ധതൈലം സുഖപ്രദം ജയം **പഞ്ചാമൃതം** തഥാ **ക്ഷീര**മായുഷൃവർദ്ധനം മധു മാധവതോഷദം **ലികുചം** ജ്ഞാനവർദ്ധനം സാലോകൃാനന്ദദായകം **പിഷ്ടം** തു ഋണമോചനം **ക്ഷൗദ്രം** വിത്തവിവർദ്ധനം **ദാഡിമീ** രാജൃദായികാ ജ്ഞാനവാൻ ഭക്തിമാൻ ഭവേത് ഇഹലോകേ സുഖംഭുക്താ അന്തേ വൈകുണ്ട്ഠമാപ്പുയാത്. (രജനീ = ചന്ദന കളഭം/ പിഷ്ടം = മാപ്പൊടി / ആമലകം =നെല്ലിക്ക/ ക്ഷൗദ്രം = ചെമ്പകപ്പൂരസം /ദ്രാക്ഷ രസം = Grape Juice /

14 ഏകാദശ ജപം

14.1 പ്രഥമ വാര അഭിഷേകം - ഗന്ധതൈലം

14.1.1 <u>ചമക അനൂവാക</u>ഃ

ഓം । അഗ്നാവിഷ്ണൂ സജോഷസേമാ വർദ്ധന്തു വാങ്ഗിരഃ । ദ്യുംനൈർ വാജേഭിരാ ഗതം ॥

പരൂ ്ഷി ച മേ, ശരിരാണി ച മേ ॥ 1 (36)

ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ **യ**

14.1.2 <u>ഉപചാര പൂജ</u>

അമൃതാഭിഷേകോടസ്തു ।

ആവാഹിതാഭുഃ സർവാഭേുാ ദേവതാഭേുാ നമഃ । ദിവു ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ബലായ നമഃ । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ബല്പ്രമഥനായ് നമ്ഃ । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപ–ദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ ––––––. (നൈവേദ്യ മന്ത്രം) । സർവഭൂതദമനായ് നമഃ । കദളീഫലം നിവേദയാമി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । മനോന്മനായ നമഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി ।

14.1.3 <u>ഉപചാര മന്ത്രാ</u>ഃ

- 1. പുരുഷസൃ വിദ്മ സഹസ്രാക്ഷസൃ മഹാദേവസൃ ധീമഹി । തന്നോ രുദ്രഃ പ്രചോദയാത് । 1.1 (T.A.6.1.5)
- 2. യോ ദേവാനാം പ്രഥമം പുരസ്താദ് വിശ്വാ ധിയോ രുദ്രോ മഹർ.ഷിഃ । ഹിരണൃഗർഭം പശൃത ജായമാനൗ് സനോ ദേവശ്ശുഭയാ സൂൃത്യാ സംയുനക്തു । 1.2 (T.A.6.12.3)
- 3. ബ്രാഹ്മണ ഏക്ഹോതാ । സ യജ്ഞഃ । സ മേ ദദാതു പ്രജാം പശൂൻ പുഷ്ടിം യശഃ । യജ്ഞശ്ച മേ ഭൂയാത് । 1.3 (T.A.3.7.1)
- 4. പ്രഭ്രാജമാനാനായ് രുദ്രാണായ സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി പ്രഭ്രാജമാനീനായ രുദ്രാണീനായ സ്ഥാനേ — പ സ്വതേജസാ ഭാനി പ്ര (TA 1.14.4)
- 5. ഏഷ വൈ വിഭുർ നാമ യജ്ഞഃ । സർവ്യ് ഹ വൈ തത്ര വിഭു ഭവതി । യേത്രൈതേന് യജ്ഞേന യജ്നേ । 1.5 (T.B.3.9.19.1)

- 6. പ്രാണാപാന–വൃാനോദാന–സമാനാ മേ ശുദ്ധൃന്താം ജൃാതി–രഹം ്വിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ് ് സ്വാഹാ । 1.6 т.а.6.65.1
- 7. അഗ്നിർ മേ വാചി ശ്രിതഃ । വാഗ്ഘൃദയേ । ഹൃദയം മയി । - " – " – " – " (T.B.3.10.8.4)
- 8. വിഭൂര്സി പ്രവാഹ്ണോ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹി∨്സീഃ । 1.8 (T.S.1.3.3.1)
- 9. സതൃം പരം പരഴ് സതൃഴ് സതൃത്വന നയുവർഗാ ല്ലോകാച്ചുവന്തേ കളാചന സതാഴ് ഹി സതൃം തസ്മാഥ് സത്യേ രമന്തേ പ്ര. (T.A.6.78.1)
- 10. ആജ്യേന ജുഹോതി । അഗ്നേർവ ാ ഏതദ്രൂപം । യദാജ്യം । യദാജ്യേന ജുഹോതി । അഗ്നിമേവ തത്പ്രീണാതി । 1.10 т.в.з.в.14.2
 - സർവോപചാരാർത്ഥേ കർപൂര നീരാജനം പ്രദർശയാമി । രക്ഷാം ധാരയാമി । ഓം ഹര । ഓം ഹര । ഓം ഹര । (നമശ്ശംഭവേ ച മയോഭവേ ച നമശ്ശങ്കരായ ച മയസ്കരായ ച നമശ്ശിവായ ച ശിവതരായ ച) । സമസ്തോപചാരാൻ സമർപയാമി ।

14.1.4 <u>ആശീർവാദം</u>

അനേന പ്രഥമവാര പ്രയുക്ത ശ്രീ രുദ്ര മഹാമന്ത്ര ജപ സഹിത ഗന്ധതൈലാഭിഷേകേന ച ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ ശ്രീ മഹാദേവഃ സുപ്രീത സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ , അസ്യ യജമാനസ്യ സകുടുംബസ്യ, അത്ര ആഗതാനാം സർവേഷാം മഹാജനാനാം, നിഖില ഭൂമണ്ഡല നിവാസിനാം സമസ്ത ദുരിദോപശമനദ്വാരാ ആയുരാരോഗ്യ പുത്ര പൗത്ര ധന ധ്യാന്യ തേജോ ലക്ഷ്മ്യാദി സകല സാമ്രാജ്യസിദ്ധി പ്രദഃ, ശാന്തി പ്രദഃ , പുരുഷാർത്ഥ ചതുഷ്ടയ സിദ്ധി പ്രദഃ , സമസ്ത കല്യാണ പരമ്പരാവാപ്തി പ്രദഃ, ലോക ക്ഷേമാദിവൃദ്ധി പ്രദശ്ച ഭൂയാദിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോ—ടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥

(തഥാസ്തു – ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം)

14.2 ദ്വിതീയവാര അഭിഷേകം – പഞ്ചഗവൃം

14.2.1 <u>ദ്വിതീയ അനൂവാക</u>ഃ

ജെുഷ്യം ച മ, ആധിപതും ച മേ, മന്യുശ്ച മേ, ഭാമശ്ച മേ, ടമ്ശ്ച മേ, ടാമശ്ച മേ, ടമ്ശ്ച മേ, ടാമശ്ച മേ, ജമാ ച മേ, മഹിമാ ച മേ, വരിമാ ച മേ, വരിമാ ച മേ, വരിഷ്ടാ ച മേ, ശ്രദ്ധാ ച മേ, വൃദ്ധം ച മേ, വൃദ്ധിശ്ച മേ, സതൃം ച മേ, ശ്രദ്ധാ ച മേ, ത്രിഷിശ്ച മേ, ത്രിഷാ ച മേ, മഹിയാ ച മേ, മഹിയാ ച മേ, മരിയാ ച മേ, ജനിഷ്യമാണം ച മേ, സൂക്തം ച മേ, വിത്തം ച മേ, വേദ്യം ച മേ, മൂതം ച മേ, വിത്തം ച മേ, വേദ്യം ച മേ, ഭൂതം ച മേ, ഭവിഷ്യച്ച മേ, സുഗം ച മേ, സുപഥം ച മ, ജ്വയം ച മ, ജൂതം ച മം, ജൂത്രം ച മം, ജൂത്രം ച മം, രൂട്ടൂത്രം ച മം, ജൂത്രം ച മം, രൂട്ടൂത്രം മം, രൂട്ടൂത്രം ച മം, രൂട്ടൂത്രം ച മം, രൂട്ടൂത്രം മം, രൂട്ടുത്രം മം, രൂട്ടൂത്രം മം, രൂട്ടുത്രം മം, രൂട്ടൂത്രം മം, രൂട്ടൂത്രം, രൂം, രൂട്ടൂത്രം, രൂട്ടൂത്രം, രൂട്ടൂത്രം, രൂട്ടൂത്രം, രൂട്ടൂത്രം, രൂട്ടൂത്രം, രൂട്ടൂത്രം, രൂട്ടൂത്രം, രൂട്ടൂത

14.2.2 ഉപചാര പുജ

അമൃതാഭിഷേകോടസ്തു । ആവാഹിതാഭ്യഃ സർവാഭ്യോ ദേവതാഭ്യോ നമഃ । ദിവൃ ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ബലായ നമഃ । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ബലപ്രമഥനായ നമഃ । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപ–ദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ ——————. (നൈവേദ്യ മന്ത്രം) । സർവഭൂതദമനായ നമഃ । കദളീഫലം നിവേദയാമി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി ।

14.2.3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ

- 1. തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ മഹാദേവായ ധീമഹി । തന്നോ രുദ്രഃ പ്രചോദയാത് । 2.1
- 2. യസ്മാത്പരം നാപ്രമസ്തി കിഞ്ചിദ് യസ്മാ–ന്നാണിയോ ന ജ്യായോടസ്തി കശ്ചിത് । വൃക്ഷ ഇവ സ്ത്ലബ്ലോ ദിവി തിഷ്ഠ–തൃകസ്തേനേദം പൂർണം പുരുഷേണ് സർവം । 2.2
- 3. അഗ്നിർ ദിഹോതാ । സ ഭർത്താ । സ മേ ദദാതു പ്രജാം പശൂൻ പുഷ്ടിം യശം । ഭർത്താ ച മേ ഭൂയാത് । 2.3
- 4. വൃവദാതാനായ് രുദ്രാണായ സ്ഥാനേ സ്വതേജനാ ഭാനി । വൃവദാതീനായ് രുദ്രാണീനായ സ്ഥാനേ സ്വതേജനാ ഭാനി । 2.4

- 5. ഏഷ വൈ പ്രഭുർ നാമ യജ്ഞഃ । സർവ്യ് ഹ വൈ തത്ര പ്രഭു ഭവതി । യേത്രൈതേന യജ്ഞേന യജന്തേ । 2.5
- 6. വാങ്മന–ശ്ചക്ഷുശ്രോത്ര–ജിഹ്വാ–ഘ്രാണ–രേതോ– ബുദ്ധ്യാകൂതിഃ സംകല്പാ മേ ശുദ്ധ്യന്താം ജ്യോതിരഹം ്വിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസയ സ്വാഹാ । 2.6
- 8. വഹ്നിരസി ഹവൃവാഹനോ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹി∨്സീഃ । 2.8
- 10. മധുനാ ജുഹോതി । മഹത്തുവാ ഏതദ്ദേവതായെ രൂപം । യന്മധു । യന്മധുനാ ജുഹോതി । മഹതീമേവ തദ്ദേവതാം പ്രീണാതി । 2.10

14.2.4 <u>ആശീർവാദം</u>

അനേന ദ്വിതീയവാര പ്രയൂക്ത ശ്രീ രുദ്ര മഹാമന്ത്ര ജപ സഹിത പഞ്ചഗവ്യാഭിഷേകേന ച ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ *ശ്രീ ശിവഃ*, സർവാന്തരയാമി സകല കല്യാണ ഗുണ ഗണൈക നിലയഃ, സുപ്രീത സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ അസ്യ യജമാനസ്യ സകുടുംബസൃ, അത്ര ആഗതാനാം സർവേഷാം മഹാജനാനാം, നിഖില ഭൂമണ്ഡല നിവാസിനാം , സർവോപദ്രവ–സർവരോഗ– സർവപീഡാ–സർവബാധാദി നിവൃത്തിപ്രദഃ, മനഃ ശാന്തൃാദിപ്രദഃ, നിതൃ മംഗളാവാപ്തീ പ്രദശ്ച ഭൂയാസുരിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോ– ടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥ **(തഥാസ്തു – ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം)**

14.3 <u>തൃതീയവാര അഭിഷേകം – പഞ്ചാമൃതം</u>

14.3.1 <u>തൃതീയോ ടനൂവാക</u>ഃ

പ്രിയം ച മേ, മയശ്ച മേ, ടനുകാമശ്ച മേ, ശം ച മേ, കാമശ്ച മേ, സൗമനസശ്ച മേ, ഭദ്രം ച മേ, ശ്രേയശ്ച മേ, ദ്രവിണം ച മേ, വസൃശ്ച മേ, യശശ്ച മേ, ഭഗശ്ച മേ, ധൃതിശ്ച മേ, യന്താ ച മേ, ധർത്താ ച മേ, ക്ഷേമശ്ച മേ, സം്വിച്ച് മേ, ജ്ഞാത്രം ച മേ, വിശാം ച മേ, മഹശ്ച മേ, സൂശ്ച മേ, പ്രസൂശ്ച മേ, സീരം ച മേ, ലയശ്ച മ, ഋതം ച മേ, ടമൃതം ച മേ, ടയക്ഷ്മം ച മേ, ടനാമയച്ച മേ, ജീവാതുശ്ച മേ, ദീർഘായുത്വം ച മേ, ടനമിത്രം ചമേ, ടഭയം ചമേ, സുഗം ച മേ, ശയനം ച മേ, സൂഷാ ച മേ, സുദിനം ച മേ ॥ 3 (36)

ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ **ശാന്തിഃ** ॥

14.3.2 <u>ഉപചാര പുജ</u>

അമൃതാഭിഷേകോടസ്തു ।

ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ ।

ദിവൃ ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ബലായ നമ്ഃ । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ബല്പ്രമഥനായ നമ്ഃ । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപ–ദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ –––––––. (നൈവേദ്യ മന്ത്രം) । സർവഭൂതദമനായ നമഃ । കദളീഫലം നിവേദയാമി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । മനോന്മനായ നമ്ഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി ।

14.3.3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ

- 1. തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ വക്രതുണ്ഡായ ധീമഹി । തന്നോ ദന്തിഃ പ്രചോദയാത് । 3.1
- 2. ന കർമണാ ന പ്രജയാ ധനേന തൃാഗേനൈകേ അമൃതത്വ– മാനശുഃ । പരേണ നാകം നിഹിതം ഗുഹായാം വിഭ്രാജ്ദേത– ദൃതയോ വിശന്തി । 3.2
- 3. പൃഥിവീ ത്രിഹോതാ । സ പ്രതിഷ്ഠാ । സ മേ ദദാതു പ്രജാം പശൂൻ പുഷ്ടിം് യശം । പ്രതിഷ്ഠാ ച മേ ഭൂയാത് । 3.3
- 4. വാസുകിവൈദ്യുതാനായ് രുദ്രാണായ സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി വാസുകിവൈദ്യുതീനായ് രുദ്രാണീനായ സ്ഥാനേ — സ്വതേജസാ ഭാനി പ്ര 3.4
- 5. ഏഷ വാ ഊർജ്സ്വാന്നാമ യജ്ഞഃ । സർവഴ് ഹ വൈ തത്രോർജസ്വദ് ഭവതി । യേത്രൈതേന യജ്ഞന യജ്നേ । 3.5

- 6. ത്വക്–ചർമ–മാഗ്സ–രുധിര–മേദോ–മജ്ജാ–സ്നായവോടസ്ഥീനി മേ ശുദ്ധൃന്താം ജ്യോതി–രഹം ്വിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ്⊎ "– – — സ്വാഹാ । 3.6
- 7. സൂര്യോ മേ ചക്ഷുഷി ശ്രിതഃ । ചക്ഷുർ. ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി । അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി । 3.7
- 8. ശ്വാത്രോസി പ്രചേതാ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹി∨്സീഃ । 3.8
- 9. ദമ ഇതി നിയതം ബ്രഹ്മചാരിണ്–സ്തസ്മാദ് ദമേ രമന്തേ । 3.9
- 10. ത്രണ്യുലൈർ ജുഹോതി । വസൂനാം ്വാ ഏതദ് രൂപം । യത്തണ്യുലാഃ । യത്തണ്യുലൈർ ജുഹോതി । വസൂനേവ തത്പ്രീണാതി ।

14.3.4 ആശീർവാദം

അനേന തൃതീയവാര പ്രയൂക്ത ശ്രീരുദ്ര മഹാമന്ത്ര ജപ സഹിത പഞ്ചാമൃത അഭിഷേകേന ച ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ ശ്രീരുദ്രഃ സുപ്രീത സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ അസൃ യജമാനസൃ സകുടുംബസൃ, അത്ര ആഗതാനാം സർവേഷാം മഹാജനാനാം, നിഖില ഭൂമണ്ഡല നിവാസിനാം സർവാനന്ദസിദ്ധി പ്രദഃ, സർവാഭീഷ്ട്രസിദ്ധി പ്രദശ്ച ഭൂയാദിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോ ടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥ (തഥാസ്തു – ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം)

14.4 തുരീയ (ചതുർത്ഥ) വാര അഭിഷേകം – ഘൂതം 14.4.1 <u>ചതൂർത്ഥോ ടനുവാക</u>ഃ

<u>ചതൂർത്ഥോ ടനൂവാകഃ</u>

ഊർക്ച മേ, സൂനൃതാ ച മേ, പയശ്ച മേ, രസശ്ച മേ, ഘൃതം ച മേ, മധു ച മേ, സഹ്ധിശ്ച മേ, സപിതിശ്ച മേ, കൃഷിശച് മേ, വൃഷ്ടിശ്ച മേ, ജൈത്രം ച മ, ഔദ്ഭിദ്യം ച മേ, രയിശച് മേ, രായശച മേ, പുഷ്ടം ച മേ, പുഷ്ടിശച മേ, വിഭുച്മേ, പ്രഭുച്മേ, ബഹുച്മേ, ഭൂയശച്മേ, പൂർണം ച മേ, പൂർണതരം ച മേ, ടക്ഷിതിശ്ച മേ, കൂയവാശ്ച മേ, sന്നം ച മേ, ടക്ഷുച്ച മേ, വ്രീഹയശ്ച മേ, യവാശ്ച മേ, മാഷാശച മേ, തിലാശച മേ, മുദ്ഗാശച മേ, ഖലാശച മേ, ഗോധൂമായ മേ, മസുരായ മേ, പ്രിയംഗവശ്ച മേ, ടണവശ്ച മേ, ശൃാമാകാശ്ച മേ, നീവാരാശ്ച മേ ॥ 4 (38)

ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ **ശാന്തിഃ** ॥

14.4.2 ഉപചാര പുജ

അമൃതാഭിഷേകോടസ്തു ।

ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ । ദിവൃ ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ബലായ നമഃ । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ബലപ്രമഥനായ നമഃ । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപ–ദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്റ്റുവഃ -----. (നൈവേദ്യ മന്ത്രം) । സർവഭൂതദമനായ നമഃ । കദളീഫലം നിവേദയാമി ।

നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ച മനോന്മനായ നമഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി ।

14.4.3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ

- 1. തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ ചക്രതുണ്ഡായ ധീമഹി । തന്നോ നന്ദിഃ പ്രചോദയാത് । 4.1
- 2. വേദാന്ത-വിജ്ഞാന സുനിശ്ചിതാർഥാ-സ്റ്റന്യാസ യോഗാദൃത-യശ്ശുധ സത്വാഃ I തേ ബ്രഹ്മലോകേ തു പരാന്തകാലേ പരാമൃതാത് പരിമുചൃന്തി സർവേ I 4.2
- 3. അന്തരിക്ഷം ചതുർ.ഹോതാ । സ വിഷ്ഠാഃ । സ മേ ദദാതു പ്രജാം പശൂൻ പുഷ്ടിം ്യശഃ । വിഷ്ഠാശ്ച മേ ഭൂയാത് । 4.3
- 4. രജതാനായ് രുദ്രാണായ സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി । രജതാനായ് രുദ്രാണീനായ സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി । 4.4
- 5. ഏഷ വൈ പയസ്വാന്നാമ യജ്ഞഃ । സർവ്യ ഹ വൈ തത്ര പയസ്വദ് ഭവതി । യേത്രൈതേന് യജ്ഞേന യജ്ഞേ । 4.5
- 6. ശിരഃ–പാണി–പാദ–പാർശ്വ–പൃഷ്ഠോരൂദര–ജങ്ഘ–ശിശ്റോപസ്ഥ– പായവോ മേ ശുദ്ധൃന്താം ജ്യോതി–രഹം ്വിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ⊎ സ്വാഹാ । 4.6
- 7. ചന്ദ്രമാ മേ മനസി ശ്രിതഃ । മനോ ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി । അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി । 4.7

- 8. തുഥോസി വിശാവേദാ രൗദ്രേണാനീകേന പാഹി മാഗേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹി∨്സീഃ । 4.8
- 9. ശമ ഇതൃര്ണ്യേ മുനയ-സ്തസ്മാച്ഛമേ രമന്തേ । 4.9
- 10. പൃഥുകൈർ ജുഹോതി । രുദ്രാണാം ്വാ ഏതദ് രൂപം । യത് പൃഥുകാഃ । യത്പൃഥുകൈർ ജുഹോതി । രുദ്രാനേവ തത്പ്രിണാതി ।

14.4.4 ആശീർവാദം

അനേന തൂരീയവാര (ചതൂർത്ഥവാര) പ്രയൂക്ത ശ്രീരുദ്ര മഹാമന്ത്ര ജപ സഹിത ഘൂതാഭിഷേകേന ച ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ ശ്രീശങ്കരഃ സുപ്രീത സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ, അസൃ യജമാനസൃ സകുടുംബസൃ, അത്ര ആഗതാനാം സർവേഷാം മഹാജനാനാം, നിഖില ഭൂമണ്ഡല നിവാസിനാം താപത്രയ നിവൃതിദ്വാരാ ക്ഷേമാഭിവൃദ്ധിപ്രദോ ഭൂയാദിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോ—ടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥

(തഥാസ്തു – ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതിവചനം)

14.5 പഞ്ചമവാര അഭിഷേകം – ക്ഷീരം

14.5.1 <u>പഞ്ചമോ ടനൂവാകഃ</u>

അശ്മാ ച മേ, മുത്തികാ ച മേ, ഗിരയ്ശ്ച മേ, പർവ്താശ്ച മേ, സിക്താശ്ച മേ, വനസ്പതയശ്ച മേ, ഹിരണും ച മേ, ടയ്ശ്ച മേ, സീസം ച മേ, ത്രപുശ്ച മേ, ശൃാമം ച മേ, ലോഹം ച മേ, ടഗ്നിശ്ച മ, ആപശ്ച മേ, വീരുധശ്ച മ, ഓഷധയശ്ച മേ,

കൃഷ്ടപച്യം ച മേ, ടകൃഷ്ടപച്യം ച മേ, ഗ്രാമ്യാശ്ച മേ, പശവ ആരണ്യാശ്ച യജ്ഞേന കല്പന്താം , ്വിത്തം ച മേ, വിത്തിശ്ച മേ, ഭൂതം ച മേ, ഭൂതിശ്ച മേ, വസു ച മേ, വസതിശച് മേ, കർമ ച മേ, ശക്തിശച മേ, ഇതിശ്ച മേ, ഗതിശ്ച മേ ॥ 5 (32) sർഥശ്ച മ, ഏമശ്ച മ, ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ **ശാന്തിഃ** ॥ 14.5.2 ഉപചാര പുജ അമൃതാഭിഷേകോടസ്തു । ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ । ദിവൃ ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ബലായ നമഃ । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ബലപ്രമഥനായ നമഃ । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപ–ദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ -----. (നൈവേദ്യ മന്ത്രം) ഭ സർവഭൂതദമനായ നമഃ । കദളീഫലം നിവേദയാമി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । മനോന്മനായ നമഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി ।

14.5.3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ

- 1. തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ മഹാസേനായ ധീമഹി । തന്നഃ ഷഞ്മുഖഃ പ്രചോദയാത് । 5.1
- 2. ദ്രഹര^{*}വിപാപം പരമേശ്വഭൂതര^{*}യത്പുണ്ഡരീകം പുരമദ്ധു സൗയം പതരോപി ദ്രഹം ഗഗനം ഫിശോക–സ്തസ്മിൻ. യദ്രന്തസ്ത–ദുപാസിതവ്യം പ്ര 5.2

- 3. വായുഃ പഞ്ചഹോതാ । സ പ്രാണഃ । സ മേ ദദാതു പ്രജാം പശൂൻ പുഷ്ടിം ്യശഃ । പ്രാണശ്ച മേ ഭൂയാത് । 5.3
- 4. പരുഷാണാ ് രുദ്രാണാ ് സ്ഥാനേ സ്വതേജനാ ഭാനി । പരുഷാണാ ് രുദ്രാണീനാ ് സ്ഥാനേ സ്വതേജനാ ഭാനി । 5.4
- 5. ഏഷ വൈ വിധൃതോ നാമ യജ്ഞഃ । സർവഴ് എ വൈ തത്ര വിധൃതം ഭവതി । യേത്രൈതേന് യജ്ഞേന യജ്നേ । 5.5
- 6. ഉത്തിഷ്ഠ പുരുഷ ഹരിത പിങ്ഗല ലോഹിതാക്ഷി ദേഹി ദേഹി ദദാപയിതാ മേ ശുദ്ധൃന്താം ജ്യോതി–രഹം ്വിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ്⊎ സ്വാഹാ । 5.6
- 7. ദിശോ മേ ശ്രോത്രേ ശ്രിതാഃ । ശ്രോത്ര്യ് ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി । അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി । 5.7
- 8. ഉശിഗ്സി കവീ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാ്ടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹി∨്സീഃ । 5.8
- 9. ദാന–മിതി സർവാണി ഭൂതാനി പ്രശ⊻സ്ന്തി ദാനാ– ന്നാതി ദുശ്ചരം തസ്മാദ് ദാനേ രമന്തേ ≀ 5.9
- 10. ലാജൈർ ജു്ഹോതി । ആദിതൃാനാം ്വാ ഏതദ്രൂപം । യല്ലാജാഃ । യല്ലാജൈർ ജുഹോതി । ആദിതൃാനേവ തത്പ്രീണാതി । 5.10

14.5.4 ആശീർവാദം

അനേന പഞ്ചമവാര പ്രയൂക്ത ശ്രീരുദ്ര മഹാമന്ത്ര ജപ സഹിത പയസാഭിഷേകേന ച ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ ശ്രീനീലലോഹിതഃ സുപ്രീത സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ, അസ്യ യജമാനസ്യ സകുടുംബസ്യ, അത്ര ആഗതാനാം സർവേഷാം മഹാജനാനാം, നിഖില ഭൂമണ്ഡല നിവാസിനാം ശരീരേ വർത്തമാന വർത്തിഷ്യമാന സമസ്ത രോഗ–പീഡാ പരിഹാരദ്വാരാ ക്ഷിപ്രാരോഗ്യ സിദ്ധി പ്രദോ ഭൂയാദിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോ– ടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥ (തഥാസ്തു – ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം)

14.6 ഷഷ്ടവാര അഭിഷേകം – ദധി

14.6.1 ഷഷ്ടോ ടനൂവാകഃ

അഗ്നിശച് മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ,

സവിതാ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ,

പൂഷാ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ,

മിത്രശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ,

തിഷ്ടാ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ,

വിഷ്ണുശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ,

മരുത്ശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ,

പുഥിവീ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ,

ദൃൗശ്ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ,

മൂർധാ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ,

മൂർധാ ച മ ഇന്ദ്രശ്ച മേ,

ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ **॥**

സോമ്ശ്ച മ ഇന്ദ്ര്യ്ച മേ,
സര്സ്വതി ച മ ഇന്ദ്ര്യ്ച മേ,
ബൃഹസ്പതിശ്ച മ ഇന്ദ്ര്യ്ച മേ,
വരുണശ്ച മ ഇന്ദ്ര്യ്ച മേ,
ച മ ഇന്ദ്ര്യ്ച മേ,
ടംശിനൗ ച മ ഇന്ദ്ര്യ്ച മേ,
വിശ്വേ ച മേ, ദേവാ ഇന്ദ്ര്യ്ച മേ,
ടന്തരിക്ഷം ച മ ഇന്ദ്ര്യ്ച മേ,
ദിശ്യ്ച മ ഇന്ദ്ര്യ്ച മേ,
പ്രജാപതിശ്ച മ ഇന്ദ്ര്യ്ച മേ,
പ്രജാപതിശ്ച മ ഇന്ദ്ര്യ്ച മേ ॥ 6 (21)

14.6.2 ഉപചാര പുജ

അമൃതാഭിഷേകോടസ്തു । ആവാഹിതാഭ്യഃ സർവാഭ്യോ ദേവതാഭ്യോ നമഃ । ദിവൃ ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ബലായ നമഃ । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ബല്പ്രമഥനായ നമഃ । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപ–ദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ –––––––. (നൈവേദ്യ മന്ത്രം) । സർവഭൂതദമനായ നമഃ । കദളീഫലം നിവേദയാമി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । മനോന്മനായ നമഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി ।

14.6.3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ

- 1. തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ സുവർണപക്ഷായ ധീമഹി । തന്നോ ഗരുഡഃ പ്രചോദയാത് । 6.1
- 2. യോ വേദാദൗ സിരഃ പ്രോക്തോ വേദാന്തേ ച പ്രതിഷ്ഠിതഃ ദ തസൃ പ്രകൃതിലീന്നു യഃ പരസ്സ മഹേശിരഃ ദ 6.2
- 3. ചന്ദ്രമാഃ ഷഡ്ഡോതാ । സ ഋതൂൻ കല്പയാതി । സ മേ ദദാതു പ്രജാം പശൂൻ പുഷ്ടിം യശഃ । ഋതവശച മേ കല്പന്താം | 6.3
- 4. ശൃാമാനാ ് രുദ്രാണാ ് സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി । തൃാമാനാ ് രുദ്രാണീനാ ് സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി । 6.4
- 5. ഏഷ വൈ വ്യാവൃത്തോ നാമ യജ്ഞഃ । സർവഴ് ഹ വൈ തത്ര വ്യാവൃതം ഭവതി । യേത്രൈതേന യജ്ഞന യജ്നേ । 6.5

- 6. പൃഥിവ്യാപ–സ്തേജോ–വായു–രാകാശാ മേ ശുദ്ധൃന്താം ജ്യോതിരഹം ്വിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ⊌ സ്വാഹാ । 6.6
- 7. ആപോ മേ രേത്സി ശ്രിതാഃ । രേതോ ഹൃദയ । ഹൃദയം മയി । അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി । 6.7
- 8. അംഘാരിരസി ബംഭാരീ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹി⊎സീഃ । 6.8
- 9. ധർമ ഇതി ധർമേണ സർവമിദം പരിഗൃഹീതം ധർമാന്നാതി-ദുഷ്കരം തസ്മാദ് ധർമേ രമന്തേ । 6.9
- 10. കരംബൈർ ജുഹോതി । വിശോഷാം ്വാ ഏതദ്ദേവതാനാ ഗ് രൂപം । യത്കരംബാം । യത്കരംബൈർ ജുഹോതി । വിശാനവ തദ്ദേവാൻ പ്രീണാതി । 6.10

14.6.4 ആശീർവാദം

അന്നേ ഷഷ്ഠവാര പ്രയൂക്ത ശ്രീരുദ്ര മഹാമന്ത്ര ജപ സഹിത ദദ്ധ്യാഭിഷേകേന ച ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ ശ്രീഈശാന്ദ് സുപ്രീത സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ, അസ്യ യജമാനസ്യ സകുടുംബസ്യ, അത്ര ആഗതാനാം സർവേഷാം മഹാജനാനാം, നിഖില ഭൂമണ്ഡല നിവാസിനാം ആയുർബലം യശോവർചഃ പശവസ്സൈര്യം സിദ്ധിർ–ലക്ഷ്മീഃ ക്ഷമാകാന്തിഃ സദ്ഗുണാനന്ദോ നിത്യോഥ്സവോ നിതൃശ്രീർ നിത്യമംഗളം ഇത്യേഷാം സർവദാഭി–വൃദ്ധിർ ഭൂയാസുരിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോ–ടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥

(തഥാസ്കു – ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം)

14.7 സപ്തമവാര അഭിഷേകം – മധൂ

14.7.1 <u>സപ്തമോ ടനൂവാക</u>ഃ

```
രശ്മിശ്ച മേ,
അ⊻്ശുശ്ച മേ,
—.∸
                            ടധിപതിശ്ച മ,
ടദാഭൃശ്ച മേ,
                            ടന്തരുാമശ്ച മ,
ഉപാ∨്ശുശ്ച മേ,
                            മൈത്രാവരുണശ്ച മ,
ഐന്ദ്രവായവശ്ച മേ,
                            പ്രതിപ്രസ്ഥാനശ്ച മേ,
ആശിനശ്ച മേ,
                            മന്ഥീ ച മ,
ശുക്രശ്ച മേ,
                            വൈശാദേവശ്ച മേ,
ആഗ്രയണശ്ച മേ,
                            വൈശ്വാനരശ്ച മ,
ധ്രുവശ്ച മേ,
ഋതുഗ്രഹാശ്ച മേ,
                            ടതിഗ്രാഹൃാശ്ച മ,
ഐന്ദ്രാഗ്നശ്ച മേ,
                            വൈശാദേവശ്ച മേ,
മരുതാതീയാശ്ച മേ,
                            മാഹേന്ദ്രശ്ച മ,
                            സാവിത്രശ്ച മേ,
ആദിതൃശ്ച മേ,
                            പൗഷ്ണശ്ച മേ,
സാരസ്വതശ്ച മേ,
പാത്നീവതശ്ച മേ,
                            ഹാരിയോജനശ്ച മേ ॥ 7 (28)
ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ ॥
14.7.2 <u>ഉപചാര പൂജ</u>
അമൃതാഭിഷേകോടസ്തു ।
ആവാഹിതാഭ്യഃ സർവാഭ്യോ ദേവതാഭ്യോ നമഃ ।
ദിവൃ ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി ।
ബലായ നമഃ । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ബലപ്രമഥനായ നമഃ ।
```

ദീപം ദർശയാമി । ധൂപ–ദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ ––––––––. (നൈവേദ്യ മന്ത്രം) । സർവഭൂതദമനായ നമഃ । കദളീഫലം നിവേദയാമി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । മനോന്മനായ നമഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി ।

14.7.3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ

- 1. വേദാത്മനായ വിദ്മഹേ ഹിരണൃഗർഭായ ധീമഹി । —— — — — — — — തന്നോ ബ്രഹ്മ പ്രചോദയാത് । 7.1
- 2. സദ്യോജാതം പ്രപദ്യാളി സദ്യോ ജാതായ വൈ നമോ നമഃ ല ഭവേ ഭവേ നാതിഭവേ ഭവസ്വ മാം ലഭവോദ്ഭവായ നമഃ ॥ 7.2
- 3. അന്ന ് സപ്തഹോതാ । സ പ്രാണസൃ പ്രാണഃ । സ മേ ദദാതു പ്രജാം പശൂൻ പുഷ്ടിം ്യശഃ । പ്രാണസൃ ച മേ പ്രാണോ _____ ഭൂയാത് । 7.3
- 4. കപിലാനായ് രുദ്രാണായ സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി । കപിലാനായ് രുദ്രാണീനായ സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി । 7.4
- 5. ഏഷ വൈ പ്രതിഷ്ഠിതോ നാമ യജ്ഞഃ । സർവഴ് ഹ വൈ തത്ര പ്രതിഷ്ഠിതം ഭവതി । യേത്രൈതേന് യജ്ഞേന യജ്നേ । 7.5
- 6. ശബ്ദ-സ്പർശ-രൂപ-രസ-ഗന്ധാ മേ ശുദ്ധൃന്താം ജ്യോതി–രഹം ഫിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ്യ സ്വാഹാ । 7.6
- 7. പൃഥിവീ മേ ശരിരേ ശ്രിതാ । ശരിര⊻് ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി । അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി । 7.7

- 8. അവസുരസി ദുവസ്ഥാൻ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാ്ടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹി∨്സീഃ । 7.8
- 9. പ്രജന ഇതി ഭൂയാഴ്സ–സ്തസ്മാദ് ഭൂയിഷ്ഠാഃ പ്രജായന്തേ തസ്മാദ് ഭൂയിഷ്ഠാഃ പ്രജനനേ രമന്തേ । 7.9
- 10. ധാനാഭിർ ജുഹോതി । നക്ഷിത്രാണാം ്വാ ഏതദ്രൂപം । യദ്ധാനാഃ । യദ്ധാനാഭിർ ജുഹോതി । നക്ഷത്രാണൃവ തത്പ്രിണാതി । 7.10

14.7.4 ആശീർവാദം

അന്നേ സപ്തമവാര പ്രയുക്ത ശ്രീരുദ്ര മഹാമന്ത്ര ജപ സഹിത മധ്വഭിഷേകേന ച ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ ശ്രീവിജയഃ സുപ്രീത സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ, അസൃ യജമാനസൃ സകുടുംബസ്യ, അത്ര ആഗതാനാം സർവേഷാം മഹാജനാനാം, നിഖില ഭൂമണ്ഡല നിവാസിനാം അനേക കോട്യാർജ്ജിത കാമ ക്രോധ ലോഭ മോഹ മദ മാഥ്സര്യാഖ്യ സകല ദുരിതഘ്നൗ ശമനദ്വാരാ, മഹൈശ്വര്യാപ്യാപ്തി പ്രദശ്ച ഭൂയാദിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോ— ടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥

(തഥാസ്തു – ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം)

14.8 <u>അഷ്മവാര അഭിഷേകം – ഇക്ഷൂരസം</u>

14.8.1 <u>അഷ്ടമോ ടനൂവാക</u>ഃ

ഇഭൂശ്ച് മേ, ബർ.ഹിശ്ച് മേ, വേദിശ്ച മേ, ധിഷ്ണിയാശ്ച മേ, സുചശച മേ, ചമസാശ്ച് മേ, ഗ്രാവാണശ്ച മേ, സാരവശ്ച മ, ഉപരവാശ്ച മേ, sധിഷവണേ ച മേ, ദ്രോണകലശശ്ച മേ, വായവൃാനി ച മേ, പൂതഭൂച്ച് മ, ആധവനീയശച മ, ആഗ്നിധം ചമേ, ഹവിർധാനം ചമേ, ഗൃഹാശ്ച് മേ, സദശ്ച മേ, പുരോഡാശാശ്ച മേ, പചതാശ്ച് മേ, ടവഭൂഥശ്ച മേ, സാഗാകാരശ്ച മേ ॥ 8 (22) ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ **ധ** 14.8.2 ഉപചാര പുജ അമൃതാഭിഷേകോടസ്തു । ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ । ദിവൃ ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി । ബലായ നമഃ । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ബലപ്രമഥനായ നമഃ । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപ–ദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ -----. (നൈവേദ്യ മന്ത്രം) । സർവഭുതദമനായ നമഃ । കദളീഫലം നിവേദയാമി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । മനോന്മനായ നമഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി ।

14.8.3 <u>ഉപചാര മന്ത്രാ</u>ഃ

- 1. നാരായണായ വിദ്മഹേ വാസുദേവായ ധീമഹി । തന്നോ വിഷ്ണുഃ പ്രചോദയാത് । **8.1**
- 2. വാമദേവായ നമോ ജ്യേഷ്റായ നമഃ ശ്രേഷ്റായ നമോ രുദ്രായ നമഃ കാലായ നമഃ കലവികരണായ നമോ

- ബല്വികരണായ നമോ ബലായ നമോ ബല്പ്രമഥനായ നമഃ സർവഭൂതദമനായ നമോ മനോന്മനായ നമഃ । 8.2
- 3. ദൃൗരഷ്ട്ര ഹോതാ । സോടനാ–ധൃഷൃഃ । സ മേ ദദാതു പ്രജാം പശൂൻ പുഷ്ടിം ്യശഃ । അനാധൃഷൃശച് ഭൂയാസം । 8.3
- 4. അതിലോഹിതാനായ് രുദ്രാണായ സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി വ അതിലോഹിതീനായ് രുദ്രാണീനായ സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാഭാനി വ 8.4
- 5. ഏഷ വൈ തേജസ്വീ നാമ യജ്ഞഃ । സർവ്യ് ഹ വൈ തത്ര തജസ്വീ ഭവതി । യേത്രൈതേന യജ്ഞേന യജന്തേ । 8.5
- 6. മനോ–വാക്കായ–കർമാണി മേ ശുദ്ധൃന്താം ജ്യോതി–രഹം ഫിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ് യ സ്വാഹാ । 8.6
- 8. ശുന്ധ്യൂര്സി മാർജാലീയോ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാ്ടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹി∨്സീഃ । 8.8
- 9.അഗ്നയ ഇത്യാഹ് തസ്മാ-ദഗ്നയ ആധാതവ്യാ അഗ്നിഹോത്ര-മിത്യാഹ തസ്മാ-ദഗ്നിഹോത്രേ രമന്തേ । 8.9

10. സക്തുഭിർ ജുഹോതി । പ്രജാപതേർവാ ഏതദ്രൂപം । യഥ്സക്തവഃ । യഥ്സക്തുഭിർ ജുഹോതി । പ്രജാപതിമേവ തത്പ്രീണാതി । 8.10

14.8.4 ആശീർവാദം

അനേന അഷ്ടമവാര പ്രയൂക്ത ശ്രീരുദ്ര മഹാമന്ത്ര ജപ സഹിത ഇക്ഷുസാരാ–ഭിഷേകേന ച ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ ശ്രീഭീമഃ സുപ്രീത സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ, അസൃ യജമാനസൃ സകുടുംബസൃ, അത്ര ആഗതാനാം സർവേഷാം മഹാജനാനാം, നിഖില ഭൂമണ്ഡല നിവാസിനാം ഭഗവത് പാദാരവിന്ദയോഃ അചഞ്ചല നിഷ്കപട ഭക്തി പ്രദഃ., സമസ്ത കല്യാണഗുണപ്രദശ്ച ഭൂയാദിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോ–ടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥

(തഥാസ്തു – ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം)

14.9 നവമവാര അഭിഷേകം–നിംബതോയ രസം

```
14.9.1 <u>നവമോ ടനൂവാക</u>ഃ
അഗ്നിശ്ച മേ, ഘർമശ്ച മേ ടർകശ്ച മേ, സൂരൃശ്ച മേ,
പ്രാണശ്ച മേ, ടശാമേധശ്ച മേ, പൃഥിവീ ച മേ, ടദിതിശ്ച മേ,
ദിതിശ്ച മേ, ദൃൗശ്ച മേ, ശകിരീരങ്ഗുലയോ ദിശശ്ച മേ,
യജ്ഞേന് കല്പന്താ, മൃക്ച് മേ, സാമ ച മേ,
സ്കോമശ്ച മേ, യജുശ്ച മേ, ദീക്ഷാ ച മേ,
തപശച മ, ഋതുശച മേ , വ്രതം ച മേ, ടഹോരാത്രയോർ വൃഷ്യാ,
ബൃഹദ്രഥന്തരേ ച മേ
                              യജ്ഞേന കല്പേതാം ॥ 9 (21)
ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ ॥
14.9.2 ഉപചാര പുജ
അമൃതാഭിഷേകോടസ്തു ।
ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ ।
ദിവൃ ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി ।
ബലായ നമഃ । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ബലപ്രമഥനായ നമഃ ।
ദീപം ദർശയാമി । ധൂപ–ദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി ।
ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ -----. (നൈവേദ്യ മന്ത്രം) ।
സർവഭൂതദമനായ നമഃ । കദളീഫലം നിവേദയാമി ।
നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി ।
മനോന്മനായ നമഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി ।
```

14.9.3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ

- 2. അഘോരേട്യോടഥഘോരേട്യോ ഘോരഘോരതരേട്യു । — " — " — " — " — " — " — സർവേട്യു സർവശർവേട്യോ നമസ്തേ അസ്തു രുദ്രരൂപേട്യു । 9.2
- 3. ആദിത്യോ നവ്ഹോതാ । സ തേജസ്വീ । സ മേ ദദാതു പ്രജാം പശൂൻ പുഷ്ടിം ്യശം । തേജസ്വീ ച ഭൂയാസം । 9.3
- 4. ഊർധ്വാനായ് രുദ്രാണായ സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി । ഊർധ്വാനായ് രുദ്രാണീനായ സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി । 9.4
- 6. അവൃക്തഭാവൈ–രഹംകാരൈർ–ജ്യോതി–രഹം ്വിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ് സ്വാഹാ । 9.6
- 7. ഇന്ദ്രോ മേ ബലേ ശ്രിതഃ । ബല ് ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി । അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി । 9.7
- 8. സമ്രാഡ്സി കൃശാനൂ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാ്ടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹിഴ്സീഃ । 9.8

- 9. യജ്ഞ ഇതി യജ്ഞോ ഹി ദേവാ–സ്തസ്മാദ് യജ്ഞേ രമന്തേ i 9.9
- 10. മസൂസൈൃർ ജുഹോതി । സർവാസാം ്വാ ഏതദ്ദേവതാനായ് രൂപം । യന്മസൂസ്യാനി । യന്മസൂസ്യൈർ ജുഹോതി । സർവാ ഏവ തദ്ദേവതാം പ്രീണാതി । 9.10

14.9.4 <u>ആശീർ</u>വാദം

അനേന നവമവാര പ്രയൂക്ത ശ്രീരുദ്ര മഹാമന്ത്ര ജപ സഹിത നിംബൂതോയാഭിഷേകേന ച ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ ശ്രീദേവദേവഃ സുപ്രീത സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ, അസ്യ യജമാനസ്യ സകുടുംബസ്യ, അത്ര ആഗതാനാം സർവേഷാം മഹാജനാനാം, നിഖില ഭൂമണ്ഡല നിവാസിനാം സകല ശ്രേയപ്രാപ്തി ഹേതു ഭൂത സാംബപരമേശ്വര പരിപൂർണാ—നുഗ്രഹ സിദ്ധി പ്രദോ ഭൂയാദിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോ—ടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥

(തഥാസ്തു – ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം)

14.10 <u>ദശമവാര അഭിഷേകം – നാളികേരജം</u>

14.10.1 <u>ദശമോ ടനൂവാക</u>ഃ

```
ഗർഭാശ്ച മേ,
                         വഥ്സാശ്ച മേ,
ത്രൃവിശ്ച മേ,
                         ത്രൃവീച് മേ,
ദിതൃവാട് ച മേ,
                         ദിതൃൗഹീ ച മേ,
പഞ്ചാവിശ്ച മേ,
                         പഞ്ചാവീ ച മേ,
ത്രിവഥ്സശ്ച് മേ,
                           ത്രിവഥ്സാ ച മേ,
തുരൃവാട് ച മേ,
                           തുരൃൗഹീ ച മേ,
പഷ്റവാട് ച മേ,
                           പഷ്യാഹീ ച മ,
ഉക്ഷാ ച മേ,
                           വശാ ച മ,
ഋഷഭശ്ച മേ,
                            വേഹച്ച മേ,
ടനഡ്വാൻ ച മേ,
                            ധേനുശ്ച മ,
ആയുർ യജ്ഞേന കല്പതാം, പ്രാണോ യജ്ഞേന കല്പതാ-
മപാനോ യജ്ഞേന് കല്പതാം , ്വ്യാനോ യജ്ഞേന് കല്പതാം
ചക്ഷുർ–യജ്ഞേന് കല്പതാ⊌, ശ്രോത്രം ്യജ്ഞേന് കല്പതാം
                            ്വാഗൃജ്ഞേന കല്പതാ–
മനോ യജ്ഞേന കല്പതാം,
                           <u>്</u>യജ്ഞോ യജ്ഞേന കല്പതാം ॥ 10
മാത്മാ യജ്ഞേന കല്പതാം ,
ഓം ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ ശാന്തിഃ ॥
14.10.2 <u>ഉപചാര പൂജ</u>
അമൃതാഭിഷേകോടസ്തു ।
ആവാഹിതാഭ്യഃ സർവാഭ്യോ ദേവതാഭ്യോ നമഃ ।
ദിവൃ ഗന്ധാൻ ധാരയാമി । പുഷ്പാണി സമർപയാമി ।
```

ബലായ നമഃ । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി । ബലപ്രമഥനായ നമഃ । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപ–ദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ -----. (നൈവേദ്യ മന്ത്രം) । സർവഭുതദമനായ നമഃ । കദളീഫലം നിവേദയാമി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । മനോന്മനായ നമഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി ।

14.10.3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ

- 1. ഭാസ്മരായ വിദ്മഹേ മഹദ്യുതികരായ ധീമഹി । തന്നോ ആദിതൃഃ പ്രചോദയാത് । **10.1**
- 2. തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ മഹാദേവായ ധീമഹി । തന്നോ രുദ്രഃ പ്രചോദയാത് **॥ 10.2**
- 3. പ്രജാപതിർ ദശ്ഹോതാ । സ ഇദ*്* സർവം । സ മേ ദദാതു പ്രജാം പശൂൻ പുഷ്ടിം ്യശ്ഃ । സർവംബ മേ ഭൂയാത് । 10.3
- 4. അവപതന്താനായ് രുദ്രാണായ സ്ഥാനേ സ്വതേജസാ ഭാനി । അവപതന്തീനായ് രുദ്രാണീനായ സ്ഥാനേ സ്വതേജസാ ഭാനി । 10.4
- 5. ഏഷ വാ അതിവൃാധീ നാമ യജ്ഞഃ । ആ ഹ വൈ തത്ര രാജന്യോടതിവ്യാധീ ജായതേ I യേത്രെതേന് യജ്ഞേന യജന്തേ । 10.5

- 6. ആത്മാ മേ ശുദ്ധൃന്താം ജ്യോതി–രഹം ്വിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ്യ സ്വാഹാ । അന്തരാത്മാ മേ ശുദ്ധൃന്താം ജ്യോതി–രഹം ്വിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ്യ സ്വാഹാ । പരമാത്മാ മേ ശുദ്ധൃന്താം ജ്യോതി–രഹം ്വിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ്യ സ്വാഹാ । ക്ഷുധേ സ്വാഹാ । ക്ഷുത്പിപാസായ സ്വാഹാ । വിവിട്ടൈയു സ്വാഹാ । ഋഗ്വിധാനായ സ്വാഹാ । ക്ഷുത്പിപാസായ സ്വാഹാ । നിവിട്ടെ സ്വാഹാ । ഉഗ്വിധാനായ സ്വാഹാ । ക്ഷുത്പിപാസാത് സ്വാഹാ । ക്ഷുത്പിപാസാമലാം ജ്യേഷ്ഠാമലക്ഷീർ–നാശയാമൃഹം । അഭൂതി–മസ്മൃദ്ധിംച സർവാം നിർണുദ മേ പാപ്മാന്യ സ്വാഹാ । 10.6
- 7. പർജന്യോ മേ മൂർധ്നി ശ്രിതഃ । മൂർധാ ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി । അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി । 10.7
- 8. ചരിഷദ്യോടസി പവമാനോ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാടഗ്നേ പിപൂഹി മാ മാ മാ ഹി∨്സീഃ । 10.8
- 9. മാനസ–മിതി വിദ്വാഴ്സ്–സ്തസ്മാദ് വിദ്വാഴ്സ ഏവ മാനസേ രമന്തേ । 10.9
- 10. പ്രിയങ്ഗു തണ്ഡുലൈർ ജുഹോതി പ്രിയാങ്ഗാ ഹ വൈ നാളൈതേ പളതൈർ വൈ ദേവാ അശ്വസ്യാങ്ഗാനി സമദധുഃ പയത്പ്രിയങ്ഗു തണ്ഡുലൈർ ജുഹോതി പ അശിസ്യെ–വാങ്ഗാനി സന്ദധാതി പ്ര.10

14.10.4 ആശീർവാദം

അനേന ദശമവാര പ്രയൂക്ത ശ്രീരുദ്ര മഹാമന്ത്ര ജപ സഹിത നാളികേരജാ–ഭിഷേകേന ച ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ ശ്രീഭവോദ്ഭവഃ സുപ്രീത സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ, അസൃ യജമാനസൃ സകുടുംബസൃ, അത്ര ആഗതാനാം സർവേഷാം മഹാജനാനാം, നിഖില ഭൂമണ്ഡല നിവാസിനാം ക്ഷേമ–സ്ഥൈര്യ–വീര്യ–വിജയ–ആയുരാരോഗൃ പുത്രപൗത്ര ധനധാനൃ കനകവാസ്തു വാഹനാദി സമസ്സൈശ്വര്യ പ്രദഃ തേജോ– ലക്ഷ്മ്യാദീ സമസ്ത പുരുഷാർഥ സിദ്ധി പ്രദശ്ച ഭൂയാദിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോ–ടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥

(തഥാസ്തു – ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം)

14.11 <u>ഏകാദശവാര അഭിഷേകം – ഗന്ധതോയം</u> 14.11.1 <u>ഏകാദശോ ടനൂവാക</u>ഃ

<u>ഏകാദശോ ടനുവാകഃ</u>

ഏകാ ച മേ, തിസ്രയ് മേ, പഞ്ച ച മേ, സപ്ത ച് മേ, നവ ച മ, ഏകാദശ ച മേ, ത്രയോദശ ച മേ, പഞ്ചദശ ച മേ, സപ്പദ്ശ ച മേ, നവദശ ച മ, ഏക്വി∨്ശതിശ്ച മേ, ത്രയോവി ഗ്ശതിശ്ച മേ, പഞ്ചവി ഗ്ശതിശ്ച മേ, സപ്ലവി ഗ്ശതിശ്ച മേ, നവവിയ്യതിശ്ച മ, ഏക്ത്രിയ്യച്ച മേ, ത്രയസ്സി∨്ശച്ച മേ, ചത്സേശ്ച മേ, ടഷ്ടൗ ച മേ, ദ്വാദശ ച മേ, ഷോഡ്ശ ച മേ, വിയ്ശതിശച് മേ, ചതുർവിയ്ശതിശച മേ, ടഷ്ടാവി 🕹 ശതിശ്ച മേ ദാത്രിയ്യച്ച മേ, ഷട്ത്രിയ്യച്ച മേ, ചതാരിയ്യച്ച് മേ, ചതുയാതാരി ഗ്രച്ച മേ , ടഷ്ടാച്താരി ഗ്രച്ച മേ, വാജ്ശ്ച പ്രസവശ്ചാ–പിജശ്ച ക്രതുശ്ച സുവശ്ച മൂർധാ ച വൃശ്ശിയ–ശ്ചാന്തൃായന–ശ്ചാന്തൃശ്ച ഭൗവനശ്ച ഭുവനശ്ചാ–ധിപതിശ്ച । **11 (41)** ഇഡാ ദേവഹൂർ മനുർ യജ്ഞനീർ ബൃഹസ്പതി–രുക്ഥാമദാനി ശ⊻്സിഷദ്–വിശേ ദേവാഃ സൂ്ക്തവാചഃ പൃഥിവിമാതർ മാ മാ ഹി∨്സീർ മധു മനിഷേൃ മധു ജനിഷേൃ മധു വക്ഷൃാമി

14.11.3 ഉപചാര മന്ത്രാഃ

- 1. വൈശ്വാനരായ വിദ്മഹേ ലാലീലായ ധീമഹി । തന്നോ അഗ്നിഃ പ്രചോദയാത് । കാതൃായനായ വിദമഹേ കനൃകുമാരി ധീമഹി । — — — — — — — — — തന്നോ ദുർഗിഃ പ്രചോദയാത് । 11.1
- 2. ഈശാനഃ സർവവിദ്യാനാ-മീശ്വരഃ സർവഭൂതാനാം ബ്രഹ്മാധിപതിർ-ബ്രഹ്മണോടധിപതിർ- ബ്രഹ്മാ ശിവോ മേ അസ്തു സദാശിവോം ॥ 11.2

- 3. ഹിരണ്യപാത്രം മധോം പൂർണം ദ്ദാതി പ്രധവ്യോ ടസാനീതി വ ഏകധാ ബ്രഹ്മണ ഉപഹരതി പ്രഏകധൈവ യജ്മാന ആയുസ്തേജോ ദദാതി പ്ര 11.3 ((നമോ ഹിരണ്യബാഹവേ ഹിരണ്യവർണായ ഹിരണ്യരൂപായ ഹിരണ്യപതയേ ടംബികാപതയ ഉമാപതയേ പശുപതയേ നമോ നമം ല്
- 4. വൈദ്യുതാനാ ് രുദ്രാണാ ് സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി । — വൈദ്യുതീനാ ് രുദ്രാണീനാ ് സ്ഥാനേ സ്വതേജ്സാ ഭാനി । 11.4
- 5. ഏഷ വൈ ദീർഘോ നാമ യജ്ഞഃ । ദീർഘായുഷോ ഹ വൈ തത്ര മനുഷ്യാ ഭവന്തി । യേത്രൈതേന യജ്ഞന യജന്തേ । എഷ വൈ ക്ലൂപ്ലോ നാമ യജ്ഞഃ । കല്പതേ ഹവൈ തത്ര പ്രജാഭ്യോ യോഗക്ഷേമഃ । യേത്രൈതേന യജ്ഞന യജന്തേ । 11.5
- 6. അന്നമയ–പ്രാണമയ–മനോമയ–വിജ്ഞാനാമയ–മാനന്ദമയ–മാത്മാ മേ ശുദ്ധൃന്താം ജ്യോതി–രഹം ്വിരജാ വിപാപ്മാ ഭൂയാസ⊎ സ്വാഹാ । 11.6
- 7. ഈശാനോ മേ മനൃൗ ശ്രിതഃ । മനൃുർ. ഹൃദയേ । ഹൃദയം മയി । അഹമമൃതേ । അമൃതം ബ്രഹ്മണി । 11.7
- 8. പ്രതകാസി നഭസാൻ രൗദ്രേണാനികേന പാഹി മാ്ടഗ്നേ പിപൃഹി മാ മാ മാ ഹി∨്സീഃ । 11.8

- 9. നുാസ ഇതി ബ്രഹ്മാ ബ്രഹ്മാ ഹി പരഃ പരോ ഹി ബ്രഹ്മാ താനി വാ ഏതാനുവരാണി പരായ്സി നുാസ ഏവാതൃരേച യദു ഏവം വേദേ–തുുപനിഷത് ॥ 11.9
- 10. ദശാന്നാനി ജുഹോതി । ദശാക്ഷരാ വിരാട് । വിരാട് കൃഥ്സ്ന–സൃാന്നാദൃസൃാവരുബ്യൈ ॥ 11.10

14.11.4 ആശീർവാദം

അനേന ഏകാദശവാര പ്രയൂക്ത ശ്രീരുദ്ര മഹാമന്ത്ര ജപ സഹിത ഗന്ധതോയാഭിഷേകേന ച ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ ശ്രീആദിത്യാത്മകരുദ്രഃ സർവ മംഗളാജാനി, പ്രകൃഷ്ടെ ശ്രീആദിത്യാത്മകരുദ്രഃ സർവ മംഗളാജാനി, പ്രകൃഷ്ടെ ശ്രീമാതീതവൈഭവം, നാഗരാജ ഭൂഷം, സർവ പാപഹരണം, സർവപ്രാണിഗണ സമുജ്ജീവകം, ബ്രഹ്മാണ്ഡനായകം, സകല കല്യാണഗുണനിലയം സുപ്രീത സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ, അസ്യ യജമാനസ്യ സകുടുംബസ്യ, അത്ര ആഗതാനാം സർവോന്ദര സിദ്ധിപ്രദം, സാംസാരികരോഗ ഗണനിവാരകം, സർവാഭീഷ്ട്ര സിദ്ധി പ്രദശ്ച ഭൂയാദിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോ—ടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥ (തഥാസ്സു — ഇതി ബ്രാഹ്മണ പ്രതി വചനം)

(Note: During Vibhuti Abhishekam the Ruthvik performing the abhishekam shall recite "Mrutha Sanjeevani Suktham".)

In case of Rudraabhishekam, please proceed to Chapter No.19 for Uttaranga / Punar Pooja and perform Abhishekam thereafter. For Rudra Ekadasani or Maha Rudram, proceed to Rudra Kramam)

ഓം നമോ ബ്രഹ്മണ നമോ അസ്ത്വഗ്നയേ നമഃ പൃഥിവൈൃ നമ ഓഷധീഭൃഃ । നമോ വാചേ നമോ വാചസ്പതയേ നമോ വിഷ്ണവേ ബൃഹതേ കരോമി ॥ (3 times)

(Perform the Udvaapanam of Sadhyo Jaatha Kalasham or Pancha Kalashams and perform abhishekam to the deities)

Section 4 – Rudra Kramam

15 <u>ഗണപതി ധ്യാനം</u>

| ളാം ഗണാനാം ത്വാ " | ത്വാ ഗണപതിം |
|-------------------------|----------------------------------------------|
| ഗണപ്തിഋ് ഹവാമഹേ – | ഗണപതിമിതി ഗണ – പതിം > |
| ഹവാമഹേ കവിം | കവിം കവീനാം |
| കവീനാമു പമശ്രവസ്തമം | ഉപമശ്രവസ്തമ മിത്യുപമശ്രവഃ– തമം > |
| ജോഷ്പരാജം ബ്രഹ്മണാം | — ജൃഷ്ഠരാജമിതി ജ്യേഷ്ഠ – പ – രാജം > |
| ബ്രഹ്മണാം ബ്രഹ്മണഃ | ബ്രഹ്മണസ്പതേ > |
| പത ആ | ആ നഃ |
| <u>നശ്ശ</u> ൃണ്വന്ന് | ശ്യണ്യന്നൂതിഭിഃ |
| ഊതിഭിസ്സീദ | ഊതിഭിരിത്യൂതി – ഭിഃ |
| സീദ സാദനം | സാദനമിതി സാദനം |

16 <u>ശ്രീരുദ്രക്രമ</u>ഃ

16.1 <mark>ശ്രീരുദ്രക്രമഃ – പ്രഥമോ</mark> ടനുവാകഃ

ഓം നമോ ഭഗവതേ രുദ്രായ

| ദാം നമസ്തേ | തേ രുദ്ര |
|---------------------------|-----------------|
| രുദ്ര മനൃവേ > | മനൃവ ഉതോ |
| ഉതോ തേ > | ഉതോ ഇത്യുതോ |
| ് ത ഇഷവേ _ | ല ല ഇഷവേ നമഃ |
| നമ ഇതി നമഃ | നമസ്തേ |
| തേ അസ്തു | അസ്തു ധന്വനേ |
| നധാധേ ബാസിഭിറാം > | ബാഹുഭൃാമുത |
| ബാഹുഭ്യാമിതി ബാഹു – ഭ്യാം | ഉത തേ > |
| തേ നമഃ | നമ ഇതി നമഃ |
| യാ യേ > | ത് ഇഷുഃ |
| ഇഷുശ്ശിവതമാ | ശിവതമാ ശിവം |
| ശിവതമേതി ശിവ – തമാ > | ശിവം ബഭൂവ |
| ബഭൂവ തേ | തേ നവുഃ |
| ധനുരിതി ധനുഃ | ശിവാ ശ്രവ്യാ > |
| വ [്] റ യാ | യാ തവ |
| തവ തയാ > | തയാ നഃ |
| നോ രുദ്ര | രുദ്ര മൃഡയ |

| മൃഡയേതി മൃഡയ | യാ തോ > |
|-------------------------|-------------------------------|
| തേ രുദ്ര | രുദ്ര ശിവാ |
| ശിവാ തനൂഃ — — | തനൂരഘോരാ — |
| അഘോരാപാപകാശിനീ — | അപാപകാശിനീതൃപാപ – കാശിനീ > |
| തയാ നഃ | _ ന്യൂനുവാ > |
| തനുവാ ശന്തമയാ | ശന്തമയാ ഗിരിശന്ത |
| ശന്ത്മയേതി ശം – തമയാ > | ഗിരിശന്താഭി |
| ഗിരിശന്തേതി ഗിരി – ശന്ത | അഭിചാകശീഹി |
| ചാകശീഹീതി ചാകശീഹി | യാമിഷും > |
| ഇഷും ഗിരിശന്ത | ഗിരിശന്ത ഹസ്തേ > |
| ഗിരിശന്തേതി ഗിരി – ശന്ത | ഹസ്തേ ബിഭർ.ഷി |
| ബിഭർ.ഷൃസ്ത് വേ | അസ്ത്രവ ഇതൃസ്തവ |
| ശിവാം ഗിരിത്ര | ഗിരിത്ര താം |
| ഗിരിത്രേതി ഗിരി – ത്ര | താം കുരു |
| കുരു മാ | മാ ഹിയ്സീഃ |
| ഹി~്സീഃ പുരുഷം | പുരുഷം ജഗത് |
| ജഗദിതി ജഗത് – – | ശിവേന വചസാ — — |
| വചസാ ത്വാ | ത്വാ ഗിരിശ |

| ഗിരിശാച്ഛ | അച്ഛാ വദാമസി |
|-----------------------|-------------------------------------------|
| വദാമസീതി വദാമസി | തനാ ധഃ |
| പം ധൃവം > | സർവമിത് |
| ഇജ്ജഗത് | ം ജഗദയക്ഷ്മം — |
| അയക്ഷ്മഗ് സുമനാഃ > | സുമനാ അസ്ത് |
| സുമനാ ഇതി സു – മനാഃ > | അസദിതൃസ്ത് |
| അഭധൃവോചത് | അവോചദധിവക്താ |
| അധിവക്താ പ്രഥമഃ | അധിവക്തേതൃധി – വക്താ |
| പ്രഥമോ ദൈവൃഃ | ദൈവ്യാ ഭിഷക് — |
| ഭിഷഗിതി ഭിഷക് | അഹീ৺ശ്ച |
| ച സർവാൻ | സർവാൻ ജംഭയന്ന് |
| ജംഭയൻഥ് സർവാഃ > | ഗര്യാരു പ |
| ച യാതുധാനൃഃ | യാതുധാന്യ ഇതി യാതു – — T — ധാന്യഃ — |
| അസൗ യഃ | യസ്താമ്രഃ |
| താമ്രോ അരുണഃ | അരുണ ഉത |
| ഉത ബഭ്രുഃ | ബഭുഃ സുമങ്ഗലഃ |
| സുമങ്ഗല ഇതി സു–മങ്ഗലഃ | യേ ച |
| ചേമാം — | ഇമാ∀് രൂദ്രാഃ |

| രുദ്രാ അഭിതഃ | അഭിതോ ദിക്ഷു |
|-----------------------------|--------------------------------|
| ഭിക്ഷു ശ്രിതാഃ | |
| സഹസ്രശോടവ് | സഹസ്രശ ഇതി സഹസ്ര–ശഃ |
| ് അവൈഷാം | ഏഷാ⊻് ഹേഡഃ |
| ഹേഡ് ഈമഹേ | ഈമഹ ഇതിമഹേ |
| അസൗ യഃ | യോടവസർപതി |
| അവസർപതി നീലഗ്രീവഃ | അവസർപതീതൃവ – സർപതി |
| നീലഗ്രീവോ വിലോഹിതഃ | നീലഗ്ീവ ഇതി നീല – ഗ്രീവഃ |
| വിലോഹിത ഇതി വി–ലോഹിതഃ | ല ഉതൈനം |
| ഏനം ഗോപാഃ | ഗോപാ അദൃശന്ന് |
| ഗോപാ ഇതി ഗോ – പാഃ | അദൃശന്നദൃശന്ന് |
| അദൃശന്നുദഹാര്യഃ | ഉദഹാരൃ ഇത്യുദ – ഹാരൃഃ |
| ഉതൈനം > | —— ൢവ്വശാ ം ൢവിശാ > |
| വിശ്വാ ഭൂതാനി | ഭൂതാനി സഃ |
| സ ദുഷ്ട | ദ്യഷ്ടോ മൃഡയാതി |
| മൂഡയാതി നഃ | ന ഇതി നഃ |
| നമോ അസ്തു | അസ്തു നീലഗ്രീവായ |
| നീലഗ്രീവായ സഹസ്രാക്ഷായ — | നീലഗ്രീവായേതി നീല – ഗ്രീവായ |

| | (0)0 |
|-----------------------|----------------------------------|
| സഹസ്രാക്ഷായ മീഢുഷേ > | സഹസ്രാക്ഷായേതി സഹസ്ര – ആക്ഷായ |
| മീഢുഷ ഇതി മീഢുഷേ > | അഥോ യേ |
| അഥോ ഇതൃഥോ > | യേ അസ്യ |
| അസു സത്വാനഃ ' | സത്വാനോടഹം |
| അഹന്തേഭ്യഃ — | ് തേട്യോടകരം |
| ് അകരന്നമഃ — —— | നമ ഇതി നമഃ |
| പ്രമുഞ്ച | മുഞ്ച ധന്വനഃ |
| നധാധയാം | യാച്ചാഭതോം > |
| ഉഭയോരാർത്നിയോഃ | ആർത്നിയോർ ജ്യാം |
| ജ്യാമിതിജ്യാം | താശ്ച |
| ച തേ | തേ ഹസ്തേ > |
| ഹസ്ത ഇഷവഃ | ഇഷവഃ പരാ > — |
| പരാ താഃ | താ ഭഗവഃ |
| ഭഗവോ വപ | ഭഗവ ഇതി ഭഗ – വഃ |
| വപേതി വപ | അവതതൃ ധനുഃ |
| അവതതൃതൃവ – തതൃ – – | ധനുസ്ത്വം |
| യാഹ് ധസസ്രാജ്ഷ | സഹസ്രാക്ഷ ശതേഷുധേ |
| സഹസ്രാക്ഷേതി സഹസ്ര – | ് ശതേഷുധ ഇതി ശത– |
| അക്ഷ — — | <u> </u> |

| നിശീരൃ ശലുാനാം > | നിശീരേൃതി നി – ശീരൃ |
|------------------------|------------------------|
| ശലൃാനാം മുഖാ > | മുഖാ ശിവഃ |
| ശിവോ നഃ | നഃ സുമനാഃ > |
| സുമനാ ഭവ | സുമനാ ഇതി സു – മനാഃ > |
| ഭവേതി ഭവ | വിജ്വം ധനുഃ |
| വിജ്യമിതി വി – ജൃം > | ധനുഃ കപർദിനഃ |
| കപർദിനോ വിശ്ലൃഃ | വിശ്ല്യോ ബാണ്വാൻ |
| വിശ്ലൃ ഇതി വി – ശലൃഃ | ബാണവാ∀് ഉത |
| ബാണ്വാനിതി ബാണ് – വാൻ | ഉതേത്യൂത |
| അനേശന്നസ്യ | ് അസ്യേഷവഃ — |
| ് ഇഷവഃ ആഭുഃ | ആഭുരസൃ |
| അസ്യ നിഷങ്ഗഥിഃ | നിഷങ്ഗഥിരിതി നിഷങ്ഗഥിഃ |
| യാ തേ | തേ ഫേതിഃ |
| ഹേതിർ മിഡുഷ്ടമ | മീഢുഷ്ടമ ഹസ്തേ > |
| മീഡുഷ്ടമേതി മീഡുഃ – തമ | ഹസ്തേ ബഭൂവ — |
| ബഭൂവ തേ _ | തേ ധനുഃ |
| ധനുരിതി ധനുഃ | തയാടസ്മാൻ |
| അസ്മാൻ. വിശ്വതഃ | പ് വിശ്വയക്താം |
| ്വമയക്ഷ്മയാ > — | അയക്ഷ്മയാ പരി – – |

| പരിബ്ഭുജ | ഭിജേയ്യ ഭിജ |
|---------------------------------|---------------------------------------|
| നമസ്തേ | തേ അസ്തു |
| അസ്തായുധായ | ആയുധായാനാതതായ |
| അധായയായ ന ⁷ ഷ്പ്രേ > | അനാതതായേതൃനാ – തതായ |
| ധൃഷ്ണവ ഇതി ധൃഷ്ണവേ > | ഉഭാഭ്യാമുത — — |
| <u>ව</u> ඟ | തേ നമഃ |
| നമോ ബാഹുഭൃാം > — | ബാഹുഭൃാന്തവ |
| ബാഹുഭ്യാമിതി ബാഹു – | തവ ധന്വനേ |
| ഭൃാം > | — — — — — — — — — — — — — — — — — — — |
| ധന്വന്ന ഇതി ധന്വനേ | പരി തേ |
| യ നധുധഃ | ധന്വനോ ഹേതിഃ — |
| _േതിരസ്മാൻ | അസ്മാൻ വൃണക്തു _ |
| വൃണക്തു വിശ്വതഃ | വിശ്വത ഇതി വിശ്വതഃ |
| അഥോ യഃ | അഥോ ഇതൃഥോ > |
| യ ഇഷുധിഃ | ഇഷുധിസ്തവ |
| ഇഷുധിരിത്വഷു – ധിഃ | തവാരേ |
| ആരേ അസ്മത് | അസ്മന്നി _ |
| നിധേഹി | ധേഹിതം |
| തമിതി തം | |
| | |

16.2 <mark>ശ്രീരുദ്രക്രമഃ–ദ്വിതീയോ</mark> ടനുവാകഃ

| നമോ ഹിരണൃബാഹവേ _ | ഹിരണൃബാഹവേ സനാന്യേ > |
|----------------------------------|--------------------------------|
| ഹിരണൃബാഹവ ഇതി ഹിരണൃ – ബാഹവേ > | സേനാനേ് ദിശാം |
| സേനാന്യ ഇതി സേനാ – | ദിശാഞ്ച — |
| ച പതയേ _ | പതയേ നമഃ |
| നമോ നമഃ _ | നമോ വൃക്ഷേഭ്യഃ |
| വ്യക്ഷേഭ്യോ ഹരികേശേഭ്യഃ | ഹരികേശേഭ്യഃ പശൂനാം |
| ഹരികേശേഭ്യ ഇതി ഹരി – കേശേഭ്യഃ | പശൂനാം പതയേ |
| പതയേ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമഃ സസ്പിഞ്ജരായ | സസ്പിഞ്ഞ്രായ ത്വിഷിമതേ |
| ത്വിഷ ¹ മതേ പഥീനാം | ത്വിഷീമത ഇതി ത്വിഷി – മതേ > |
| പഥീനാം പതയേ – – | പതയേ നമഃ — |
| നമോ നമഃ | നമോ ബഭ്ലുശായ |
| ബഭ്ലുശായ വിവൃാധിനേ > | വിവൃാധിനേ ടന്നാനാം |

| | 1 |
|-------------------------------------|------------------------------------------------|
| വിവ്യാധിന ഇതി വി – വ്യാധിനേ > | അന്നാനാം പതയേ — |
| പതയേ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമോ ഹരികേശായ | ഹരികേശായോപവീതിനേ > |
| ഹരികേശായേതി ഹരി – കേശായ – – – | ഉപവീതിനേ പുഷ്ടാനാം > |
| ഉപവീതിന ഇത്യുപ – വീതിനേ > | പുഷ്ടാനാം പതയേ |
| പതയേ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമോ ഭവസൃ | ഭവസൃ ഹേതൈൃ _ |
| പ്രത്യൈ ജഗതാം — | ജഗതാം പതയേ — |
| പതയേ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമോ രുദ്രായ | രുദ്രായാതതാവിനേ > |
| ആതതാവിനേ ക്ഷേത്രാണാം ———— | ആതതാവിന ഇത്യാ – ——— " — തതാവിനേ > — — |
| ം പതയേ — | പതയേ നമഃ — |
| നമോ നമഃ — | നമഃ സൂതായ |
| സൂതായാഹന്ത്യായ | അഹന്ത്യായ വനാനാം — |
| വനാനാം പതയേ — | പതയേ നമഃ — |

| നമോ നമഃ | നമോ രോഹിതായ |
|--------------------------------------------|-------------------------|
| രോഹിതായ സ്ഥപതയേ | സ്ഥപതയേ വൃക്ഷാണാം > |
| വൃക്ഷാണാം പതയേ | പതയേ നമഃ — |
| നമോ നമഃ — | നമോ മന്ത്രിണേ > |
| മന്ത്രിണേ വാണിജായ — | വാണിജായ കക്ഷാണാം |
| കക്ഷാണാം പതയേ — | പതയേ നമഃ |
| നമോ നമഃ — | നമോ ഭുവന്തയേ > |
| ഭുവന്തയേ വാരിവസ്ക്യൂതായ | വാരിവസ്കൃതായൗഷധീനാം |
| വാരിവസ്കൃതായേതി ——— പ വാരിവഃ – കൃതായ | ഓഷധീനാം പതയേ — |
| പതയേ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമ ഉച്ചെർഘോഷായ | ഉച്ചെർഘോഷായാക്രന്ദയതേ |
| ഉച്ചെർഘോഷായത്യുച്ചൈഃ – — | ആക്രന്ദയതേ പത്തീനാം |
| ആക്രന്ദയത ഇത്യാ- ക്രന്ദയതേ — — — — | പത്തീനാം പതയേ |
| പതയേ നമഃ — | നമോ നമഃ — |
| നമഃ കൃഥ്സ്നവീതായ | കൂഥ്സ്നവീതായ ധാവത |
| കൃഥ്സ്നവീതായേതി കൃഥ്സ്ന – വീതായ | ധാവേതേ സത്വനാം |

| | (0)- | _ |
|---------------|----------|---|
| 1 1 | 1 1 | |
| സത്വനാം പതയേ | പതയേ നമഃ | |
| _ | _ | |
| | | |
| നമ ഇതി നമഃ | | |
| (UM 500) (UM) | | |
| – – | | |

16.3 **ശ്രീരുദ്രക്രമഃ–തൃതീയോ** ടനുവാകഃ

| - 0 0 | |
|-------------------------|-------------------------------------------|
| നമഃ സഹമാനായ — | സഹമാനായ നിവൃാധിനേ > |
| നിവ്യാധിന് ആവ്യാധിനിനാം | നിവ്യാധിന ഇതി നി – വ്യാധിനേ > |
| ആവ്യാധിന്നാം പതയേ — | ആവ്യാധിനിനാമിതുാ – വ്യാധിനിനാം |
| പതയേ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമഃ കകുഭായ | കകുഭായ നിഷങ്ഗിണേ |
| നിഷങ്ഗിണേ സ്തേനാനാം > | നിഷങ്ഗിണ ഇതി — — — " നി – സങ്ഗിനേ > |
| സ്തേനാനാം പതയേ | പതയേ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമോ നിഷങ്ഗിണേ > |
| നിഷങ്ഗിണ് ഇഷുധിമതേ > | നിഷങ്ഗിണ ഇതി " നി – സങ്ഗിനേ > |
| ഇഷുധിമതേ തസ്ത്രരാണാം | ഇഷുധിമത ഇതിഷുധി – മതേ> |
| തസ്കരാണാം പതയേ | പതയേ നമഃ — |
| നമോ നമഃ — | നമോ വഞ്ചതേ — |

| വഞ്ചതേ പരിവഞ്ചതേ | പരിവഞ്ഞ് സ്തോയൂനാം |
|-----------------------------|---------------------------------------------|
| പരിവഞ്ചത ഇതി പരി–വഞ്ചതേ | സ്തായൂനാം പതയേ |
| പതയേ നമഃ | നമോ നമഃ — |
| നമോ നിചേരവേ > | നിചേരവേ പരിചരായ |
| നിചേരവ ഇതി നി – ചേരവേ > | പരിചരായാരണൃാനാം — — — |
| പരിചരായേതി പരി – ചരായ | ന്തരണ്യാനാം പതയേ — |
| പതയേ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമഃ സൂകാവിഭൃഃ — | സൃകാവിഭൃാ ജിഘാ∨്സദ്ഭൃഃ |
| സൂകാവിഭ്യ ഇതി സൂകാവി–ഭൃഃ | ജിഘാ <mark>ഴ്</mark> സദ്ഭ്യോ മുഷ്ഷതാം |
| ജിഘായ്സദ്ഭൃ ഇതി | മുഷ്ണതാം പതയേ |
| ജിഘാഴ്സത് – ഭൂഃ | |
| പതയേ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമോടസിമദ്ഭൃഃ — | അസിമദ്ഭ്യോ നക്തം > |
| അസിമദ്ഭൃ ഇതൃസിമത് – ഭൃഃ | നക്തഞ്ചരദ്ഭൃഃ — |
| ചരദ്ഭൃഃ പ്രകൃന്താനാം | ചരദ്ഭ്യ ഇതി ചരത് – ഭ്യഃ |
| പ്രകൃന്താനാം പതയേ | പ്രകൃന്താനാമിതി — — " പ്ര – കൃന്താനാം |
| പതയേ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമ ഉഷ് <u>ണീ</u> ഷിണേ > | ഉഷ്സീഷിണേ ഗിരിചരായ |

| <u></u> | തം |
|------------------------------------|---------------------------------------------------------------|
| ഗിരിചരായ കുലുഞ്ചാനാം > | ഗിരിചരായേതി ഗിരി – ചരായ – – – |
| കുലുഞ്ചാനാം പതയേ | പതയേ നമഃ — |
| നമോ നമഃ | നമ ഇഷുമദ്ഭ്യഃ – |
| ഇഷുമദ്ഭ്യോ ധന്വാവിഭൃഃ — | ഇഷുമദ്ഭൃ ഇതീഷുമത് – ഭൃഃ |
| നധാവിഭൂശ്ച | നധാവിഭു ഇതി ധമ്പാവി – ഭുഃ |
| ച വഃ | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമ ആതമ്പാനേഭ്യഃ — |
| ആതന്വാനേഭ്യഃ പ്രതിദധാനേഭ്യഃ ——— | ഇത്യാ – തുന്നാനേഭ്യു — — — — — — — — — — — — — — — — — — — |
| പ്രതിദധാനേഭൃശ്ച — — | പ്രതിദധാനേഭ്യ ഇതി — — പ പ്രതി – ദധാനേഭ്യഃ |
| ച വഃ | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമ ആയച്ഛദ്ഭൃഃ |
| ആയച്ഛദ്ഭ്യോ വിസ്യുജദ്ഭ്യ <u>ം</u> | ് ആയച്ഛദ്ഭ്യ ഇത്യായച്ഛത് – ഭ്യഃ |
| _ വിഗ്ഗീങളുഭ [ീ] ശ്ത | വിസ്യജദ്ഭ്യ ഇതി വിസ്യജത് – ഭ്യഃ |
| ച വഃ – – | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമോടസൃദ്ഭൃഃ |
| അസൃദ്ഭൃാ വിദ്ധൃദ്ഭൃഃ | അസൃദ്ഭൃ ഇതൃസൃത് – ഭൃഃ |

| വിദ്ധൃദ്ഭൃശ്ച | വിദ്ധ്യദ്ഭ്യ ഇതി വിദ്ധ്യത് – ഭ്യഃ |
|--------------------------------|-----------------------------------|
| ച വഃ | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമ ആസിനേഭ്യഃ |
| ആസിനേഭ്യഃ ശയാനേഭ്യഃ | ശയാനേഭൃശ്ച |
| ച വഃ | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ _ | നമഃ സാപദ്ഭൃഃ — |
| സ്വപദ്ഭ്യോ ജാഗ്രദ്ഭ്യ <u>ം</u> | സ്വപദ്ഭൃ ഇതി സ്വപത് – ഭൃഃ |
| ജാസ്രുഭീശ്ച പ | ജാഗ്രദ്ഭ്യ ഇതി ജാഗ്രത് – ഭ്യഃ |
| ച വ <u>ം</u> | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമസ്തിഷ്ഠദ്ഭ്യഃ |
| തിഷ്ഠദ്ഭ്യോ ധാവങ്ഭൃഃ | തിഷ്ഠദ്ഭ്യ ഇതി തിഷ്ഠത് – ഭ്യഃ |
| നാവുഭീശ്ത | ധാവങ്ങൃ ഇതി ധാവത് – ഭൃഃ |
| ച വ <u>ം</u> | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമഃ സഭാഭൃഃ |
| സഭാഭൃഃ സഭാപതിഭൃഃ — | സഭാപതിഭൃശ്ച — |
| സഭാപതിഭൃ ഇതി സഭാപതി–ഭൃഃ | ച വഃ |
| വോ നമഃ — | നമോ നമഃ |
| നമോ അശോഭ്യഃ — | ് അശോഭ്യോടശാപതിഭ്യഃ — |
| ് അശാപതിഭൃശ്ച | അശിപതിഭൃ ഇതൃശിപതി – ഭൃഃ |

| ച <u>വ</u> ഃ | വോ നമഃ |
|--------------|--------|
| നമ ഇതി നമഃ | |

16.4 <mark>ശ്രീരുദ്രക്രമഃ – ചതൂർത</mark>്ഥോ ടനൂവാകഃ

| നമ ആവ്യാധിനീഭ്യഃ | ആവ്യാധിന്പിഭ്യോ വിവിദ്ധൃന്തീഭ്യഃ |
|------------------------------------------|---------------------------------------------|
| ആവ്യാധിന്പീഭ്യ ഇത്യാ – വ്യാധിന്പീഭ്യഃ | വിവിദ്ധൃന്തീഭൃശ്ച _ |
| വിവിദ്ധൃന്തീഭൃ ഇതി വി – വിദ്ധൃന്തീഭൃഃ | ച <u>ന</u> ഃ |
| വോ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമ ഉഗണാഭ്യഃ — | ഉഗണാഭൃസ്തൃ <i>പ്</i> ഹതീഭൃഃ |
| യു ഗ്ഡയൂഭൂശ്ച | ച വ <u>ം</u> |
| വോ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമോ ഗ <u>ൂ</u> ഥ്സേഭ്യഃ | ഗൂഥ്സേഭ്യോ ഗൂഥ്സപതിഭ്യഃ |
| ഗ <u>ൃ</u> ഥ്സപതിഭൃശ്ച | ഗൂഥ്സപ്തിഭൃ ഇതി ഗൂഥ്സപതി – ഭൃഃ |
| ച വഃ | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമോ വ്രാതേഭ്യഃ — |
| വാതേഭ്യോ വ്രാതപതിഭ്യഃ | വാതപതിഭൃശ്ച |
| വാതപതിഭൃ ഇതി വ്രാതപതി–ഭൃഃ | ച വ <u>ം</u> |

| വോ നമഃ | നമോ നമഃ |
|-------------------------------|-----------------------------|
| നമോ ഗണേഭൃഃ | ഗണേഭ്യോ ഗണപതിഭ്യഃ — |
| ഗണപതിഭൃശ്ച – | ഗണപതിഭൃ ഇതി ഗണപതി–ഭൃഃ |
| ച വഃ – – | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമോ വിരൂപേഭ്യഃ — |
| വിരൂപേഭ്യോ വിശ്വരൂപേഭ്യഃ — | വിരൂപേഭ്യ ഇതി വി – രൂപേഭ്യഃ |
| | വിശ്വരൂപേഭ്യ ഇതി |
| _ _ വിശാരൂപേഭൃശ്ച | വിശാ – രൂപേഭ്യഃ |
| ച വഃ – – | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമോ മഹദ്ഭൃഃ — |
| മഹദ്ഭ്യഃ ക്ഷുല്ലകേഭ്യഃ | മഹദ്ഭൃ ഇതി മഹത് – ഭൃഃ |
| <u>കു</u> പ്പില് കേഭിശ്ച പ | ച വ <u>ം</u> |
| വോ നമഃ | നമോ നമഃ |
| നമോ രഥിഭൃഃ | രഥിഭേ്യാ ടരഥേഭ്യഃ — |
| രഥിഭൃ ഇതി രഥി – ഭൃഃ | —— അരനേഭ്യത്വ |
| ച വ <u>ം</u> | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമോ രഥേഭ്യഃ — |
| നമ്പേട്യോ രഥപതിഭ്യഃ — | ¹ രഥപതിഭൃശ്ച |
| രഥപതിഭൃ ഇതി രഥപതി – ഭൃഃ | ച വഃ |
| വോ നമഃ | നമോ നമഃ — |

| | 331.2 (1.00) |
|--------------------------------|--------------------------------------|
| നമഃ സേനാഭൃഃ _ | സേനാഭ്യ സ്സേനാനിഭ്യഃ |
| സേനാനിഭൃശ്ച | സേനാനിഭ്യ ഇതി സേനാനി–ഭൃഃ |
| ച വഃ | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമഃ ക്ഷത്തൃഭൃഃ — |
| ക്ഷത്തുഭൃഃ സങ്ഗ്രഹീതുഭൃഃ _ | ക്ഷത്തുഭ്യഃ ഇതി ക്ഷത്തു – ഭ്യഃ |
| സങ്ഗ്രഹീതൃഭൃശ്ച | സങ്ഗ്രഹീതൃഭൃ ഇതി സങ്ഗ്രഹീതൃ – ഭൃഃ |
| | |
| ച വഃ | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമസ്തക്ഷഭ്യഃ _ |
| നക്ഷഭേദാ രഥകാരേഭുഃ — | തക്ഷഭ്യ ഇതി തക്ഷ – ഭ്യഃ |
| രഥകാരേഭൃശ്ച പ | രഥകാരേഭ്യ ഇതി രഥ–കാരേഭ്യഃ –– – |
| ച വഃ – – | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമഃ കുലാലേഭ്യഃ — |
| ് ന്നാലേട്യും കർമാരേഭ്യും — | കർമാരേഭൃശ്ച — |
| ച വ <u>ം</u> | വാ നമഃ — |
| നമോ നമഃ | നമഃ പുഞ്ജിഷ്ട്രേഭ്യഃ |
| പുഞ്ജിഷ്ട്രഭ്യോ നിഷാദേഭ്യഃ | നിഷാദേഭൃശ്ച – – |
| ച വ <u>ം</u> | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ — | ് നമ ഇഷുകൃദ്ഭ്യഃ |
| | |

| ഇഷുകൃദ്ഭ്യോ ധന്വകൃദ്ഭ്യഃ | ഇഷുകൃദ്ഭ്യ ഇതിഷുകൃത്–ഭ്യഃ |
|-----------------------------|-------------------------------|
| — — നധായുദ്ഭൃശ്ച | ധന്വകൃദ്ഭ്യ ഇതി ധന്വകൃത്–ഭ്യഃ |
| ച വ <u>ം</u> | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ | നമോ മൃഗയുഭൃഃ |
| മൃഗയുഭൃഃ ശ്വനിഭൃഃ | മൃഗയുഭ്യ ഇതി മൃഗയു – ഭ്യഃ |
| — ശാധ്യഭൂശ്ച | ശ്വനിഭൃ ഇതി ശ്വനി – ഭൃഃ |
| ച വ <u>ം</u> | വോ നമഃ |
| നമോ നമഃ — | നമഃ ശ്വഭ്യഃ — |
| ശാഭ ⁷ ശ്രാപയിഭുഃ | ശാഭ്യഃ ഇതി ശാ – ഭ്യഃ |
| ഗുപതിഭൃശ്ച സാപതിഭൃശ്ച | ശാപതിഭൃ ഇതി ശാപതി – ഭൃഃ |
| ച വഃ – – | വാ നമഃ — |
| നമ ഇതി നമഃ | |

16.5 <mark>ശ്രീരുദ്രക്രമഃ പഞ്ചമോ</mark> ടനുവാകഃ

| • | • |
|------------|---------------------|
| നമോ ഭവായ | ഭവായ ച |
| ച തിദ്രാത് | ത്രാത് ച |
| ച നമഃ – | നമശ്ശൂർവായ |
| ച ച | ച പശുപതയേ – – – |
| പശുപതയേ ച | പശുപതയ ഇതി പശു–പതയേ |
| ച നമഃ _ | നമോ നീലഗ്രീവായ |

| നീലഗ്രീവായ ച | നീലഗ്രീവായേതി |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------|
| (1) EU(1) (1) EU | |
| | നീല – ഗ്രീവായ — — — |
| ച ശിതികണ്ഠായ | ശിതികണ് <mark>റാ</mark> യ ച |
| ശിതികണ്ഠായേതി | ച നമഃ |
| ശിതി – കണ്ഠായ | |
| നമഃ കപർദിനേ > | കപർദിനേ ച |
| ച വ്യൂപ്ലകേശായ | വ്യൂപ്ലകേശായ ച |
| വ്യൂപ്തകേശായേതി | ച നമഃ – |
| വ്യൂപ്ത – കേശായ – – – | |
| നമഃ സഹസ്രാക്ഷായ — | സഹസ്രാക്ഷായ ച |
| സ്ഫസ്രാക്ഷായേതി | |
| സഹസ്ര – അക്ഷായ | ച ശതധന്വനേ |
| ് ശതധമ്പനേ ച — | യയന്ധാധ ഇയ്യ |
| | |
| ച നമഃ – | നമോ ഗിരിശായ |
| ഗിരിശായ ച | ച ശിപിവിഷ്ടായ |
| ശിപിവിഷ്ടായ ച | ശിപിവിഷ്ടായേതി |
| | ശിപി – വിഷ്ടായ |
| ച നമഃ – | നമോ മീഡുഷ്ടമായ _ |
| മീഡുഷ്ടമായ ച | മീഡുഷ്ടമായേതി _ |
| | മീഡുഃ – തമായ – – – |

| ചേഷുമതേ | ഇഷുമതേ ച |
|---------------------|---------------------|
| ഇഷുമത ഇതീഷു – മതേ > | ച നമഃ – |
| നമോ ഹ്രസ്വായ | (ഫ്രസ്വായ ച |
| ച വാമനായ | വാമനായ ച |
| ച നമഃ _ | നമോ ബൃഹതേ |
| ബൃഹതേ ച | ച വർ.ഷിയസേ |
| വർ.ഷീയസേ ച | ച നമഃ – |
| നമോ വൃദ്ധായ | വ്യാത് ച |
| ച ഗം ്വീങ്ബധേ | — ഹം ്വീങ്നിധേ ച |
| സം വൃദ്ധിന് ഇതി | ച നമഃ – |
| ഗം – ഗ്വീങ്ങവേ — | |
| നമോ അഗ്രിയായ | അഗ്രിയായ ച |
| ച (പഥമായ – –– | (പഥമായ ച |
| ച നമഃ _ | നമ ആശവേ > |
| ആശവേ ച | ചാജിരായ |
| അജിരായ ച | ച നമഃ – |
| നമഃ ശീഘ്രിയായ | ശീഘ്രിയായ ച |
| ച ശീഭ്യായ – | ശീഭ്യായ ച |
| ച നമഃ – | നമ ഊർമ്യായ — |
| ഉൗർമ്യായ ച | ചാവസ്വന്യായ |
| | |

ശിവ സ്തുതി

| അവസ്വന്യായ ച | അവസാന്യായേത്വ–സാന്യായ |
|--------------|-----------------------|
| ച നമഃ – | നമഃ സ്രോതസ്യായ |
| സ്രോതസൃായ ച | ച ദ്വീപ്യായ |
| ദ്വീപൃായ ച | ചേതി ച |

16.6 **ശ്രീരുദ്രക്രമ**ഃ ഷഷ്ട്രോ ടനുവാകഃ

| നമോ ജേപ്പുായ | ജേ്യേഷ്ഠാത ച |
|------------------------------|-----------------------|
| ച കനിഷ്ഠായ | കനിഷ്ഠായ ച |
| ച നമഃ – | നമഃ പൂർവജായ — |
| പൂർവജായ ച | പൂർവജായേതി പൂർവ – ജായ |
| ചാപരജായ | അപരജായ ച ——— |
| അപരജായേതൃപര – ജായ ––– | ച നമഃ _ |
| നമോ മദ്ധ്യമായ | മദ്ധ്യമായ ച |
| ചാപഗല്ഭായ ——— | അപഗല്ഭായ ച ——— |
| അപഗല്ഭായേതൃപ – ഗല്ഭായ ––– | ച നമഃ _ |
| നമോ ജഘനൃായ | = – ജഘന്യായ ച |
| ച ബുദ്ധ്നിയായ | ബുദ്ധ്നിയായ ച |
| ച നമഃ _ | നമസ്സോഭ്യായ |
| സോഭ്യായ ച | ച പ്രതിസര്യായ |

| | (0)- |
|-----------------|-------------------------------------------|
| പ്രതിസര്യായ ച | പ്രതിസര്യായേതി — — — പ്രതി – സര്യായ |
| ച നമഃ | നമോ യാമ്യായ |
| യാമൃായ ച | ച ക്ഷേമ്യായ – |
| ക്ഷേമൃായ ച | ച നമഃ – |
| നമ ഉർവര്യായ | ഉർവരുായ ച |
| ച ബല്യായ | ഖല്യായ ച |
| ച നമഃ _ | നമഃ ശ്ലോക്യായ |
| ശ്ലോകൃായ ച | ചാവസാനൃായ |
| അവസാന്യായ ച | അവസാന്യായേതൃവ – |
| | സാന്യായ |
| ച നമഃ – | നമോ വന്യായ — |
| വന്യായ ച | ച കക്ഷ്യായ |
| യയു്ളാത ച | ച നമഃ – |
| നമഃ ശ്രവായ | (ശവായ ച |
| ച പ്രതിശ്രവായ | പ്രതിശ്രവായ ച |
| പ്രതിശ്രവായേതി | ച നമഃ – |
| പ്രതി – ശ്രവായ | |
| നമ ആശുഷേണായ | ആശുഷേണായ ച |

| ആശുഷേണായേത്യാശു– | ചാശുരഥാത |
|------------------------|-------------------------|
| സേനായ | |
| <u>~</u> യെശുരഥായ ച | ആശുരഥായേത്യാശു – രഥായ |
| ച നമഃ _ | നമഃ ശൂരായ |
| ശൂരായ ച | ചാവഭിന്ദതേ |
| അവഭിന്ദതേ ച | അവഭിന്ദത ഇതൃവ – ഭിന്ദതേ |
| ച നമഃ _ | നമോ വർമിണേ > |
| വർമിണേ ച | ച വരൂഥിനേ > |
| വരൂഥിനേ ച | ച നമഃ – |
| നമോ ബില്ലിനേ > | ബില്ലിനേ ച |
| ച കവചിനേ > | കവചിനേ ച – – |
| ച നമഃ _ | നമഃ ശ്രൂതായ |
| ശ്രുതായ ച | ച ശ്രുതസേനായ |
| ശുരസേനായ ച | ശുതസേനായേതി |
| | ശുത – സേനായ |
| ചേതി ച | |

16.7 **ശ്രീരൂദ്രക്രമഃ – സപ്തമോ** ടനുവാകഃ

| (0) | |
|--------------------------------|---------------------|
| നമോ ദുന്ദുഭൃായ | ടുന്ദുഭൂയ ച |
| ചാഹനന്യായ | ആഹനന്യായ ച — — — |
| ആഹനന്യായേത്യാ–ഹനന്യായ – – – | ച നമഃ – |

| നമോ ധ <u>ൃ</u> ഷ്ണവേ > | ധൃഷ്ണവേ ച |
|-------------------------|------------------------|
| ച പ്രമൃശായ | പ്രമൃശായ ച |
| പ്രമൃശായേതി പ്ര – മൃശായ | ച നമഃ _ |
| നമോ ദൂതായ | ദൂതായ ച |
| ച പ്രഹിതായ | പ്രഹിതായ ച |
| പ്രഹിതായേതി പ്ര – ഹിതായ | ച നമഃ _ |
| നമോ നിഷങ്ഗിണേ > | നിഷങ്ഗിണേ ച – – |
| നിഷങ്ഗിണ ഇതി | |
| | ചേഷുധിമതേ > |
| ഇഷുധിമതേ ച | ഇഷുധിമത ഇതീഷുധി – മതേ> |
| ച നമഃ – | നമ സ്തീക്ഷ്ണേഷവേ |
| തീക്ഷ്ണേഷവേ ച | തീക്ഷ്ണേഷവ ഇതി |
| | തീക്ഷ്ണ – ഇഷ്ടവ > |
| ചായുധിനേ > | ആയുധിനേ ച |
| ച നമഃ _ | നമഃ സ്വായുധായ |
| ഹ്നാതിനാത ച | ഹ്നാത്യനാതേയ്വ |
| | സു – ആയുധായ |
| ച സുധനിനേ | സുധന്നേ ച |
| സുധന്ന ഇതി സു – ധന്ന | ച നമഃ – |
| നമസ്സുതൃായ | സുത്യായ ച |

| | 331.7 (1.00) |
|-------------------------------|-----------------|
| ച പഥ്യായ – | പഥ്യായ ച |
| ച നമഃ – | നമഃ കാടൃായ — |
| കാടുായ ച | ച നീപൃായ |
| നീപ്യായ ച | ച നമഃ _ |
| നമഃ സൂദ്യായ | സൂദ്യായ ച |
| ച സരസൃായ | സരസ്യായ ച |
| ച നമഃ _ | നമോ നാദ്യായ |
| നാദ്യാത ച | ച വൈശന്തായ |
| വൈശന്തായ ച | ച നമഃ _ |
| നമഃ കൂപ്യായ | കൂപ്യായ ച |
| ചാവടുായ | അവടുായ ച |
| ച നമഃ _ | നമോ വർഷ്യായ |
| വർഷ്ഠാത ച | ചാവർഷ്യായ |
| അവർഷ്യായ ച | ച നമഃ _ |
| നമോ മേഘ്യായ — | മേഘ്യായ ച – |
| ച വിദ്യുതൃായ | വിദ്യുത്യായ ച |
| വിദ്യുത്യായേതി വി – ദ്യുത്യായ | ച നമഃ _ |
| നമ ഈദ്ധിയായ | ഈദ്ധ്രിയായ ച |
| ചാതപൃായ – – | ആതപ്യായ ച |
| ആതപ്യായേത്യാ – തപ്യായ – – | ച നമഃ – |
| <u> </u> | |

| നമോ വാത്യായ | വാത്യായ ച |
|------------------|---------------------------|
| ച രേഷ്മിയായ – | രേഷ്മിയായ ച |
| ച നമഃ _ | നമോ വാസ്തവൃായ |
| വാസ്തവുായ ച | ച വാസ്തുപായ |
| വാസ്തുപായ ച | വാസ്തുപായേതി വാസ്തു – പായ |
| ചേതി ച | |

16.8 **ശ്രീരുദ്രക്രമഃ – അഷ്ടമോ** ടനു**വാകഃ**

| 10.0 COO HOTOLONDO TOIOLEGE | 7 Stratt 110 00 70 |
|-----------------------------|--------------------|
| നമഃ സോമായ | സോമായ ച |
| ച രുദ്രായ | രുദ്രായ ച |
| ച നമഃ – | നമസ്താമ്രായ |
| താമ്രായ ച | ചാരുണായ |
| അരുണായ ച | ച നമഃ – |
| നമശ്ശങ്ഗായ | ശങ്ഗായ ച – |
| ച പശുപതയേ | പശുപതയേ ച |
| പശുപതയ ഇതി പശു–പതയേ | ച നമഃ _ |
| က <u>a</u> ഉഗ്രായ | ഉഗ്രായ ച |
| ച ഭീമായ – – | ഭീമായ ച _ |
| ച നമഃ – | നമോ അഗ്രേവധായ |
| അഗ്രേവധായ ച | |
| ച ദൂരേവധായ | ദൂരേവധായ ച |

| മുരേവധായേതി ദുരേ – വധായ ച നമഃ വുക്ഷേഭ്യാ ഹരികേശേഭ്യാ നമഃ വുക്ഷേട്യാ ഹരികേശേഭ്യാ നമഃ വുക്ഷേട്യാ ഇതി നമസ്താരായ വുക്ഷേട്യാ നമഃ നമ്പയാരായ വുക്ഷേട്യാ നമഃ നമ്പയാരായ വുക്ഷേട്യാ നമഃ നമ്പയാരായ വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേരവ ച വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേരവ ച വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേട്യാ നമഃ വുക്ഷേരവ ച വുക്ഷേരവ ച വുക്ഷേരായ ച വുക്ഷേരായ ച വുക്ഷേരായ ച വുക്ഷേരായ ച വുക്ഷേരായ ച വുക്ഷേരായ ച വുഷ്യിവായ ച വുഷ്യിവായ ച വുഷ്യിവായ ച വുഷ്യിവായ ച വുഷ്യിവതരായ ച വുഷ്യിവത്രവത്ര വുഷ്യിവത്രവത്ര വുഷ്യിവത്രവത്ര വുഷ്യിവത്രവത്ര വുഷ്യിവത്രവത്ര വുഷ്യിവത്രവത്ര വുഷ്യിവത്രവത്ര വുഷ്യിവത്രവത്ര വുഷ്യിവത്രവത്ര വുഷ്യിവത്രവത്രവത്രവത്രവത്രവത്രവത്രവത്രവത്രവത്ര | | 331.7 (1.00) |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------|-------------------------|
| ച നമഃ നമോ വൃക്ഷേട്യാ വൃക്ഷേട്യോ ഹരികേശേട്യം ഹരികേശേട്യോ നമഃ പരികേശേട്യ ഇതി നമസ്താരായ ഹരി – കേശേദ്യം താരായ നമഃ നമഃ ശംഭവേ > ച മയോഭവേ ച ശംഭവ ഇതി ശം – ഭവേ > ച മയോഭവ ഇതി മയം – ഭവേ > ച നമഃ നമശ്ശേകരായ ച മയസ്തരായ ച തകരായ ച മയസ്തരായ ച നമു നമു നമു നമ്മ്യിവായ ച നമം നമ്മ്യിവായ ച നമം നമ്മ്യിവായ ച ശിവതരായ തി ശിവ – തരായ ച നമം നമ്യൂരിൽമ്പ്യായ | ദൂരേവധായേതി ദൂരേ – വധായ | ച നമഃ _ |
| ച നമഃ നമോ വ്യക്ഷേട്യാ വരാ വ്യക്ഷേട്യാ നമാ നരികേശേട്യാ നമാ നരികേശേട്യാ നമാ നരികേശേട്യാ നമാ നരികേശേട്യാ നമാ നമായ നമായ നമായ നമായ ത്രാരായ നമാ ത്രാരായ വ്യക്തരായ ച ത്രയാഭവേ ഇതി മയാ – ഒവേ > ച നമായ ത്രക്കരായ ച മയസ്തരായ ച ത്രാരായ ച ത്രാരായ ച ത്രവായ ച ത്രിവതരായ ച ത്രിവതരായ ച ത്രിവതരായ ച ത്രിവതരായ ച ത്രിവതരായ ച ത്രിവതരായ ച ത്രാരായ ച ച കൂല്യായ ച കൂല്യായ ച ച കൂല്യായ | നമോ ഹന്ത്രേ | ഹന്ത്രേ ച _ |
| പൂക്ഷേട്യോ ഹരികേശേദ്യഃ ഹരികേശേദ്യോ നമഃ ഹരികേശേദ്യ ഇതി നമസ്താരായ ഹരി – കേശേദ്യഃ താരായ നമഃ നമഃ ശംഭവേ > ച മയോഭവേ ച ശംഭവ ഇതി ശം – ഭവേ > ച മയോഭവ ഇതി മയഃ – ഭവേ > ച മയോഭവ ഇതി മയഃ – ഭവേ > ച മയസ്തരായ ച ത്രകരായ ച ച നമഃ നമശ്ശകരായ ച ച നമഃ ച നമഃ നമശ്ശീവായ ച നമഃ തിർത്ഥ്യായ ച ച നമഃ ച നമൂ | ച ഹനീയസേ | ഹനിയസേ ച |
| ഹരികേശേഭ്യ ഇതി നമസ്താരായ നമായ നമായ നമായ നമായ നമായ നമായ നമായ നമ | ച നമഃ _ | നമോ വ <u>ൃ</u> ക്ഷേഭ്യഃ |
| നരി – കേശേഭ്യഃ താരായ നമഃ നമഃ ശംഭവ ഉതി ശം – ഭവേ > ച മയോഭവ ച ശംഭവ ഇതി ശം – ഭവേ > ച മയോഭവ ഇതി മയഃ – ഭവേ > ച മയാഭവ ച നമഃ നമശ്ശേകരായ ശകരായ ച മയസ്കരായ ച മയസ്കരായ ച നമം നമശ്ശിവായ ച നമഃ നമശ്ശിവായ ശിവായ ച ച ശിവതരായതി ശിവ – തരായ ച നമഃ | വ്യക്ഷേട്യോ ഹരികേശേഭ്യഃ | ഹരികേശേഭ്യോ നമഃ |
| താരായ നമഃ നമഃ ശംഭവ് > ശംഭവ് ച ശംഭവ് ഇതി ശം – ഭവ് > ച മയോഭവ് ച ലയാഭവ് ച ലാലാഭവ് ച ലാഭവ് ച ലാലാഭവ് പ ലാലാഭവ് ച ലാലാഭവ് പ ലാലാഭവ് പ ലാലാഭവ് പ ലാലാ പ ലാലാ പ ലാലാഭവ് പ ലാലാ | ഹരികേശേഭ്യ ഇതി | നമസ്താരായ |
| | ഹരി – കേശേഭ്യഃ | |
| ച മയോഭവ് > | താരായ നമഃ | നമഃ ശംഭവേ > |
| | ഗംഭവേ ച _ | ശംഭവ ഇതി ശം – ഭവേ > |
| | ച മയോഭവേ > | മയോഭവേ ച |
| | മയോഭവ ഇതി മയഃ – ഭവേ > | ച നമഃ _ |
| | നമശ്ശങ്കരായ | ശങ്കരായ ച — — |
| | ശങ്കരായേതി ശം – കരായ – – | ച മയസ്കരായ |
| | മയസ്കരായ ച | മയസ്കരായേതി മയഃ – കരായ |
| | ച നമഃ – | നമശ്ശിവായ |
| ച നമഃ — — — — — — — — — — — — — — — — — — — | ശിവായ ച | ച ശിവതരായ |
| തീർത്ഥ്യായ ച ച കൂല്യായ | ശിവതരായ ച | ശിവതരായേതി ശിവ – തരായ |
| | ച നമഃ – | നമസ്തീർത്ഥ്യായ |
| കൂല്യായ ച ച നമഃ | തീർത്ഥ്യായ ച | ച കൂല്യായ – |
| | കൂല്യായ ച | ച നമഃ – |

| നമഃ പാര്യായ | പാരുായ ച |
|-------------------------|--------------------------------|
| ചാവാരുായ | അവാര്യായ ച — — |
| ച നമഃ – | നമഃ പ്രതരണായ — |
| പ്രതരണായ ച | പ്രതരണായേതി പ്ര – തരണായ |
| ചോത്തരണായ — | ഉത്തരണായ ച – |
| ഉത്തരണായേത്യുത് – തരണായ | ച നമഃ – |
| നമ ആതാര്യായ | ആതാര്യായ ച |
| ആതാര്യായേത്യാ – താര്യായ | ചാലാദ്യായ |
| ആലാദ്യായ ച — — | ആലാദ്യായേത്യാ – ലാദ്യായ – – |
| ച നമഃ – | നമശ്ശഷ്പ്യായ |
| ശഷ്യായ ച | ച ഫേന്യായ – |
| ഫേന്യായ ച | ച നമഃ _ |
| നമഃ സികതൃായ | സികതൃായ ച – – |
| ച പ്രവാഹൃായ | പ്രവാഹൃായ ച |
| പ്രവാഹൃായേതി പ്ര–വാഹൃായ | ചേതി ച |

16.9 <mark>ശ്രീരുദ്രക്രമഃ – നവമോ</mark> ടനുവാകഃ

| | |
|---------------------------|------------------|
| നമ ഇരിണ്യായ _ | ഇരിണ്യായ ച |
| ച (പപഥ്യായ — —— | (പപഥ്യായ ച —— |
| പ്രപഥ്യായേതി പ്ര – പഥ്യായ | ച നമഃ – |
| നമഃ കിഴ്ശിലായ — | കിയ്ശിലായ ച |

| | 331.7 (1.00) |
|-------------------------|-----------------------------|
| ച ക്ഷയണായ – | ക്ഷയണായ ച |
| ച നമഃ – | നമഃ കപർദിനേ > — |
| കപർദിനേ ച —— | ച ചുലസ്തതേ > |
| പുലസ്തയേ ച | ച നമഃ _ |
| നമോ ഗോഷ്ഠ്യായ _ | ഗോഷ്ഠായ ച |
| ഗോഷ്യായേതി ഗോ – സ്ഥ്യായ | ച സീധിാത |
| ഗൃഹ്യായ ച | ച നമഃ _ |
| നമസ്തല്പ്യായ | തല്പ്യായ ച |
| ച ഗേഹൃായ | ഗേഹ്യായ ച |
| ച നമഃ _ | നമഃ കാട്യായ |
| കാടുായ ച | ച ഡംഡിശേഷ്ഠത |
| ഡ്യായേ ച | ഗഹ്വരേഷ്ഠായേതി |
| | റഹ്വരേ – <i>സ</i> ്ഥാത |
| ച നമഃ – | നമോ ഹ്രദ്ദയ്യായ |
| പ്രേദയ്യായ ച | ച നിവേഷ്പ്യായ |
| നിവേഷ്പ്യായ ച | നിവേഷ്പ്യായേതി നി–വേഷ്പ്യായ |
| ച നമഃ _ | നമഃ പാഴ്സവൃായ |
| പാ⊲്ഹ്വീാത ച | ച രജസൃായ – – – |
| രജസ്യായ ച – – | ച നമഃ _ |

| നമശ്ശുഷ്ട്യായ | ശുഷ്ഠാത ച |
|------------------------------|---------------------------|
| ച ഹരിതൃായ | ഹരിത്യായ ച |
| ച നമഃ | — — നമോ ലോപൃായ |
| ലോപ്യായ ച | ചോലപൃായ |
| ഉലപൃായ ച | ച നമഃ |
| നമ ഊർവ്യായ | ഉഹൃവീാത ച |
| ച സൂർമ്യായ | സൂർമ്യായ ച |
| ച നമഃ _ | നമഃ പർണ്യായ |
| പർണ്യായ ച | ച പർണശദ്യായ |
| പർണശദൃായ ച | പർണശദൃായേതി |
| | പർണ – ശദ്യായ |
| ച നമഃ – | നമോടപഗുരമാണായ |
| അപഗുരമാണായ ച | അപഗുരമാണായേതൃപ – |
| | ഗുരമാണായ |
| ചാഭിഘ്നതേ | അഭിഘത ച ന |
| അഭിഘ്നത ഇതൃഭി – ഘ്നതേ – – | ച നമഃ _ |
| നമ ആക്ഖിദതേ — | ആക്ഖിദതേ ച — |
| ആക്ഖിദത ഇതൃാ – ഖിദതേ — | ച പ്രക്ഖിദതേ |
| പ്രക്ഖിദതേ ച | പ്രക്ഖിദത ഇതി പ്ര – ഖിദതേ |
| ച നമഃ – | നമോ വഃ |

ശിവ സ്കുതി

| | 301.7 |
|----------------------------|----------------------------|
| വഃ കിരികേഭൃഃ | കിരികേഭ്യോ ദേവാനാം > |
| ഭേവാനായ് ഹൃദയേഭ്യഃ | ഹൃദയേഭ്യോ നമഃ |
| നമോ വിക്ഷീണകേഭൃഃ — | വിക്ഷീണകേഭ്യോ നമഃ |
| വിക്ഷീണകേഭ്യ ഇതി | നമോ വിചിൻവത്കേഭൃഃ |
| വി – ക്ഷീണകേഭൃഃ | |
| വിചിൻവത്കേട്യോ നമഃ | വിചിൻവത്കേഭ്യ ഇതി |
| | വി – ചിൻവത്കേഭൃഃ |
| നമ ആനിർ.ഹതേഭ്യഃ – | ആനിർ.ഹതേഭ്യോ നമഃ — —— — |
| ആനിർ.ഹതേഭ്യ | നമ ആമീവത്കേഭ്യഃ |
| ഇത്യാനിഃ – ഹതേഭൃഃ | |
| ആമീവത്കേഭൃ — — | |
| ഇത്യാ – മീവത്കേഭ്യഃ – – | |

16.10 **ഗ്രീരൂദ്രക്രമഃ-ദശമോ** ടനുവാകഃ

| - 0- | |
|---------------------|-----------------------|
| ദ്രാപേ അന്ധസഃ | അന്ധസസ്പതേ |
| പതേ ദരിദ്രത് – – | ദരിദ്രന്നീലലോഹിത — |
| നീലലോഹിതേതി | ഏഷാം പുരുഷാണാം |
| നീല് – ലോഹിത | |
| പുരുഷാണാമേഷാം — | ഏഷാം പശൂനാം |
| പശൂനാം മാ | മാ ഭേഃ |
| ഭേർ മാ | മാടരഃ |

| അരോ മോ | മോ ഏഷാം |
|---------------------------|-------------------------|
| മോ ഇതി മോ | ഏഷാം കിം |
| കിഞ്ചന _ | ചനാമമത് – |
| ആമമദിതൃാ മമത് —— | യാ തേ > |
| തേ രുദ്ര | രുദ്ര ശിവാ |
| ശിവാ തനുഃ | തനൂശ്ശിവാ |
| ശിവാ വിശ്വാഹഭേഷജീ | വിശ്വാഹഭേഷജീതി |
| | വിശ്വാസ – ഭേഷജൂ > |
| ശിവാ രുദ്രസൃ | രുദ്രസൃ ഭേഷജീ |
| ടേഷജീ തയാ > — — | തയാ നഃ |
| നോ മൃഡ | മൃഡ ജീവസേ > |
| ജീവസ ഇതി ജീവസേ > | ഇമാ∀് രുദ്രായ |
| രുദ്രായ തവസേ > | തവസേ കപർദിനേ > |
| കപർദിനേ ക്ഷയദ്വീരായ —— | ക്ഷയദ്വീരായ പ്ര |
| ക്ഷയദ്വീരായേതി | പ്രഭരാമഹേ |
| ക്ഷയത് – വീരായ – – – – | |
| ഭരാമഹേ മതിം | മതിമിതി മതിം |
| യഥാ നഃ | _ ന്ശം |
| ശമസത് | അഗദ് ദ്വിനദേ > |
| ദ്വിപദേ ചതുഷ്പദേ — — | ദ്വിപദ ഇതി ദ്വി – പദേ > |

ശിവ സ്തുതി

| ······································ | 331,7 (100,00) |
|-----------------------------------------------|---------------------------|
| ചതുഷ്ദേ വിശാം > | ചതുഷ്പദ ഇതി ചതുഃ – പദേ > |
| വിശ്വം പുഷ്ടം | പുഷ്ടം ഗ്രാമേ > |
| ഗ്രാമേ അസ്മിന്ന് | അസ്മിന്നനാതുരം |
| അനാതുരമിതൃനാ – തുരം > | മൂഡാ നഃ |
| നോ രുദ്ര | രുദ്രോത |
| ഉത നഃ | നോ മയഃ |
| മയസ്തൃധി | കൃധി ക്ഷയദ്വീരായ |
| ക്ഷയദ്വീരായ നമസാ | ക്ഷതദ്വീരാതേയി |
| | ക്ഷയത് – വീരായ – – – – |
| നമസാ വിധേമ | വിധേമ തേ > |
| ത ഇതി തേ | യൂഠ |
| ശഞ്ച | ച യോഃ – |
| തോശ്ച | ച മനുഃ – |
| മനുരായജേ | ആയജേ പിതാ – – |
| ആയജ ഇത്യാ - യജേ | പിതാ തത് _ |
| തദശൃാമ | അശ്യാമ തവ |
| തവ രുദ്ര | രുദ്ര പ്രണീതൗ |
| പ്രണ [്] ചരാവിതി പ്ര – നീതൗ > | മാ നഃ |
| നോ മഹാന്തം > — — | |
| ഉത മാ | മാ നഃ |

| നോ അർഭകം | അർഭകം മാ |
|--------------------|-------------------|
| മാ നഃ | ന ഉക്ഷന്തം — |
| ഉക്ഷന്തമുത | ഉത മാ |
| മാ നഃ | ന ഉക്ഷിതം |
| ഉക്ഷിതമിത്യുക്ഷിതം | മാ നഃ |
| നോ വധീഃ > | വധീഃ പിതരം > |
| പിതരം മാ | മോത |
| ഉത മാതരം > | മാതരം പ്രിയാഃ |
| പ്രിയാ മാ | മാ നഃ |
| നസ്തനുവഃ | തനുവോ രുദ്ര |
| തുദ്ര രീരിഷഃ | രീരിഷഃ ഇതി രീരിഷഃ |
| മാ നഃ | നസ്തോകേ |
| തോകേ തനയേ | തനയേ മാ |
| മാ നഃ | ന ആയുഷി |
| ആയുഷി മാ | മാ നഃ |
| ധോ സോഷു - | ഗോഷു മാ |
| മാ നഃ | ധോ അസ്പേഷി |
| അശോഷു രീരിഷഃ | രീരിഷ ഇതി രീരിഷഃ |
| വീരാന്മാ | മാ നഃ |
| നോ രുദ്ര | രുദ്ര ഭാമിതഃ |

| ഭാമിതോ വധീഃ | വധീർ. ഹവിഷ്മന്തഃ |
|---------------------------|-----------------------|
| ഹവിഷ്മതോ നമസാ | നമസാ വിധേമ |
| വിധേമ തേ > | ത ഇതി തേ |
| ആരാത്തേ > | തേ ഗോഘ്നേ |
| ഗോഘ്ന ഉത | ഗോഘ്ന ഇതി ഗോ – ഘ്നേ |
| ഉത പൂരുഷഘ്നേ | പൂരുഷഘ്ലേ ക്ഷയദ്വീരായ |
| പൂരുഷഘ്ല ഇതി പൂരുഷ – ഘ്ലേ | ക്ഷയദ്വീരായ സുമ്റ്റം |
| ക്ഷയദ്വീരായേതി | സുമ്ലമസ്മേ |
| ക്ഷയത് –വീരായ | |
| അസ്പേ തേ > | അസ്മേ ഇത്യസ്മേ |
| തേ അസ്തു | <u>അ</u> ന്തിയുന്തു |
| രക്ഷാ ച | ച നഃ |
| നോ അധി | അധി ച |
| ച ദേവ | ദേവ ബ്രൂഹി |
| ബ്രൂഹൃധ | അധാ ച |
| ച നഃ | നഃ ശർമ |
| ശർമ യച്ഛ | ത്യ് ദ്വബൃ.ഹാഃ > |
| ദ്വിബർ.ഹാ ഇതി | സ്തുഹി ശ്രുതം |
| ദ്വ – ബർ.ഹാഃ > | į. |
| ശുതം ഗർത്തസദം > | ഗർത്തസദം ്യുവാനം |

| ഗർത്തസദമിതി | യുവാനം മൃഗം |
|-------------------------|------------------------|
| | _ |
| മൃഗന്ന | ന ഭീമം |
| ഭീമമുപഹത്നും | ഉപഹത്നുമുഗ്രം |
| ഉഗ്രമിത്യൂഗ്രം | മൂഡാ ജരിത്രേ |
| ജരിത്രേ രുദ്ര — — | രുദ്ര സ്തവാനഃ |
| സ്തവാനോ അന്യം | അനൃന്തേ > _ |
| തേ അസ്മത് | അസ്മന്ന <u>ി</u> |
| നി വപന്തു | വപന്തു സേനാഃ > |
| സേനാ ഇതി സേനാഃ > | പരി ണഃ |
| നോ രുദ്രസൃ | രുദ്രസൃ ഹേതിഃ |
| ഹേതിർ വൃണക്തു | വൃണ്ടക്തു പരി |
| പരി തോഷസൃ – | ത്വേഷസ്യ ദുർമതിഃ |
| ദുർമതിരഘായോഃ | ദുർമതിരിതി ദുഃ – മതിഃ |
| അഘായോരിതൃഘ – യോഃ – – | അവസ്ഥിരാ |
| സ്ഥിരാ മഘവദ്ഭ്യഃ — | മഘവദ്ഭൃഃ തനുഷ്വ – |
| മഘവദ്ഭൃ ഇതി മഘവത് – ഭൃഃ | തനുഷ്വ മീഡ്വഃ |
| മീഢ്വ സ്തോകായ | തോകായ തനയായ |
| തനയായ മൃഡയ | മൂഡയതി മുഡയ |
| മീഢുഷ്ടമ ശിവതമ | മീഢുഷ്ടമേതി മീഡുഃ – തമ |

| | 301.7 (100) |
|-----------------|--------------------------|
| ശിവതമ ശിവഃ — | ശിവതമേതി ശിവ – തമ — — |
| ശിവോ നഃ _ | നസ്സുമനാഃ > |
| സുമനാ ഭവ | സുമനാ ഇതി സു – മനാഃ > |
| ഭവേതി ഭവ | പരമേ വൃക്ഷേ |
| വ്യക്ഷ ആയുധം | ആയുധം നിധായ |
| നിധായ കൃത്തിം > | നിധായേതി നി – ധായ |
| കൃത്തിം ്വസാനഃ | വസാന ആ |
| ആ ചര | ചര പിനാകം —– |
| പിനാകം ബിഭ്രത് | ബിഭ്രദാ — |
| ആ ഗഹി | ഗഹീതി ഗഹി |
| വികിരിദ വിലോഹിത | വികിരിദേതി വി – കിരിദ |
| വിലോഹിത നമഃ | വിലോഹിതേതി വി – ലോഹിത |
| നമസ്തേ | തേ അസ്തു |
| അസ്തു ഭഗവഃ | ഭഗവ ഇതി ഭഗ – വഃ |
| താധ്കേ > | തേ സഹസ്രം > — — |
| സ്ഡ് പ്രയമം | ഹേതയോ ടന്യം — — |
| അനൃമസ്മത് | അസ്മന്നി |
| നി വപന്തു | വപന്തു താഃ |
| താ ഇതി താഃ — | സഹസ്രാണി സഹസ്രധാ |

| സഹസ്രധാ ബാഹുവോഃ | സഹസ്രധേതി സഹസ്ര – ധാ |
|--------------------------|----------------------|
| ബാഹുവോസ്തവ | തവ ഹേതയഃ |
| ഹേതയ ഇതി ഹേതയഃ | താസാമീശാനഃ |
| ഈശാനോ ഭഗവഃ | ഭഗവഃ പരാചീനാ > |
| ഭഗവ ഇതി ഭഗ – വഃ – – – | പരാചീനാ മുഖാ > |
| മുഖാ കൃധി | കൃധീതി കൃധി |

16.11 **ശ്രീരൂദ്രക്രമഃ – ഏകാദശോ** ടനുവാകഃ

| സഹസ്രാണി സഹസ്രശഃ | സഹസ്രശോ യേ |
|--------------------------|---------------------------------|
| സഹസ്രശ ഇതി സഹസ്ര–ശഃ | യേ രുദ്രാഃ |
| രുദ്രാ അധി | അധി ഭൂമ്യാം > |
| ഭൂമ്യാമിതി ഭൂമ്യാം > | തേഷാ <mark>ഗ്</mark> സഹസ്രയോജനേ |
| സഹസ്രയോജനേടവ് — — — — | സഹസ്രയോജന ഇതി |
| | സഹസ്ര – യോജനേ |
| അവ ധമ്പാനി | ധന്വാനി തന്മസി |
| തന്മസീതി തന്മസി | അസ്മിൻ മഹതി |
| മഹതൃർണവേ | അർണവേടന്തരിക്ഷേ — — |
| അന്തരിക്ഷേ ഭവാഃ | ഭവാ അധി |
| അധീതൃധി | നീലഗ്രീവാഃ ശിത്വകണ്ഠാഃ > |
| നീലഗ്രീവാ ഇതി | ശിതികണ്ഠാഃ ശർവാഃ |
| നീല് – ഗ്രീവാഃ > | |

| ശിതികണ്ഠാ ഇതി | ശർവാ അധ <u>ം</u> |
|-----------------------------|--------------------------------|
| ശിതി – കണ്യാഃ > | |
| അധഃ ക്ഷമാചരാഃ | ക്ഷമാചരാ ഇതി ക്ഷമാചരാഃ |
| നീലഗ്രീവാഃ ശിത്വകണ്ഠാഃ > | നീലഗ്രീവാ ഇതി |
| | നീല് – ഗ്രീവാഃ > |
| ശിതികണ്ഠാ ദിവം > | ശിതികണ്ഠാ ഇതി |
| | ശിതി – കണ്യാം > |
| ദിവയ് രുദ്രാഃ | രുദ്രാ ഉപശ്രിതാഃ |
| ഉപശ്രിതാ ഇത്യുപ – ശ്രിതാഃ > | തേ വുക്ഷേഷു |
| വൃക്ഷേഷു സസ്പിഞ്ജരാഃ | സസ്പിഞ്ഞരാ നീലഗ്രീവാഃ |
| നീലഗ്രീവാ വിലോഹിതാഃ | നീലഗ്രീവാ ഇതി |
| | നീല് – ഗ്രീവാഃ > |
| വിലോഹിതാ ഇതി | യേ ഭൂതാനാം > |
| വി – ലോഹിതാഃ – – – | |
| ഭൂതാനാമധിപതയഃ | അധിപതയോ വിശിഖാസഃ |
| അധിപതയ ഇതൃധി – പതയഃ | വിശിഖാസഃ കപർദിനഃ |
| വിശിഖാസ ഇതി | കപർദിന ഇതി കപർദിനഃ |
| വി – ശിഖാസഃ | |
| യേ അന്നേഷു | അന്നേഷു വിവിദ്ധൃന്തി |
| വിവിദ്ധൃന്തി പാത്രേഷു | വിവിദ്ധൃന്തീതി വി – വിദ്ധൃന്തി |
| പാത്രേഷു പിബതഃ | പിബതോ ജനാൻ |

| ജനാനിതി ജനാൻ | യേ പഥാം |
|--------------------------|--------------------------|
| പഥാം പഥിരക്ഷയഃ | പഥിരക്ഷയ ഐലബ്യദാഃ — — |
| പഥിരക്ഷയ ഇതി പഥി–രക്ഷയഃ | ഐലബൃദാ യവ്യുധഃ |
| യവുുധ ഇതി യവുുധഃ | യേ തീർത്ഥാനി |
| തീർത്ഥാനി പ്രചരന്തി | പ്രചരന്തി സൂകാവന്തഃ |
| പ്രചരന്തീതി പ്ര – ചരന്തി | സൂകാവന്തോ നിഷങ്ഗിണഃ |
| സൂകാവന്ത ഇതി | നിഷങ്ഗിണ ഇതി |
| സ <u>്</u> കാ – വന്തഃ | നി – സങ്ഗിന്ഃ |
| യ ഏതാവന്തഃ | ഏതാവന്തശ്ച |
| ച ഭൂതാ∧്ഗ്ധഃ | ഭീതാ∧്ധശ്ച |
| ച ദിശഃ | ദിശോ രുദ്രാഃ |
| രുദ്രാ വിതസ്ഥിരേ | വിതസ്ഥിര ഇതി വി–തസ്ഥിരേ |
| തേഷാ ് സഹസ്രയോജനേ | സഹസ്രയോജനേടവ — — — — |
| സഹസ്രയോജന ഇതി | |
| സഹസ്ര – യോജനേ – – | അവ ധമ്പാനി |
| ധന്വാനി തന്മസി | തന്മസീതി തന്മസി |
| നമോ രുദ്രേഭ്യഃ | |
| യേ പൃഥിവ്യാം | പൃഥിവൃാം ്യേ |
| യടന്തരിക്ഷേ | അന്തരിക്ഷേ യേ — |

ശിവ സ്കുതി

| | OOK II (10)(O) |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------|
| യേ ദിവി | ദിവി യേഷാം > — |
| യേഷാമന്നം > — | അന്നം ്വാതഃ |
| വാതോ വർ.ഷം | വർ.ഷമിഷവഃ —— |
| ഇഷവസ്തേഭ്യഃ — | തേഭ്യോ ദശ |
| ദശ പ്രാചീഃ > | പ്രാചീർ ദശ |
| ദശ ദക്ഷിണാ | ദക്ഷിണാ ദശ |
| ദശ പ്രതീചീഃ > | പ്രതീചീർ ദശ |
| ദശോദിചീഃ | ഉദീചീർ ദശ |
| പ്പാര്യ പ്രാദ്യ പ്രാദ്യ പ്രാദ്യ പ്രാദ്യ പ്രാദ്യ പ്രാദ്യ പ്രാദ്യ പ്രാദ്യ പ്രവദ്യ പ്രവദ | _ ചെർങ്ങാഗ്കേഭുഃ |
| തേഭ്യോ നമഃ | നമസ്തേ |
| തേ നഃ | നോ മൃഡയന്തു |
| മൃഡയന്തു തേ | തേ യം |
| തം ദ്വീഷ്ം | ദ്വീഷ്ോ തഃ |
| തര്മാ | ച നഃ – – |
| നോ ദ്വേഷ്ടി | ദോഷ്ടി യം |
| യം ൂവഃ | വാ ജംഭേ > — |
| ജംഭേ ദധാമി | ദധാമീതി ദധാമി — — |

16.12 ത്രൂഠിബകം യജാമഹേ

| ് | ത്രൃംബകമിതി |
|-------------------|-----------------------|
| ത്രൃംബകം ് യജാമഹേ | — — |
| | ത്രി – അംബകം > |

| യജാമഹേ സുഗന്ധിം | സുഗന്ധിം പുഷ്ടിവർദ്ധനം |
|--------------------------------|------------------------|
| സുഗന്ധിമിതി സു – ഗന്ധിം | പുഷ്ടിവർദ്ധനമിതി |
| | പുഷ്ടി – വർദ്ധനം |
| ഉർവാരുകമിവ | ഇവ ബന്ധനാത് — — |
| ബന്ധനാൻ മൃത്യോഃ | മ്യത്യോർ മുക്ഷീയ |
| മുക്ഷീയ മാ | മാടമൃതാത് > |
| അമൃതാതിതൃമൃതാത് > | തോ യ്യ്ദ്രഃ |
| തുദ്രോ അഗ്നൗ | _ |
| യോ അഫ്സു | അഫ്സു യഃ |
| അഫ്സിതൃപ് – സു | യ ഓഷധീഷു |
| ഓഷധീഷു യഃ | തോ യ്വ്ദ്ദ |
| <u>യ</u> ിദ്രോ വിശ്വാ > | വിശ്വാ ഭുവനാ |
| ഭുവനാടടവിവേശ — | ആവിവേശ തസ്മൈ > |
| ആവിവേശേതൃാ – വിവേശ — — | തസ്മൈ രുദ്രായ |
| രുദ്രായ നമഃ | നമോ അസ്തു |
| _ അഗ് ^{സ്} വയുസ്തു | |

Section 5 – Chamaka Kramam

17 ശ്രീ ചമകക്രമഃ

17.1 ശ്രീ ചമകക്രമഃ – പ്രഥമോ ടനുവാകഃ

| അഗ്നാവിഷ്ണൂ സ്ജോഷസാ | അഗ്നാവിഷ്ണൂ ഇതൃഗ്നാ – |
|-------------------------|-----------------------|
| | <u>ന</u> ിഷ്ണൂ > |
| സജോഷസേമാഃ — — | സജോഷസേതി സ–ജോഷസാ |
| ഇമാ വർദ്ധന്തു | _ പ്രച്ച പ്രം > |
| വാങ്ഗിരഃ | ഗിര ഇതി ഗിരഃ |
| ദ്യൂമ്പൈർ വാജേഭിഃ | വാജേഭിരാ — |
| ആ ഗതം | ഗതമിതി ഗതം |
| വാജശ്ച | <u>의 6</u> 2 > |
| മേ പ്രസവഃ | (പസവശ്ച |
| പ്രസവ ഇതി പ്ര – സവഃ | ച മേ > |
| മേ പ്രയതിഃ – | പ്രയതിശ്ച |
| പ്രയതിരിതി പ്ര – യതിഃ | ച <u>മേ</u> > |
| മേ പ്രസിതിഃ | പ്രസിതിശ്ച |
| പ്രസിതിരിതി പ്ര – സിതിഃ | ച മേ > |
| മേ ധീതിഃ | ധീതിശ്ച |
| ച മേ > | മേ ക്രതുഃ |
| ക്രയുശ്ച | ച <u>മേ</u> > |
| മേ സ്വരഃ — | സ്വരത്മ |
| | |

| ച മേ > | മേ ശ്ലോകഃ |
|------------------------|----------------|
| ശ്ലോകശ്ച | <u>의 6</u> 2 > |
| മേ ശ്രാവഃ | (ശാവശ്ച |
| ച മേ > | മേ ശ്രുതിഃ |
| (ശുതിശ്ച | ച മേ > |
| മേ ജ്യോതിഃ | ജ്യാതിശ്ച |
| 고 @ > | മേ സുവഃ |
| സുവശ്ച | ച മേ > |
| മേ പ്രാണഃ | (പാണശ്ച |
| പ്രാണ ഇതി പ്ര – അനഃ | 의 62 > |
| മേടപാനഃ | അപാനശ്ച |
| അപാന ഇതൃപ – അനഃ – – | ച മേ > |
| മേ വ്യാനഃ | വീാധശ്ച |
| വ്യാന ഇതി വി – അനഃ | ച മേ > |
| മേടസുഃ | അസുശ്ച |
| ച മേ > | മേ ചിത്തം |
| ചിത്തം ച | ച മേ > |
| മ ആധിതം | ആധീതം ച |
| ആധിതമിതൃാ – ധീതം > | ച മേ > |
| മേ വാക് | വാക് ച |
| • | • |

| | 331.7 (1.00) |
|----------------------------|--------------------|
| ച മേ > | മേ മനഃ — |
| മനശ്ച | ച മേ > |
| മേ ചക്ഷുഃ | ചയ്ക്കി ശ്വ |
| ച മേ > | മേ ഗ്രോത്രം > — |
| ശ്രോത്രം ച | 의 62 > |
| മ ദക്ഷഃ — | ദക്ഷശ്ച |
| ച മേ > | മ ബലം > – |
| ബലം ച | ച മേ > |
| മ ഓജഃ – | ഓജശ്ച |
| 의 62 > | മേ സഹഃ |
| സഹശ്ച | ച മേ > |
| മ ആയുഃ – | യ്കരുപ്പ |
| ച മേ > | മേ ജരാ — — |
| ജരാ ച _ | ച മേ > |
| മ ആത്മാ | ആത്മാ ച _ |
| ุ่ บ เ เ | മേ തനൂഃ |
| _ യധീര്മ | 의 62 > |
| തനൂശ്ച _ മേ ശർമ _ | ശർമ ച |
| ุ่ บ เ เ เ | മേ വർമ |
| | ച മേ > |
| | |

| മേടങ്ഗാനി | അങ്ഗാനി ച |
|------------|---------------|
| ച മേ > | മേടസ്ഥാനി |
| അസ്ഥാനി ച | ച മേ > — — |
| മേ പരൂ∨്ഷി | പരൂഗ്ഷി ച |
| ച മേ > | മേ ശരിരാണി |
| ശരീരാണി ച | ച മേ > |
| മ ഇതി മേ | |

17.2 **ശ്രീചമകക്രമഃ– ദ്വിതീയോ** ടനുവാകഃ

| | |
|------------------------|---------------------|
| ജൈുഷ്ഠ്യം ച | ച മേ > |
| മ ആധിപതൃം | ആധിപതൃം ച |
| ആധിപതൃമിതൃാധി – പതൃം > | |
| മേ മന്യുഃ | |
| ച മേ > | ് മേ ഭാമഃ — |
| ഭാമശ്ച | ച മേ > |
| ് മേടമഃ | ന്തുമഗ്ച്വ അമഗ്ച |
| ച മേ > | u മേടoഭം |
| ് പ്രാഭശ്ച | ച മേ > |
| മേ ജേമാ | ല ജേമാ ച — |
| 의 62 > | മേ മഹിമാ |

| മഹിമാ ച | ച മേ > |
|--------------------|----------------------|
| മേ വരിമാ | വരിമാ ച |
| 의 62 > | മേ പ്രഥിമാ — — — |
| പ്രഥിമാ ച | ച മേ > |
| മേ വർഷ്മാ | വർഷ്മാ ച |
| 의 CD > | മേ ദ്രാഘുയാ |
| ദ്രാണിതാ ച | ച മേ > |
| മേ വൃദ്ധം | <u>ന</u> ്യം ച |
| ച മേ > | മേ വൃദ്ധിഃ |
| വീഞ്ച | ച മേ > |
| മേ സത്യം | സത്യം ച |
| 의 CD > | മേ ശ്രദ്ധാ |
| ശ്രജാ ച | ശ്രദ്ധേതി ശ്രത് – ധാ |
| ച മേ > | മേ ജഗത് – |
| <u>ಜ</u> ∾ನ | ച മേ > |
| വ മേ ധനം > — | ധനം ച |
| ച മേ > | മേ വശഃ — |
| <u>നരത്മ</u> | ച മേ > |
| മേ തിഷിഃ | തിഷിശ്ച |
| ച മേ > | മേ ക്രീഡാ |
| | |

| ക്രീഡാ ച | ച മേ > |
|---------------------|----------------------|
| | മോദഗ്ച |
| _ | |
| ച മേ > | മേ ജാതം |
| ജാതം ച | ച മേ > |
| മേ ജനിഷൃമാണം | ജനിഷൃമാണം ച – – |
| ച മേ > | മേ സൂക്തം |
| സൂക്തം ച | സൂക്തമിതി സു – ഉക്തം |
| ച മേ > | മേ സുകൃതം |
| സുകൃതം ച | സുകൃതമിതി സു – കൃതം |
| 고 62 > | മേ വിത്തം |
| വിത്തം ച | ച @ > |
| | വേദൃം ച |
| 고 62 > | മേ ഭൂതം |
| ഭൂതം ച | 고 @ > |
| മേ ഭവിഷൃത് – – – | ഭവിഷുച്ച |
| ച മേ > | മേ സുഗം |
| സുഗം ച | സുഗമിതി സു – ഗം |
| ച മേ > | മേ സുപഥം > |
| സുപഥം ച | സുപഥമിതി സു – പഥം > |
| ച മേ > | മ ഋദ്ധം |

| | (0)0 |
|---------------------|----------------|
| ട്ടെയം ച വ | ച മേ > |
| മ ഋദ്ധിഃ | ഒന്നിശ്ച |
| 고 62 > | മേ ക്ലാപ്പം |
| ത്യൂപ്തം ച | ച മേ > |
| മേ ക്ല്യപ്പിഃ | ക്ലുപ്തിശ്ച |
| ุ่ม 62 > | മേ മതിഃ — — |
| മതിശ്ച | ച മേ > |
| മേ സുമതിഃ | സുമതിശച് |
| സുമതിരിതി സു – മതിഃ | ച മേ > |
| മ ഇതി മേ | |
| | ı |

17.3 **ശ്രീചമകക്രമഃ– തൃതീയോ** ടനുവാകഃ

| ശം ച | ച മേ > |
|-------------------------|------------|
| ျှေ ဥယႏ _ | മയശ്ച |
| 의 62 > | മേ പ്രിയം |
| പ്രിയം ച | ച മേ > |
| മേടനുകാമഃ | അനുകാമശ്ച |
| അനുകാമ ഇതൃനു – കാമഃ | ച മേ > |
| | കാമശ്ച |
| ച മേ > | മേ സൗമനസഃ |
| സൗമനസശ്ച — – | ച മേ > |

| മേ ഭ്യദര | ഭ(ദ്രം ച ı |
|-------------------|---------------------|
| ച മേ > | |
| (ശേതവ് | ച മേ > |
| മേ വസ്യഃ | വസൃശ്ച |
| ച മേ > | മ യശഃ — |
| തസത്പ | ച മേ > |
| ് മേ ഭഗഃ — | ഭവ ര ച |
| ച മേ > | മേ ദ്രവിണം |
| ദ്രവിണം ച | ച മേ > |
| മേ യന്താ | — — യന്താ ച — |
| ച മേ > | മേ ധർത്താ |
| ധർത്താ ച | ച മേ > |
| | ക്ഷേമഗ്ച |
| ച മേ > | മേ ധൃതിഃ |
| ധൃതിശ്ച | ച മേ > |
| മേ വിശ്വം > | വിശാം ച |
| ച മേ > | മ മേ മഹഃ — |
| മഹശ്ച | ച മേ > |
| മേ സം്വിത് — — | സം്വിച്ച് _ |

| സം്വിദിത് സം - വിത് ച മേ > | | (0)9 |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------|---------------------|
| മു പ്രസുദ്ധി വായുത്വം ച മു മു > മു മു 2 - | _ | ച മേ > |
| സുശ്ച ച മേ > മെ പ്രസും മെ പ്രസും മെ സീരം > മ ലയം മ ല > മ ല > മ ല > മ ല > മ ല | | ലഞാത്രം ച |
| സുശ്ച ച മേ > മെ പ്രസും മെ പ്രസും മെ പ്രസും മെ ഉത്തം ച ച മേ > മെ ഉത്തം ച ച മെ > മെ ഉത്തം ച വ് മെ > മെ ഉത്തം ച ച മെ > മെ ഉത്തം ച ച മെ > മെ മെ മെ > മെ മെ > മെ മെ മെ > മെ മെ > മെ മെ | | മേ സൂഃ |
| മേ സീരം > നീരം ച മ സീരം > മ ലയഃ മ സീരം > മ ലയഃ മ ഉതം ച മ ഉതം ഇതം ച മ ഉതം ച മ ഉതം ച മ ഉതം ച മ ഉരം > മ മ ഉതം ച മ ഉരം > മ മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ മ > മ മ മ > മ മ മ മ > മ മ മ മ > മ മ മ മ > മ മ മ മ > മ മ മ മ > മ മ മ മ > മ മ മ മ മ മ മ മ മ മ മ മ മ മ മ മ മ മ മ മ | | |
| | | |
| ച മേ > മേ ലയഃ | പ്രസൂരിതി പ്ര – സൂഃ | |
| | മേ സീരം > | |
| ച മേ > | | |
| മ ളതം | | ച മേ > |
| ച മേ > മോടമൂതം > | മ ഋതം | ഋതം ച |
| അമൃതം ച മ മേ > മ ജീവാതും മ മീർഘായുത്വം ദീർഘായുത്വം ച ദീർഘായു ത ചം ദീർഘായു ത ചം | | |
| ച മേ > മേടനാമയത് അനാമയച്ച ച മേ > മേ ജീവാതും ജീവാതുശ്ച ച മേ > മ മീർഘായുത്വം ച ദീർഘായുത്വമിതി ദീർഘായുത്വം ച ദീർഘായു ത വരിതി | അമൃതം ച | |
| | | അയക്ഷ്മം ച — — |
| | ച മേ > | മേടനാമയത് |
| | ന്തനാമയച്ച | ച മേ > |
| | മേ ജീവാതുഃ | ജീവാതുശ്ച |
| ഭൂർഫ്നാതി — യാം | ച മേ > | മേ ദീർഘായുത്വം |
| | 698000000000000000000000000000000000000 | ദീർഘായുത്വമിതി |
| ച മേ > മേടനമിത്രം — — — | | ദീർഘായു – ത്വം |
| | ച മേ > | മേടനമിത്രം — — — |

| അനമിത്രം ച ——— | ച മേ > |
|-----------------------|-----------------|
| I മേടഭയം | । അഭയം ച |
| 의 CD > | മേ സുഗം |
| സുഗം ച | സുഗമിതി സു – ഗം |
| ച മേ > | മേ ശയനം |
| തയനം ച | ച മേ > |
| മേ സൂഷാ | ഹൃഷാ ച |
| സൂഷേതി സു – ഉഷാ | ച മേ > |
| മേ സുദിനം > | സുദിനം ച |
| സുദിനമിതി സു – ദിനം > | ച മേ > |
| മ ഇതി മേ | |

17.4 <mark>ശ്രീചമകക്രമഃ– ചതൂർത്ഥോ</mark> ടനുവാകഃ

| ഊർക് ച | ച മേ > |
|-----------------|------------|
| മേ സൂനൃതാ > | സൂനൃതാ ച |
| ุ่ม 62 > | മ പയഃ – |
| പയശ്ച | ച മേ > |
| മേ രസഃ | രസശ്ച |
| ച മേ > | മേ ഘൃതം |
| <u>എ</u> ്യതം ച | ച മേ > |

| | (0)0 |
|-----------------------|----------------------------|
| മേ മധു — | മധു ച |
| 의 @ > | മേ സഗ്ധിഃ |
| സഗ്ധിശ്ച | ച മേ > |
| മേ സപിതിഃ | സപിതിശ്ച |
| സപ്പതിരിതി സ – പീതിഃ | ച മേ > |
| മേ കൃഷിഃ | കൃഷിശ്ച |
| ച മേ > | മേ വൃഷ്ടിഃ |
| വീഷ്പിത്മ | ച മേ > |
| വ ജെത്രം > _ | ജെത്രം ച |
| ച മേ > | മ ഔദ്ഭിദ്യം |
| ഔദ്ഭിദ്യം ച | ഔദ്ഭിദ്യമിതൃൗത് – ഭിദ്യം > |
| 고 @ > | മേ രയിഃ — — |
| രയിശ്ച | ച മേ > |
| മേ രായഃ _ | രായശ്ച |
| ച മേ > | മേ പുഷ്ടം |
| പുഷ്ടിം മേ പുഷ്ടിം | ച മേ > |
| മേ പുഷ്ടിഃ | പുഷ്ടിശ്ച |
| 고 @ > | മേ വിഭു |
| വിഭു ച | വിഭ്വിതി പി – ഭു |
| ച മേ > | മേ പ്രഭു — — |
| | |

| (ഗ്വഭ്യ ച | പ്രഭ്വിതി പ്ര – ഭു |
|-------------------------|--------------------|
| ച ଥେ > | മേ ബഹു |
| ബഹു ച | ച മേ > |
| മേ ഭൂയഃ — | ഭൂത ത്ത |
| ച മേ > | മേ പൂർണം |
| പൂർണം ച | ച മേ > |
| മേ പൂർണതരം | പൂർണതരം ച |
| <u>~</u> പൂർണത്രമിതി | |
| പൂർണ – തരം > | ച മേ > |
| മേടക്ഷിതിഃ | അക്ഷിതിശ്ച |
| 의 62 > | മേ കൂയവാഃ |
| യീതഗ്വാശ്ച | ച മേ > |
| മടന്നം > | അന്നം ച |
| ച @ > | മടക്ഷുത് |
| യുക്കു — – | ച മേ > |
| മേ വ്രീഹയഃ | വ്രീഹയശ്ച |
| ച മേ > | മേ യവാഃ |
| ത ധ ാശ്ച | 의 @ > |
| വ മോഷാം > — | മാഷാശ്ച |
| ച മേ > | മേ തിലാഃ > — |

| | <u> </u> |
|-----------------|----------------|
| തിലാശ്ച | ച @ > |
| മേ മുദ്ഗാഃ | മുദ്ഗാശ്ച |
| ച മേ > | മേ ഖലാം > |
| _ ബലാശ്ച | ച മേ > |
| മേ ഗോധൂമാഃ > | ഗോധൂമാശ്ച |
| ച മേ > | |
| | ച മേ > |
| മേ പ്രിയങ്ഗ്വഃ | പ്രിയങ്ഗവശ്ച |
| 의 62 > | മേടണവഃ |
| അണവശ്ച | ച മേ > |
| മേ ശൃാമാകാഃ > | ഗൃാമാകാശ്ച |
| ച മേ > | മേ നീവാരാഃ > |
| നീവാരാശ്ച | ച മേ > |
| മ ഇതി മേ | |

17.5 **ശ്രീചമകക്രമഃ– പഞ്ചമോ** ടനുവാകഃ

| അശ്മാ ച | ച മേ > |
|-------------|------------|
| മേ മൃത്തികാ | മൃത്തികാ ച |
| บ 62 > | മേ ഗിരയഃ |
| വുരത്യ | ച മേ > |

| മേ പർവതാഃ | പർവതാശ്ച |
|----------------------|-----------------------|
| ച മേ > | മേ സിക്താഃ |
| — – സിക്താശ്ച | ച മേ > |
| മേ വനസ്പതയഃ | വനസ്യതയര്മ |
| ച മേ > | മേ ഹിരണ്യം |
| ഹിരണൃം ച | ച മേ > |
| മടയഃ | അയശ്ച |
| ച മേ > | മ സീസം > |
| സീസം ച | ച മേ > |
| മേ ത്രപു | |
| 의 62 > | മേ ശ്യാമം |
| ശു <u>ാ</u> മം ച | ച മേ > |
| മേ ലോഹം | ലോഹം ച |
| 의 62 > | മേടഗ്നിഃ |
| അഡ്യത്മ | ച മേ > |
| ് മ ആപഃ — | ആപശ്ച |
| ച മേ > | മേ വീരുധഃ |
| വീരുധശ്ച | ച മേ > |
| _ ് മ ഓഷധയഃ _ | ഭാഷനതര്മ ാ |
| ച മേ > | മേ കൃഷ്ടപച്യം |

| ക് ^യ ്ട് _ വ | കൃഷ്ടപചുമിതി കൃഷ്ട – പചും |
|----------------------------|-------------------------------|
| 의 6D > | മേടകുഷ്പച്യം |
| അയുഷ്പചും ച പ | |
| ച മേ > | മേ ഗ്രാമൃാഃ |
| ഗ്രാമൃാശ്ച — | ଧ ଅ > |
| മേ പശവഃ | പശവ ആരണ്യാഃ |
| ആരണ്യാശ്ച —— | ച യജ്ഞേന – – |
| യജ്ഞേന കല്പന്താം – | കല്പന്താം [*] വിത്തം |
| വിത്തം ച | ଧ ଅ > |
| മേ വിത്തിഃ | വിത്തിശ്ച |
| 고 62 > | മേ ഭൂതം |
| ഭൂതം ച | ച മേ > |
| മേ ഭൂതിഃ | ഭൂതിശ്ച |
| ച മേ > | മേ വസു |
| വസു ച | ച മേ > |
| മേ വസതിഃ | വസതിശ്ച |
| ച മേ > | മേ കർമ |
| കർമ ച | ച മേ > |
| മേ ശക്തിഃ | ശക്തിശ്ച |
| ച മേ > | മടർത്ഥഃ |

| അർത്ഥശ്ച | ച മേ > |
|--------------|------------|
| ് മ ഏമഃ — | । ഏമശ്ച |
| ച മേ > | മ ഇതിഃ |
| ഇതിശ്ച | ച മേ > |
| മേ ഗതിഃ | ഗതിശ്ച |
| ച മേ > | മ ഇതി മേ |

17.6 **ഗ്രീചമകക്രമഃ– ഷഹ്പോ** ടനുവാകഃ

| അഗ്നിശ്ച | 고 62 > |
|---------------------|------------------------|
| _ മ ഇന്ദ്രഃ _ | ഇന്ദ്രശ്ച |
| ച മേ > | മ സോമഃ — |
| — – സോമശ്ച | บ 60 > |
| ് മ ഇന്ദ്രഃ – | ഇന്ദ്രശ്ച |
| ച മേ > | മേ സവിതാ |
| സവിതാ ച | 의 62 > |
| മ ഇന്ദ്രഃ – | ഇന്ദ്രശ്ച |
| ച മേ > | മേ സരസ്വതീ — |
| സരസ്വതീ ച | ച മേ > |
| മ ഇന്ദ്രഃ – | ലന്ദ്രശ്ച ഇന്ദ്രശ്ച |
| ച മേ > | മേ പൂഷാ |
| _ ചീഷാ ച ച | ച മേ > — — |

| ഇന്ദ്രശ്ച |
|-------------------|
| മേ ബൃഹസ്പതിഃ |
| ച മേ > |
| ഇന്ദ്രശ്ച |
| മേ മിത്രഃ — — |
| ച മേ > |
| ഇന്ദ്രശ്ച |
| മേ വരുണഃ _ |
| ച മേ > |
| ഇന്ദ്രശ്ച |
| മേ ത്വഷ്ടാ > — |
| ച മേ > |
| ഇന്ദ്രശ്ച – – |
| മേ ധാതാ |
| ച മേ > |
| ഇന്ദ്രശ്ച — – |
| മേ വിഷ്ണുഃ |
| 의 62 > |
| ഇന്ദ്രശ്ച |
| മേടശിനൗ > |
| |

| അശിനൗ ച | ച മേ > |
|---------------|-----------------------|
| | ഇ(ധ്രുമ്പ |
| ച മേ > | മേ മരുതഃ — — |
| മരുതശ്ച | ച മേ > |
| | ഇന്ദ്രശ്ച — — |
| ച മേ > | മേ വിശോ > |
| വിശേ ച | ച മേ > |
| മേ ദേവാഃ | ദേവാ ഇന്ദ്രഃ _ |
| ഇന്ദ്രശ്ച | 21 CD > |
| മേ പൃഥിവീ | പൂഥിവീ ച |
| ച മേ > | വ ഇന്ദ്രഃ — |
| ഇന്ദ്രശ്ച | ച മേ > |
| മേടന്തരിക്ഷം | അന്തരിക്ഷം ച — |
| ച മേ > | മ ഇന്ദ്രഃ |
| ഇന്ദ്രശ്ച | ച മേ > |
| മേ ദൃൗഃ | ദ്ഹര്ബ |
| 의 @ > | മ ഇന്ദ്രഃ |
| ഇന്ദ്രശ്ച | ച മേ > |
| മേ ദിശഃ | ദിശ്യ |
| ച മേ > | മ ഇന്ദ്രഃ – |

| | (0)- |
|---------------------------|-------------------|
| ഇന്ദ്രശ്ച | ച മേ > |
| മേ മൂർദ്ധാ | മൂർദ്ധാ ച |
| 의 @ > | മ ഇന്ദ്ര <u>ം</u> |
| ഇന്ദ്രശ്ച | ച മേ > |
| മേ പ്രജാപതിഃ | പ്രജാപതിശ്ച |
| പ്രജാപതിരിതി പ്രജാ – പതിഃ | ച മേ > |
| മ ഇന്ദ്ര <u>ം</u> | ഇന്ദ്രശ്ച |
| 의 @ > | മ ഇതി മേ |

17.7 <mark>ശ്രീചമകക്രമഃ – സപ്പമോ ടനൂവാക</mark>ഃ

| (0) | |
|------------------------|-----------------------|
| അ <i>റ്</i> ശുശ്ച | ച മേ > |
| മേ രശ്മിഃ | രശ്മിശ്ച |
| ച മേ > | ന മേടദാഭ്യഃ |
| അദാഭൃശ്ച | ച മേ > |
| മേടധിപതിഃ | അധിപതിശ്ച |
| അധിപതിരിതൃധി – പതിഃ | ച മേ > |
| മ ഉപാ⊻്ശുഃ | ഉപാ≪്ശുശ്ച |
| ഉപാ⊻്ശുരിതൃുപ – അ⊻്ശുഃ | ച മേ > — — |
| മേടന്തര്യാമഃ — — — | അന്തര്യാമശ്ച — — — |

| അന്തര്യാമ ഇതൃന്തഃ – യാമഃ | ച മേ > |
|--------------------------------------|----------------------------------------|
| മ ഐന്ദ്രവായവഃ | ഐന്ദ്രവായവശ്ച |
| ഐന്ദ്രവായവ ഇത്യൈന്ദ്ര – വായവഃ | ച മേ > |
| മേ മൈത്രാവരുണഃ | മൈത്രാവരുണശ്ച — — — — |
| മൈത്രാവരുണ ഇതി മൈത്രാ – വരുണഃ | ച മേ > |
| മ ആശ്വിനഃ | <u>~</u> |
| ച മേ > | മേ പ്രതിപ്രസ്ഥാനഃ — — — — |
| പ്രതിപ്രസ്ഥാനശ്ച – – – | പ്രതിപ്രസ്ഥാന ഇതി പ്രതി – പ്രസ്ഥാനഃ |
| 고 62 > | മേ ശുക്രഃ |
| <u>ത</u> ്യക്രശ്ച | ച മേ > |
| മേ മന്ഥീ | മന്ഥീ ച |
| 의 62 > | മ ആഗ്രയണഃ |
| ആഗ്രയണശ്ച | ച മേ > |
| മേ വൈശ്വദേവഃ | വൈശാദേവത്ത |
| വൈശാദേവ ഇതി വൈശാ–ദേവഃ | ച മേ > |
| മേ ധ്രുവഃ | ന്ന്യവശ്ച |
| ച മേ > | മേ വൈശ്വാനരഃ |

| | (0)0 |
|-----------------------------------------------|-------------------------------|
| — — — വൈശാധരശ്ച | 고 @ > |
| മ ഋതുഗ്രഹാഃ | ജയ്വ്രഹാശ്ച |
| ളതുഗ്രഹാ ഇത്യൂതു <i>–</i> ഗ്രഹാഃ | ച മേ > |
| മേടതിഗ്രാഹൃാഃ > | അതിഗ്രാഹൃാശ്ച — |
| അതിഗ്രാഹ്യാ – – – " ഇതൃതി – ഗ്രാഹ്യാഃ > | ച മേ > |
| മ ഐന്ദ്രാഗ്നഃ | ഐന്ദ്രാഗ്നശ്ച |
| ഐന്ദ്രാഗ്ന ഇത്യൈന്ദ്ര – അഗ്നഃ | ച മേ > |
| മേ വൈശ്വദേവഃ | െന്തിദേഗത്ത ച |
| വൈശാദേവ ഇതി വൈശാ–ദേവഃ | 고 @ > |
| മേ മരുത്വതീയാഃ > | മരുത്വതീയാശ്ച — — — |
| 고 62 > | മേ മാഹേന്ദ്രഃ — — — |
| മാഹേന്ദ്രശ്ച | മാഹേന്ദ്ര ഇതി മാഹാ – ഇന്ദ്രഃ |
| 고 62 > | മ ആദിതൃഃ — —— |
| ആദിതൃശ്ച – – | ച മേ > |
| മേ സാവിത്രഃ | സാവിത്രശ്ച – – |
| ച മേ – – | മേ സാരസ്വതഃ |
| ഗാരഗായത്വ | ച മേ > — — |
| മേ പൗഷ്ണഃ | _ പ [_] ഷ്സമ പ |

| 의 62 > | മേ പാത്നീവതഃ — — — — |
|-----------------|----------------------------------------------------|
| പാത്നീവതശ്ച് | പാത്നീവത ഇതി പാത്നീ – വതഃ |
| ച മേ > | മേ ഹാരിയോജനഃ |
| ഹാരിയോജനശ്ച | ഹാരിയോജന ഇതി — — — — ഇതി ഹാരി – യോജനഃ — — |
| ച മേ > | മ ഇതി മേ – |

17.8 **്രീചമകക്രമഃ – അഷ്ടമോ** ടനൂവാകഃ

| ഇദ്ധ്മശ്ച | ച മേ > |
|--------------------|---------------------------|
| മേ ബർ.ഹിഃ — —— | ബർ.ഹിശ്ച —— |
| ച മേ > | മേ വേദിഃ |
| വേദിശ്ച | ച മേ > |
| മേ ധിഷ്ണിയാഃ | — — ധിഷ്ണിയാശ്ച |
| 의 6D > | മ സ്രുചഃ |
| സ്രാത്വ | ച മേ > |
| മേ ചമസാഃ _ — | ചമസാശ്ച — |
| ച മേ > | മേ ഗ്രാവാണഃ |
| (ഗാവാണ ശ്ച | 의 62 > |
| മേ സാരവഃ — | ഗായവത് <u>ച</u> |
| 의 6D > | മ ഉപരവാഃ — —— |
| ഉപരവാശ്ച – –– | ഉപരവാ ഇതൃുപ – രവാഃ – – |

| ച മേ > | മേടധിഷവണേ |
|--------------------------------|-------------------------|
| അധിഷവണേ ച | അധിഷവണേ |
| | – – ഇതൃധി – സവനേ |
| ച മേ > | മേ ദ്രോണകലശഃ — — — — |
| ദ്രോണകലശശ്ച | ദ്രോണകലശ ഇതി |
| | ദ്രോണ – കലശഃ —— |
| ച മേ > | മേ വായവൃാനി |
| വായവൃാനി ച | ച മേ > |
| മേ പൂതഭൃത് | പീയഭുച്ച |
| പൂതഭൃദിതി പൂത – ഭൃത് | ച മേ > |
| മ ആധവനീയഃ | ആധവനീയശ്ച — — — |
| ആധവനീയ ഇതൃാ – ധവനീയഃ ——— | ച മേ > |
| മ ആഗ്നീദ്ധ്രം | ആഗ്നീദ്ധ്രം ച |
| ആഗ്നീല്രമിതൃാഗ്നി – ഇദ്രം > | ച മേ > |
| മേ ഹവിർദ്ധാനം — — — | ഹവിർദ്ധാനം ച |
| ഹവിർദ്ധാനമിതി | ച മേ > |
| ഹവിഃ – ധാനം > | |
| <u>മേ ഗൂ</u> ഹാഃ | <u>ഹ</u> ീ ധാശ്ച |
| ച ଥେ > | മേ സദഃ — |
| ധദര്മ പ | ച മേ > |

| മേ പുരോഡാശാഃ > | പുരോഡാശാശ്ച |
|---------------------------|---------------------|
| ച മേ — — | മേ പചതാഃ — — — |
| _ – പചതാശ്ച _ | ച മേ > — — |
| മേടവഭ്യഥഃ | അഗഭ?നത്പ |
| ഇതൃവ – ഭ <u>ൃ</u> ഥഃ | ച മേ > — — |
| മേ സ്വഗാകാരഃ | — — — ഹാറായായത്വ |
| സ്വഗാകാര ഇതി സ്വഗാ – കാരഃ | ച മേ > |
| മ ഇതി മേ | |

17.9 **്രിചമകക്രമഃ – നവമോ** ടനൂവാകഃ

| അഗ്നിശ്ച | ച മേ > |
|-----------------------|--------------------------------|
| മേ ഘർമഃ | - ഘർമശ്ച |
| ച മേ > | മേടർകഃ — |
| അർകശ്ച — | ച മേ > — — |
| മേ സൂര്യഃ | ഗ്രീയ് പ |
| ച മേ > | മേ പ്രാണഃ — — |
| പ്രാണശ്ച | പ്രാണ ഇതി പ്ര – അനഃ |
| ച മേ > | മേടശ്വമേധഃ |
| അശ്വമേധശ്ച്ച — — — | അശ്വമേധ ഇതൃശ്വ – മേധഃ — — — |
| ച മേ > | മേ പൃഥിവീ |

| പൃഥിവീ ച | ച മേ > |
|------------------------|----------------------------|
| മേടദിതിഃ | അദിതിശ്ച |
| ച മേ > | മേ ദിതിഃ — |
| ദിതിശ്ച | ച മേ > |
| മേ ദൃൗഃ | ദ്ഹത്പ |
| 의 62 > | മേ ശക്വരീഃ — |
| ശക്വരീരങ്ഗുലയഃ | — അങ്ഗുലയോ ദിശഃ — |
| ദിശ്യ | ച മേ > |
| മ യജ്ഞേന — — | ് യജ്ഞേന കല്പന്താം _ |
| <u>കല്പ</u> ന്താമൃക് | ഋക് ച |
| ച മേ > | മേ സാമ |
| സാമ ച | ച മേ > |
| മേ സ്തോമഃ | സ്താമശ്ച |
| ച മേ > | മേ യജുഃ _ |
| തജീഢ്പ | ച മേ > |
| മേ ദീക്ഷാ — — | ദീക്ഷാ ച |
| ച മേ > | മേ തപഃ |
| | ച മേ > |
| മ ഋതുഃ | ഒയിരു |
| ച മേ > | മേ വ്രതം |
| | |

| വ്രതം ച | ച മേ > — — |
|-------------------------------------------|-----------------------------------------|
| മടഹോരാത്രയോഃ > | അഹോരാത്രയോർ വൃഷ്ട്യാ — — — |
| അഹോരാത്രയോരിതൃഹഃ – – " – രാത്രയോഃ > | വുഷ്ട്രാ ബീസദ്രനന്തരേ പ |
| ബ്യഹദ്രഥന്തരേ ച | ബൃഹദ്രഥന്തരേ ഇതി ബൃഹത് – രഥന്തരേ |
| ച മേ > | വ മേ യജ്ഞേന — — |
| യജ്ഞേന കല്പേതാം – | കല്പേതാമിതി കല്പേതാം |

17.10 **ശ്രീചമകക്രമഃ – ദശമോ** ടനൂവാകഃ

| വളാത്ത പ | ച മേ > |
|------------------|------------------------|
| മേ വഥ്സാഃ | വഥ്സാശ്ച |
| 고 62 > | മേ ത്രൃവിഃ |
| ത്രൃവിശ്ച | ത്രൃവിരിതി ത്രി – അവിഃ |
| 고 62 > | മേ ത്രൃവീ |
| ത്രൂവീ ച | ത്രൃവീതി ത്രി – അവീ |
| 고 62 > | മേ ദിതൃവാട് |
| ദിതൃവാട് ച | ദിതൃവാഡിതി ദിതൃ – വാട് |
| 고 62 > | മേ ദിതൃൗഹീ |
| ദിതൃൗഹീ ച | ച മേ > |
| മേ പഞ്ചാവിഃ – | പഞ്ചാവിശ്ച |

| പഞ്ചാവിരിതി പഞ്ച – അവിഃ | |
|---------------------------|------------------------|
| മേ പഞ്ചാവീ – – – | പഞ്ചാവീ ച |
| പഞ്ചാവീതി പഞ്ച – അവീ | ച മേ > |
| മേ ത്രിവഥ്സഃ | ത്രിവഥ്സശ്ച – – |
| ത്രിവഥ്സ ഇതി ത്രി – വഥ്സഃ | ച മേ > |
| മേ ത്രിവഥ്സാ | ത്രിവഥ്സാ ച |
| ത്രിവഥ്സേതി ത്രി – വഥ്സാ | ച മേ > |
| മേ തുരൃവാട് | തുരൃവാട് ച |
| തുരൃവാഡിതി തുരൃ – വാട് | ച മേ > |
| മേ തുരൃൗഹീ | തുരൃൗഹീ ച |
| 고 62 > | മേ പഷ്പവാത് |
| _ ന <u>ജ</u> നാച്ച പ | പഷ്ഠവാദിതി പഷ്ഠ – വാത് |
| 고 62 > | മേ പഷ്ഠൗഹീ |
| പഷ്യൗഹീ ച | ച മേ > |
| മ ഉക്ഷാ | ഉക്ഷാ ച |
| ച മേ > | മേ വശാ |
| വശാ ച | ച മേ > |
| മ ഋഷഭഃ — — — | & - |
| ച മേ > | മേ വേഹത് |

| വേഹച്ച | ച മേ > |
|-------------------------|------------------------|
| മേടനഡ്വാൻ | അനഡാൻ ച |
| 의 62 > | മേ ധേനുഃ |
| നേധാശ്ച | ച മേ > |
| മ ആയുഃ – | ആയുർ യജ്ഞേന — |
| യജ്ഞേന കല്പതാം _ | കല്പതാം പ്രാണഃ |
| പ്രാണോ യജ്ഞേന — — | പ്രാണ ഇതി പ്ര – അനഃ |
| യജ്ഞേന കല്പതാം – | കല്പതാമപാനഃ |
| അപാനോ യജ്ഞേന — — — | അപാന ഇതൃപ – അനഃ – – |
| യജ്ഞേന കല്പതാം – | കല്പതാം വൃാനഃ |
| വ്യാനോ യജ്ഞേന | വ്യാന ഇതി വി – അനഃ |
| യജ്ഞേന കല്പതാം — | കല്പതാം ചക്ഷുഃ ' |
| ചക്ഷുർ യജ്ഞേന - | യജ്ഞേന കല്പതാം — |
| കല്പതാ⊎ ശ്രോത്രം > | ്രോത്രം യജ്ഞന — |
| യജ്ഞേന കല്പതാം _ | കല്പതാം മനഃ |
| മനോ യജ്ഞേന — | യജ്ഞേന കല്പതാം _ |
| കല്പതാം ്വാക് | വാഗ്യജ്ഞേന |
| യജ്ഞേന കല്പതാം — | കല്പതാമാത്മാ |
| ന്ത്യത്മാ യജ്ഞേന — — | ് യജ്ഞേന കല്പതാം — |

| കല്പതാം ^{ട്} യജ്ഞഃ | വള്ളോ യജ്ഞേന |
|-----------------------------|--------------------|
| | — — |
| ് യജ്ഞേന കല്പതാം — | കല്പതാമിതി കല്പതാം |

17.11 **ഗ്രീചമകക്രമഃ – ഏകാദശോ** ടനൂവാകഃ

| • |
|-----------------------------|
| 의 @ > |
| തിസ്രശ്ച |
| മേ പഞ്ച |
| ച @ > |
| സപ്ത ച |
| മേ നവ |
| 고 @ > |
| ഏകാദശ ച |
| മ ത്രയോദശ — |
| (തയോദശേതി ത്രയഃ – ദശ |
| മേ പഞ്ചദശ |
| പഞ്ചദശേതി പഞ്ച – ദശ |
| മേ സപ്തദശ |
| സപ്തു ടശേതി സപ്ത – ദശ |
| മേ നവദശ — |
| നവ്ദശേതി നവ് – ദശ |
| |

| ച മേ > | മ ഏക്വി⊻്ശതിഃ |
|-----------------------------------------------------|--------------------------------------------------------|
| ഏക്വിഴ്ശതിശ്ച | ഏക്വി৺്ശതിരിതൃക് – |
| | വി ്റ് ശയിഃ |
| 의 62 > | മേ ത്രയോവിഴ്ശതിഃ — |
| ത്രയോവി∀്ശതിശ്ച | ത്രയോവിഴ്ശതിരിതി |
| ((0)@D(1)1\(\sqrt{00}\)(0)10\(\overline{\sqrt{0}}\) | ത്രയം – വിക്രയിം |
| 의 6D > | മേ പഞ്ചവിഴ്ശതിഃ – |
| പഞ്ചവിഴ്ശതിശ്ച | പഞ്ചവി∀്ശതിരിതി |
| | പഞ്ച – വിഴ്ശതിഃ |
| ച ଥେ > | മേ സപ്തവിഴ്ശതിഃ |
| സ_പ്തവിയ്യ | സപ്തവിയ്ശത്വരിതി |
| | സപ്ത – വിഴ്ശതിഃ |
| ച മേ — — | മേ നവവി്്ശതിഃ |
| നവവിഴ്ശതിശ്ച | നവവി്യശതിരിതി |
| | നവ് – വി്്ശതിഃ ———————————————————————————————————— |
| 의 62 > | മ ഏക്ത്രിഴ്ശത് – |
| പ ഏകത്രിഴ്ശച്ച | ഏക്ത്രിഴ്ശദിതൃക്–ത്രിഴ്ശത് — — — — |
| ച മേ | മേ ത്രയസ്ത്രിഴ്ശത് |

| | (0)0 |
|-------------------------------------------------------|---------------------------------------|
| ത്രയസ്ത്രിഴ്ശച്ച | യ്രത്യ – യ്രിക്രയ് യെന്ധ്രിക്രുള്ള |
| ച മേ > | മേ ചത്സ്രഃ — |
| ചതസ്രശ്ച | ച @ > |
| മേടഷ്ട ാ — | _ പ്ര |
| ച മേ > | ് മേ ദ്വാദശ — |
| ദാദശ ച | ച മേ > |
| മേ ഷോഡ്ശ — | ഷോഗ്സശ ച |
| ച മേ > | മേ വിയ്ശതിഃ — —— — |
| <u>പിട്</u> രയുത്മ | ച മേ > |
| മേ ചതുർവി <i>യ്</i> ശതിഃ | ചതുർവിഴ്ശതിശ്ച |
| ചതുർവിഴ്ശതിരിതി ചതും – വിഴ്ശതിഃ | ച മേ > — — |
| മേടഷ്ടാവിയ്യതിഃ | അഷ്ടാവി∧്ശയിശ്ച |
| യ്യ്ട്രയും — —————————————————————————————————— | ച മേ > |
| മേ ദ്വാത്രിയ്യത് — | ദാത്രിക്ഢച് |

| ച മേ > | മേ ഷട്ത്രിയ്യത് |
|----------------------------------------|------------------------------|
| ഷട്ത്രിയ്യച്ച | ഷട്ത്രിയ്ശദിതി ഷട്–ത്രിയ്ശത് |
| ച മേ > — — | മേ ചത്വാരി ഋ്ശത് |
| ചതാരി ്രമ് | ച മേ > — — |
| മേ ചതുശ്ചത്വാരിഴ്ശത് – | ചതൃശ്ചത്വാരിഴ്ശച്ച |
| ചയുഃ – ചയാരിക്ശയ് ചയും – ചയാരിക്ശയ് | ച മേ > _ |
| മേടഷ്ടാചത്വാരി ് ശത് | അഷ്ടാചത്വാരി <i>്</i> ശച്ച |
| ചത്വാരി∀്ശദിതൃഷ്ടാ – ചത്വാരി∀്ശ | ച മേ > |
| മേ വാജഃ — | വാജ് <u>ര</u> മ്പ |
| ച പ്രസവഃ | പ്രസവശ്ച |
| പ്രസവ ഇതി പ്ര – സവഃ | ചാപിജഃ – – |
| അപിജശ്ച – – | അപിജ ഇതൃപി – ജഃ – – |
| ച ക്രതുഃ | ക്രതുശ്ച |
| ച സുവഃ | സുവ്ശ്ച |
| ച മൂർദ്ധാ | മൂർദ്ധാ ച |

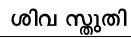
ശിവ സ്തുതി

| | \ O / - |
|------------------------|---------------------|
| ച വൃശ്ഞിയഃ | വൃശ്ഞിയശ്ച |
| വൃശ്ഞിയ ഇതി വി–അശ്ഞിയഃ | ചാന്ത്യായനഃ |
| അന്മായനശ്ച | ചാന്തുഃ |
| അന്ത്യ | ച ഭൗവനഃ |
| ഭൗവനശ്ച | ച ഭുവധഃ - |
| ഭുവധര്മാ | ചാധിപതിഃ |
| അധിപതിശ്ച | അധിപതിരിതൃധി – പതിഃ |
| ചേതി ച | |

17.12 <u>ഇഡാ ദേവഹൂ</u>ഃ

| ഇഡാ ദേവഹൂഃ | ദേവഹൂർ മനുഃ —— |
|-------------------------------|-----------------------------|
| ദേവഹൂരിതി ദേവ – ഹൂഃ | മനുർ യജ്ഞനീഃ |
| യജ്ഞനീർ ബൃഹസ്പതിഃ | യജ്ഞനീരിതി യജ്ഞ – നീഃ > |
| ബൃഹസ്പതി രുക്ഥാമദാനി | ഉക്ഥാമദാനി ശ <i>്</i> സിഷത് |
| ഉക്ഥാമദാനീതൃുക്ഥ – മദാനി — | ര്ഹ്ധിഅദിരേൂ > |
| വിശേ ദേവാഃ | ദേവാസ്സൂക്തവാചഃ |
| | സൂക്തവാച ഇതി |
| സൂക്തവാചഃ പൃഥിവി | സൂക്ത – വാചഃ |
| പൃഥിവി മാതഃ | മാതർമാ |
| വ മാ മാ > | മാ ഹിഋ്സീഃ > |

| ഹി⊻്സീർ മധു | മധു മനിഷ്യേ |
|-----------------------------------|--------------------------|
| മനിഷ്യേ മധു | മധു ജനിഷ്യേ |
| ജനിഷ്യേ മധു | മധു വക്ഷ്യാമി |
| വക്ഷ്യാമി മധു | മധു വദിഷൃാമി |
| വദിഷ്യാമി മധുമതീം | മധുമതീം ദേവേഭൃഃ — |
| മധുമതീമിതി മധു – മതീം > | ദേവേഭേറ്റ വാചം > |
| വാചമുദ്യാസം | ഉദ്ാഹ്ക് ശുശ്രീഷേണ്റാം > |
| <u>തുശ്രൂഷേണ്യാം മനുഷ്യേഭ്യ</u> ഃ | മനുഷൃഭൃസ്തം |
| തം മാ > | മാ ദേവാഃ |
| ദേവാ അവന്തു | അവന്തു ഗോഭായൈ > |
| ശോഭായൈ പിതരഃ | പിതരോടനു |
| അനുമദന്തു | മദന്ത്വിതിമദന്തു |



| Section | 6_ | Rudra | Chamaka | Homam |
|----------------|--------------|----------------|---------|-------|
| SCCHUII | \mathbf{v} | Nuu i a | Chamana | |

18 <u>ഏകോനസപ്തതൃധിക ശതസംഖ്യാക ഹോമം</u>

There are total 169 Svahaakaara Homas to be performed by Ritivigs/ Achaaryaas. For 1 to 166 svaahaakaara Homa-Ahutis the "yajamaana" has to say the same "prati svaahaakaara mantra as **"ആദിത്യാത്മനേ രുദ്രായേദം** ന മമ" after each of these 166 Homa Ahutis.

"Yajamaana prati svaahaa kaaram" is different for Homa numbers 167,168 &169 and those are given after the corresponding Mantras.

1st ANUVAKA

- 1. നമസ്തേ രുദ്ര മനൃവ് ഉതോ ത ഇഷ്വേ നമഃ । നമസ്തേ അസ്തു ധന്വനേ ബാഹുഭൃാമുത തേ നമഃ സ്വാഹാ ॥
- 2. യാത ഇഷുശ്ശിവത്മാ ശിവം ബഭൂവ തേ ധനുഃ । ശിവാ ശരവൃായാ തവ തയാ നോ രുദ്ര മൃഢയ സ്വാഹാ ॥
- 3. യാ തേ രുദ്ര ശിവാ തനൂരഘോരാടപാപകാശിനീ । തയാ നസ്തനുവാ ശന്തമയാ ഗിരിശന്താഭിചാകശീഹി സ്വാഹാ ॥
- 4. യാമിഷും ഗിരിശന്തുഹസ്തേ ബിഭ്രർ.ഷൃസ്തവേ ا ശിവാം ഗിരിത്ര താം കുരു മാഹിഴ്സ്വീം പുരുഷം ജഗ്വഥ് സ്വാഹാ ॥
- 5. ശിവേന വചനാ ത്വാ ഗിരിശാച്ഛാ വദാമസി । യഥാ നസ്സർവമിജ്ജഗദയക്ഷഴ് സുമനാ അസ്ഥ് സ്വാഹാ ॥
- 6. അദ്ധൃവോചദധിവക്താ പ്രഥമോ ദൈവ്യോ ഭിഷക് । അഹീ⊌ശ്ച_ സർവാൻ ജംഭയൻ സർവാശ്ച യാതുധാനൃഃ സ്വാഹാ ॥

7. അസൗ യസ്ത്രാമോ അരുണ ഉത ബഭ്രുസ്സുമംഗലഃ । യേ ചേമായ് രുദ്രാ അഭിതോ ദിക്ഷു ശ്രിതാസ്സഹസ്രശോ ടവൈഷാഴ് ഹേഡ ഈമഹേ സ്വാഹാ ॥ 8. അസൗ യോടവസർപ്പതി നീലഗ്രീവോ വിലോഹിതഃ । ഉതെനം ഗോപാ അഭൃശന്നദ്യശൻ ഉതഹാര്യഃ (ഉതൈനം ്വിശ്വാ ഭൂതാനി സ ദൃഷ്ടോ മൃഡയാതി നഃ സ്വാഹാ ॥ 9. നമോ അസ്തു നീലഗ്രീവായ സഹസ്രാക്ഷായ മീഢുഷേ । അഥോ യേ അസൃ സത്വാനോടഹന്തേഭ്യോടകരം നമഃ സ്വാഹാ ॥ 10. പ്രമുഞ്ച ധന്വനസ്തിമുഭയോരാർത്നിയോർജ്യാം । യാശ്ച തേ ഹസ്ത ഇഷവഃ പരാ താ ഭഗവോ വപ സ്വാഹാ ॥ 11. അവതതൃ ധനുസ്താഴ് സഹസ്രാക്ഷ ശതേഷുദേ । നിശീരു ശലുാനാം മുഖാ ശിവോ നസ്സുമനാ ഭവ സ്വാഹാ ॥ 12. വിജൃം ധനുഃ കപർദിനോ വിശല്യോ ബാണവാ⊍് ഉത ല അനേശന്നശ്യേഷവ ആഭുരസൃ നിഷംഗഥിഃ സ്വാഹാ ॥ 13. യാ തേ ഹേതിർമ്മിഢുഷ്ടമ ഹസ്തേ ബഭൂവ തേ ധനും । തയാടസ്താൻ. വിശ്വതസ്ത്വമയക്ഷ്മയാ പരിബ്ഭുജ സ്വാഹാ ॥ 14. നമസ്തേ അസ്ത്വായുധായാനാതതായ ധൃഷ്ണവേ । ഉഭാഭ്യാമുത തേ നമോ ബാഹുഭ്യാം തവ ധന്വനേ സ്വാഹാ ॥ 15. പരി തേ ധന്വനോ ഹേതിരസ്മാൻ വൃണക്തു വിശ്വതഃ । അഥോ യ ഇഷുധിസ്തവാരേ അസ്തന്നിധേഹി തഴ സ്വാഹാ **॥**

2ND ANUVAKA 16. നമോ ഹിരണൃബാഹവേ സേനാനൃേ ദിശാം ച പതയേ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 17. നമോ വൃക്ഷേഭ്യോ ഹരികേശഭ്യഃ പശൂനാം പതയേ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 18. നമഃ സസ്പിഞ്ഞ്രായ ത്വിഷിമതേ പഥീനാം പതയേ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 19. നമോ ബഭ്ലുശായ വിവൃാധിനേടന്നാനാം പതയേ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 20. നമോ ഹരികേശായോപവീതിനേ പുഷ്ടാനാം പതയേ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 21. നമോ ഭവസൃ ഹേത്വൈ ജഗതാം പതയേ നമോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 22. നമോ രുദ്രയാതതാവിനേ ക്ഷേത്രാണാം പതയേ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 23. നമഃ സൂതായാഹന്തൃായ വനാനാം പതയേ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 24. നമോ രോഹിതായ സ്ഥപതയേ വൃക്ഷാണാം പതയേ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 25. നമോ മന്ത്രിണേ വാണിജായ കക്ഷാണാം പതയേ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 26. നമോ ഭുവന്തയേ വാരിവസ്ക<u>ൃ</u>തായൗഷധീനാം പതയേ നമഃ സ്വാഹാ ॥

| 27. | നമ ഉച്ചൈർഘോഷായാക്രന്തയതെ പത്തീനാം പതയേ | | | | |
|--------------|-------------------------------------------------|--|--|--|--|
| | നമഃ സ്വാഹാ ॥ | | | | |
| 28. | നമഃ കൃഥ്സ്നവീതായ ധാവതേ സതിനാം പതയേ | | | | |
| | നമഃ സ്വാഹാ ॥ | | | | |
| 3RD ANUVAKA_ | | | | | |
| 29. | നമഃ സഹമനായ നിവൃാധീന് ആവൃാധിനിനാം പതയേ | | | | |
| | നമഃ സ്വാഹാ ॥ | | | | |
| 30. | നമഃ കുകൂഭായ നിഷങ്ഗിണേ സ്തേനാനാം പതയേ | | | | |
| | നമഃ സ്വാഹാ ॥ | | | | |
| 31. | നമോ നിഷങ്ഗിണ് ഇഷുധിമതേ തസ്തിരാണാം പതയേ | | | | |
| | നമഃ സ്വാഹാ ॥ | | | | |
| 32. | നമോ വഞ്ചതേ പരിവഞ്ചതേ സ്തായൂനാം പതയേ | | | | |
| | നമഃ സ്വാഹാ ॥ | | | | |
| 33. | നമോ നിചേരവേ പരിചരായാരണൃാനാം പതയേ | | | | |
| | നമഃ സ്വാഹാ ॥ | | | | |
| 34. | നമഃ സൂകാവിഭ്യോ ജിഗാഴ്സദ്ഭ്യോ മുഷ്ഷതാം പതയേ | | | | |
| | നമഃ സ്വാഹാ ॥ | | | | |
| 35. | നമോടസിമദ്ഭ്യോ നക്തം ചര്ദ്ഭ്യഃ പ്രകൃന്താനാം പതയേ | | | | |
| | നമഃ സ്വാഹാ ॥ | | | | |
| 36. | നമ ഉഷ്ണീഷിണേ ഗിരിചരായ കുലുഞ്ചാനാം പതയേ നമഃ | | | | |
| | ເພງລຸດວັ | | | | |
| 37. | നമ ഇഷുമദ്ഭ്യോ ധന്വാവിഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ | | | | |
| 38. | നമ ആതന്വാനേഭൃഃ പ്രതിദധാനേഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ | | | | |

39. നമ ആയച്ഛദ്ഭ്യോ വിസൃജദ്ഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 40. നമോടസൃദ്ഭ്യോ വിദ്ധൃദ്ഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ แ 41. നമ ആസീനേഭ്യ ശ്ശയാനേഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 42. നമഃ സാപദ്ഭ്യോ ജാഗ്രദ്ഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 43. നമസ്തിഷ്പദ്ഭ്യോ ധാവദ്ഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 44. നമഃ സഭാഭ്യ സ്സഭാപതിഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 45. നമോ അശോഭ്യോടശിപതിഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 4TH ANUVAKA 46. നമ ആവ്യാധിന്ിഭ്യോ വിവിദ്ധുന്തീഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 47. നമ ഉഗണാഭൃസ്തൃഹതീഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 48. നമോ ഗൂഥ്സേട്യോ ഗൂഥ്സപതിഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 49. നമോ വ്രാതേഭ്യോ വ്രാതപതിഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 50. നമോ ഗണേഭ്യോ ഗണപതിഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ וו 51. നമോ വിരൂപേഭ്യോ വിശാരൂപേഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ וו 52. നമോ മഹദ്ഭൃഃ ക്ഷുല്ലകേഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 53. നമോ രഥിഭ്യോടരഥേഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 54. നമോ രഥേഭ്യോ രഥപതിഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ וו 55. നമസ്സേനാഭ്യ സ്സേനാനിഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 56. നമഃ ക്ഷത്തൃഭൃ സ്സങ്ഗ്രഹീതൃഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 57. നമസ്തക്ഷഭ്യോ രഥകാരേഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ וו 58. നമഃ കുലാലേഭൃഃ കർമ്മാരേഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 59. നമഃ പുഞ്ജിഷ്ടേട്യോ നിഷാദേഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 60. നമ ഇഷുകൃദ്ഭ്യോ ധനാകൃദ്ഭൃശ്ച വോ നമഃ സാഹാ ॥

61. നമോ മൃഗയുഭൃ ശ്ശ്വനിഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 62. നമശ്ശുഭ്യ ശ്ശുപതിഭൃശ്ച വോ നമഃ സ്വാഹാ ॥ 5TH ANUVAKA 63. നമോ ഭവായ ച രുദ്രായ ച സ്വാഹാ ॥ 64. നമശ്ശർവായ ച പശുപതയേ ച സ്വാഹാ ॥ 65. നമോ നീലഗ്രീവായ ച ശിതികണ്റായ ച സ്വാഹാ ॥ 66. നമഃ കപർദിനേ ച വ്യുപ്തകേശായ ച സ്വാഹാ ॥ 67. നമസ്സഹസ്രാക്ഷായ ച ശതധനാനേ ച സ്വാഹാ ॥ 68. നമോ ഗിരിശായ ച ശിപിവിഷ്ടായ ച സ്വാഹാ ॥ 69. നമോ മീഢുഷ്ടമായ ചേഷുമതേ ച സ്വാഹാ ॥ 70. നമോ ഹ്രസ്വായ ച വാമനായ ച സ്വാഹാ ॥ 71. നമോ ബൃഹതേ ച വർ.ഷീയസേ ച സ്വാഹാ וו 72. നമോ വൃദ്ധായ ച സം്വൃധിനേ ച സ്വാഹാ ॥ 73. നമോ അഗ്രിയായ ച പ്രഥമായ ച സ്വാഹാ ॥ 74. നമ ആശവേ ചാജിരായ ച സ്വാഹാ ॥ 75. നമശ്ശീഘ്രിയായ ച ശീഭ്യായ ച സ്വാഹാ ॥ 76. നമ ഊർമൃായ ചാവസാനൃായ ച സ്വാഹാ וו 77. നമഃ സ്രോതസൃായ ച ദ്വീപൃായ ച സ്വാഹാ ॥ 6TH ANUVAKA 78. നമോ ജ്യേഷ്റായ ച കനിഷ്റായ ച സ്വാഹാ ॥ 79. നമഃ പൂർവജായ ചാപരജായ ച സ്വാഹാ וו 80. നമോ മദ്ധ്യമായ ചാപഗല്ഭായ ച സ്വാഹാ ॥

81. നമോ ജഘനൃായ ച ബുധ്നിയായ ച സ്വാഹാ ॥

82. നമസ്സോഭൃായ ച പ്രതിസരൃായ ച സ്വാഹാ ॥ 83. നമോ യാമൃായ ച ക്ഷേമൃായ ച സ്വാഹാ ॥ 84. നമ ഉർവരുായ ച ഖലുായ ച സ്ഥാഹാ แ 85. നമഃ ശ്ലോകൃായ ചാവസാന്യായ ച സ്വാഹാ ॥ 86. നമോ വനൃായ ച കക്ഷൃായ ച സ്വാഹാ ॥ 87. നമശ്ശ്രവായ ച പ്രതിശ്രവായ ച സ്വാഹാ ॥ 88. നമ ആശുഷേണായ ചാശുരഥായ ച സ്വാഹാ ॥ 89. നമശ്ശൂരായ ചാവഭിന്ദതേ ച സ്വാഹാ ॥ 90. നമോ വർമ്മിണേ ച വരൂഥിനേ ച സ്വാഹാ ॥ 91. നമോ ബില്ലിനേ ച കവചിനേ ച സ്വാഹാ ॥ 92. നമശ്ശ്രുതായ ച ശ്രുതസേനായ ച സ്വാഹാ ॥ 7TH ANUVAKA 93. നമോ ദുന്ദുഭൃായ ചാഹനനൃായ ച സ്വാഹാ ॥ 94. നമോ ധൃഷ്ണവേ ച പ്രമൃശായ ച സ്വാഹാ ॥ 95. നമോ ദൂതായ ച പ്രഹിതായ ച സ്വാഹാ ॥ 96. നമോ നിഷങ്ഗിണേ ചേഷുധിമതേ ച സ്വാഹാ ॥ 97. നമസ്തീക്ഷ്ണേഷവേ ചായുധിനേ ച സ്വാഹാ ॥ 98. നമസ്സ്വായുധായ ച സുധന്വനേ ച സ്വാഹാ ॥ 99. നമസ്സ്രുത്യായ ച പഥ്യായ ച സ്വാഹാ ॥ 100.നമഃ കാടൃായ ച നീപൃായ ച സ്ഥാഹാ ॥ 101.നമസ്സൂദൃായ ച സരസൃായ ച സ്വാഹാ ॥ 102.നമോ നാദൃായ ച വൈശന്തായ ച സ്വാഹാ ॥ 103.നമഃ കൂപൃായ ചാവടൃായ ച സ്ഥാഹാ ॥

```
104.നമോ വർഷ്യായ ചാവർഷ്യായ ച സ്വാഹാ ॥
105.നമോ മേഘ്യായ ച വിദ്യുതൃായ ച സ്വാഹാ ॥
106.നമ ഈദ്ധ്രിയായ ചാതപൃായ ച സ്വാഹാ ॥
107.നമോ വാതൃായ ച രേഷ്മിയായ ച സ്വാഹാ ॥
108.നമോ വാസ്കവൃായ ച വാസ്കുപായ ച സ്വാഹാ ॥
8TH ANUVAKA
109.നമസ്സോമായ ച രുദ്രായ ച സ്വാഹാ ॥
110.നമസ്താമ്രായ ചാരുണായ ച സ്വാഹാ ॥
111.നമശ്ശങ്ഗായ ച പശുപതയേ ച സ്വാഹാ ॥
112.നമ ഉഗ്രായ ച ഭീമായ ച സ്വാഹാ ॥
113.നമോ അഗ്രേവധായ ച ദൂരേവധായ ച സ്വാഹാ ॥
114.നമോ ഹന്ത്രേ ച ഹനീയസേ ച സ്വാഹാ ॥
115.നമോ വൃക്ഷേഭ്യോ ഹരികേശേഭ്യഃ സ്വാഹാ ॥
116.നമസ്തരായ സ്വാഹാ ॥
117.നമശ്ശംഭവേ ച മയോഭവേ ച സ്വാഹാ ॥
118.നമശ്ശംകരായ ച മയസ്കരായ ച സ്വാഹാ ॥
119.നമശ്ശിവായ ച ശിവതരായ ച സ്വാഹാ ॥
120.നമസ്സതീർത്ഥ്യായ ച കൂല്യായ ച സ്വാഹാ ॥
121.നമഃ പാരൃായ ചാവാരൃായ ച സ്വാഹാ ॥
122.നമഃ പ്രതരണായ ചോത്തരണായ ച സ്വാഹാ ॥
123.നമ ആതാരൃായ ചാലാദൃായ ച സ്വാഹാ ॥
124.നമശ്ശഷ്പ്യായ ച ഫേന്യായ ച സ്വാഹാ ॥
125.നമസ്സികതൃായ ച പ്രവാഹൃായ ച സ്വാഹാ ॥
```

9TH ANUVAKA 126.നമ ഇരിണൃായ ച പ്രപത്ഥ്യായ ച സ്വാഹാ ॥ 127.നമഃ കി⊍ശിലായ ച ക്ഷയണായ ച സ്വാഹാ ॥ 128.നമഃ കപർദിനേ ച പുലസ്തയേ ച സ്വാഹാ ॥ 129.നമോ ഗോഷ്പ്യായ ച ഗൂഹൃായ ച സ്വാഹാ ॥ 130.നമസ്തല്പ്യായ ച ഗേഹൃായ ച സ്വാഹാ ॥ 131.നമഃ കാടൃായ ച ഗഹ്വരേഷ്റായ ച സ്വാഹാ ॥ 132.നമോ **ഹ്രദയ്യായ** ച നിവേഷ്പ്യായ ച സ്വാഹാ ॥ 133.നമഃ പാഴ്സവൃായ ച രജസൃായ ച സ്ഥാഹാ ॥ 134.നമശ്ശുഷ്ക്യായ ച ഹരിതൃയായ ച സ്വാഹാ ॥ 135.നമോ ലോപൃായ ചോലപൃായ ച സ്വാഹാ ॥ 136.നമ ഊർവ്യായ ച സൂർമ്യായ ച സ്വാഹാ ॥ 137.നമഃ പർണ്ണ്യായ ച പർണ്ണൃശദ്യായ ച സ്വാഹാ ॥ 138.നമോടപഗുരമാണായ ചാഭിഘ്ലതേ ച സ്വാഹാ ॥ 139.നമ ആക്ഖിദതേ ച പ്രക്ഖിദതേ ച സ്വാഹാ ॥ 140.നമോ വഃ കിരികേഭ്യോ ദേവാനാ∀് ഹൃദയേഭൃഃ സ്വാഹാ ॥ 141.നമോ വിക്ഷീണകേഭ്യോ ദേവാനാഴ് ഹൃദയേഭ്യഃ സ്വാഹാ ॥ 142.നമോ വിചിന്വത്കേഭ്യോ ദേവാനാഴ് ഹൃദയേഭൃഃ സ്വാഹാ ॥ 143.നമ ആനിർ.ഹതേഭ്യോ ദേവാനാ∀് ഹൃദയേഭ്യഃ സ്വാഹാ ॥ 144. നമ ആമീവത്കേഭ്യോ ദേവാനാഴ് ഹൃദയേഭ്യഃ സ്വാഹാ ॥

10TH ANUVAKA

145.ദ്രാപേ അന്ധസസ്പതേ ദരിദ്രന്നീല്ലോഹിത । ഏഷാം പുരുഷാണാമേഷാം പശൂനാം മാ ഭേർ മാടരോ മോ ഏഷാം കിഞ്ചനാമമഥ് സ്വാഹാ ॥ 146.യാ തേ രുദ്ര ശിവാ തനൂശ്ശിവാ വിശ്വാഹഭേഷജീ । ശിവാ രുദ്രസ്യ ഭേഷജീ തയാ നോ മൃഡ ജീവസേ സ്വാഹാ ॥ 147.ഇമാ v്രുദ്രായ തവസേ കപർദിനേ ക്ഷയദ്വിരായ പ്രഭരാമഹേ മതിം । യഥാ നഃ ശമസദ്ദ്വിപദേ ചതുഷ്പദേ വിശ്വം പുഷ്ടം ഗ്രാമേ അസ്തി–ന്നനാതുര⊌ സ്വാഹാ ॥ 148.മൂഡാ നോ രുദ്രോ തനോ മയസ്കൂധി ക്ഷയദ്വീരായ നമസാ വിധേമ തേ । യച്ഛഞ്ച യോശ്ച മനുരായജേ പിതാ തദശൃാമ തവ രുദ്ര പ്രണീതൗ സ്വാഹാ ॥ 149.മാ നോ മഹാന്തമുത മാ നോ അർഭകം മാ ന ഉക്ഷന്തമുത മാ ന ഉക്ഷിതം । മാ നോ വധീഃ പിതരം മോത മാതരം പ്രിയാ മാ നസ്തനുവോ രുദ്ര രീരിഷഃ സ്വാഹാ ॥ 150.മാ നസ്തോകേ തനയേ മാ ന ആയുഷി മാ നോ ഗോഷു മാ നോ അശോഷു രീരിഷഃ । വീരാന്മാനോ രുദ്ര ഭാമിതോ വധീർ. ഹവിഷ്തന്തോ നമസാ വിധേമ തേ സ്വാഹാ ॥ 151.ആരാത്തേ ഗോഘ്ന ഉത പൂരുഷഘ്നേ ക്ഷയദ്വീരായ സുമ്മ–മസ്മേ തേ അസ്തു । രക്ഷാ ച നോ അധി ച ദേവ ബ്രൂഹൃധാ ച നഃ ശർമ യച്ഛദ്വിബർഹാഃ സ്വാഹാ ॥

152.സ്തുഹി ശ്രുതം ഗർത്തസദം ^{*}യുവാനം മൃഗന്ന ഭീമ– മുപഹത്നു–മുഗ്രം । മൃഡാ ജരിത്രേ രുദ്ര സ്തവാനോ അനൃന്തേ അസ്തന്നിവപന്തു സേനാഃ സ്വാഹാ ॥ 153.പരിണോ രുദ്രസ്യ ഹേതിർ വൃണക്തു പരിതോഷസ്യ ദുർമതിരഘായോഃ । അവ സ്ഥിരാ മഘവദ്ഭൃ–സ്തനുഷ്വ മീഢ്വസ്തോകായ തനയായ മൃഡയ സ്വാഹാ ॥ 154.മീഢുഷ്മ ശിവതമ ശിവോ നസ്സുമനാ ഭവ । പരമേ വൃക്ഷ ആയുധന്നിധായ കൃത്തിം ്വസാന ആചര പിനാകം ബിഭ്രദാഗഹി സ്വാഹാ ॥ 155.വികിരിദ വിലോഹിത നമസ്തേ അസ്തു ഭഗവഃ । യാസ്കേ സഹസ്രം ് ഹേതയോടനൃ–മസൂന്നിവപന്തു താഃ സാഹാ ॥ 156.സഹസ്രാണി സഹസ്രധാ ബാഹുവോസ്തവ ഹേതയഃ । താസാമീശാനോ ഭഗവഃ പരാചീനാ മുഖാ കൃധി സ്ഥാഹാ ॥ <u>11TH ANUVAKA</u> 157.സഹസ്രാണി സഹസ്രശോ യേ രുദ്രാ അധി ഭൂമൃാം । തേഷാ∀് സഹസ്രയോജനേ ടവധന്വാനി തന്മസി സ്വാഹാ ॥ 158.അസ്തിൻ മഹതൃർണവേടന്തരിക്ഷേ ഭവാ അധി I തേഷായ് സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി സ്വാഹാ ॥ 159.നീലഗ്രീവാഃ ശിതികണ്റാഃ ശർവാ അധഃ ക്ഷമാചരാഃ । തേഷാ⊍് സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി സ്വാഹാ ॥ 160.നീലഗ്രീവാ ശ്ശിതികണ്റാ ദിവ∀ രുദ്രാ ഉപശ്രിതാഃ । തേഷാ⊍് സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി സ്വാഹാ ॥

161.യേ വൃക്ഷേഷു സസ്പിഞ്ഞൂരാ നീലഗ്രീവാ വിലോഹിതാഃ ഭ തേഷായ് സഹസ്രയോജനേ ടവ ധമ്പാനി തന്മസി സ്വാഹാ ॥ 162.യേ ഭുതാനാമധിപതയോ വിശിഖാസഃ കപർദിനഃ । തേഷാഴ് സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി സ്വാഹാ ॥ 163.യേ അന്നേഷു വിവിദ്ധൃന്തി പാത്രേഷു പിബതോ ജനാൻ । തേഷാ√് സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി സ്വാഹാ ॥ 164.യേ പഥാം പഥിരക്ഷയ ഐലബൂദാ യവ്യുധഃ । തേഷാ ് സഹസ്രയോജനേ ടവ ധമ്പാനി തന്മസി സ്വാഹാ ॥ 165.യേ തീർത്ഥാനി പ്രചരന്തി സൂകാവന്തോ നിഷങ്ഗിണഃ । തേഷാ√് സഹസ്രയോജനേ ടവ ധന്വാനി തന്മസി സ്വാഹാ ॥ 166.യ ഏതാവന്തശ്ച ഭൂയാസശ്ച ദിശോ രുദ്രാ വിതസ്ഥിരേ । തേഷാ⊍് സഹസ്രയോജനേ ടവധന്വാനി തന്മസി സ്വാഹാ ॥ 167.നമോ രുദ്രേഭ്യോ യേ പൃഥിവൃാം ്യേഷാമന്നമിഷവ സ്തേഭ്യോ ദശ പ്രാചീർ ദശ ദക്ഷിണാ ദശ പ്രതീചീർ ദശോദീചീർ ദശോർധ്വാ–സ്കേഭ്യോ നമസ്തേ നോ മൃഡയന്തു തേ യം ദ്വിഷ്ടോ യശ്ച നോ ദേഷ്ട്രി തം ്വോ ജംഭേ ദധാമി സ്വാഹാ ॥ (പൃഥിവിഷദ്ഭൃാ രുദ്രേഭൃ ഇദം ന മമ) 168.നമോ രുദ്രേഭ്യോ യേന്തരിക്ഷേ യേഷാം ്വാത ഇഷവ–സ്തേഭ്യോ ദശ പ്രാചീർ ദശ ദക്ഷിണാ ദശ പ്രതീചീർ ദശോദിചീർ ദശോർധ്വാ–സ്കേട്യോ നമസ്സേ നോ മൃഡയന്തു തേ യം ദ്വിഷ്ടോ യശ്ച നോ ദ്വേഷ്ടി തം ്വോ ജംഭേ ദധാമി സ്വാഹാ ॥ (അന്തരിക്ഷഷദ്ഭ്യോ രുദ്രേഭ്യ ഇദം ന മമ)

169.നമോ രുദ്രേഭ്യോ യേ ദിവി യേഷാം വർ.ഷമിഷ്വ – സ്തേഭ്യോ ദശ പ്രാചീർ ദശദക്ഷിണാ ദശപ്രതീചീർ ദശോദീചീർ ദശോർധ്വാ–സ്തേഭ്യോ നമസ്തേ നോ മൃഡയന്തു തേ യം ദിഷ്മോ യശ്ച് നോ ദേഷ്ട്രി തം വോ ജംഭേ ദധാമി സ്വാഹാ ॥ (ദിവിഷദ്ഭ്യ രുദ്രേഭ്യ ഇദം ന മമ)

18.1 <u>ചമക ഹോമ</u>ഃ

For Chamak Homa Ahutis the "yajamaana" has to say the same "prati svaahaakaara mantra as "അഗ്നാവിഷ്കുഭൃാം ഇദം ന മമ । "

Chamaka Homam is followed by "vasoordhaaraa", "poornahuti. Then Chartur-Veda paarayanam, which may include ghanam, geetham, padyam, gadyam etc. The Section 19.1 gives the uttaraanga Puja that is performed to the Kalasha/Kumbha before udvaapanam. This is detailed in Rudra Ekadasini and Maharudram.

Section 6 – UttarAnga PUja

19 ഉത്തരാങ്ഗ പൂജാ

19.1 കലശ ഉദ്വാപനം

നിധനപതാന്തികായ നമഃ । നിധനപതയേ നമഃ ഊർദ്ധാലിങ്ഗായ നമഃ ഊർദ്ധ്വായ നമഃ ഹിരണൃലിങ്ഗായ നമഃ ഹിരണ്യായ നമഃ സുവർണായ നമഃ സുവർണലിങ്ഗായ നമഃ ദിവൃലിങ്ഗായ നമഃ ദിവൃായ നമഃ ഭവലിങ്ഗായ നമഃ ഭവായ നമഃ ശർവലിങ്ഗായ നമഃ ശർവായ നമഃ ശിവലിങ്ഗായ നമഃ ശിവായ നമഃ ജ്വലലിങ്ഗായ നമഃ ജ്വലായ നമഃ ആത്മലിങ്ഗായ നമഃ ആത്മായ നമഃ പരമലിങ്ഗായ നമഃ പരമായ നമഃ ഏതഥ്സോമസ[്], സൂരൃസ്യ സർവലിങ്ഗ[ം] സ്ഥാപയതി പാണിമന്ത്രം പവിത്രം । സദ്യോ ജാതം പ്രപദ്യാമി സദ്യോ ജാതായ വൈ നമോ നമഃ । ഭവേ ഭവേ നാതിഭവേ ഭവസ്വ മാം । ഭവോദ്ഭവായ നമഃ ॥ വാമദേവായ നമോ ജ്യേഷ്റായ നമഃ ശ്രേഷ്റായ നമോ രുദ്രായ നമഃ കാലായ നമഃ കലവികരണായ നമോ ബലവികരണായ നമോ ബലായ നമോ ബലപ്രമഥനായ നമഃ സർവഭൂതദമനായ നമോ മനോന്മനായ നമഃ । അഘോരേഭ്യോടഥഘോരേഭ്യോ ഘോരഘോരതരേഭ്യഃ I സർവേട്യും സർവശർവേട്യോ നമസ്തേ അസ്തു രുദ്രരൂപേട്യും ॥

```
തത്പുരുഷായ വിദ്മഹേ മഹാദേവായ ധീമഹി ।
തന്നോ രുദ്രഃ പ്രചോദയാത് ॥
ഈശാനഃ സർവവിദൃാനാ-മീശ്വരഃ സർവഭുതാനാം
ബ്രഹ്മാധിടപതിർ ബ്രഹ്മണോടധിപതിർ ബ്രഹ്മാ
ശിവോ മേ അസ്തു സദാശിവോം ॥
നമോ ഹിരണൃബാഹവേ ഹിരണൃവർണായ ഹിരണൃരൂപായ
ഹിരണ്യപതയേ soബികാപതയ ഉമാപതയേ പശുപതയേ
നമോ നമഃ ॥
19.1.1 <u>രൂദ്ര ഏകദാശിനി / മഹാ രൂദ്രം</u>
നമഃ പ്രാച്ചൈ ദിശേയാശ്ച ദേവതാ ഏതസ്യാം പ്രതിവസന്ത്യേ
താഭൃശ്ച നമോ,
നമോ ദക്ഷിണായൈ ദിശേയാശ്ച ദേവതാ ഏതസൃാം
പ്രതിവസന്ത്യേ താഭൃശ്ച നമോ,
നമഃ പ്രതീച്ചൈു ദിശേയാശ്ച ദേവതാ ഏതസ്യാം പ്രതിവസന്ത്യേ
താഭൃശ്ച നമോ,
നമ ഉദീച്ചെു ദിശേയാശ്ച് ദേവതാ ഏതസ്യാം പ്രതിവസന്ത്യേ
താഭൃശ്ച നമോ,
നമ ഊർദ്ധാരയെ ദിശേയാശ്ച് ദേവതാ ഏതസ്യാം പ്രതിവസന്ത്യേ
താഭൃശ്ച നമോ,
```

നമോടധരായൈ ദിശേയാശ്ച ദേവതാ ഏതസ്യാം പ്രതിവസന്ത്യേ താഭൃശ്ച നമോ, നമോടവാന്തരായൈ ദിശേയാശച ദേവതാ ഏതസ്യാം പ്രതിവസന്ത്യേ താഭൃശ്ച നമോ, നമോ ഗംഗാ യമുനയോർ മദ്ധ്യേ യേ വസന്തി തേ മേ പ്രസന്നാത്മാനശ്ചിരം ജീവിതം ്വർദ്ധയന്തി നമോ ഗംഗാ യമുനയോർ മുനിഭൃശ്ച നമോ നമോ ഗംഗാ യമുനയോർ മുനിഭൃശ്ച നമഃ ॥ ശിവേന മേ സന്തിഷ്പസ്വ സ്യോനേന മേ സന്തിഷ്പസ്വ സുഭൂതേന മേ സന്തിഷ്റ്രസ്വ ബ്രഹ്മവർചസേന മേ സന്തിഷ്റ്രസ്വ യജ്ഞസൃർധി മനു സന്തിഷ്റ സോപ് തേ യജ്ഞ നമ ഉപ തേ നമ ഉപ തേ നമഃ ॥ 19.1.2 <u>ധൂപം</u> ധൂരസി ധൂർവ ധൂർവന്തം ധൂർവതം 'യോടസ്മാൻ ധൂർവതി തം ധൂർവയം ്വയം ധൂർവാമസ്ത്വം ദേവാനാമസി സസ്സിതമം പപ്രിതമം ജുഷ്ടതമം വഹ്നിതമം ദേവഹൂതമ–മഹ്രുതമസി ഹവിർധാനം ദൂഴ്ഹസ്വ മാഹ്വാർ മിത്രസൃ ത്വാ ചക്ഷുഷാ പ്രേക്ഷേ മാ ഭേർ മാ സം്വിക്താ മാ ത്വാ ഹിഴ്സിഷം । ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ । ധുപം ആഘ്രാപയാമി ।

19.1.3 <u>ദീപം</u>

ഉദ്ദീപൃസാ ജാതവേദോടപഘ്പൻ നിർ.ഋതിം മമ് । പശു⊌ശ്ച മഹൃമാവഹ ജീവനം ച ദിശോ ദിശ । മാനോ ഹി⊍്സീ– ജ്ജാതവേദോ ഗാമശാം പുരുഷം ജഗത് । അബിഭ്രദഗ്ന ആഗ്ഹി ശ്രിയാ മാ പരിപാതയ । ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭ്യോ ദേവതാഭ്യോ നമഃ । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । 19.1.4 <u>നൈവേദ്യം</u> ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ । തഥ്സ്വിതുർ വരേണ്യം ഭർഗോ ദേവസ്യ ധീമഹി । ധിയോ യോ നഃ പ്രചോദയാത് । ദേവ സവിതഃ പ്രസുവഃ । സതൃം ത്വർത്തേന പരിഷിഞ്ചാമി । അമൃതം ഭവതു । അമൃതോപസ്തരണമസി । ഒാം പ്രാണായ സ്വാഹാഃ I ഓം അപാനായ സ്വാഹാഃ I ഒാം വൃാനായ സ്വാഹാഃ । ഓം ഉദാനായ സ്വാഹാഃ । ഒാം സമാനായ സ്വാഹാഃ । ഒാം ബ്രഹ്മണേ സ്വാഹാഃ । മധുവാതാ ഋതായതേ മധുക്ഷരന്തി സിന്ധവഃ । മാദ്ധാിർ നഃ സന്തോഷധീഃ । മധുനക്ത മുതോഷസി മധുമത് പാർഥിവ 🗸 രജഃ । മധുദൃൗരസ്തു നഃ പിതാ । മധുമാന്നോ വനസ്പതിർ മധുമാ∀് അസ്തു സൂരൃഃ । മാധ്വീർഗാവോ ഭവന്തു നഃ ॥ മധു മധു മധു ॥

ആവാഹിതാഭ്യഃ സർവാഭ്യോ ദേവതാഭ്യോ നമഃ । (ദിവ്യാന്നം, ഘൃതഗുളപായസം, നാളികേരഖണ്ഡദ്വയം, കദളീഫലം നിവേദയാമി । മദ്ധ്യേ മദ്ധ്യേ അമൃതപാനീയം സമർപയാമി । അമൃതാപിധാനമസി । ഹസ്തപ്രക്ഷാളനം സമർപയാമി । പാദപ്രക്ഷാളനം സമർപയാമി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി ।

19.1.5 താംബുലം

പൂഗീഫലസമായുക്തം നാഗവല്ലീദളൈർയുതം । കർപൂരചൂർണ സംയുക്തം താംബൂലം പ്രതിഗൃഹൃതാം । ആവാഹിതാഭ്യഃ സർവാഭ്യോ ദേവതാഭ്യോ നമഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി । ആചമനീയം സമർപയാമി । സമസ്തോപചാരാൻ സമർപയാമി ।

19.1.6 <u>പഞ്ചമുഖ ദീപം</u>

സപ്രഥ സഭാം മേ ഗോപായ । യേ ച സഭ്യാ: സഭാ സദ്: । താനിന്ദ്രിയാവത: കുരു । സർവമായു – രുപാസതാം । അഹേ ബുധ്നിയ മന്ത്രം മേ ഗോപായ । യമൃഷയസ്സൈ – വിദാ വിദു: । ഋച: സാമാനി യജൂം പ്രി । സാ ഹി ശ്രീരമൃതാ സതാം । or / and ആത്മന്നാ – ത്മന്നിത്യാ – മന്ത്രയത । തസ്മൈ പഞ്ചമഴ് ഹൂതഃ പ്രതൃശൃണോത് । സ പഞ്ചഹൂതോ ടഭവത് । പഞ്ചഹൂതോ ഹവൈ നാമൈഷഃ । തം വാ ഏതം പഞ്ചഹൂത്യ സന്തം ।

```
പഞ്ചഹോതേതൃാ ചക്ഷതേ പരോക്ഷേണ ।
പരോക്ഷപ്രിയാ ഇവ ഹി ദേവാഃ ॥
ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ । അലങ്കാര–
പഞ്ചമുഖദീപം പ്രദർശയാമി । ആചമനീയം സമർപയാമി ।
19.1.7 <u>കർപുരനീരാജനം</u>
സോമോ വാ ഏതസ്യ രാജ്യമാദത്തേ 1 യോ രാജാസൻ
രാജ്യോ വാ സോമേന യജതേ । ദേവ സുവാമേതാനി ഹവി⊍്ഷി
ഭവന്തി । ഏതാവന്തോ വൈ ദേവാനാഴ് സവാഃ ।
ത ഏവാസ്ക്ലൈ സവാൻ പ്രയച്ഛന്തി । ത ഏനം പുനഃ സുവന്തേ
രാജൃായ । ദേവസൂ രാജാ ഭവതി ।
ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ ।
കർപുരനീരാജനം പ്രദർശയാമി । കർപുരനീരാജനാനന്തരം
അചമനീയം സമർപയാമി ।
ബൃഹഥ്സാമ ക്ഷത്രഭൃദ് വൃദ്ധവൃഷ്ണിയം ത്രിഷ്ടുഭൗജ്-ശ്ശുഭിത-
മുഗ്രവീരം । ഇന്ദ്രസ്തോമേന പഞ്ചദശേന മദ്ധ്യമിദം ്വാതേന
സഗരേണ രക്ഷാ । രക്ഷാം ധാരയാമി ।
ഒാം ഹര । ഓം ഹര । ഓം ഹര ।
രാജാധിരാജായ പ്രസഹൃസാഹിനേ । നമോ വയം
്വൈശ്രവണായ കുർമഹേ । സ മേ കാമാൻ കാമകാമായ മഹൃം ।
കാമേശ്വരോ വൈശ്രവണോ ദദാതു ।
```

കുബേരായ വൈശ്രവണായ । മഹാരാജായ നമഃ । സുവർണപുഷ്പം സമർപയാമി । പാരിജാത പുഷ്പം സമർപയാമി । 19.1.8 <u>മന്ത്ര പൂഷ്</u>പം യോടപാം പുഷ്പം വേദ । പുഷ്പവാൻ പ്രജാവാൻ പശുമാൻ ഭവതി । ചന്ദ്രമാ വാ അപാം പുഷ്പം । പുഷ്പവാൻ പ്രജാവാൻ പശുമാൻ ഭവതി । ഓം തദ്ബ്രഹ്മ । ഓം തദായുഃ । ഓം തദാത്മാ । ഓം തഥ്സതൃം । ഓം തഥ്സർവം । ഓം തത്പുരോർ നമഃ । അന്തശ്ചരതി ഭൂതേഷു ഗുഹായാം ^{*}വിശ്വമൂർതിഷു । താം "യജ്ഞസ്താം "വഷട്കാര സ്താമിന്ദ്രസ്താം" രുദ്രസ്താം "വിഷ്ണുസ്താം ബ്രഹ്മതാം പ്രജാപതിഃ । താം തദാപ ആപോ ജ്യോതീരസോടമൃതം ബ്രഹ്മ ഭൂർഭുവസ്സുവരോം 1 ന കർമണാ ന പ്രജയാ ധനേന തൃാഗേനൈകേ അമൃതത്വ– മാനശുഃ । പരേണ നാകം നിഹിതം ഗുഹായാം വിഭ്രാജദേത– ദൃതയോ വിശന്തി । **1** വേദാന്തവിജ്ഞാന സുനിശ്ചിതാർഥാ–സ്സന്യാസ യോഗാദൃതയഃ ശുദ്ധ സത്വാഃ । തേ ബ്രഹ്മലോകേ തു പരാന്തകാലേ പരാമൃതാത് പരിമുചൃന്തി സർവേ i 2 ദഹ്രം ്വിപാപം പരമേശ്വഭൂതം ്യത്പുണ്ഡരീകം പുരമ്ദ്ധ്യ സൗസ്ഥം । തത്രാപി ദഹ്രം ഗഗനം ്്വിശോക്–സ്തസ്മിൻ യദന്തസ്ത–ദുപാസിതവ്യം । 3

```
യോ വേദാദൗ സ്വരഃ പ്രോക്തോ വേദാന്തേ ച പ്രതിഷ്ടിതഃ ।
തസ്യ പ്രകൃതിലീനസ്യ യഃ പര സ്സ മഹേശ്വരഃ । 4
വേദോക്ത മന്ത്രപുഷ്ടം സമർപയാമി ।
19.1.9 ചതൂർവേദ പാരായണം
ഓം । അഗ്നിമീളേ പുരോഹിതം യജ്ഞസ്യ ദേവമൃത്വിജം ।
ഹോതാരം രത്ന ധാതമം I
ഓം 1 ഇഷേത്വോർജേത്വാ വായവഃ സ്ഥോ പായവഃ സ്ഥ ദേവോ
വസ്സവിതാ പ്രാർപയതു ശ്രേഷ്ഠതമായ കർമണേ ।
ഓം । അഗ്ന ആയാഹി വീതയേ ഗൂണാനോ ഹവൃ ദാതയേ ।
നിഹോതാ സഥ്സി ബർഹിഷി ।
ഓം । ശന്നോ ദേവീരഭിഷ്ടയ ആപോ ഭവന്തു പീതയേ ।
ശംയോരഭിസ്രവന്തു നഃ ॥
19.1.10 <u>ആപസ്സംബ ശ്രൗത സൂത്ര, പൂരാണ, വാകൃാഃ</u>
അഥാതോ ദർശപൂർണമാസൗ വൃാഖ്യാസ്യാമഃ । പ്രാതരഗ്നിഹോത്രം
ഹുത്വാ । അനൃമാവഹനീയം പ്രണീയ । അഗ്നീനന്വാ ദധാതി ।
ന ഗതശ്രിയോടന്യമഗ്നിം പ്രണയതി । (ശ്രൗത സൂത്ര വാകൃഃ)
പരിത്രാണായ സാധൂനാം വിനാശായ ച ദുഷ്ക്യതാം ।
ധർമ സംസ്ഥാപനാർത്ഥായ സംഭവാമി യുഗേ യുഗേ ।
(പുരാണ വാകൃഃ )
```

19.2 കൂംഭ /കലശ ഉദ്വാപനം

19.2.1 <u>കലശ ഉദ്വാപന മന്ത്രാ</u>ഃ

```
നിഘുബൈ രസമായുത്തെ: ഒകാലൈർ. ഹരിതാമാപണ്ടെ ഭ
ഇന്ദ്രായാഹി സഹസ്രയുക് । അഗ്നിർ വിഭ്രാഷ്ട്രി വസനഃ ।
വായുശ്ശേത്സികദ്രുകഃ । സം്വഥ്സരോ വിഷൂവർണൈഃ ।
നിതൃാസ്സേ sനുചരാസ്തവ i
സുബ്രഹ്മണ്യോ ് സുബ്രഹ്മണ്യോ ए സുബ്രഹ്മണ്യോം ।
ഓം തത് പുരുഷായ വിദ്മഹേ മഹാസേനായ ധീമഹി ദ
തന്നഃ ഷഞ്ചുഖഃ പ്രചോദയാത് ।
ധാതാഃ വിധാതാ പരമോത സന്ദൃക് പ്രജാപതിഃ പരമേഷ്മീ
വിരാജാ । സ്കോമാശ്ചന്ദാ⊍്സി നിവിദോമ ആഹുരേതസ്മെ
രാഷ്ട്ര–മഭിസന്നമാമ । അഭ്യാവർതധ്വ–മുപമേത സാകമയ 🤍
ശാസ്താ–ടധിപതിർ വോ അസ്തു । അസൃ വിജ്ഞാന–മനുസ⊎്
രഭധ്വമിമം പശ്ചാദനുജീവാഥ സർവേ ।
ഓം ഭൂതനാഥായ വിദ്മഹേ ഭവപുത്രായ ധീമഹി ।
തന്നഃ ശാസ്താ പ്രചോദയാത് ।
നമോ അസ്തു സർപേട്യോ യേ കേ ച പൃഥിവീമനു ।
യേ അന്തരിക്ഷേ യേ ദിവി തേഭ്യഃ സർപേഭ്യോ നമഃ ।
യേടദോ രോചനേ ദിവോ യേ വാ സൂരൃസ്യ രശ്മിഷു ।
യേഷാമഹ്സു സദഃ കൃതം തേഭ്യഃ സർപേഭ്യോ നമഃ ।
യാ ഇഷവോ യാതു ധാനാനാം യേ വാ വനസ്പതീ ഗ്രനു ।
യേ വാടവടേഷു ശേരതേ തേഭ്യഃ സർപേഭ്യോ നമഃ ।
```

```
ഓം സർപരാജായ വിദ്മഹേ സഹസ്രപ്രണായ ധീമഹി I
തന്നോ അനന്തഃ പ്രചോദയാത് ।
ഓം നമോ ബ്രഹ്മണേ നമോ അസ്ത്വഗ്നയേ നമഃ പൃഥിവ്വൈ നമ
ഓഷധീഭൃഃ । നമോ വാചേ നമോ വാചസ്പതയേ നമോ വിഷ്ണവേ
ബൃഹതേ കരോമി । (ത്രിവാരം ജപേത്)
വരുണായ നമഃ । സകലാരാധന്നൈഃ സ്വർചിതം ।
തത്വാ യാമി ബ്രഹ്മണാ വന്ദമാനസ്തദാശാസ്തേ യജമാനോ
ഹവിർഭിഃ । അഹേഡമാനോ വരുണേഹ ബോദ്ധ്യുരുശ 🤟
സ മാ ന ആയുഃ പ്രമോഷീഃ ॥
ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । സമസ്തോപചാരാൻ സമർപയാമി ।
അസ്താത് കുംഭാത് ആവാഹിതം സകല–തീർത്ഥാധിപതിം
വരുണം യഥാസ്ഥാനം പ്രതിഷ്മാപയാമി ।
(ശോഭനാർത്ഥേ ക്ഷേമായ പുനരാഗമനായ ച) ।
പരി തേ ധനാനോ ഹേതിരസൂാൻ–വുണക്തു വിശാതഃ i
അഥോ യ ഇഷുധിസ്തവാരേ അസ്തന്നിധേഹിതം ॥
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । മനോന്മനായ നമഃ ।
സമസ്തോപചാരാൻ സമർപയാമി ।
ത്ര്യംബകം ്യംജാമഹേ സുഗന്ധിം പുഷ്ടിവർധനം ।
ഉർവാരുകമിവ ബന്ധനാൻ മൃത്യോർ മുക്ഷീയ മാസ്മൃതാത് ദ
```

```
ഗൗരീ മിമായ സലിലാനി തക്ഷത്യേക്പദീ ദിപദി സാച്ചതുഷ്പദീ । അഷ്ടാപദീ നവ്പദീ ബഭൂവുഷീ സഹസ്രാക്ഷരാ പരമേ വ്യോമൻ ।
നമസ്തേ രുദ്ര മനൃവ് ഉതോത ഇഷവേ നമ്ഃ ।
നമസ്തേ അസ്തു ധന്വനേ ബാഹുഭ്യാമുത തേ നമ്ഃ ।
ഓം ഹ്രീം നമഃ ശിവായ । സദ്യോജാതം പ്രപദ്യാമി ।
ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്മിൻ കുംഭേ/കലശേ മഹാദേവം , ശിവം , രുദ്രം , ശങ്കരം, നീലലോഹിതം, ഈശാനം , വിജയം, ഭീമം, ദേവദേവം , ഭവോദ്ഭവം, ആദിത്യാത്മകരുദ്രം യഥാസ്ഥാനം പ്രതിഷ്ഠാപയാമി ।
```

19.3 അഭിഷേകം

The general order of reciting Sukhtams during abhishekam to the idols/deities are given below. However, the order may vary depending on time availability.

- 1. Purusha Sukhtam
- 2. Uttara Naaraayanam
- 3. Maha Naaraayanam
- 4. Durga Sukhtham
- 5. Sri Sukhtham
- 6. Medha Sukhtam
- 7. Navagraha Sukhtam
- 8. Ayushya Sukhtam
- 9. Shanti Panchakam

19.4 അലങ്കാരം, അർചനാ, പുജാ

This section gives the final puja performed to Deities/idols for which Abhishekam has been performed. These deities are cleaned, decorated and then the puja shall be performed. The Ashtothra Pooja/Archana shall be performed for these idols/deities.

The count of the archanaas performed will vary depending on the function and the paucity of time. It is beneficial to perform Rudra krama archana during Pradhosha Puja.

19.4.1 ബിലാഷ്ടകം

ത്രിദളം ത്രിഗുണാകാരം ത്രിനേത്രം ച ത്രിയായുഷം । ത്രിജന്മപാപ സംഹാരം ഏക ബിലാം ശിവാർപണം ॥ 1 ത്രിശാഖൈഃ ബില്വപത്രെശ്ചഹൃഛിങ്ട്രൈഃ കോമളൈഃ ശുഭൈഃ । ശിവപുജാം കരിഷ്യാമി ഏക ബിലാം ശിവാർപണം ॥ 2 അഖണ്ഡ ബില്വപത്രേണ പൂജിതേ നന്ദികേശ്വരേ । ശുദ്ധ്യന്തി സർവ പാപേട്യോ ഏക ബിലാം ശിവാർപണം ॥ 3 സാളഗ്രാമ ശിലാമേകാം വിപ്രാണാം ജാതു ചാപരേൃത് । സോമയജ്ഞു മഹാപുണ്യം ഏക ബിലാം ശിവാർപണം ॥ 4 സാളഗ്രാമേഷു വിപ്രേഷു തടാകേ വനകുപയോഃ । യജ്ഞ കോടി സഹസ്രാണാം ഏക ബില്വം ശിവാർപണം 🛭 5 ദന്തി കോടി സഹസ്രാണി വാജപേയ ശതാനി ച കോടി കന്യാ മഹാദാനം ഏക ബിലം ശിവാർപണം ॥ 6 ലക്ഷ്മൃാഃ സ്തനുത ഉത്പന്നം മഹാദേവസൃ ച പ്രിയം । ബിലാ വൃക്ഷം പ്രയച്ഛാമി ഏക ബിലാം ശിവാർപണം ॥ 7

ദർശനം ബിലാവൃക്ഷസൃ സ്പർശനം പാപ നാശനം । അഘോര പാപ സംഹാരം ഏക ബിലാം ശിവാർപണം ॥ 8 കാശീക്ഷേത്ര നിവാസം ച കാലഭൈരവ ദർശനം । പ്രയാഗേ മാധവം ദൃഷ്ട്വാ ഏക ബിലാം ശിവാർപണം ॥ 9 തുളസി ബിലാ നിർഗുണ്ഡി ജംബീരാ മലകാനി ച । പഞ്ചബിലാ മിതിപ്രോക്തം ഏക ബിലാം ശിവാർപണം ॥ 10

ബിലാഷ്ട്രകമിദം പുണൃം യഃ പഠേച്ഛിവ സന്നിധൗ । സർവപാപ വിനിർമുക്തഃ ശിവലോക–മവാപ്പുയാത് ॥ 11

19.4.2 <u>ധൂപം</u>

ധൂര്സി ധൂർവ ധൂർവ്ന്തം ധൂർവതം യോടസ്മാൻ ധൂർവ്തിതം ധൂർവയം വയം ധൂർവാമസ്ത്വം ദേവാനാമസി സസ്റ്റിതമം പപ്പിതമം ജുഷ്ടതമം വഹ്നിതമം ദേവഹൂത്മ–മഹ്രുതമസി ഹവിർധാനം ദൂഴ്ഹസ്വ മാഹ്വാർ മിത്രസ്യ ത്വാ ചക്ഷുഷാ പ്രേക്ഷേ മാ ഭേർമാ സംവിക്താ മാ ത്വാ ഹിഴ്സിഷം ര

ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭ്യോ ദേവതാഭ്യോ നമഃ । ധൂപം ആഘ്രാപയാമി ।

19.4.3 <u>ദീപം</u>

ഉദ്ദീപൃസാ ജാതവേദോടപഘ്പൻ നിർ.ഋതിം മമ് । പശു⊌ശ്ച മഹൃമാവഹ ജീവനം ച ദിശോ ദിശ । മാനോ ഹിംഗ്സീ– ജ്ജാതവേദോ ഗാമശ്വം പുരുഷം ജഗത് । അബിഭ്രദഗ്ന ആഗഹി ശ്രിയാ മാ പരിപാതയ । ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ । ദീപം ദർശയാമി । ധൂപദീപാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । 19.4.4 <u>നൈവേദൃം</u> ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ । തഥ്സവിതുർ വരേണ്യം ഭർഗോ ദേവസൃ ധീമഹി । ധിയോ യോ നഃ പ്രചോദയാത് । ദേവ സവിതഃ പ്രസുവഃ । സതൃം ത്വർത്തേന പരിഷിഞ്ചാമി । അമൃതം ഭവതു । അമൃതോപസ്തരണമസി । ഒാം പ്രാണായ സ്വാഹാഃ I ഓം അപാനായ സ്വാഹാഃ I ഓം വൃാനായ സ്വാഹാഃ I ഓം ഉദാനായ സ്വാഹാഃ I ഒാം സമാനായ സ്വാഹാഃ । ഒാം ബ്രഹ്മണേ സ്വാഹാഃ । മധുവാതാ ഋതായതേ മധുക്ഷരന്തി സിന്ധവഃ । മാദ്ധ്വീർ നഃ സന്ത്വോഷധീഃ । മധുനക്ത മുതോഷസി മധുമത് പാർഥിവ 🗸 രജഃ । മധുദൃൗരസ്തു നഃ പിതാ । മധുമാന്നോ വനസ്പതിർ മധുമാ∀് അസ്തു സൂരൃഃ । മാധ്വീർഗാവോ ഭവന്തു നഃ ॥ മധു മധു മധു ॥

ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ । (ദിവൃാന്നം, ഘൃതഗുളപായസം, നാളികേരഖണ്ഡദ്വയം, കദളീഫലം നിവേദയാമി । മദ്ധ്യേ മദ്ധ്യേ അമൃതപാനീയം സമർപയാമി । അമൃതാപിധാനമസി । ഹസ്തപ്രക്ഷാളനം സമർപയാമി । പാദപ്രക്ഷാളനം സമർപയാമി । നൈവേദ്യാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । 19.4.5 താംബൂലം പൂഗീഫലസമായുക്തം നാഗവല്ലീദളൈർയുതം । കർപൂരചൂർണ സംയുക്തം താംബൂലം പ്രതിഗൃഹൃതാം । ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ । കർപൂര താംബൂലം നിവേദയാമി । ആചമനീയം സമർപയാമി । സമസ്തോപചാരാൻ സമർപയാമി । 19.4.6 <u>പഞ്ചമൂഖ ദീപം</u> സപ്രഥ സഭാം മേ ഗോപായ । യേ ച സഭ്യാഃ സഭാ സദഃ । താനിന്ദ്രിയാവതഃ കുരു । സർവമായു–രുപാസതാം । അഹേ ബുധ്നിയ മന്ത്രം മേ ഗോപായ । യമൃഷയസ്സ്ലെ–വിദാ വിദുഃ । ഋചഃ സാമാനി യജൂ v്ഷി । സാ ഹി ശ്രീരമൃതാ സതാം । or / and ആത്മന്നാ–ത്മന്നിത്യാ–മന്ത്രയത । തസ്റ്റൈ പഞ്ചമഴ്ഹൂതഃ പ്രതൃശൃണോത് । സ പഞ്ചഹൂതോ ടഭവത് । പഞ്ചഹൂതോ ഹവൈ നാമൈഷഃ । തം ്വാ ഏതം പഞ്ചഹൂത∀് സന്തം । പഞ്ചഹോതേത്യാ ചക്ഷതേ പരോക്ഷേണ । പരോക്ഷപ്രിയാ ഇവ ഹി ദേവാഃ ॥

```
ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭ്യോ ദേവതാഭ്യോ നമഃ । അലങ്കാര-
പഞ്ചമുഖദീപം പ്രദർശയാമി । ആചമനീയം സമർപയാമി ।
19.4.7 <u>കർപുരനീരാജനം</u>
സോമോ വാ ഏതസ്യ രാജ്യമാദത്തേ 1 യോ രാജാസൻ
രാജ്യോ വാ സോമേന യജതേ । ദേവ സുവാമേതാനി ഹവി ५ ഷി
ഭവന്തി । ഏതാവന്തോ വൈ ദേവാനാഴ് സവാഃ ।
ത ഏവാസ്ക്ലൈ സവാൻ പ്രയച്ഛന്തി ।
ത ഏനം പുനഃ സുവന്തേ രാജ്യായ । ദേവസൂ രാജാ ഭവതി ।
ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമഃ ।
കർപൂരനീരാജനം പ്രദർശയാമി ।
കർപൂരനീരാജനാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി ।
ബൃഹഥ്സാമ ക്ഷത്രഭൃദ് വൃദ്ധവൃഷ്ണിയം ത്രിഷ്ടുഭൗജ്–ശ്ശുഭിത–
മുഗ്രവീരം । ഇന്ദ്രസ്തോമേന പഞ്ചദശേന മദ്ധ്യമിദം ്വാതേന
സഗരേണ രക്ഷാ । രക്ഷാം ധാരയാമി ।
ഒാം ഹര I ഒാം ഹര I ഓം ഹര I
രാജാധിരാജായ പ്രസഹൃ സാഹിനേ । നമോ വയം
്വൈശ്രവണായ കുർമഹേ । സ മേ കാമാൻ കാമകാമായ മഹ്യം ।
കാമേശ്വരോ വൈശ്രവണോ ദദാതു ।
കുബേരായ വൈശ്രവണായ । മഹാരാജായ നമഃ ।
സുവർണപുഷ്പം സമർപയാമി । പാരിജാത പുഷ്പം സമർപയാമി ।
```

19.4.8 <u>മന്ത്ര പൂഷ്</u>യം

```
യോടപാം പുഷ്പം ്വേദ് I
പുഷ്പവാൻ പ്രജാവാൻ പശുമാൻ ഭവതി ।
ചന്ദ്രമാ വാ അപാം പുഷ്പം ।
പുഷ്പവാൻ പ്രജാവാൻ പശുമാൻ ഭവതി । യ ഏവം ്വേദ് ॥ 1
യോടപാമായത്നം ്വേദ । ആയത്നവാൻ ഭവതി ।
അഗ്നിർ വാ അപാമായതനം 1 ആയതനവാൻ ഭവതി 1
യോടഗ്നേരായത്നം ്വേദ് 1 ആയത്നവാൻ ഭവതി 1
ആപോ വാ അഗ്നേരായാതനം ।
ആയതനവാൻ ഭവതി । യ ഏവം ്വേദ ॥ 2
യോടപാമായത്നം ്വേദ । ആയത്നവാൻ ഭവതി ।
വായുർ വാ അപാമായതനം । ആയതനവാൻ ഭവതി ।
യോ വായോരായതനം ്വേദ । ആയതനവാൻ ഭവതി ।
ആപോ വൈ വായോരായാതനം ।
ആയതനവാൻ ഭവതി । യ ഏവം ്വേദ ॥ 3
യോടപാമായത്നം ്വേദ് । ആയത്നവാൻ ഭവതി ।
അസൗ വൈ തപന്നപാ–മായതനം ।
ആയതനവാൻ ഭവതി । യോടമുഷ്യ–തപത ആയതനം ്വേദ ।
ആയതനവാൻ ഭവതി । ആപോവാ അമുഷൃ–തപത ആയതനം ।
ആയതനവാൻ ഭവതി । യ ഏവം ്വേദ ॥ 4
```

```
ചന്ദ്രമാ വാ അപാമായതനം ।
ആയതനവാൻ ഭവതി । യശ്ചന്ദ്രമസ ആയതനം ്വേദ് ।
ആയതനവാൻ ഭവതി । ആപോ വൈ ചന്ദ്രമസ ആയതനം ।
ആയതനവാൻ ഭവതി । യ ഏവം ്വേദ ॥ 5
യോടപാമായത്നം ്വേദ । ആയതനവാൻ ഭവതി ।
നക്ഷത്രാണി വാ അപാമായതനം । ആയതനവാൻ ഭവതി ।
യോ നക്ഷത്രാണാ–മായതനം ്വേദ । ആയതനവാൻ ഭവതി ।
ആപോ വൈ നക്ഷത്രാണാ–മായതനം ।
ആയതനവാൻ ഭവതി । യ ഏവം ്വേദ ॥ 6
യോടപാമായത്നം <sup>*</sup>വേദ । ആയത്നവാൻ ഭവതി ।
പർജന്യോ വാ അപാമായതനം । ആയതനവാൻ ഭവതി ।
യഃ പർജന്യ–സ്യായത്നം ്വേദ് । ആയത്നവാൻ ഭവതി ।
ആപോ വൈ പർജന്യ–സ്യായതനം ।
ആയതനവാൻ ഭവതി । യ ഏവം ്വേദ ॥ 7
യോടപാമായതനം ്വേദ I ആയതനവാൻ ഭവതി I
സം്വഥ്സരോ വാ അപാമായതനം । ആയതനവാൻ ഭവതി ।
യ സ്സ്റ്റ്വഥ്സര–സൃായത്നം ്വേദ് । ആയത്നവാൻ ഭവതി ।
```

ആപോ വൈ സം വല്സര–സൃായതനം I ആയത്നവാൻ ഭവതി । യ ഏവം ്വേദ് ॥ 8 യോടഫ്സുനാവം പ്രതിഷ്ഠിതാം ്വേദ് । പ്രത്യേവതിഷ്ഠതി ॥ 9 ഒാം തദ്ബ്രഹ്മ । ഓം തദായുഃ । ഓം തദാത്മാ । ഓം തഥ്സതൃം । ങാം തഥ്സർവം । ഓം തത്പുരോർ നമഃ । അന്തശ്ചരതി ഭൂതേഷു ഗുഹായാം ്വിശ്വമൂർത്തിഷു । താം ്യജ്ഞസ്താം ്വഷട്കാര സ്ത്വമിന്ദ്രസ്താം് രുദ്രസ്താം ്വിഷ്ണുസ്താം ബ്രഹ്മതാം പ്രജാപതിഃ । താം തദാപ ആപോ ജ്യോതീരസോടമൃതം ബ്രഹ്മ ഭൂർഭുവസ്സുവരോം 1 ന കർമണാ ന പ്രജയാ ധനേന ത്യാഗേനൈകേ അമൃതത്വ– മാനശുഃ । പരേണ നാകം നിഹിതം ഗുഹായാം ്വിഭ്രാജദേത– ദൃതയോ വിശന്തി । 1 വേദാന്ത വിജ്ഞാന സുനിശ്ചിതാർഥാ–സ്സന്യാസ യോഗാദൃതയഃ ശുദ്ധ സത്വാഃ । തേ ബ്രഹ്മലോകേ തു പരാന്തകാലേ പരാമൃതാത് പരിമുചൃന്തി സർവേँ । 2 ദഹ്രാ ്വിപാപം പരമേശ്വഭൂതാ ്യത്പുണ്ഡരീകാ പുരമദ്ധൃസ⊎സ്ഥം । തത്രാപി ദഹ്രം ഗഗനം ്്വിശോക–സ്തസ്തിൻ യദന്തസ്ത–ദുപാസിതവൃം । 3

യോ വേദാദൗ സാരഃ പ്രോക്തോ വേദാന്തേ ച പ്രതിഷ്ഠിതഃ । തസൃ പ്രകൃതി–ലീന്നു യഃ പരസ്സ മഹേശാരഃ । 4

വേദോക്ത മന്ത്രപുഷ്പം സമർപയാമി ।

സുവർണ പുഷ്പം സമർപയാമി । പാരിജാത പുഷ്പം സമർപയാമി ।

19.4.9 പ്രദക്ഷിണ നമസ്കാരഃ

യാനി കാനി ച പാപാനി ജന്മാന്തര കൃതാനി ച താനി താനി വിനശൃന്തി പ്രദക്ഷിണ പദേ പദേ ॥ 1

പ്രകൃഷ്ട പാപ നാശായ പ്രകൃഷ്ട ഫലസിദ്ധയേ പ്രദക്ഷിണം കരോമീശ പ്രസീദ പരമേശ്വര ॥ **2**

ഗജാനനം ഭൂതഗണാദി സേവിതം । കപിത്ഥ ജംബൂ ഫലസാര–ഭക്ഷിതം । ഉമാസുതം ശോകവിനാശ കാരണം । നമാമി വിഘ്നേശ്വര പാദ പങ്കജം ॥ 3

അഗജാനന പദ്മാർക്കം ഗജാനന മഹർന്നിശം । അനേകദം തം ഭക്താനാം ഏകദന്ത–മുപാസ്തഹേ । **4**

ഹാലാസൃ നാഥായ മഹേശ്വരായ । ഹാലാഹാലാലം – കൃതകന്ധരായ । മീനേക്ഷണായാഃ പതയേ ശിവായ । നമോ നമഃ സുന്ദര – താണ്ഡവായ । 5

കൃപാസമുദ്രം സുമുഖം ത്രിനേത്രം । ജടാധരം പാർവതീ വാമഭാഗം । സദാശിവം രുദ്ര–മനന്തരൂപം । ചിദംബരേശം ഹൃദി ഭാവയാമി । 6 നമശ്ശിവാഭ്യാം നവയൗവനാഭ്യാം । പരസ്റ്റരാശ്ലിഷ്ടവപൂർധരാഭ്യാം । നാഗേന്ദ്ര-കന്യാ-വൃഷകേതനാഭ്യാം । നമോ നമഃ ശങ്കര–പാർവതീഭൃാം । 7 നമശ്ശിവായ സാംബായ സഗണായ സസൂനവേ , സനന്ദിനേ സ ഗംഗായ സ വൃഷായ നമോ നമഃ । 8 മഹാദേവം മഹേശാനം മഹേശ്വര–മുമാപതിം , മഹാസേനഗുരും വന്ദേ മഹാഭയ നിവാരണം । 9 ഋണ–രോഗാദി–ദാരിദ്ര്യ പാപക്ഷുദപമൃത്യവഃ, ഭയക്രോധ മനഃക്ലേശാഃ നശ്യന്തു മമ സർവദാ । 10 സർവ മംഗള മാംഗലേൃ ശിവേ സർവാത്ഥ സാധികേ । ശരണ്യേ ത്രൃംബികേ ഗൗരി നാരായണി നമോടസ്തുതേ । 11 ശാന്താകാരം ഭുജഗശയനം പദ്മനാഭം സുരേശം । വിശ്വാകാരം ഗഗനസദൃശം മേഘവർണം ശുഭാംഗം I ലക്ഷ്മീകാന്തം കമലനയനം യോഗിഹൃദ്ധ്യാനഗമ്യം । വന്ദേ വിഷ്കും ഭവഭയഹരം സർവലോകൈക നാഥം 🛭 12

ഭാനോ ഭാസ്കര മാർത്താണ്ഡ ചണ്ഡരശ്രേ ദിവാകര , ആയുരാ–രോഗ്യ–മൈശ്വര്യം ശ്രിയം പുത്രാംശ്ച ദേഹി മേ । 13 അനായാസേന സായുജ്യം വിനാ ദൈന്യേന ജീവനം, ദേഹി മേ കൃപയാ ശംഭോ ത്വയി ഭക്തിമചഞ്ചലാം । 14 ബാലോടഹം ബാലബുദ്ധിശ്ച ബാലചന്ദ്രാർധ ശേഖര, നാഹം ജാനേ തവാർചാം വൈ ക്ഷമൃതാം കരുണാനിധേ । 15 അനൃഥാ ശരണം നാസ്തി ത്വമേവ ശരണം മമ തസ്മാത് കാരുണ്യ ഭാവേന രക്ഷ രക്ഷ മഹേശ്വര 16

അനന്തകോടി പ്രദക്ഷിണ നമസ്കാരാൻ സമർപയാമി ।

19.4.10 ഉപചാരം

ആവാഹിതാഭൃഃ സർവാഭേൃാ ദേവതാഭേൃാ നമോ നമഃ ।

1. ഛത്രം ധാരയാമി

- 2. ചാമരേ വൃജനയാമി
- 3. വാദൃം ഘോഷയാമി
- 4. നൃത്തം ദർശയാമി
- 5. ഗീതം ശ്രാവയാമി
- 6. ആന്ദോളികാം ആരോപയാമി
- 7. അശ്വം ആരോപയാമി
- 8. ഗജം ആരോപയാമി
- 9. രഥം ആരോപയാമി

സമസ്ത രാജോപചാരാൻ-ദേവോപചാരാൻ സമർപയാമി ॥

19.4.11 ചതൂർവേദ പാരായണം

ഓം । അഗ്നിമിളേ പുരോഹിതം യജ്ഞസൃ ദേവമൃത്വിജം । പ്രചാതാരം രത്ന ധാതമം । ഓം വള്ഷത്വോർജേത്വാ വായവം സ്ഥോ പായവം സ്ഥ ദേവോ വസ്സവിതാ പ്രാർപയതു ശ്രേഷ്ഠതമായ കർമണേ വ ഓം വഅഗ്ന ആയാഹി വീതയേ ഗൂണാനോ ഹവൃ ദാതയേ വ നിഹോതാ സഥ്സി ബർഹിഷി വ ഓം വശന്നോ ദേവീരഭിഷ്ട്രയ ആപോ ഭവന്തു പീതയേ വ ശംയോരഭിസ്രവന്തു നഃ പ

19.4.12 <u>ആപസ്തംബ ശ്രൗത സൂത്ര, പൂരാണ, വാക്യാഃ</u> അഥാതോ ദർശപൂർണമാസൗ വ്യാഖ്യാസ്യാമഃ । പ്രാതരഗ്നിഹോത്രം ഹുത്വാ । അന്യമാവഹനീയം പ്രണീയ । അഗ്നീനമ്പാ ദധാതി । ന ഗതശ്രിയോടന്യമഗ്നിം പ്രണയതി । (ശ്രൗത സൂത്ര വാകൃഃ)

പരിത്രാണായ സാധൂനാം വിനാശായ ച ദുഷ്കൃതാം । ധർമ സംസ്ഥാപനാർത്ഥായ സംഭവാമി യുഗേ യുഗേ ।

(പുരാണ വാകൃഃ)

19.5 <u>നന്ദികേശ്വര പൂജാ</u>

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവരോം । അസ്യാം ഘണ്യയാം നന്ദികേശ്വരം ധ്യായാമി । ആവാഹയാമി । സ്നാനം സമർപയാമി । (ശിവാഭിഷേക നിർമാലൃ തീർത്ഥം അഭിഷിച്യാ) । സ്നാനാനന്തരം ആചമനീയം സമർപയാമി । ഗന്ധ–പുഷ്പ ധൂപ–ദീപൈഃ സകലാരാധന്നൈഃ സ്വർചിതം ।

ഓം ഭൂർഭുവസ്സുവഃ । തഥ്സവിതുർ വരേണ്യം । ഭർഗോദേവസു ധീമഹി । ധിയോ യോ നഃ പ്രചോദയാത് । ദേവ സവിതഃ പ്രസുവഃ । സതൃം ത്വർതേന പരിഷിഞ്ചാമി । ഓം നന്ദികേശ്വരായ നമഃ । അമൃതം ഭവതു । അമൃതോപസ്തരണമസി । ഒാം പ്രാണായ സ്വാഹാഃ I ഒാം അപാനായ സ്വാഹാഃ I ഒാം വൃാനായ സ്വാഹാഃ । ഓം ഉദാനായ സ്വാഹാഃ । ഒാം സമാനായ സ്വാഹാഃ । ഒാം ബ്രഹ്മണേ സ്വാഹാഃ । ബാണ രാവണ ചണ്ഡേശ നന്ദി ഭൂംഗിരിടാദയഃ , മഹാദേവപ്രസാദോടയം സർവേ ഗൂഹ്ണന്തു ശാംഭവാഃ ॥ ഓം നന്ദികേശ്വരായ നമഃ I നിർമാലൃദേവതാഭേ്യാ നമഃ I ശിവനിർമാലും സമർപയാമി । അമൃതാപിധാനമസി । ആചമനീയം സമർപയാമി । ഈശാനഃ സർവവിദ്യാനാ–മീശ്വരഃ സർവഭൂതാനാം ബ്രഹ്മാധിപതിർ ബ്രഹ്മണോഗ്ധിപതിർ ബ്രഹ്മാ ശിവോ മേ അസ്തു സദാശിവോം ॥ ഓം ഹര । ഓം ഹര । ഓം ഹര । (അനന്തരം ശ്രീശക്തി പഞ്ചാക്ഷരീമന്ത്രം ജപേത് –

(see Item no 11.6 for ശ്രീശക്തി പഞ്ചാക്ഷരീമന്ത്രം)

ഹൃത്പദ്മ കർണികാമദ്ധ്യം ഉമയാ സഹ ശങ്കര , പ്രവിശ ത്വം മഹാദേവ സർവൈരാവാരണ്ടെ സഹ । (ഇതി നിർമാല്യം ആഘ്രായ, സ്തോത്രാദികം പഠേത്)

19.6 ക്ഷമാ പ്രാർത്ഥനാ

യഥക്ഷര–പദഭ്രഷ്ട്ടം മാത്രാഹീനം തു യദ് ഭവേത് । തത് സർവം ക്ഷമൃതാം ദേവ നാരായണ നമോസ്സ്തുതേ । വിസർഗ–ബിന്ദു–മാത്രാണി പദ–പാദാക്ഷരാണി ച ന്യൂനാനി ചാതിരിക്താനി ക്ഷമസ്വ പുരുഷോത്തമ । 1 മന്ത്ര ഹീനം ക്രിയാ ഹീനം ഭക്തി ഹീനം മഹേശ്വര । യത്പൂജിതം മയാ ദേവ പരിപൂർണം തദസ്തു തേ । 2 കായേന വാചാ മനസേന്ദ്രിയൈർ വാ, ബുദ്ധ്യാത്മനാ വാ പ്രകൃത്നേ സ്വഭാവാത് । കരോമി യദൃത് സകലം പരസ്തൈ നാരായണായേതി സമർപയാമി । 3

കരചരണ കൃതം വാക്കായജം കർമജം വാ, ശ്രവണ നയനജം വാ മാനസം വാ⁵പരാധം । വിഹിതമവിഹിതം വാ സർവമേതത് ക്ഷമസ്വ ജയ ജയ കരുണാബ്ലേ ശ്രീ മഹാദേവ ശംഭോ ॥ **4**

ശ്രീ രുദ്രം ന ജാനാമി , ന ജാനാമി ചമകം । സൂക്താനി ന ജാനാമി, ന ജാനാമി സ്തോത്രാണി । ആവാഹനം ന ജാനാമി, ന ജാനാമി വിസർജനം । പൂജാ വിധിം ന ജാനാമി, ക്ഷമസ്വ പരമേശ്വര ॥ 5 അനൃഥാ ശരണം നാസ്തി ത്വമേവ ശരണം മമ । തസ്മാത് കാരുണ്യ–ഭാവേന രക്ഷ രക്ഷ മഹാപ്രഭോ । **6** യസ്യ സ്മൂത്യാ ച നാമോക്ത്യാ തപഃ പൂജാ ക്രിയാദിഷു । ന്യൂനം സംപൂർണതാം യാതി സദ്യോ വന്ദേ തമച്യുതം । **7** അനയാ പൂജയാ സപരിവാരഃ ശ്രീ സാംബപരമേശ്വരഃ പ്രീയതാം । ഓം തത് സത് ബ്രഹ്മാർപണമസ്തു ।

20 <u>സാസ്തി വചനം</u>

സാസ്തി മന്ത്രാഃ സത്യാഃ സഫലാഃ സന്ത്വിതി ഭവന്തോടനുഗൃഹ്ണന്തു । 1

(തഥാസ്തു)

സാസ്തി പ്രജാഭ്യഃ പരിപാലയന്താം ന്യായേന മാർഗേണ മഹീം മഹീശാഃ । ഗോബ്രാഹ്മണേഭ്യഃ ശുഭമസ്തു നിത്യം ലോകാഃ സമസ്താഃ സുഖിനോ ഭവന്തു ॥ 2 (തഥാസ്തു)

അസ്യ യജമാനസ്യ (അനയോർ ദംപത്യോഃ, കുമാരസ്യ, കുമര്യാശ്ച,) വേദോക്തം ദീർഘമായുഷ്യം ഭൂയാസുരിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോടനുഗൃഹ്ണന്തു । 3 (തഥാസ്തു)

കർമണി മുഹൂർത്തഃ സുമുഹൂർതോടസ്തിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥ **4** (തഥാസ്തു)

തല്ലഗ്നാപേക്ഷയാ ആദിത്യാനാം നവാനാം ഗ്രഹാണാമാനുകൂല്യം ഭൂയാസുരിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥ **5 (തഥാസ്തു)**

യേ യേ ഗ്രഹാഃ ശുഭസ്ഥാനേഷു സ്ഥിതാഃ തേഷാം ഗ്രഹാണാം ശുഭസ്ഥാന–ഫലാവാപ്തി–രസ്ത്വിതി ഭവന്തോ

മഹാന്തോടഗൃഹ്ണന്തു ॥ **6**

(തഥാസ്തു)

അസ്യ യജമാനസ്യ (അനയോർ ദംപത്യോഃ) ആയുർബലം യശോവർചഃ പശവഃസ്സൈര്യം സിദ്ധിർലക്ഷ്മീഃ ക്ഷമാകാന്തിഃ സദ്ഗുണാ ssനന്തോ നിത്യോസ്സവോ നിതൃശ്രീർ നിത്യമംഗളം ഇതൃേഷാം സർവദാ ടഭിവൃദ്ധിർ ഭവന്തോ

മഹാന്തോടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥ **7**

(തഥാസ്തു)

സർവേ ജനാഃ നിരോഗാഃ നിരുപദ്രവാഃ സദാചാരസംപന്നാഃ ആഢ്യാഃ നിർമഥ്സരാഃ ദയാളവശ്ച ഭൂയാസുരിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥ 8 (തഥാസ്തു)

ദേശോടയം നിരുപദ്രവോടസ്തു i **9**

(തഥാസ്തു)

സർവേ ജനാം സുഖിനോ ഭവന്തു । 10

(തഥാസ്തു)

സമസ്ത സന്മംഗളാനി സന്തു । 11

(തഥാസ്തു)

അനേന പൂജാവിധേന ഭഗവാൻ സർവാത്മകഃ സപരിവാരഃ ശ്രീ സാംബപരമേശ്വര സുപ്രീതഃ സുപ്രസന്നോ വരദോ ഭൂത്വാ അസൃ യജമാനസ്യ, (ഏതത് സമാജസ്ഥാനാം, കർമപ്രവർതകാനാം, പ്രോഥ്സാഹകാനാം, സാഹായകാരീണാം, നാനാദ്രവൃ ദാതൃകാണാം, അഖില–ഭൂമണ്ഡല–നിവാസാനാം, സാശ്രിത ബന്ധുമിത്രാണാം, സർവേഷാം മഹാജനാനാം) ക്ഷേമ–സൈമര്യ–യെര്യ–വീര്യ–വിജയ ആയുരാരോഗ്യ ഐശ്വര്യാണാം അഭിവൃദ്ധിപ്രദഃ, സർവദാ ധർമോ മതിപ്രദശ്ച സാംബപരമേശ്വര പാദാരവിന്ദയോഃ അചഞ്ചല നിഷ്കപട ഭക്തിവന്തഃ ഭൂയാദിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥ 12 (തഥാസ്സു) അസ്മത് ഗൃഹേ വസതാം ദ്വിപദാം ചതുഷ്പദാം ച സർവേഷാം നിരോഗ പൂർണായുഷ്യ സിദ്ധിപ്രദോ ഭൂയാദിതി ഭവന്തോ മഹാന്തോടനുഗൃഹ്ണന്തു ॥ 13 (തഥാസ്കു)

ഉത്തരേ കർമണി അവിഘ്നമസ്തു । ഉത്തരോത്തരാ–ഭിവൃദ്ധിരസ്തു ॥ **14** (തഥാസ്തു)

20.1 <u>പ്രാശനം പ്രസാദ വിനിയോഗം , ദക്ഷിണ</u> <u>സ്വീകരണം</u>

20.1.1 <u>ശംഖതീർത്ഥ പ്രോക്ഷണം</u>

ശംഖമദ്ധ്യേ സ്ഥിതം തോയം ഭ്രാമിതം കേശവോപരി । അംഗലഗ്നം മനുഷ്യാണം ബ്രഹ്മഹത്യായുതം ദഹേത് ।

20.1.2 അഭിഷേക– തീർഥപ്രാശനം

സാളഗ്രാമ ശിലാവാരി പാപഹാരീ ശരീരിണാം ആജന്മകൃത പാപാനാം പ്രായശ്ചിത്തം ദിനേ ദിനേ ॥ അകാലമൃത്യുഹരണം സർവവ്യാധിനിവാരണം സർവപാപക്ഷയകരം ശിവപാദോദകം ശുഭം ।

20.1.3 <u>പഞ്ചഗവൃ പ്രാശനം</u>

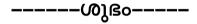
യതാക് അസ്ഥിഗതം പാപം ദേഹേ തിഷ്ഠതി മാമകേ പ്രാശനം പഞ്ചഗവൃസൃ ദഹതു അഗ്രിരിവ ഇന്ധനം ।

20.1.4 പ്രസാദ വിനിയോഗം (to yajamaanan)

ശ്രീർ വർചസ്വ–മായുഷ്യ–മാരോഗ്യമാവിധാ–ച്ഛോഭാമാനം മഹീയതേ । ധാനൃം ധനം പശും ബഹുപുത്രലാഭം ശതസ്ം്വഥ്സരം ദീർഘമായുഃ ॥ **2** ക്ഷത്രസൃ രാജാ വരുണോടധിരാജഃ । നക്ഷത്രാണാ ്യ ശതഭിഷഗ് വസിഷ്ട । തൗ ദേവേഭും കൃണുതോ ദീർഘമായും । 3 സാംഗ്രഹണ്യേഷ്ട്യാ യജതേ । ഇമാം ജനതാം് സംഗൂഹ്ണാനീതി ദ ദ്വാദ്ശാ രത്നീ രശനാ ഭവതി । ദ്വാദ്ശ മാസാ സ്റ്റം്വ്ഥ്സരഃ । സം്വ്ഥ്സര മേവാ വരുന്ധേ । മൗംജീ ഭവതി । ഊർഗൈ മുഞ്ചാഃ । ഊർജമേവാ വരുന്ധേ । ചിത്രാ നക്ഷത്രം ഭവതി । ചിത്രം ്വാ ഏതത് കർമ । യദശാമേധ സ്സമുബ്രെ ॥ 4 യശസ്ക് രം ബലവന്തം പ്രഭുത്വം തമേവ രാജാധിപതിർ ബഭൂവ । സംകീർണ നാഗാശ്വപതിർ നരാണാം സുമങ്ഗലും സതതം ദീർഘമായുഃ ॥ 5

20.1.5 ദക്ഷിണ സ്വീകരണം

ഹിർണയഗർഭ ഗർഭസ്ഥം ഹേമ ബീജം ബിഭാവസോഃ അനന്ത പുണ്യ ഫലദമതഃ ശാന്തിം പ്രയച്ഛമേ । അസ്മിൻ രുദ്രൈകാദശന്യാഖ്യ മഹാപ്രായശ്ചിത്ത കർമണി തത്ഫല സ്വീകരണാർത്ഥം ഉക്തദക്ഷിണാ പ്രത്യാമ്റ്റായത്വേന ഇദം ഹിരണ്യം പൂജാജപ കർതൃഭ്യോ ബ്രാഹ്മണേഭ്യേഃ സംപ്രദദേ । നമഃ । ന മമ । ഓം തഥ്സത് । ബ്രഹ്മാർപണമസ്തു ॥



21 Appendix

21.1 ശിവാഷ്ട്രോത്തര ശതനാമാവളിം

- 1. ഓം ശിവായ നമഃ
- 2. ഓം മഹേശ്വരായ നമഃ
- 3. ഓം ശംഭവേ നമഃ
- 4. ഓം പിനാകിനേ നമഃ
- 5. ഓം ശശിശേഖരായ നമഃ
- 6. ഓം വാമദേവായ നമഃ
- 7. ഓം വിരൂപാക്ഷായ നമഃ
- 8. ഓം കപർദിനേ നമഃ
- 9. ഓം നീലലോഹിതായ നമഃ
- 10. ഓം ശങ്കരായ നമഃ
- 11.ഓം ശൂലപാണയേ നമഃ
- 12. ഓം ഖട്വാങ്ഗിനേ നമഃ
- 13. ഓം വിഷ്ണുവല്ലഭായ നമഃ
- 14. ഓം ശിപിവിഷ്ടായ നമഃ
- 15. ഓം അംബികാനാഥായ നമഃ
- 16. ഓം ശ്രീകണ്റായ നമഃ
- 17. ഓം ഭക്തവഥ്സലായ നമഃ
- 18. ഓം ഭവായ നമഃ
- 19. ഓം ശർവായ നമഃ
- 20. ഓം ത്രിലോകേശായ നമഃ
- 21. ഓം ശിതികണ്റായ നമഃ

- 22. ഓം ശിവാപ്രിയായ നമഃ
- 23. ഓം ഉഗ്രായ നമഃ
- 24. ഓം കപാലിനേ നമഃ
- 25. ഓം കാമാരയേ നമഃ
- 26. ഓം അന്ധകാസുര സൂദനായ നമഃ
- 27. ഓം ഗങ്ഗാധരായ നമഃ
- 28. ഓം ലലാടാക്ഷായ നമഃ
- 29. ഓം കാലകാലായ നമഃ
- 30. ഓം കൃപാനിധയേ നമഃ
- 31. ഓം ഭീമായ നമഃ
- 32. ഓം പരശുഹസ്തായ നമഃ
- 33. ഓം മൃഗപാണയേ നമഃ
- 34. ഓം ജടാധരായ നമഃ
- 35. ഓം കൈലാസവാസിനേ നമഃ
- 36. ഓം കവചിനേ നമഃ
- 37. ഓം കഠോരായ നമഃ
- 38. ഓം ത്രിപുരാന്തകായ നമഃ
- 39. ഓം വൃഷാങ്കായ നമഃ
- 40. ഓം വൃഷഭാരൂഢായ നമഃ
- 41. ഓം ഭസ്തോദ്ധൂലിത വിഗ്രഹായ നമഃ
- 42. ഓം സാമപ്രിയായ നമഃ
- 43. ഓം സ്വരമയായ നമഃ
- 44. ഓം ത്രയീമൂർത്തയേ നമഃ

- 45. ഓം അനീശ്വരായ നമഃ
- 46. ഓം സർവജ്ഞായ നമഃ
- 47. ഓം പരമാത്മനേ നമഃ
- 48. ഓം സോമസൂര്യാഗ്നി ലോചനായ നമഃ
- 49. ഓം ഹവിഷേ നമഃ
- 50. ഓം യജ്ഞമയായ നമഃ
- 51. ഓം സോമായ നമഃ
- 52. ഓം പഞ്ചവക്ത്രായ നമഃ
- 53. ഓം സദാശിവായ നമഃ
- 54. ഓം വിശോശാരായ നമഃ
- 55. ഓം വീരഭദ്രായ നമഃ
- 56. ഓം ഗണനാഥായ നമഃ
- 57. ഓം പ്രജാപതയേ നമഃ
- 58. ഓം ഹിരണൃരേതസേ നമഃ
- 59. ഓം ദുർധർഷായ നമഃ
- 60. ഓം ഗിരീശായ നമഃ
- 61. ഓം ഗിരിശായ നമഃ
- 62. ഓം അനഘായ നമഃ
- 63. ഓം ഭുജങ്ഗ ഭൂഷണായ നമഃ
- 64. ഓം ഭർഗായ നമഃ
- 65. ഓം ഗിരിധന്വനേ നമഃ
- 66. ഓം ഗിരിപ്രിയായ നമഃ
- 67. ഓം കൃത്തിവാസസേ നമഃ

- 68. ഓം പുരാരാതയേ നമഃ
- 69. ഓം ഭഗവതേ നമഃ
- 70. ഓം പ്രമഥാധിപായ നമഃ
- 71. ഓം മൃത്യുണ്ടയായ നമഃ
- 72. ഓം സൂക്ഷ്മതനവേ നമഃ
- 73. ഓം ജഗദ് വൃാപിനേ നമഃ
- 74. ഓം ജഗദ് ഗുരവേ നമഃ
- 75. ഓം വ്യോമകേശായ നമഃ
- 76. ഓം മഹാസേന ജനകായ നമഃ
- 77. ഓം ചാരുവിക്രമായ നമഃ
- 78. ഓം രുദ്രായ നമഃ
- 79. ഓം ഭൂതപതയേ നമഃ
- 80. ഓം സ്ഥാണവേ നമഃ
- 81. ഓം അഹയേ ബുധ്നൃായ നമഃ
- 82. ഓം ദിഗംബരായ നമഃ
- 83. ഓം അഷ്ടമൂർത്തയേ നമഃ
- 84. ഓം അനേകാത്മനേ നമഃ
- 85. ഓം സാത്വികായ നമഃ
- 86. ഓം ശുദ്ധവിഗ്രഹായ നമഃ
- 87. ഓം ശാശ്വതായ നമഃ
- 88. ഓം ഖണ്ഡപരശവേ നമഃ
- 89. ഓം അജായ നമഃ
- 90. ഓം പാശവിമോചകായ നമഃ

- 91. ഓം മൂഡായ നമഃ
- 92. ഓം പശുപതയേ നമഃ
- 93. ഓം ദേവായ നമഃ
- 94. ഓം മഹാദേവായ നമഃ
- 95. ഓം അവൃയായ നമഃ
- 96. ഓം ഹരയേ നമഃ
- 97. ഓം പൂഷദന്തഭിദേ നമഃ
- 98. ഓം അവൃക്തായ നമഃ
- 99. ഓം ദക്ഷാധാരഹരായ നമഃ
- 100. ഓം ഹരായ നമഃ
- 101. ഓം ഭഗനേത്രഭിദേ നമഃ
- 102. ഓം അവൃഗ്രായ നമഃ
- 103. ഓം സഹസ്രാക്ഷായ നമഃ
- 104. ഓം സഹസ്രപദേ നമഃ
- 105. ഓം അപവർഗപ്രദായ നമഃ
- 106. ഓം അനന്തായ നമഃ
- 107. ഓം താരകായ നമഃ
- 108. ഓം പരമേശ്വരായ നമഃ ॥

യസ്ത്രിസന്ധ്യം പഠേന്നിത്യം നാമ നാമോഷ്ടോത്തരം ശതം । ശതരുദ്രത്രിരാവൃത്യാ യത് ഫലം ലഭതേ നരഃ । തത് ഫലം പ്രാപ്നുയാന്നിത്യം ഏകാവൃത്യാ ന സംശയഃ । സകൃദ്വാ നാമാഭിഃ പൂജ്യ കുലകോടിം സമുദ്ധരേത് ॥ ബില്വപത്രൈഃ പ്രശസ്തെശ്ച പുഷ്ടൈശ്ച തുളസീദളൈഃ । തിലാക്ഷതൈർ യജ്ദ്യേസ്തു ജീവമുക്തോ ന സംശയഃ ॥ (സ്കാന്ദ പുരാണം)

22 <u>ശ്രീ ബോധായനമഹർഷി പ്രണീതാനി</u> <u>മഹാനൃാസ സുത്രാണി</u>

Mahanaaysa vidhi of Bhodhayana Rishi is appearing in "Bhodhayana Gruhya SheSha SutraM" - Chapter 6.9 ||

Here bodhAyanamaharShi is giving the mahanyaasa in a capsule form. He is directly teaching the mahanyaasa method to his students. (വിധിം വൃാഖൃാസൃാമഃ).

ഓം അഥാതഃ പഞ്ചാംഗരുദ്രാണാം ന്യാസപൂർവകം ജപഹോമാർചനാഭിഷേകവിധിം വ്യാഖ്യാസ്യാമഃ ॥ (പഞ്ചാംഗരുദ്രസ്യ അയമർത്ഥഃ പഞ്ചപ്രകാരാഃ അങ്ഗന്യാസാഃ യേഷു തേ പഞ്ചാംഗ രുദ്രാഃ । ഏവം ഷഡംഗരുദ്രസ്യാപി ഷട്പ്രകാരാഃ അംഗന്യാസാഃ യസ്യ സഃ ഇത്യർത്ഥഃ । തത്ര ശിഖാദ്യസ്ത്രപരൃന്തം ഏകത്രിംശദംഗന്യാസഃ ദിഗ്ബന്ധ സഹിതഃ പ്രഥമഃ)

ന്യാസം 1 – (ശിഖാദൃസ്ത്രപരൃന്തം ഏകത്രിംശദംഗന്യാസഃ ദിഗ്ബന്ധ സഹിതഃ പ്രഥമഃ)

യാതേ രുദ്രേതി ശിഖായാം । അസ്മിൻ മഹതൃർണ്ണവ ഇതി ശിരസി ।

സഹസ്രാണീതി ലലാടേ । ഹഴ്സഃ ശുചിഷദിതി ഭ്രുവോർമദ്ധ്യേ । ത്രൃംബകം യജാമഹേ ഇതി നേത്രയോഃ ।

നമഃ സ്രുത്യായേതി കർണ്ണയോഃ ।

മാനസ്തോക ഇതി നാസികായാം । അവതതൃേതി മുഖേ ।

നീലഗ്രീവൗ ദ്വൗ കണ്ഠേ । നമസ്തേ അസ്ത്വായുധായേതി ബാഹ്വോഃ । യാ തേ ഹേതിരിത്യുപബാഹ്വോഃ ।

പരിണോ രുദ്രസ്യ ഹേതിരിതി മണിബന്ധയോഃ ।

യേ തീർത്ഥാനീതി ഹസ്തയോഃ ।

സദ്യോജാതമിതി പഞ്ചാനുവാകാൻ പഞ്ചസ്വംഗുലീഷു ।

നമോ വഃ കിരികേഭ്യ ഇതി ഹൃദയേ 1 നമോ ഗണേഭ്യ ഇതി പൃഷ്ടേ 1

നമോ ഹിരണൃബാഹവ ഇതി പാർശായോഃ ।

വിജൃം ധനുരിതി ജഠരേ ।

ഹിരണ്യഗർഭ ഇതി നാഭൗ । മീഢൂഷ്ട്രമേതി കട്യാം । യേ ഭൂതാനാമധിപതയ ഇതി ഗുഹ്യേ । യേ അന്നേഷ്വിത്യണ്ഡയോഃ । സശിരാ ജാതവേദാ ഇത്യപാനേ । മാനോ മഹാന്തമിത്യുർവോഃ । ഏഷതേ രുദ്ര ഭാഗ ഇതി ജാന്വോഃ । സഴ്സൃഷ്ട്രജീദിതി ജംഘയോഃ । വിശ്വം ഭൂതമിതി ഗുല്പയോഃ । യേ പഥാമിതി പാദയോഃ । അദ്ധ്യവോചദിതി കവചം । നമോ ബില്മിന ഇത്യുപകവചം । നമോ അസ്തു നീലഗ്രീവായേതി തൃതീയം നേത്രം । പ്രമുഞ്ച ധന്വന ഇത്യസ്ത്രം । യ ഏതാവന്തശ്ചേതി ദിഗ്ബന്ധഃ ॥

ന്യാസം 2 – (മൂർദ്ധാദിപാദാന്തം ദശാംങ്ഗന്യാസഃ ദ്വിതീയഃ)

ഓം നമോ ഭഗവതേ രുദ്രായേതി നമസ്കാരാൻ നൃസേത് I

- i. ഓംങ്കാരം മൂർദ്ധ്നി വിനൃസൃ നകാരം നാസികാഗ്രതഃ । മോകാരം തൂ ലലാടേ വൈ ഭകാരം മുഖമദ്ധൃതഃ ॥
- ii. ഗകാരം കണ്ഡദേശേ തു വകാരം ഹൃദി വിനൃസേത് । തേകാരം ദക്ഷിണേ ഹസ്തേ രുകാരം വാമതോ നൃസേത് ॥
- iii. ദ്രാകാരം നാഭിദേശേ തു യകാരം പാദയോർ നൃസേത് ॥

ന്യാസം 3 – പാദാദിമുർദ്ധാന്തം പഞ്ചാംഗന്യാസഃ തൃതീയഃ

- i. സദ്യം ച പാദയോർനൃസ്യ വാമം നൃസ്യോരുമദ്ധ്യതഃ ו അഘോരം ഹൃദി വിനൃസ്യ മുഖേ തത് പുരുഷം നൃസേത് ॥
- ii. ഈശാനം മൂർദ്ധനി വിനൃസ്യ ഹംസോ നാമസദാശിവഃ । ഹംസ ഹംസേതി യോ ബ്രൂയാദ്ധംസോ (ബ്രൂയാത് ഹംസോ) നാമ സദാശിവഃ ।
- iii. ഏവം നൃാസവിധിം കൃത്വാ തതഃ സംപുടമാരഭേത് ।

- iv. ത്രാതാരമിന്ദ്രം, ത്വംനോ അഗ്നേ, സുഗം നഃ പസ്ഥാം, അസുമ്പന്തം, തത്വാ യാമി, ആനോ നിയുദ്ഭിഃ । വയ്യസോമ, തമീശാനം, അസ്മേ രുദ്രാ, സ്യോനാപൃഥിവീതൃേതത് സംപുടം ഇന്ദ്രാദി ദിക്ഷൂ വിനൃസൃ ഏവമേവാത്മനി ഷോഡശരൗദ്രീകരണം കൃത്വാ വിഭൂരസീതൃനുവാകേന സാനുഷങ്ഗേണ ॥
- V. ത്വഗസ്ഥിഗഞ്ഞെ സർവപാപൈം പ്രമുചൃതേ സർവഭൂതേഷ്വപരാജിതോ ഭവതി । തതോ ഭൂതപ്രേത പിശാച ബ്രഹ്മരാക്ഷസ യക്ഷ യമദൂത ശാകിനീ ഡാകിനീ സർപ ശ്വാപദ വൃശ്ചിക തസ്കരാദ്യൂപദ്രവാദ്യൂപഘാതാം ॥
- vi. സർവേ (ഗ്രഹാഃ) ജ്വലന്തം പശൃന്തു । മാം രക്ഷന്തു ।

ന്യാസം 4 – ഗൂഹ്യാദിമസ്തകാന്ത ഷഡംഗന്യാസഃ ചതൂർത്ഥഃ

i. മനോജ്യോതിഃ, അബോദ്ധ്യഗ്നിഃ, അഗ്നിർമൂർദ്ധാ, മൂർദ്ധാനം, മർമാണി തേ, ജാതവേദാ, ഇതി ഗുഹ്യ–നാഭി–ഹൃദയ–കണ്യ–മുഖ–ശിരാംസ്യഭിമന്ത്ര്യ ആത്മരക്ഷാ കർത്തവ്യാ ബ്രഹ്മാത്മന്വദസൃജതേത്യനുവാകേന I

ന്യാസം 5 – ഹൃദയാദ്യ സ്ത്രാന്തം ഷഡംഗന്യാസഃ പഞ്ചമഃ ശിവസങ്കല്പം ഹൃദയം, പുരുഷസൂക്തം ശിരഃ, ഉത്തരനാരായണം ശിഖാ, അപ്രതിരഥം കവചം, പ്രതിപുരുഷദ്വയം നേത്രം, ശതരുദ്രിയമിതൃസ്ത്രം I

Korvai for Sivasankalpam

- 1. യേനേദം, യേന കർമാണി, യേനകർമാണൃപസോ, യത് പ്രജ്ഞാനഗ്ം, സുഷാരഥിർ, യസ്മിന്നൃചോ, യദത്ര ഷഷ്ഠം, യജ്ജാഗ്രതോ, യേനേദം, യേന ദൃൗഃ പൃഥിവീ ദശ ।
- 2. യേ മനോ ഹൃദയ, മചിന്തൃ, മേകാ ച, യേ പഞ്ച, വേദാഹമേതം, യസ്യേദം ധീരാഃ, പരാത് പരതരം ചൈവ, പരാത് പരതരോ ബ്രഹ്മാ, യാ വേദാദിഷു, യോ വൈ ദേവം ദശ ।
- 3. പ്രയതോ, യോടസൗ, ഗോഭിർ ജുഷ്ടം, കൈലാസ ശിഖരേ, ത്രൃംബകം, വിശ്വതശ്ചക്ഷു, ശ്ചതുരോ വേദാൻ, മാനോ മഹാന്ത, മ്മാനസ്തോക, ഋതഴ് സതൃം ദശ ।
- 4. കദ് രുദ്രായ, ബ്രഹ്മജ്ഞാനം, യഃ പ്രാണതോ, യ ആത്മദാ, യോ രുദ്രോ, ഗന്ധദ്വാരാം, യ ഇദഴ് ശിവസങ്കല്പഴ് സപ്തത്രിഴ്ശത്.

<u>പഞ്ചാംഗം സകൃത്ജപേത് –</u>

ഹൗ്സഃ ശുചിഷത്, പ്രതദിിഷ്ണുഃ, ത്രൃംബകം, തത്സവിതുർവൃണീമഹേ, വിഷ്കൂർ യോനിമിതി ദ

<u>അഷ്ടാംഗം പ്രണമൃ</u>

ഹിരണൃഗർഭോ, യഃ പ്രാണതോ, ബ്രഹ്മജ്ജ്ഞാനം, മഹീദൗഃ, ഉപശ്വാസയ, അഗ്നേ നയ, യാതേ അഗ്നേ, ഇമം യമ ഇതൃഷ്ടാങ്ഗം പ്രണമ്യ I അഥാത്മാനം ശിവാത്മാനം ശ്രീരുദ്രരൂപം ധ്യായേത് । (*അഥാത്മാനം രുദ്രരൂപം ധ്യായേത് പഞ്ചമുഖം ശിവം । ഇതി പാഠാന്തരം।)

- i. ശുദ്ധസ്പടികസങ്കാശം ത്രിനേത്രം പഞ്ചവക്ത്രകം ഗംങ്ഗാധരം ദശഭുജം സർവാഭരണ ഭൂഷിതം I
- ii. നീലഗ്രീവം ശശാങ്കാങ്കം നാഗയജ്ഞോപവീതിനം വൃാഘ്രചർമ്മോത്തരീയം ച വരേണൃമഭയപ്രദം ।
- iii. കമണ്ഡലാക്ഷസൂത്രേ ച ദധാനം ശൂലപാണിനം ജാലന്തം പിങ്ഗളജടം ശിഖാമദ്ധ്യോദധാരിണം
- iv. അമൃതേനാപ്ലുതം ഹൃഷ്ടം ദിവൃഭോഗസമന്വിതം ദിഗ്ദേവതാ സമായുക്തം സുരാസുരനമസ്കൃതം
- v. നിതൃം ച ശാശ്വതം ശുദ്ധം ധ്രുവമക്ഷരമവൃയം സർവവൃാപിനമീശാനം രുദ്രം വൈ വിശ്വരൂപിണം ا ഏവം ധൃാത്വാ ദ്വിജഃ സമൃക് തതോ യജനമാരഭേത് ।

അഥാതോ രൂദ്രസ്സാനാർചനാഭിഷേകവിധിം വ്യാഖ്യാസ്യാമഃ ॥ ആദിത ഏവ തീർത്ഥേ സ്റ്റാത്വാ, ഉദേതൃ അഹതം വാസഃ പരിധായ, ശുചിഃ പ്രയതോ ബ്രഹ്മചാരീ ശുക്ലവാസാഃ, ഈശാനസൃ പ്രതികൃതിംകൃത്വാ തസ്യ ദക്ഷിണാപ്രതൃഗ്ദേശേ തന്മുഖഃ സ്ഥിത്വാ, ആത്മനി ദേവതാഃ സ്ഥാപയേത് ।

<u>ന്യാസം 6 – അയം ഷഷ്ടഃ ന്യാസഃ</u>

പ്രജനനേ ബ്രഹ്മാ തിഷ്ഠതു । പാദയോഃ വിഷ്ണുസ്തിഷ്ഠതു । ഹസ്തയോഃ ഹരസ്തിഷ്ഠതു । ബാഹ്വോരിന്ദ്രസ്തിഷ്ഠതു । ജഠരേ അഗ്നിസ്തിഷ്ഠതു । ഹൃദയേ ശിവസ്തിഷ്ഠതു । കണ്ടേ വസവസ്തിഷ്ഠതു । വക്രേത സരസ്വതീ തിഷ്ഠതു । നാസികയോർവായു സ്തിഷ്ഠതു । നയനയോശ്ചന്ദ്രാദിതൃൗ സ്തിഷ്ഠതാം । കർണ്ണയോരശ്വിനൗ സ്തിഷ്ഠതാം । ലലാടേ രുദ്രാസ്തിഷ്ഠതു । മൂർദ്ധന്യാദിത്യാസ്തിഷ്ഠന്തു । ശിരസി മഹാദേവസ്തിഷ്ഠതു । ശിഖായാം വാമദേവസ്തിഷ്ഠതു । പൃഷ്ഠേ പിനാകീ സ്തിഷ്ഠതു । പുരതഃ ശൂലീ സ്തിഷ്ഠതു । പാർശ്വയോഃ ശിവാശങ്കരൗ സ്തിഷ്ഠതാം । സർവതോ വായു സ്തിഷ്ഠതു । തതോ ബഹീഃ സർവതോടഗ്നിർ ജ്വാലാമാലാപരിവൃതസ്തിഷ്ഠതു । സർവേഷ്വങ്ഗേഷു സർവാദേവതാ യഥാസ്ഥാനം തിഷ്ഠന്തു । മാം (സകുടുംബം) രക്ഷന്തു ।

അഗ്നിർമ്മേ വാചി ശ്രിത ഇതി യഥാലിംഗം അംഗാനി സംസ്പൃശൃ ആത്മാനം ഗന്ധപുഷ്പധൂപദീപ നൈവേദ്യെും മാനസൈഃ ആരാധയേത് i

അഥൈനം പ്രസാദയേത് ।

ആരാധിതോ മനുഷ്യെസ്ത്വം സിജൈർ ദേവാസുരാദിഭിഃ । ആരാധയാമി ഭക്ത്യാ ത്വാടനുഗ്രഹാണ (ത്വാം മാം ഗൃഹാണ) മഹേശ്വര ।

ആത്വാ വഹന്തു ഹരയഃ സചേതസഃ ശ്വേതൈരശൈഃ സഹകേതുമദ്ഭിഃ । വാതാജിതെെർ ബലവദ്ഭിഃ മനോജവൈരായാഹി ശീഘ്രം മമ ഹവ്യായ ശർവോം । ത്രൃംബകമിതി ച, ഇതൃാവാഹയതി, സ്ഥാപിതേ തു ന ആവാഹനം ।

അഥ ആസനം । ദദാതി സദ്യോ ജാതമിതി । ഭവേ ഭവ ഇതി പാദ്യം । ഭവോദ്ഭാവായ നമഃ ഇതൃർഘ്യം । വാമദേവായ നമഃ ഇതൃാചമനീയം ।

അഥെനം സ്റ്റപയതി । ആപോ ഹിഷ്ഠാദിഭിഃ തിസൂഭിഃ, ഹിരണൃ വർണ്ണാ ഇതി, പവമാനഃ സുവർജനഃ ഇതൃനുവാകേന മാർജയിത്വാ, സർവോ വൈ രുദ്രഃ, കയാ നശ്ചിത്രഃ, അപോ വാ ഇദ്∀് സർവം ഇത്യേതൈശ്ച, വാമദേവായ നമഃ ഇതി വസ്ത്രം, ജ്യേഷ്ഠായ നമഃ ഇതൃുപവീതം, രുദ്രായ നമഃ ഇതൃാചമനീയം, പ്രണവേന ഭൂഷണം, കാലായ നമഃ ഇതി ഗന്ധം, കലവികരണായ നമഃ ഇതൃക്ഷതാൻ, ബലവികരണായ നമഃ ഇതി പുഷ്പം, ബലായ നമഃ ഇതിധൂപം, ബലപ്രമഥനായ നമഃ ഇതി ദീപം, സർവഭൂതദമനായ നമഃ ഇതി നൈവേദ്യം, മനോന്മനായ നമഃ ഇതി താംബൂലം ദദാതി ।

അഥാസ്മെ അഷ്ട്രിർ മന്ത്രൈ അഷ്ട്രൗ പുഷ്പാണി ദദാതി 'ഭവായ ദേവായനമഃ' ഇത്യാദി । അഥാസ്യ അഘോരതനൂരൂപതിഷ്ഠതേ അഘോരേഭ്യോടഥഘോരേഭ്യഃ ഇതി, അഥ രുദ്രഗായത്രീം ജപേത്, തത് പുരുഷായ വിദ്മഹ ഇതി ശതകൃത്വഃ അപരിമിത കൃത്വഃ വാ ദശവാരം വാ । അഥൈനം ആശിഷമാശാസ്തേ, ഈശാനഃ സർവ വിദ്യാനാം ഇതി ।

അഥസ്യ മൂർദ്ധനി ഹിരണ്യകലശേന സന്തതധാരാം നിഷിഞ്ചേത് । മധുനാ സർപിഷാ പയസാ ചേക്ഷുരസേന ആമ്രരസേന വാ നാളികേരോദകേന വാ തദലാഭേ ഉദകേന വാ നമസ്തേ രുദ്രമന്യവ ഇത്യേകാദശാനുവാകാൻ ജപേത് । ജപാന്തേ അഗ്നാവിഷ്ണു സജോഷസേത്യേകാദശാനുവാകാൻ പ്രത്യേകമേകരേകം ജപേത് । സർവേഷാം പാരേ പുനരാരാധയേത് ഉത്തമാരാധനേന ।

തേന അഭിഷിക്കോദകേന അക്ഷീഭ്യാം ഇതൃനുവാകേന അബ് ലിങ്ഗാദിഭിശ്ച ആ പാദാത് സംസ്പൃശ്യ പാപക്ഷയാർത്ഥീ വ്യാധിവിമോക്ഷാർത്ഥീ ശ്രീകാമഃ ശാന്തികാമഃ പുഷ്ടികാമഃ തുഷ്ടികാമഃ ആയുഷ്കാമഃ ആരോഗ്യകാമഃ ഏവം കുര്യാത് I ഏവം കൂർവൻ സിദ്ധിമവാപ്പോതി I ആചാര്യായ ദക്ഷിണാം ദദാതി । ദശ ഗാഃ സവത്സാഃ സുവർണ്ണഭൂഷിതാഃ വൃഷഭൈകാദശാഃ തദലാഭേ ഏകാം ഗാം ദദ്യാത് । ഏകാദശ ബ്രാഹ്മണാൻ ഭോജയേത് । അശ്വമേധക്രതുസഹസ്രഫലമവാപ്നോതീത്യാഹ ഭഗവാൻ ബോധായനഃ ।

> ല ഇതി ബോധായന മഹർഷി പ്രണീതാനി മഹാന്യാസസൂത്രാണി ॥

> > ശുഭം

Books referred for "Bodayana sootraani"

- 1. Bodhayaneeya brahmakarma samucchayaH, Page 785, Chapter "mahanyAsa vidhi".
- 2. "Mahanyaasam" book by R. S. Vadhyaar and Sons & Kalpathi.

=========